अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे। और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्नो इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नहीं समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नहीं हुआ किन्तु क्रमसें जों जों देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तों तों ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४। विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोंचा कि पुस्तक विनलिखे यह स्मरणशक्ति

॥ विज्ञापनम् ॥

सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस्सें जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्ठी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान बिना ज्ञानी और ज्ञानी बिना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सङ्ग्रह अध्ययन

जगह नही मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भंडार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया । यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकशुभतादिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में वडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें । यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक सुल भता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करना चा हिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे बिचारिये तो पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबधका हेतु, नही है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोंच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथा शक्ति प्रवृत्त होंय कि जिस्से पुन जैनमत युवावस्था कों प्राप्त होय इति शम् ॥

मकसूदाबाद अजीमगंज

राय धनपतिसिंह बहादुर

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनुयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसें प्राप्तहै ,

जाती रहैगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होने के कारण ताड़पत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिस्में भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडै कार्य पूर्ण नहो. क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है, ग्रथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोंने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

और अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारों के निरूपण से होती है सो सब इहांभी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाग चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने से, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसंवाद रहित वचन होने से त्रिभुवनरूप भवन के आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यश की राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम कारुणिक श्री श्रमण भगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी नें जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ मे कहाहै, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सो पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत संख्या विशेषित इस ग्रंथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकेंद्रियादि पर्याप्त अपर्याप्त नारक

विशेषणमायुष्मताविरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमयेत्यस्यविशेषणमिद आवसतामयागुरुकुलेआमृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत
लाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसतेणंति आयुष्माणेनप्रीतिप्रणवमनसेति। यदाख्याततदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्यांचिद्वाचनायामपर
मपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेण भगवएइत्यादि तामेवचवाचनांबहुत्तरत्वाद्व्याख्यास्यामःइदंचद्वितीयसूत्रं संग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे
यमस्यचैवगमनिका इहास्मिन्लोके निर्ग्रंथतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्यादिप्रवचनेषु श्राम्यतितपस्यतीति श्रमणस्तेनेदंचांति
मजिनस्यसहसम्मतिसम्पन्ननामातरमेवयदाह सहसमइयामणेत्ति। भगवतेतिपूर्ववत् महाश्चासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र
वणपरीषहोवसर्गनिपातेष्वप्रकपत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भावितमाहच अयलेभयभेरवाणंखतिखमेपरीसहावयवग्गाणंपडिमाणंपरेदेवेहिंकएमहावीरेत्तिक
थभूतेनेत्याह आदीप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारप्रथामकरोतितदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थंकरस्तेन तरंतितेनसंसारसागरमितितीर्थंप्रव
चनंतद्व्यतिरेकादिहसंघस्तीर्थं तस्यकरणशीलत्वात्तीर्थंकरस्तेन तीर्थंकरत्वंचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धोहे
योपादेयवस्तुतत्वविदितवानितिस्वयंसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्वचास्यप्राकृतस्येवसभाव्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषाणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोद्गतत्वा

आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगत्त

तपस्वीतेणे भगवंतऐश्वर्यादिकगुणेकरीसहिततेणेकर्मरूपवैरीने विदारेतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहा
रतेणे परनाउपदेसविनापोतेजप्रतिबोधपाम्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्यानजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

ष्यतइति तेनधर्मवरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्यत आह अप्रतिहतेकटकुड्यपर्वतादिभिर
स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवक्षायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर स्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो
पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वाद्योपकारीतिनिश्छद्मता प्रतिपादनायास्याह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमवोच्यते आवरणाभावादेतदेवाहव्याव
त्त निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणंवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे
षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक
स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वंविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतथातारयति
परानप्युपदेशवर्त्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्वं तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यंतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्यावीतरागथयातेणे रागद्वेषनेजीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं
सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेंसंसारसमुद्रतारेतेणे आपणपेंतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावेतेणे
सर्वपदार्थना जांणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहयामहायीरमोचजाइवावांछे छेतेमोचकेइवीछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहांरोगनहींजेह

पार्श्वे भौमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मानव योजनानिऊर्ध्वमुच्चत्वेन तथा पद्मा

गइयाणं देवाण नवपलिओवमाइं ठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पभं सुज्जलेसं सुज्जवण्णं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्ल रुइल्लावत्त रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवण्ण जावरुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा नवण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुपज्जइ संतेगइयाभव

आउखोकह्यो। ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १। सुपद्म २। पद्मावर्त ३। पद्मप्रभ ४। पद्मकांत ५। पद्मवर्ण ६। पद्मलेश ७। पद्मध्वज ८। पद्मशृग ९। पद्मसिद्ध १०। पद्मकूट ११। पद्मोत्तरावतंसक १२। एम १२ विमाने तथावली। सूर्य १। सूर्यावर्त २। सूर्यप्रभ ३। सूर्यकांत ४। सूर्यवर्ण ५। सूर्यलेश ६ सूर्यध्वज ७। सूर्यशृग ८। सूर्यसिद्ध ९ सूर्यकूट १०। सूर्योत्तरावतसक ११। तथावली रुचिर १। रुचिरावर्त २। रुचिरप्रभ ३। रुचिरकात ४। रुचिरवर्ण ५ रुचिरलेश ६। रुचिरध्वज ७ रुचिरशृंग ८ रुचिरसिद्ध ९ रुचिरकूट १० रुचिरावतंसक ११ एणेविमाने जेहदेवतापणे ऊपनाछे। तेहदेवतानी नवसागरो पमआउखोकह्यो। तेहदेवता नवअर्धमासे पखवाडें स्वासोस्वासले घणोंस्वासोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्रें आहारनो अर्थ

तिर्यंच मनुष्य देव नेदसें और इनके आहार लेश्या आवास उपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने सें समवाय ऐसा नाम हुआ, वही समवाय क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अंगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ, इस ग्रंथ में भाव समवायांग का अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है, इस समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेष कहे है, यही चारों जैसें नगर मे सुखसें प्रवेश करने मे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमे प्रवेश करने के चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं, इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने सें तत्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होताहै इसलिये इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परंतु पढने का अधिकारी वही होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरू का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिस्कों व्यतीत हुआ होगा समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वहीहै, अन्यथा देनेमें तीर्थंकराज्ञा भङ्गादि दोषापत्ती होतीहै, इति शम्॥

त्राणियासुताः सप्तरात्रिंदिवास्तावतिस्रोभवंतीति सप्तानामुपरि अष्टमीप्रथमासप्तरात्रिंदिवा एवंनवमीद्वितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा
नकृतोविशेषः तथाहिअष्टम्यांचतुर्थभक्ततपः ग्रामादेर्बहिरवस्थान मुत्तानादिकचस्थानमिति नवम्यांतुउत्कटुकाद्यासनेनविशेषः दशम्यांवीरासनादिना तथा
अहोरात्रप्रमाणाहोरात्रिकी एकादशीयाथषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेषः एकरात्रिकीरात्रिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन रात्रौप्रलंबभुजस्य सहतपादावनतकायस्या
निमेषोदयास्येति तथासमेंकीभूय' समानःसमाचाराणां साधुनाभोजनंसंभोगः सचोपध्यादिलक्षणविषयभेदात् द्वादशधा तत्रउवहीत्यादिरूपकद्वयं तत्रोपधि

ऋासत्तराइंदिऋात्रिक्कूपडिमा ऋहोराइऋात्रिक्कूपडिमा एगराइऋात्रिक्कूपडिमा दुवालसविहेसंभोगे

मा त्रिणिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा चारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठी छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७
आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्टमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी
पणिसात अहोरात्रनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी त्रीजी पणिसात अहोरात्रनी तिहां वीरासनकरे १० । इग्यारमी एकअ
होरात्रिनी भिक्खुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११ । बारमी भिक्खु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्ट मभक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का
उसग्गकरे कांइककाया नमाडे नेत्रमेखनकरे १२ । बारें प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनो एकभोजनादिकनो विचारहारकह्यो । उपधिवस्त्र पात्रादि
कनो संभोग लेवोदेवो सभोगी साधुसाथें तुझमोत्पादन दोषेविशुद्धकह्यो अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रायश्चितलेई तोहीते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रायश्चित्तलेतो

नकल चिठ्ठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसो जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच २ सौ कापी छपै और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाच सौ स्थानमे पुस्तकालय स्थापित हो सो बहुत प्रति आनदकी बातहै, परंतु जिन महाशयों का द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगो के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बचने के वास्ते पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तकें मे अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अगे शुभम्, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज.

द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद

कार्यसम्पादक

सुबुद्धिसेन

नकल चिठ्ठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसो जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तकें बचने के वास्ते छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपने की आज्ञा मे नही देता, यदि और कोई छपवाना चाहें तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थो पर रजस्टरी हुईहै, अगे शुभम् । संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

निकाचनंच्छंदनं निमत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योपध्याहारे. शिष्यगणप्रदानेनस्वाध्यायेनच सभोगिकं निमत्रणशुद्ध: शेषतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावरेत्ति अभ्यु
त्थानमासनत्यागरूपमित्यपर सभोगासभोगस्थानमित्यर्थ: तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादे:कुर्व स्तद्दिसभोग्यउपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव
स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवप्रश्नलक्षण। तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिवापृथग्भावलक्षण कुर्वन्न
शुद्धो सभोग्यश्चाप्येतान्येवंयथागम्य कुर्वन्शुद्ध: सभोग्यश्चेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनकस्य करणविधान तद्विधिनाकुर्वन्शुद्ध: इतरथा
तथैवासभोग्यस्तत्रचायविधिर्य. साधु वांतेनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्त. ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्क
रोत्येवंचायठप्रवृत्तिर्वदन विधिरितिभाव: वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना प्रश्रमणादिमात्रकार्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्ट
भकरण तस्मिंश्चविषयेसभोगोभवतीति। तथासमोसरणति जिनस्तवनरथानुयानपट्टयात्रादयोजहव. साधवोमिलन्ति तत्समवसरण इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूना
साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलक्षितातेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो बहुवासावग्र
हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रह. प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रवर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपत्प्रादिभि: साधुभिर्भिक्षगच्छस्वैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्तत्क्षेत्रमे

करणे वेज्जावेच्चकरणेज्ज समोसरणं संनिसिज्जाय कहाएज्जपवंधणे दुवालसावत्तेकिइकम्मे प० तं० दुवणयं

गो ४। सभोगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसभोगी ५ निकांचन निमत्रण माहोमाही शिष्यउपाध्यायादिकै करतोशुद्ध ६। व
डेआवाएथके उठीउभा थाइवो ७। अपरकहता अनिरतबोल तथा विविधेंकरी कृतिकर्म वादणानो करवो उठानेवादणानो देवो ८। वेयावचननो करवो

॥ विज्ञापनम् ॥

श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पद्रुप्रायमाण वङ्गदेशभूषण कृतवस्तुतोषण जीमगच्छवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारो सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभादेशेन ज्ञानद्वयये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराक्षरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्यग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्यांङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकचन्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥ *

समवायाख्यंसूत्रं तुरीयमङ्गंमयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यंभविकान्सदापातु ॥ १ ॥

दाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनमतीति
यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनिःक्रमणलक्षणच तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणीजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवभू
तएवंवन्दते तदव्यतिरेकाद्वा यथाजातभण्यते कृतिकर्मवंदनकं। बारसावयंति द्वादशावर्त्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं
स्तद्द्वादशावर्त्तते। तथाचउसिरन्ति चत्वारिशिरांसियस्मिंस्तच्चतुःशिरः प्रथमप्रविष्टस्यचामणाकाले शैथ्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति
भावना। तथातिहिगुत्तति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिःश्रवणगुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौप्रवेशौयस्मिंस्तद्द्विप्रवेश तत्रप्रथमोवग्रहमनुज्ञाप्य
प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनिःक्रमणमवग्रहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलाया ह्यवग्रहान्निर्गच्छति पादपतितएव

जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्ते दुपवेसं एगनिक्खमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

आहार पाणी संभोगीने आणोदेतो मात्रादिक परठवतो सभोगी अन्यथा विसंभोगी ९। समोसरण तेवणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण सभोग
साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १०। संनिपद्यागत संभोगीसाथें एके बैसतो वेसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्थासाथे करतो विसभोगी ११ संभोगीसाथें क
थाप्रबंध करतोशुद्ध १२। पासत्थासाथें करतो विसभोगी॥ बारें आवर्तमाहें तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवते त्रीयवर्द्धमानसामी ऐं तेकहेछे वेश्रवनत वेयेला
मस्तकनमाडवो गुरूनो थापनाकीजे तेहथकी अजठहाथ वेगला रहीपडिक्कमीए अजठहाथमाहीं अवग्रहकहिये उभांयका इच्छामिखमासमणो कहिये विनु
वांदणे विहुवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरी बालकनीपरें यलोटोभरीहायजोडीरही कृतकर्मवादणा १२ आ।

काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोवित्ति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसत्ति।

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भा राएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसिइत्तिवा इसिपब्भारत्तिवा तणूइवा तणूअरित्तिवा सिद्धित्तिवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ

क्षिणायननो छेहल्योदिवस मकरसक्राति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी वार्थसिद्ध महाविमान कही तेहनी उपरिली चूलिका शिखरायथकी १२ योजनछे जंचो उत्पत्तिने जईने इषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धिशिलाकही रत्नप्रभा दिक बीजी पृथिवीनो अपेक्षाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेहईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार बीजी पृथिवीनो अपेक्षाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे हडेमाखि नाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुतेथके जीवनाकार्य सीझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआछे तेहनू आलयकहतां घरते सिद्धाल य ६ तिहां जीवपहुताथकी कर्मथकी मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजेसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते हनो मुगुटरूप १० लोक १४ राजलोक तेजेणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथें चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो काग्रचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो वारपल्योपम आउखोकह्यो। पचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानम्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं मयेह । तद्बोधनेर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थंचतिरस्तुमेव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थांगानुयोगोभवतीति-सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नंवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो-जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयतिवा समवतरंति संमिलति नानाविधाआत्मादयोभावाअभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीश्रमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पचमोगणधरआर्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यंजंबूनामानमभिसम वायागार्थमभिवित्सुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्चिततयावि गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेणंति यो सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभावरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसवेदनपुरस्सरावितंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा शिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यात अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥दर्श॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ देवदेवजिननत्वा पार्श्वचन्द्रादिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमैभगवंतनें समीप ॥ हेसयमसुद्धआऊखानाधणीजंबू तेणे भगवंतभानवतरूपवंते एहवोजे आगलकहीस्येतेकह्यो एहवोजिनप्रवचननेविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

मायाप्रत्ययो मायानिबंधनः ११ । एवंलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापथिकः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशांत मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १२ । तथाविमाणप
त्थउत्ति विमानप्रस्तटाउत्तरार्धपर्यंतव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेनयोद
शप्रस्टे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरकः सप्रयप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति णंकारोवाक्यालंकारे अपन्नयोदशयेपुतान्य
त्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविग्रहः सार्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्द्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिनां योनि
प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्प्राणिनामायुर्निकथन सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्वाच्य पूर्वंतस्य
योदशयस्तूनि अध्ययनवर्द्धिभागविशेषाः तथागर्भेगर्भायये व्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पचेंद्रियतिर्यंगयोनिकाश्चेतिविग्रहः प्रयोजने मनोवा

वहिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि
आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति
अपंचेंदिअतिरिक्ख जोणिआण तेरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे

त्रीजयोनिनेविषें अनेकप्रकारे जीवजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहांप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो
पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक
हेछे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचितवी १ । जूठमननो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चितवी ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

नेरइआणं तेरसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं तेरससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरसपलिओवमाइठिई प० सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाण तेरसपलिओवमाइ ठिई प० लतएकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकतं वज्जवण्ण वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठ वज्जुकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइर वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेस वइररूवं वइरसिंगं वइरसिट्ठ वइरकूड वइरुत्तरवडिंसगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगरूवं लो

नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो तेरपल्योपम आजखोकह्यो। पांचमी पृथिवीए केतलाएक नारकीनो तेरसागरोपम आजखोकह्यो। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो तेरपल्योपम आजखोकह्यो। सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेरपल्योपम आजखोकह्यो। लांतककल्पेकेतलाएकदेवनो तेरसागरोपम आजखोकह्यो। छठ्ठेदेवलोके जेहदेवता वज्र १। सुवज्र २। वज्रावर्त ३। वज्रप्रभ ४। वज्रकांत ५। वज्रवर्ण ६। वज्रलेश ७। वज्ररूप ८। वज्रशृंग ९। वज्रसिद्ध १०। वज्रकूट ११। वज्रोत्तरावतंसक १२। एम बारवली॥ वइर १। सुवइर २। वइरावर्त ३। वइरप्रभ ४। वइरकांत ५। वइरवर्ण ६। वइरलेश ७। वइररूप ८। वइरशृंग ९। वइरसिद्ध १०। वइरकूट ११। एमवज्रनो परिवैरसाधे १२ विमानकरी छेल्लिनो वैरोत्तरावतंसक १३। वली॥ लोक १। सुलोक २। लोकावर्त ३। लोकप्रभ ४। लोककांत ५। लोकवर्ण ६। लोकलेश ७। लोकरूप ८। लोकशृंग ९। लोकसिद्ध १०। लोककूट ११।

दूर्वर्त्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहादुपमानत्रयेणास्यसमर्थयन्नाह सिंहइवसिंहः पुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिसिंहेशौर्य
मतिप्रकृष्टमभ्युपगतमतःशौर्येसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोबाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाप्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहृतिप्रवर्द्धमानामरशरी
र कुञ्जताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकञ्चवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च
शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासौगंधहस्तीएववरगंधहस्तीपुरुषएववरगंधहस्तीयथागंधहस्तिनोगंधेनैवसर्वगजाभज्यन्तेतथाभगवतस्तद्देशविहरणेन
ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरिकादीनिदुरतानिनश्यंतीतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्पुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत
आहलोकस्यतिर्यग्नरनारकिनाकिलक्षणजीवलोकस्योत्तमश्चनुस्त्रिंशद्बुद्धातिशयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको
त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसन्निभव्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनाथस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नाथइतिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकर
णेनलब्धस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्त्विकंतद्धितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेंद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्षाप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति
र्लोकहितस्तेन यदेतन्नाथत्वहितत्वंवातद्भयार्त्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्याहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि
कारनिराकरणेनप्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृष्टंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति

पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपांणीयेंनलीपैंतिमभगवंतकामभोगेंनलीपैंतेणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदछ'डेईतिमारीनासेभगवं
तनेदेखोनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतेणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनाथधणीतेणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेणे लोक १४ राजप्रमाण

तथाउप्पायपुव्वेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यत्रतेषामेवाग्रपरिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीय तइयंचवीरियपुव्वति । यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अत्थिनत्थिपवायति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो

वेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदियाअपज्जत्तया च उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चऊद्दसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वमग्गेणीयच तइयंचवीरियपुव्व अत्थीनत्थिप्प

लचणपरिचारे पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभेद १ । सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेंआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २ । बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३ । बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४ । बेंद्रियअपर्याप्ता ५ । बेंद्रियपर्याप्ता ६ । तेंद्रियअपर्याप्ता ७ । तेंद्रियपर्याप्ता ८ । चतुरिंद्रिअपर्याप्ता ९ चतुरिंद्रियपर्याप्ता १० । पचेंद्रियअसन्नी अपर्याप्ता ११ । पचेंद्रियअसन्नीपर्याप्ता १२ । पचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३ । पचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४ । एकेंद्रियमाहि ४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय १ श्वासोश्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता त्रिणिकरी मरेते अपर्याप्त । बेंद्रिय १ त्रेंद्रिय २ चउरीद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पचिंद्रियमांहि पाचपर्याप्ति थारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि जेतलीकही तेमांहीएक उछीहोय तेअपर्याप्तिकहिये । चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे बखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे । उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानो उत्पादछे १ । बीजोअग्र णीय जेमाहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २ । त्रीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३ । अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

लोक इतिव्युत्पत्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्यभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
प्रवर्त्तनेनप्रद्योत प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगी हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसभवतीतिको
स्यविशेषइत्याशङ्कायान्तद्विशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिण्यपिप्राणिनि ददातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोती
तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानशुभाशुभार्थविभागकारित्वा त्तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकेचक्षुर्दत्वावाञ्छितस्थानमार्गंदर्शयन्महोपकारी
भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकंपरमपदपथदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गंदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच
क्षुरुद्घाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणंत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र
क्षास्थानतच्चपरमार्थतोनिर्वाण तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचक्षुर्मार्गशरणदानादूर्द्धस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेण अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

तिहांदोवासमानमिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणेसहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे समकितरूपलो-
चनानादातारतेणे भूलाप्राणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे सयमरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्तनादातारतेणे धर्म

चलोकस्य बिन्दुरिवाक्षरस्य सारं सर्वोत्तमंयत्तल्लोकबिंदुसारमिति तथाचोद्दसवत्थूणित्ति । द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानिच चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त
थासाहस्सिओत्ति। सहस्राण्येवसाहस्रं तथाकम्मविसोहीत्यादि कर्मविशोधिमार्गणां प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि
जीवभेदा' प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीतादृष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्मदिट्ठित्ति । सहेषत्तत्वश्रद्धानरसास्वाद
नेन वर्त्ततेइतिसास्वादनः षण्डालालान्यायेनप्रायः परित्यक्तसम्यक्त्वस्तदुत्तरकालषडावलिकस्तथाचोक्तं। उवसमसम्मत्ताउय यउमित्यश्रपाउपाणस्स। सासायण
सम्मत्तं तदतरालंमिच्छबलियति । सास्वादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चेतिविग्रहः सम्यामिच्छदिट्ठित्ति सम्यक्त्वमिथ्यादृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

दुसवत्थू प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स चउद्दसमणसाहस्सिओ उक्कोसियासमणसंपया होत्था कम्मवि
सोहिमग्गणं पडुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मित्थदिठी सासायणसम्मदिठी सम्मामित्थदिठी अविरयस

लोकनेबिंदुनोपरि अक्षरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४ । अग्रणीयवोजुपूर्वजाणिवु तेहना चौदवस्तु भागविशेष भूलावस्तुनीतिकह्या। श्रम
णतपस्वीभगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदश्रमणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनी उत्कृष्टी साधुनी सपदाऋद्धिहुई। ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि
गवेषणा पडुच्च आश्रीने चौद जीवनास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे । मिथ्याविपरीतछे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १ । थोडोतत्व
श्रद्धानरूपरसास्वादेंकरी सहितवर्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २ । सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीछे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांइकसम्यक्त रुचि
कांइक मिथ्यात्वें रुचिएतले मिश्रगुणठाणूंत्रीजूं ३ । अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठान ४ । विरताविरतिश्रावक ५ प्रमत्तसंयती

जीवोभावप्राणधारणमरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयतइति जीवदयोजीवेषुवा दयायस्यसजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं विशेषणकदंबकंभगवतोधर्ममयस्तत्वात् संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंक्तेनाह धर्मश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जतुधारणस्वभावदयतेददातीतिधर्मदयस्तेन तद्दानचास्यतद्देशनादेवेत्यतो आह धर्मसुकालक्षण देशयति कथयतीतिधर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्यथानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यचायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्यनायकः स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्द्धर्मसारथिः यथारथस्यसारथी रथरथिक मश्वांश्चरक्षति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसंयमाप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथाचत्वारः समुद्रा चतुर्थे हिमवान् एतेचत्वारः अताः पृथिव्याःपर्यन्तास्तेषु स्वामि तयाभवतीति चातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीच चातुरंतचक्रवर्त्ती वरश्चासौचातुरतचक्रवर्त्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतॄणांमध्ये सातिशयत्वात्तथो

जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसा
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणेकथो धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूलाप्राणीनेमार्गेआणेतेणे चारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीचक्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननोराज्यपालेतेणे द्वीपनोपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअस्खलित

५ यस्तेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्रइति ६ कालेत्ति यःकंडादिषुपचतिवर्णतः कालयसकालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति
प्रक्रमः सचक्षणमासानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतयमहाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवद्वनविकुर्व्य यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र
पातनेन तिलशश्छिनत्तिसोऽसिपत्रः ९ धणुत्ति योधनुषिमुक्तार्धचन्द्राद्बाणैः कर्णादीनां च्छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तियः कुम्भादिषुतान्
पचतिसकुम्भः ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तप्तमासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेत
रणीतिचपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिरवपुचांबादिभिरतितापात्कलकायमानैर्भृतां विरूपंतरणप्रयोजनमस्यांते वेतरणीति यथार्थानदीविकुर्वंस्तत्तारणेन
कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरेत्ति योवज्रकण्टकाकुल शाल्मलीवृक्ष नारकमारोप्यखरस्वर कुर्वंतंकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्सरेति १४ सहाघोसेत्ति योभी

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणाथकी रुद्र ५। नारकीना आंगोपांग भाजेते अत्यंतरौद्र ६। नारकीने कडाहीमां घालीनें पचावे तेकाल ७।
महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासनां खंडकरीखाय वर्णेकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठीं नारकीने वेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे
विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी९। तेहना धनुषथकी अर्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे
भेदे तेधनुषनाम १०। कुंभत्ति कुभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुभ ११। कदंबपुष्पाकारें वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवा
लुक १२। वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरूतांबो महातप्त कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने बोलेंकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३। खरस्वरइति वज्रम
य कांटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा उपरि लूगडूंनाखीने तांणी तेखरस्वर१४ महाघोसेति वीहता नासता

श्लोकस्य मध्ये लोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरित्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिउत्तरोमेरुत्ति दिसाइयत्ति दिशामादि रित्यर्थः वडिसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सइवावतस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचचावली चचाभिधान राजधान्योर्मध्योन्नताऽवतरत्पार्श्वपीठरूपेऽवतारिकलयने षोडशयोज नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्ध्व गततस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राण्यतउ च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्धा प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तत्रव्यक्तं

त्येण सूरिणावत्ते सूरिणावरणेतिण उत्तरेय दिसाइण वडिसेइण सोलसमे पासस्सणअरहतो पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीउ उक्कोसीणाणंसपदाहोत्था णायप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरवली ण उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइ णायामविक्कंभेण प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

भरतादिकचेथकी उत्तरदिशाछे तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानी आदिछेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतस सर्वपर्वतनो मुगुटरूपछे एम १६ नामहु या। पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी सपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनूंपूर्व तेहना सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषकह्या। चमर चचावली चचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीलयन तेहआवासनी पीठीका सोलसहस्र योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्यो। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पचाणूं सहस्रयोजनेईइतिहां मध्यभागेदगमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनीपरि

षांतयामुक्तचेपि सर्वज्ञेनसर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा इतिमतपुरुषेणेवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाद्यं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत् सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिंस्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंक्षीणकर्मणोजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका ग्रस्याधेयधर्माणामाधारेस्यारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवंति मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन भगवताइमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नद्वादशांगानियस्मिंस्तद्वादशांगं गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिजक

सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं
ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

नोअंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीजपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछे एहवेठामे मोक्षेंजाइवानीवांछा करेछेतेणेमहावीरेंएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

वोईमरणेति आसमंताधीचयइव वीचयआयुर्दलिकविच्युतिलक्षणाअवस्था यस्मिं स्तदावीचि मध्यावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे वभूतंमरणंऽवीचिमरण प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविघटनलक्षणं तथाअवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरण यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्वृत्तावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेति आ त्यंतिकमरण यानिनारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभाविता दात्यंति कमिति वलायमरणेति संयमयोगेभ्यवलतां भग्नव्रतपरिणतीना व्रतिनांमरणं बलान्मरणं। तथा वशेनेंद्रियविषयपारतंत्र्येण मृताबाधितावशार्त्ताः स्त्रि ग्धदीपकलिकावलोकना कुलशभवन तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदंयस्य सोंतःशल्योभिमानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः शल्यमरण तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बध्नापुनः तत् क्षयेनम्रियमाणस्यभवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यङ् मनुष्याणामेव तदेवनारकाणा तेषा तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालाइव बालाअविरता स्तेषां मरण बालमरणं तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषामरणं पंडितमरण बालपंडि

आवीइमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि

युभवने बंधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनंपूरूं आउखुं भोगवीओवलतो फरीने बीजेभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम रेते वलातमरण ४। पतगादिकनी परीइन्द्रियनेवशें मरेतेवशार्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेतेअंतःशल्यमरण ६। जेमाउखुंभोगवी मरेवलीउपराठो यो जेभवेतेहीजआवे जिमममुष्यतिर्यंच पोतानूं आउखुं भोगवीकरी वलीबीजेभवेतेहीजमूं आउखुंपामे ७। अविरतीनू मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

स्यापिपिटकं सर्वस्याधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्याधारकल्पं भवति इतिभावः प्रश्नः तीर्थंकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः कृतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शनेआचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठ्यानि तत्यणति तत्रद्वादशांगेण ॥

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७ अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननोआधारछे कह्योछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुंसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी वक्तव्यतापामीये २ त्रीजूंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसंख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांगजिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांच मोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्रप्रश्नपांमीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छठ्ठोज्ञाताधर्मकथांगजिहां १९ न्यायअनेअजठकोडिधर्मकथाएछठ्ठो ६ सातमोउपासक दशांगउपाशकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमोअंतकृतदशांगजेणेयतीएससारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमांहिछे नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेह यतीअनुत्तरविमांनेजपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअंगुष्टादिकप्रश्नोअधिकारहुंतोहिवडांपाचआ श्रवपांचसंवरद्वारइम १० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीयाअध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वेएक ॥

त्तेत्यादिसार्द्धरूपकद्वयमिदंच षष्ठांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबुद्दीवेणं इत्यादीभावनारत्नयः स्वस्थानादुपरियोजन शतंतपतोऽधश्चाष्टादश शतानि । तत्रच समभूतलेऽष्टौभवंति दशचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवन्नेत्रमंतिमविजयद्वयस्थदेशे अधोलोकदेशेसहस्रमिति द्वीपांतरसूर्यो स्तूर्द्वशतमधोष्टशतानि चेत्रस्थसमत्वादिति तथा शुक्रमूचेनक्षत्राद्रति विभक्तिपरिणामात्रक्षत्रैः समंसहचारंचरणं·चरित्वाविधेयेद्रति तथाकलाओत्ति पं

तलीइज्ज नंदिफले अवरकंका आइसे सुंसमाइज्ज अवरेज्ज पोंडरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिज्जा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उड्ढंमहातवयइ सुक्केणंमहग्गहेज्जवरेणं उइज्जसमणे एकूणवीसंणक्खत्ताइं स मंचारंचरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेज्जणाउ प० एगूणवीसं

राजधानीनो द्रुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुंडरीक कुडरीकनो न्यायउगणीसमो १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पोतानाविमानथी एकसोयोजन ऊचोतपे प्रकासे अनेसमेभूतलेगइ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहली विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेक्षा एकसहस्रयोजन भुईजडीछे तिहा प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसे ऊगीयको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपद्वीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतलें भरथचेत्र ५२६ योजन अनेंउपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभा

मि यज्ञकारि यत्तच्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं। तस्यायमर्थः आत्मादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतद्यथेतिवाचनांतरद्वितीयसंबंधात्सूत्रव्याख्येति । इहचविदु षाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तत्राचार्यःएकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वेपदार्थाभा जकत्वेनप्रधानत्वादात्मानीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापिकिंचिदुच्यते एकआत्माकथविदितमितिगम्यते इदञ्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीय तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यार्थतया एकः अथवाप्रतिक्षण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष यैकत्वमात्मनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमठे पं० तंजहा एगेआयां एगेअणाया

अंगएद्वादशांगोतेद्वादशांगोमांहिजेहतेह चोथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगसरीखोअंग समवायांगसूत्र आहियेकह्योसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि- कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहैतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभोक्तारआत्माछेतेमांटेप्रधानपणाथकीआत्माप्रथम अवतस्योचेतनावंतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजीवअनंताछेपरंषट्द्रव्यनोअपेक्षाएजीवद्रव्यएकजकहीयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणोएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारवोयोगत्रणिनोतेदंड

कारः ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमिः १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसतिः संस्तारकोवा ११ आक्रो शोदुर्वचनं १२ बधोयष्ट्यादिताडन १३ याञ्चाभिक्षण तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्शः संस्तारकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज ल्लःशरीरवस्त्रादिमल' १८ सत्कारपुरस्कारौ वस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करणं सन्मानन सत्कारपुरस्करः १९ ज्ञानंसामान्येनम त्यादि क्वचिदज्ञानमितिश्रूयते २० दर्शनंसम्यग्दर्शनंसहनचास्यक्रियादिवादिना विवर्जनतः श्रमणेपिनिश्चलचित्ततयाधारण २१ प्रज्ञास्वयंविमर्शपूर्वको वस्तुप रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशांगःसचपचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरी सहे दंसणपरीसहे दिठिवायस्सणंबावीससुत्ताइ छेन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा सथारानो परीसह ११ । अक्रोध वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयष्ठादिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३ । याचनाभिक्षानो मागिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनो अपाप्ति तेपरीसह १५ । रोगमदवाड तेहनोपरीसह १६ । सथारासबधी तृणतेनोपरीसह १७ । जल्लशरीर वस्त्रा दिकनोमल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनो पूजाअठी अभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सन्मान तेहनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह नोपरीसह २० । ज्ञानमतिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१ । दसणतेसम्यक्त्व तेहथकी अेचलवो तेदसणपरीसह २२ । दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

यापि तुल्यरूपापेक्षयातु अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिद्भिन्नस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र युक्तमनोवाक्कायलक्षणे हिंसामात्रं एकत्वचास्यसामान्यतयोद्देशादेवं सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोऽदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा तथाएकाक्रियाकायि क्यादिका आस्तिक्यमात्रंवा तथा एकाअक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वंवा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपिवा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो कोऽनंतप्रदेशोपिद्रव्यार्थतया अथचैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेनपरेसूत्रेअभ्युपगम्यंतेच कैश्चिद्बहवोलोकाअतस्तद्विलक्षणाअलोकाअपितावंतएवेति एवंसर्वत्र गमनिकाकार्या। नवरंधर्मोधर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यंशुभंकर्म पापमशुभंकर्म बंधोजीवस्यकर्मपुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादनेनोद्देशेन मोक्षाश्रवसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति द्रव्यानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं प्रत्याप्यपुन

एगेदंडेएगेअदंडे एगाकिरिया एगाअकिरिया एगेलोए एगेअलोए एगेधम्मे एगे
पुण्णे एगेपावे एगेबंधे एगेमोक्खे एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

एकअदंडभक्तामनोप्रभृतियोगत्रयि एकक्रियाकरिवोतेक्रियाकायिक्यादि एकअक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपित्रयिलोकक्षेपरंद्रव्यार्थपणेएक एकअ लोकपंचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म एकपापअशुभकर्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजो डिवो एकमोक्षसर्वकर्मबंधथकीमूंकावणो एकआश्रवकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

न्यापेक्षमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाचिन्त्यन्ते यानिनयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते चैराशिकसूत्रपाठ्या इहचैराशिकागो
शालकमतानुसारिणोऽभिधीयंते यस्मात्तसर्वंच्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिंतायामपि ते
त्रिविधनयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्यत्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइंति नयचतुष्का
भिप्रायात्तेचिंत्यंतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कंचैव नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तत्रयः सामान्यग्राहीससंग्रहेऽंतर्भूतो विशेषग्रा
हीतुव्यवहारे तदेवसंग्रहव्यवहार ऋजुसूत्राः शब्दादिनयचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामणवादीनांपरिणामोधर्मः पुद्गलप
रिणामः सच पंचवर्णगंधपंचरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुश्चेति भेदद्वयेनैषाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्यं यतिर्यग्गामवाय्यादिः अगुरुल

बावीसंसुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवण्णप
रिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरि

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक
२ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे । बावीससूत्र चतुष्कनयवंतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र
स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेछे। कालव
र्णकरी परिणतथाय तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम २। हालिद्रपीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

लोकादितयाएकत्वप्ररूपण तत्सामान्यविशेषोपेक्षमवगंतव्यमिति एवचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपंचानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनात्मानात्मपरिणा
मरूपाणामर्थानांतदेवाह जबूइत्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोधं
नवरं जबुद्दिवेदीवे इहसूत्रेआयामविक्खंभेणतिक्वचित्पाठोदृश्यते क्वचित्तुचक्कवालविक्खंभेणंति तत्र प्रथमःसंभवत्यत्रापि तथाश्रवणात्सुगमत्व द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये
ययक्कवालविक्खंभेणइत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेय यदाह आयंगुलेणवत्थुं उस्सेहपमाणओमिणसुदेहं नगपुढविविमाणाइं मिणसुपमाणंगुलेणंतु ॥ १ ॥
तथा पालकंयानविमानं सौधर्मेंद्रसंबंध्यपि आभियोगिकपालकाभिधान देवकृतं वैक्रियं यानंगमनंतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमानं यानविमा

जंबुद्दीवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं आयामविक्खंभेणंपन्नत्ते अप्पइठाणे
नरएएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पं० पालए जाणविमाणे

विवो एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेयवीकर्मपुद्गलनूंवेगलूंकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमांहिमुख्यद्वीप एकयोजनशतसहस्रएतले। एकलाखयोजनप्रमाणांगुले।
लांबपणेप्रनेपिडुलपणेकह्योतीर्थंकरे । सातमीनरकपृथिवीये पांचनरकावासाछे तेमाहिविचलो अपइठाणनामनरकावासोएकयोजनशतशहस्रएतलेएक
लाखयोजन लांबपणेअनें पिडुलपणेकह्यो । पालकयांनविमानसौधर्मेंद्रसंबंधिअभियोगीदेवताएनीपजाविओगमननेअर्थंते एकलाखयोजनजाणवो लां
बपणेप्रनेपिडुलपणेकह्योछे पंचानुत्तरविमानमांहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानछेतेमांहिएकाभवतारीजीवउपजेतेमांटे महाविमानकहियेंतेएकलाखयो

घुर्यः स्थिरंसिद्धक्षेत्रघण्टाकारव्यवस्थितो ज्योतिष्कविमानादीनि । तथामहितादीनिषट्विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानकं सुगममेवनवरं

कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिओवमाइ ठिई प० अच्चुते कप्पेदेवाणं बावीससागरोवमाइं ठिई प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिअ विसूहिअ विमल पभासं वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं बावीसाएअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं बावीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेबावीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति ॥ २२ ॥

केतलाएकदेवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो। अच्युतबारमेलोकेदेवतानोउत्कृष्टोबावीस सागरोपमआउखोकह्यो नवग्रैवेयकमाहिसगलाहेठिलोग्रैवेयक एतलेपहिलेग्रैवेयकना देवतानोजघन्य बावीससागरोपम आउखोकह्यो । बारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५ अच्युतावतंसक ६ । एहछविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानीउत्कृष्टी बावीससागरोपम स्थितिकही । तेहदेवताबावीस अर्धमासेपखवाडे खासो खास घणीले नीचोमूंके तेहदेवतानो बावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीवजे बावीसभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बावीसमो ठाणूंसम्मत्तम् ॥ २२ ॥ हिवेतेवीसमोसमयायलिखियेछे । तेवीससूत्रकृतागबीजूंअंग तेहना अध्य

नं पारियानिकमितियदुच्यते अथीत्यादि अस्तिभिदाते ऐकेषांचित्नेरयिकाणा मेकपल्योपमं स्थिति रितिकृत्वाप्रज्ञप्तापवेदितामया अन्येषजिनेः साचचतुर्थेप्र ॥

गेएजोयणसयसहस्संआयामविक्कन्नेणं प० सव्वट्ठसिद्धेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्संआयामविक्कंभेणं प० अद्दानक्खत्तेएगतारे प० चित्तानक्खत्तेएगतारे प० सातिनक्खत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिओवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइआण उक्कोसेणएगंसागरोवमंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगसागरोवमठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणएगसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

जनलांबपणेंअनेपिहुलपणेंकह्यो। आर्द्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे । चित्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे । स्वातिनक्षत्रनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकपल्योपमस्थितिआउखोभगवतेकह्योछे । एणीयेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीने नारकीयांनो उत्कृष्टोएकसागरोपमस्थितिआउखोकह्योछेभगवते बीजीयेनरकपृथवीने नारकीयांनोजघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवतेअसुरकुमारभवनपतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउषोकह्योभगवते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोआभ्रेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो

तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीस सागरो वमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवी स पलिओवमाइं ठिई प० हेठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेठिमहेठिमगेवेज्जयविमाणंसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीस सागरोवमाइं

गनापारगामीहुया । तेकहेछे । अजित १ । संभव २ । अभिनदन ३ । सुमति ४ । जावत्शब्दें पार्श्वनाथ छेइहे वर्धमानस्वामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त को शलदेशना अपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें तेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मडलीक राजाहुया ते कहेछे । अजितनाथ सभव अभिनदन यावत् वर्धमानस्वामीलगे ऋषभ अरिहंत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनोतेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठेसातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमारदेव तानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । सोधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एत ले बीजे ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतिवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृ

स्तटे मध्यमावसेयेति एवमेकंसागरोपमं त्रयोदशेप्रस्तटेउत्कृष्टास्थितिरिति असुरिन्द्रवर्ज्जियाणतिचमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनांभूमौपृथिव्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषांचैकंपल्योपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्वेपल्योपमे साग्राहच दाहिणदिवढ्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणंति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्काश्चेचते पंचेद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः सन्निपचेंद्रियतिर्यग्योनिकास्तेषांकेषांचिद्येहैमवतैरण्यवतवर्षयो रुत्पन्ना स्तेषा मेकंपल्योपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भेगर्भाशयेव्युक्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युक्रांतिका नसमूर्च्छन

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणंदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिओवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिओवमंठिई प० ।

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एकेकनोकेतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआजखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआजखानासन्नीगर्भजपंचेंद्रियतिर्यंचनोएतलेंहैमवंतऐरण्यवंतयुगलचे भनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यंचनो आजषोउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुसकगर्भजमनुष्यनूंआजषूंपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणपाठमह्योकेतलाएकनूंएकपल्योपमस्थितिआजखोकह्यो। असंख्यातावर्षनाआजखानोगर्भज

वर्षाणांवर्षधराणां ऋद्धिसीमाजीवोच्यते आरोपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्चलघुहिमवच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ९ ३२ । अष्टत्रिंशद्भागश्चयोजनस्य किं विशिष्टाधिकः भवगाथा चउवीससहस्साइ नवयसएजोयणाणबत्तीसे चुल्लहिमवतजीवा आयामेणकलहंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्द्धं तत्राष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिदेवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनांअष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्काना एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः सेंद्राणिचमरेंद्रादाधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रायेषुतान्यहमिंद्राणि प्रत्यात्मेंद्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिंद्राणि अविद्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगत' सर्वाभ्यतरमण्डल प्रविष्टः सूर्यःकर्कसंक्रांतिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यंगुलिकांपौरुष्यां प्रहरेभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यकृत्वा णवाक्यालका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ चउवीस चउवीसं जोयणसहस्साइं णववत्तीसे जोयणस ए एगं अठत्तीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणासइंदिया प० से

२४ । मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमाहि छेहल्यो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए त्रिहुवर्षधरपर्वतनी जीवाछेतनी अने वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्रीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अठीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कांईक विशेषाधिक लाबपणेकही । चौबीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर २७ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

जाइत्यर्थः वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीना तासामर्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां नापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचसयसहस्सं चन्दाणविआउजाणो इतिवचनात् सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपल्योपमाजीवनत राशितिर्जघन्यतोपिनास्ति इयचप्रथमप्रस्तटेऽवसेया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाण देवाणएगसागरोवममित्यत्र देवानामेवग्रहण नतुदेवीनांउत्कृष्टतोपितत्रतासां पचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात् प्रस्तटापेक्षयास्त्वेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिओवमं वाससयसहस्समज्झहियं ठिई प० । सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं एगंपलिओवमंठिई प० । सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमठिई प० । ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

संज्ञीपचेन्द्रियमाणसनूंएतलेहिमवंतऐरण्यवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआजषूंकह्योभगवंतेयांणव्यतरदेवनो उत्कृष्टोएकपल्यो पम जघन्य १० सहसवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमांनवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडीस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे । सौधर्मेप्रथम देवलोकेदेवनो जघन्यएकपल्योपमस्थितिआजखोकह्यो सोधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआजषो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्क ष्टोपचासपल्योपमकह्यो ईशानजीजेदेवलोके देवनीजघन्यझाझेरी एकपल्योपमएवडीस्थितअभंतग्यानीये कही ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

निर्गमइहसभाव्यते नपुनर्यइत्यत्रप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥ ॥

णं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि आहारठेसमुप्पज्जई संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ २४ ॥ पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पचजामस्सपणवीस भावणाउ प० तं० इरियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

कह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चौवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेबीजूं ग्रैवेयक तिहाना देवतानो जघन्यो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता चौवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउबीसवर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेचौवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मुकास्ये सर्वदुःखनो अतकरस्ये मोचजास्ये ॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे । पहिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थंकरनेवारे यतीना पचमहाव्रतनी पचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवाना उपाय तिहा पहिला महा

या । ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्यश्चगृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरेवनास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे
वानामेवग्रहणंनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमणुंमानु
षोत्तरं लोकहित मिहचकारोद्रष्टव्यः ससमुच्चयस्यद्योतनीयत्वाद्विमान देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रस्टटेवसेयानिस्थित्यनु
सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषःआनंति
प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःस्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्ष्यसहस्रस्यान्त इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

न्नेणंसाइरेगंएगंपलिओवमंठिई प० । ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प० । जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएंउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

रोपमनीस्थितकही । ईशान देवलोके सातमेप्रतरेंजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेविमांणे
देवतपणेऊपनाछे । ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएकअर्द्धमासेऐतलेऐकणिपखवाडे आणमंतिथोडोस्वासलै पाणमंतिघणो
लेआणमंतिप्राणमंतिऐहअंतवृत्तिस्वासउसस्संतिनीससंतिएहवाह्यवृत्तिकेइकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआउखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

बकप्पस्स दसववहारस्स अन्नवसिठ्ठियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं० मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हास अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी सेण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ त्थेगइयाणं नेरइयाण छव्वीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओव माइ ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्ज याणं देवाणं जहन्नेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया। जेहने अनादि अनंत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीपने मोहनीकर्म चौथो तेहनीमूल २८ प्र कृतिछे तेमांहि अभव्यजीवने त्रिपुजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अग्रकर्मनी प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे। मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले कषाय अनतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ सज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलतां १७। प्रकृति स्त्रीवेद १८। पुरुषवेद १९। नपुसकवेद २०। हास्य २१। अरति २२। रति २३ भय। २४। शोक २५। दुगछा २६। एणीवेरत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो छब्बीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठोयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानो २६ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनो २६ पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यम २ ग्रेवेयके एतले पाचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

लानांग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति गाथेह जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सतत्तिएहिंपक्खेहिं जसासो देवाणंवा ससहस्सेहिंआहारोत्ति संतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनीसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजन्मनो ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यते केवलज्ञानेनतत्वं मोचंतेकर्मराशेःपरिनिर्वास्यंति कर्मकृतविकारहाच्छीतीभविष्यन्ति किमुक्तंभवतिसर्वदुःखानामंतङ्करिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादेकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्विविनाह दोदंडेत्यादि सुगममाद्वि

रोवमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सअद्धमासस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

सासकहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनोइच्छाजपजे । जंचोखास ते उत्खास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेहदेवने ऐकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थजपजे । संतेकह तांछेएकेकभवसिद्धियाकहतांभाविनीहोणारीछे ढूंकडीसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभव्यजीव ससारमांहितेहलघुकर्मीएकभवनेआंतरेसीझस्ये कृतार्थथास्ये बूझस्ये केवलज्ञानेकरीसकलससारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मेकीधोविकारतेहनारहितपणाथकीठाढाहोस्ये । सकलशारीरीदुःखनोमानसीदुःखनोअंतकरिस्ये-ऐतलेएकठाणोकहियो ॥ १ ॥ हिवेबीजोअधिकारकहेछेबेदंडकह्यो भगवतेजेणेकरीपरनाप्राणदडीयेहणीयेतेदडकह्यो तेकहेछे अर्थदड तेआत्मानेअर्थे पर

उयरउत्ति प्राकृतत्वादुदलकोवियोजकोजनुः तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्वलि
तत्वादिति। तथाश्रावणमासस्य शुक्लसप्तम्यांसूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिकां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषीछायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्ररविकरप्रकाशमाकाशनिव
र्षयन् प्रकाशक्षान्याक्षानिनयन् रजनीक्षेत्रमंधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्षयन् प्रकाशक्षानिवृद्धिंनयन् चारक्षरति व्योममण्डलेभ्रमणकरोति अयमत्रभावार्थ
ग्रहकिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायाअंगुलवर्द्धते ततश्चश्रावणशुक्लसप्तम्यामंगुलत्रयवर्द्धते
सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकेरंगुलैः सप्तसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतेरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं
गुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताणं दिवसक्खेत्तंनिवड्ढमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवड्ढमाणेचारंचरइ इमीसेणं
रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

मोहिनी माहिथी। श्रावणसुदि सातमदिने सूर्यस्तंभप्रमाणे हाथनी छायायेनांपियें तेमांहि २७ अंगुलीये पोरसीनी छायाने निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र
सूर्यनोप्रकाश वधाउतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनीजात आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे
मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनमांतिवेभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे। एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो
छिए सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

स्थानकसमाप्तेर्नवरमिह दंडराशे बंधनार्थंसूत्राणांत्रयंनक्षत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंत्रयोदसकमुच्छ्वासाद्यर्थंत्रयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांद्वेसागरोपमेस्थितिःषष्टप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

अठादंडेचेव अणठादंडेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुवि हेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० । उ त्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिओवमंठिई प० । दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ

नेअर्थेआगलानाप्राणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेंपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे वेराशिसमूहकही तेकिसी कहेछे । जीवराशिजीवनासमूह अजीवरा शि अजीवनासमूह वेप्रकारे वंधनकह्या तेकहेछे रागवंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषवंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनावेताराकह्या भगवते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना वेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बितारा कह्या । उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनावेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनो चोथेपाथडे वेपल्योपमस्थितआजघंमध्यमकह्यो बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छठेपाथडे वेसागरोपममध्यस्थितिआ

नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ द्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनों २९ पल्योपमनो आऊखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनों २९ सागरोपमनो आऊखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणत्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। सौधर्म ईशानेंकल्पें केतलाएक देवतानीं २९ पल्योपम आऊखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयकें एतले आठमें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यतः २९ सागरोपमनी स्थितिकही। जेहदेवता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी २९ सागरोपमनी स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासोसास च्यार प्रकारहोय। तेहदेवताने २९ सहस्रें वर्षेंगए आहारनी इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये स

आणंदोपलिओवमाइंठिई प० असुरिंदवज्जिआणं भोमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिओवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइआणं दोपलिओवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं अत्थेगइयाणंदोपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं दोपलिओवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेअत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणदेवाणं उक्कोसेणंदोसागरोवमाइठिई प० ईसाणेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइठिई प० सणंकुमारेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

जघं कह्यो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो बेपल्योपमनूं आउषो कह्यो । असुरेंद्रचमरेंद्र बलेंद्रटालीने बीजीभूमिसंबधि उत्तरदिशिनानागदेवतानो उत्कृष्टोकाईकोओछोबेपल्योपमनोआउषो कह्यो असख्यातावर्षना आउखाना गर्भजमानुष्यना एतले हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रसंबधी युगलियामनुष्यनु केतलाएकनो त्रिपल्योपमआउषो काहिक सौधर्मे पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो त्रिपल्योपममध्यमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देवतानूं त्रिपल्योपमआउषोकह्यो । सौधर्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो बेइसागरोपमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोआउषोरो

तेषुवा अट्टप्यत्तृप्तिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभरणदीप्तिः यश'कीर्त्ति वर्ण' शुक्लादिः शरीरसबन्धी देवाना वैमानिकानाबलशारीर वीर्यजीवप्रभवंअस्त्यत्यध्याहारः तेषामिहअपेर्गम्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोक्तापेन देवानामृद्धिर्देवानाद्युतिरित्यादिका काव्याख्येयं नकिंचिद्देवानामृद्ध्यादि कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवभूतः समहामोह प्रकरोतीति एकोनत्रिंशत्तम २९ । अपश्यन्योब्रूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोह प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्ताश्चादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषाचमध्येमध्यमाः षट्

अदुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंतोआसयइ । महामोहपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवीरिय ॥ तेसिंअवस्सवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ अपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्खेयगुज्झगे ॥ अस्साणी जिणपूयट्ठी । महामोहपकुव्वइ ॥ ३४ ॥ थेरेणंमज्झियपुत्ते तीसंवासाइंसामन्नपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे

देवतानी बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यक्षने व्यतर विशेषने गुह्यकने अनादरतो थको हुआदरुछु एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहतनी पूजानो अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३० मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मुडितपुत्र छठ्ठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । कृतार्थथयो तत्वनो जाणकार थयो यावत्

रेंद्रवर्जितभवनवासिनांद्विदेशोनपल्योपमस्थितिरौदीच्यनागकुमारानाशित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिल्लाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेंद्रियतिरिश्चांमनु
ष्याणांचहरिवर्षरम्यकवर्षजन्मनांद्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथत्रिस्थानकांतओइत्यादिसर्वंसुगमं नवरमिहदंडगुप्तिशल्यगौरवविराधनार्थंसूत्राणां

जेदेवा सुन्नं सुन्नकंतं सुन्नवन्नं सुन्नगंधं सुन्नलेस्सं सुन्नफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं
देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा दोण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उसस्सं
तिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणदोहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ अत्थेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे
दोहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति मुच्चिस्संति बुज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २ ॥

बिद्रसागरोपमआजपोकह्यो सनत्कुमार त्रीजेदेवलोकेदेवतानूं जघन्यबेसागरोपमआउषोकह्यो माहेंद्रचोथेदेवलोकेदेवतानो जघन्य त्रिसागरोपमभाभेरी-
आजषानीस्थितिकहीसौधर्मदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि
मानेदेवतापणेउपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो बेसागरोपमआजषोकह्यो तेहदेवनेबिहुंअर्धमासेएतलेबिहुपखवाडे आणप्राणहुयेंआणथोडोस्वासप्राणतेघणोउ
त्स्वास उत्स्वासतेउचोलेवोस्वास नीसासतेसासनीचो मेल्हिवो तेहदेवताने बिहुयें वर्षसहस्रे तेहने आहारनोअर्थउपजे आभोगआहारस्ये संसारमांहिकेत
लाएकभवसिद्धीयाभव्यजीव जेबिहुयेभवग्रहणे बेभवनेआंतरेसीझस्ये कृतार्थथास्ये तत्वमाजांणथास्ये कर्मबंधथकीमूंकास्येकर्मकृततापटालवाथकीठाढाथास्ये

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमंस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका

रसंति ॥ ३० . ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेयणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो

रे सीझसे बूझसे मूंकासे सर्वदुःखनो अंत करिसे मोक्षजासे ॥ इति चौसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे । एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी जपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे । चौण थयोछे आभिनिबोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्वथापि मतिज्ञानावरण क्षय गयो छे जेहनो १ । चौणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २ । वली अवधिज्ञानावरण क्षय ३ । मनःपर्यवज्ञानावरण क्षय ४ । केवलज्ञानावरणक्षय ५ । चक्षुदर्शनावरणक्षय ६ । अचक्षुदर्शनावरणक्षय ऐतले आंखटाली वीजा चारइंद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनो क्षय ७ । अवधिदर्शनावरणक्षय ८ । केवलदर्शनावरण क्षय ९ । सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोक्षय १० । दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो क्षय ११ । वैठांजभां आवे ते प्रचला तेहनोक्षय १२ । चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोक्षय १३ । थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोक्षय १४ । सातावेदनीयकर्मक्षय १५ । असातावेदनीयकर्मक्षय १६

पंचकं नवत्रार्थसप्तकं स्थित्यर्थनवक मुच्छ्वासाद्यर्थत्रयमिति । तत्रदंडतेचारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादुःप्रयुक्तमनः प्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिगुप्तयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्पानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैवशल्पं मायाशल्पणमित्यऽलकारे एवमितरेऽपि नवरनिदानं देवादिरिद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानात्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शन मत्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणिअभिमान

तउदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । तउगुत्तीउ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । तउसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिये ऐतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे । तीनदंडक छा जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकरीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंडपणिहमज ३ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यछे तीरनीपरे शल्यसरीखा शल्य भाल दुखदायकपणाथकी ते कहेछे मायाकपटतेछीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वाछवो २ मिथ्यातशल्य

वति तथाचतृतीयेमडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्तांश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणंभवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ट्यधिक शतत्र यलक्षणेन स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशाः ३१८२२९ तृतीयमडलपरिधौगुणितेसति एकषष्ट्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमडलेच क्षुः स्पर्शप्रमाणभवति तच्चद्वात्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ट्याभागलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९ । ६० त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३ । ६१ एतत्तृतीयमडले चक्षुःस्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्त त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्यूना तत्सातिरेकस्ययोज नस्यापिन्यूनसहस्रता विवक्षितेतिसभाव्यते चतुर्दशेमडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणभवति प्रतिमडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममंडलमानेप्रक्षेप

हि किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइ ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइ ठिई अप्पइठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई प०

चाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार झांझेरो दृष्टिगोचर आवे । त्रीजे मडले सूर्य चारकरे तिवारे वारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस ठिया चार भाग प्रमाणे दिवस होय । अने सर्वबाह्य मडले सूर्य होय तिवारें अेकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगलें थकें इहां ना माणसने दृष्टिगोचर आवे । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो । हेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस थकीमाडी काल १ । महाकाल २ । रुरुक ३ । महारुरुक ४ । एह चिह्न नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कही । विचले

लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्रऋद्धानरेंद्रादि पूज्याचार्यत्वादिलक्षणयागौरवमृद्धिप्राप्त्यभि मानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवंरसेनगौरवरसगौरव सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञानस्यविराध नाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिह्नवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनसम्यग्दर्शनचायिकादिचारित्रंसामायिकादीनि । तथाअसंख्यातवर्षायुषांपचेंद्रि

तत्तगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तत्तविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं सणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्ते तितारे प० । अन्नीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । अस्सिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणी नक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिओवमाइंठिई प० । दो

तेशुद्धदेवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतमोकरिवो ३ त्रिणिगरवछेजेणेकरीआत्माभारीथाय ससारचक्रवालमाहिभमवानोकारणकह्योतेकहेछे । ऋद्धिगारव तेनरेंद्रादिकनीऋद्धितथाआचार्यादिकनीऋद्धितेणेकरीअभिमांनकरतोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकस्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर सातानेगारवेकरीसातागारव ३ त्रिणि विराधनाखंडनाकही तेकहेछे सूत्रादिकज्ञानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणीकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यक दर्शनचायकादिकसम्यक्तेहनूंविराधवूंअवर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविरधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना ३ मृगसरनक्षत्रना

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्त्वपरिगृहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वंअनायाससंभवः ३४ अव्युच्छेदित्वंविवक्षितार्थसम्यक्
सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्तः सप्तमवासुदेव. नदनः सप्तमबलदेवः एतयोश्चावष्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्धनुषामुच्चत्वभवति सुबोधंतत् य
तोऽरनाथमल्लिस्वामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमल्लिअंतरेदोण्णिकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमल्लिनाथयोश्चोच्छ्रयेणत्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनु
षामुच्चत्वमेतदतरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयोः षष्टसप्तमयोरेकोनत्रिंशत्षड्विंशतिश्चधनुषांयुज्यतइति प्रहोक्तानुपचत्रिंशत्यदिदं तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो
नचैतदेवजिनातरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पेसौधर्मावतंसकादिषु विमानेषुसर्वेषुपचसभाभवंति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेक
सभा ३ अलंकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्रसुधर्मसभ्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तम्भोस्ति तत्रवज्ररामएसुत्ति वज्रमयेषु

कुंथूणं अरहापणतीसं धणूइं उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था दत्तेण वासुदेवे पणतीस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं
बलदेवे पणतीसधणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवएचेइयखम्भे हेठाउव

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवंतनी वाणीनागुण
जाणिवा एह पैत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्ति
पछेहुवोते ३५ । धनुष ऊच पणे हुआ। नदननामा सातमो बलदेव ३५। धनुष ऊचपणेंकह्यो । सौधर्मकल्पें सभा सुधर्मा ने विषे साठियोजनप्रमाण माणवक
नाम चैत्यस्तभनेविषे हेठे अने उपरि अर्द्ध एतले साढावारह योजन वर्जीने मध्यने विषे पैत्रीस योजनें वज्रमय गोल वाटला समुद्रकडा तेहने विषे जिन

च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि सागरोवमाइठिई प० । असुरकुमाराणदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्निपलिओवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा उयसन्नि पचिदियतिरिक्कजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तिन्निपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

चणिताराकद्धाकेवलभानीये पुष्यनचत्रनाचणिताराकद्धा । जेष्ठानचत्रनाचणिताराकद्धा अभिजित् नचत्रनातीनताराकद्धा श्रवणनचत्रनाचणिताराक द्धा अश्विनीनचत्रनाचणिताराकद्धा भरणीनचत्रनाचणताराकद्धा एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो चणिपल्योपममध्यमआजषूंकद्धूं बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो चणिसागरोपमनूंआउखोकद्धो चोजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य चणिसागरोपमआज खोक द्धो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो चणिपल्योपममध्यमआउखोकद्धोछेअसंख्यातवर्षनाआउखाना सन्नीगर्भज पचेद्रिय तिर्यंच एतलेदेवकुरू उत्तरकुरूनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आजखोकद्धो । असख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्यदेवकुरुउत्तरकुरुना

चत्वारिंशस्थानकव्यक्त नवरं वइसाहपुण्णिमासिणीएत्ति यत्केषुचित् पुस्तकेषुदृश्यतेसोपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अत्राध्येयद्वयमुच्यते पोसेमासेचउप्पया इतिवचनात् पोषोपूर्णिमास्यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारिअंगुलानिपतितानीत्येव फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुलि कापौरुषीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्त तत' पदत्रयस्यषड्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे

णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० सती अरहा चत्तालीस धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसह स्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुण्णिमासिणीएणं सू

अरिहतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनी सपदायई। मेरुपर्वत ऊचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते विचे चूलिका चोटीनो परि जोगइ मेरुनी चूलिका चालीस योजन ऊचो कही। शातिनाथ सोलमा अरिहत चालीस धनुष ऊचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानेंद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या। एतले चालीस लाख भवन कह्या। चुडिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तियें एतले त्रीजे वर्गे ४० उद्देश नकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या। एतले जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या। फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणें तृणनी छाया भावीये तेहनी ४० अगुल प्रमाणें पोरसी छाया प्रते निवर्तावीने चार भ्रमण करे। कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अगुलप्रमाणे पोरसी हुये पछे सातें २ दिवसे

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंप्रभाकरं चंद्रंचंद्रावर्त्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेश्यं चंद्रध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटचंद्रोत्तरावतंसक विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा आभंकरं पभंकरं आभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिद्धं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तेणदेवातिरहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिंआहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम आउखो कह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो त्रणिपल्योपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रनी जेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो त्रणिसागरोपममध्यमआउखोकह्योजेदेवताआभकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चद्रवर्ण ९ चद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणे उपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतानूंत्रिहूंअडमसवाडे थोडोखासले घणोखास ऊंचोखासतेउत्खासनीचोखासमूंकवोते

चतुरगुलहड्डी चत्वारिंशदगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगमं नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूत्रोक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ ॥ टी
षष्ठसप्तमीषुपृथिवीषु त्रिंशतोदशानाचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपचानाचनरकाणा भावाद्यथोक्तसंख्यास्तेभवतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था ॥

रिए चत्तालीसगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुन्निमाए महासुक्के कप्पे चत्ता
लीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाह
स्सीओ होत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० त० रयणप्पभाए पकप्पभाए तमाए
तमतमाए महालियाणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अगुल वधारिये मासे ४ अगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अगुल वधे तिवारे कार्त्तिक पूनिमे ४० अगुल थायपौरुषी। महाशुक्र सातमे देव लोके ४० सहस्र विमान कह्या। इति ४० मो समवाय सपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमो समवाय लिखेछे। नमिनाथ अरिहतने ४१। आर्यांना सहस्र थया एतलेसाध्वीना सहस्र हुया। चार नरक पृथिवीयें ४१ लाख नरकावासा कह्या। ते कहेछे। रत्नप्रभायें ३० लाख पकप्रभायें १० लाख तमाये पाच जणा १ लाख तमतमाये ५ एव सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कह्या। वडीये विमानप्रविभक्तियें पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदी ठ उद्देशना अवसर कह्याछे। इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे वेयालीसमो समवाय लिखेछे। श्रमण भगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव वेयालीस वर्ष झाझेरे छद्मस्थ पर्यायें १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कांईक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया। याव

कंनचत्रार्थंस्थित्यर्थंषट्कंशेषंतथैवइत्यपिपाठः त्रयंस्थित्यर्थंषट्कंनचत्रार्थंत्रयंशेषंतथैव मतर्मुहूर्त्तंयावच्चित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधश्चध्यानं तत्रार्त्तं मनोज्ञामनोज्ञ वस्तुवियोगसंयोगादि निबंधनचित्तविक्लवलक्षणं रौद्रंहिंसानृतचौर्यधनसरक्षणाभिधानलक्षण । धर्ममाज्ञादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनैकाग्रताशुक्लं पूर्वगत श्रुतावलबनध्याने तत्रमनसोऽत्यंतस्थिरतायोगनिरोधश्चेति । आत्मध्यानं तथाविरुद्धाचारित्रप्रति स्त्र्यादिविषयाःकथा विकथाः तथासंज्ञा असातवेद

प० तं० कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए चत्तारिज्झाणा प० तं० अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे ध म्मज्झाणे सुक्कज्झाणे चत्तारिविगहाउ प० तं० इच्छिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसन्ना प०

नीसास तेहदेवताने उत्कृष्टो त्रिहुवर्षसहस्रेआहारनोअर्थउपजेआभोगआहारलेछे एकेकसंसारमाहिभव्यजीव जेहत्रिहुंभवनेआंतरे सीझसेकृतार्थथास्ये बूझ स्ये कर्मबधथकी मूंकास्ये समस्तदुःखनोअंतकरस्ये इतित्रीजोठाणोसम्मत्तं हिवेचोथोठाणोकहेछेच्यारकषायछेकषकहीये संसारतेहनोआयलाभहुस्ये जेहथीक षायकहियेक्रोधेकरीसंसारनोलाभहुस्येतेमाटेक्रोधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकपट ३ लोभकषायलोभतृष्णा ४ च्यारिध्यानक ह्याध्यानतेअतमुहुर्त्तलगेचित्तनुंएकाग्रपणूंतथायोगनिरोधतेकहेछे मनोज्ञवस्तुनोसयोगअमनोज्ञवस्तुनोवियोगनोचितविवोतेआर्तध्यान १ हिसामृषाचोरीधन रक्षणनो चितविवोतेरुद्रध्यान२भगवंतनोआज्ञापदार्थनोआलोचवोतेधर्मध्यानपूर्वगतश्रुतनूंआलबनुनिरणयोगनूनिरोधवोते शुक्लध्यान जेणेकरीचारित्रादिक

स्थानकेत्विदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो
र्विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्धे पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपंचाशदेव भव
न्तीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमात इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां ह्यन्ते पूर्य
माणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविष्कम्भेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने
मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पंचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते तत एव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पंचपंचाशत्

जोयणपन्नंबाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंता
उ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमते एसण पणपन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिपि वि
जयवेजयंतजयंतअपराजियति समणेभगवंमहावीरे अतिमराइयंसि पणपन्न अज्झयणाइ कल्लाणफलविवा

प्रक्षीण रहित थया। मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी छेहल्ला प्रदेश थकी जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत छेहल्लो प्रदे
शएह ५५ योजन सहस्र आबाधा विचाले आंतरो कह्यो। मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते माहि दश सहस्रनो मेरुपालिगे एतले सर्वमि
ली ५५ सहस्र योजन थया। इहां यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमांत ग्रह्योछे परजगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा५५ सहस्र योजन थया। एमज चिहुदिसे मे
रु पर्वतमांहि घालता मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो। श्रमण भगवंत महावीर छेहलीरा

नीयमोहनीयकर्मोदयसंपाद्या आहाराभिलाषादिरूपाश्चेतनाविशेषाः तथासकषायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोग्यानांपुद्गलानां बंधनमादानबंधनम्। तत्रप्रकृत यःकर्मणोंऽशाभेदाः ज्ञानावरणीयादयोऽष्टौतासांबंधः प्रकृतिबंध. तथास्थितिस्तासामेवावस्थानं जघन्यादिभेदभिन्नंतस्याबंधोनिर्वर्त्तनस्थितिबंधः तथाऽनुभा वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्तस्यबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनंतानतानांप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपरिमाणानांबंधः संबंधनंप्रदेशबंधइति तथा

न्नत्ता तं० आहारसन्नाय भयमेहुणपरिग्गहसन्ना चउव्विहेबंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे अणुभागबंधे पएसबंधे चउगाउएजोयणे प० । अणुराहानक्खत्तेचउतारे प० । पुव्वासाढनक्खत्तेचउतारे प० । उत्तरासा

नोविराधनाहोयतेविकथाचारकहीछे तेकहेछे स्त्रीभलीवखाणीयेभूंडीबखाणियेतेस्त्रीविकथा भातरांध्यानेअन्ननोवखाणबोविखोडवोतेभातविकथा १ राजा नूभलूसूंडूंकहिवोतेराजविकथा देसएकवखाणनोएकविषोडनोतेदेसविकाथा ४ च्यारसंज्ञाकहीअसातावेदनोयमोहनीकर्मनेउदयेंऊपजेतेसंज्ञाकहीयेआहा रसन्ना १ भयनोवेदवोतेभयसंज्ञाकहीये २ मैथुननोअभिलाषातेमैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहनोअभिलाषतेपरिग्रहसन्ना ४ चिंहुप्रकारेबधजीवनेकर्मनेयोग्य पुद्गल नोबांधवोतेबधकहीये तिहांकर्मनाअंशभेद ज्ञानावरणीयादिक ८ आठ तेहनोबांधवोतेप्रकृतिबंध १ तेहआठेकर्मनी स्थितिरहिवोजघन्यउत्कृष्टकेइकाल तीव्रादिकभेदेअनेकप्रकारेरसतेहनोबधबोतेरसबंध जीवनाप्रदेशनेविषे अंतकर्मप्रदेशतेस्थितिबंध प्रकृति दीठनियतपरिमाणनोबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदां गुलेच्यारगाऊनोएकयोजनकह्योभगवते अनुराधानक्षत्रनाचारताराकह्या पुर्वाषाढानक्षत्रनाच्यारतारा कह्या उत्तराषाढानक्षत्रनाच्यार तारा कह्या एणी

ष्टितचंद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिअहोरात्राणिसीभवति यत्रेहद्विषष्ठि भागद्वयमधिकं तत्रविवक्षितं । सम्भवस्यैकोनषष्टिः पूर्व लक्षाणि गृहस्थपर्याय इहोक्तः आवश्यकेतु चतुःपूर्वांगाऽधिकासोक्तेति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइदियाइ राइंदियग्गेणं प० संभवेणं अरहा एगूणसठि पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए मल्लिरसणं अरहउ एगूणसठि उहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेण मंडले सूरिए सठिए सठिए मुहुत्तेहि सघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सठिनागसाहस्सीउ अग्गोदय धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तोसतीस दिहाडा जोइये तो विहु मासना ६० दिन जोइये तो ५९ किम कहा । वृष्ण पचनी पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एवे मासे दिन २९ अने एक दिननना वासठिया बत्तीस भाग होय एह २९ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग थाय ते पाछला ५८ दिन माहि घालिये एतले ५९ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगस्या ते अल्पमाटे न लेखव्या जाणिवा । सभवनाथ अरिहत भोजा उगुणसठो पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम माहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारिय गृहस्थाश्रम थको अणगारितायती पणूंपाम्या । अ[illegible] वेश्यके चार पूर्वांग लगे गृहस्थाश्रम वाह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखेछे । सूर्यना १८० माडला छे एकेक माडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेउगे । लवण समुद्रनी अग्रोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊंचो पाणीनो वेल तेउपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

ढनरकत्तेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिओवमाइंठिई प०
तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंच
त्तारिपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिपलिओवमाइंठिई प० सणं
कुमारमाहिदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवाकिट्ठिंसुकिट्ठिं किट्ठियाप
त्तकिट्ठिप्पभ किट्ठिजुत्तं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिद्धं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडिंसगंविमाणंदे
वत्ताएउववन्ना तेसिंणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउण्हद्धमासाणं आणमं

इरत्नप्रभापहिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपल्योपम आउषूंकहिंउ कह्या त्रीजोवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
गरमध्य आउषूंकह्योछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनूं केतलाएकनूं च्यारिपल्योपमआउषूं कह्यो सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपल्यो
पममध्यआउषूंकह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकदेवतानूं च्यारसागरोपममध्यआउषूंकह्यो त्रीजेचोथेदेवलोकेजेदेवता कृष्टि१ सु
कृष्टि २ कृष्टिकापत्र ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिशृंगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमानने विषेदेवताप

भवतारं अद्धरेगंनरभवीयंनाणाजीवाणंसव्वंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिदिव्यते तत्रपंचसंवछरेत्यादि नक्षत्रमासोये
नकालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति सहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधि
कानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः
सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकलक्षद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचेत्येवंरूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणोभवतीति बाहाप्रोत्ति लघुहिम

होत्था आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं बावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं
वच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाणंबाहाउ

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण वेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो वार्यतो ६६ सागरहोय । जिचेंमनुष्यनोभव करेते भांभेरा मांहि
गणिये प्रति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसंवत्सरे युग १ पूरोथाय । तेयुग नक्षत्रमासे मापीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे
काले चद्रमा नक्षत्र मडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय। पूर्वे ६१ मेंठाणें एक
१८३० दिनप्रमाणछेते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बार्इस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि पाधिये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक
वीसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवंतपर्वतनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्ष मान जेहिमवंतक्षेत्रनी प्रदेशपं

क्षष्टिसुकृष्टादीनिद्वादशविमानानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारवतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहावृतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य
स्तिकायार्थसूत्राणामष्टक नक्षत्रार्थपंचकं स्थित्यर्थषटकं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थः
अधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकी खड्गादिनिर्वर्त्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेषोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राद्वेषिकी परिताप-

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ
आन्नवसिज्झियाजीवा जेचउहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥
पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिया पाणाइवायकिरिया पंचमहव्वया

णेउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कह्यो तेदेवताचिहुंअर्द्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडे थोडोसासलेइ घणोसासले नीचोमेलवीतेनि
श्वास ऊचोलेववीतेऊसासतेहदेवताने चिहुंवर्ष सहस्रे आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाइकछेभव्यजीव चिहुनेभवग्रहणेच्यारभवनेअंतरे सीझस्येबूझस्ये मुं
कास्येसंसारथकी सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये इतिचोथोठाणूंसंमत्तं ४ हिवेपांचनोअधिकारलिखीयेछे पांचक्रियाकही क्रियाते कायादिकनोव्यापारतेकहेछे
कायायेनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेजेणेकरीस्थापीयेंतेअधिकरणकीषड्गादिकनीपजाविवालक्षण प्रद्वेषमत्सरतेणेनीपिजा

विनांचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यंतेच जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्थ॥

नकेकिञ्चिल्लिख्यते समएत्यादिमदरवर्ज्जामेरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदिताएकोन

सप्तति. प्रज्ञप्ता' कथपचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पचत्रिंशद्वर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिंशत्तथाचत्वार एवेषुका

मुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्करवरदीवड्ढेण अठ्ठसठ्ठि विजया एवचेवजाववासुदेवा
विमलस्सणं अरहउ अठ्ठसठ्ठिं समणसाहस्सीउ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥
समयखित्तेण मंदरवज्जा एगूणसत्तरि वासाबासधरपव्वया प० तं० पणतीसवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अनें एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय। एकेक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न होय। बत्रीस विजयनेविषें उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अने २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो६८ किमभिसे सूत्रमाहि एकेसभें एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी। धातकीखडनीपरे पुष्करादर्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी कहवी। उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहन्त कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा। विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार श्रमणयती हुय उत्कृष्ट श्रमण सपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखे छे। काले करी ओलखाव्यो जे क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपने विषे मेरु वर्जी ने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवतादिक क्षेत्रनी सीमाना करणहार कह्या। ते कहेछे अढाई द्वीपे ५ मेरू छे एक मेरूने पासे सातसात

नंताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतीतेति । तथाकाम्यन्तेअभिलष्यन्ते इतिकामास्तेचतेगुणाशपुद्गलधर्माः शब्दाद यइतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथाआश्रवद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि सवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा यायःसंवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावन्निर्जरास्थानानि प्राणातिपातविरमणादीनि एताग्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवंति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवति नि

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमणं सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमणं सव्वाउमेहु णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं पचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मत्तं विरई अप्पमत्तया

वीतेग्राहेविकी परप्राणने परितापवो ताडनादिकदुखनों उपजाववो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण तिपातको पंचमहाव्रतश्रावकनांवत नी अपेक्षायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा झूंठोबोल वाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

पांचतुर्मासमवमाणस्य वर्षाकालस्यसविंशतिदिवसाधिकेनाये व्यतिक्रांतेपंचाशद्दिनेषुगतेषु चित्यर्थः सप्तत्यांचरात्रिदिनेषुशेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः
तत्रिनामोपर्यासः वर्षायोग्यानपञ्चोसवेइति परिवसति सर्वथाकरोति पंचाशतिमारागेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति
परिभाद्रपदशुक्लपंचम्यां तु वृक्षमूलादावपि निवसतीति हृदयमिति परिसाहरणीयति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अजाइणिया काश्यि
ई गणधरनिमेषणसेति इह तिलाभापरिमितमेकार्थपुद्गलोपादानं कृत्वा उत्तरकाले ज्ञानावरणीयादिकर्माणां कांस्यभाराकालंसुता ज्ञानावरणीयादिग

प० ॥ ६१ ॥ समणेभगवंमहावीरे वाराणंसावीसइराइमारो वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं
सेसेहिं वासावासपज्जोसवेइ पारोणं अरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं वज्जपरिपुन्नाइं सामन्नपरियागं
पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं

नो ते मांहि २० रात्रिने अधिक मास तीतेथके पाछे चोमासी पडिक्कमी पंचाममे दिवसे भादवा सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पछे शेष थाकतो ७० रा
त्रिनें वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेइ सर्वथापि करे। पार्श्वनाथ आरिस्त पुरुषा मांहे श्रेष्ठ प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धथया सर्वदुःखथकी
छोडयया एतले २० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिलो १०० वर्षनो आयु जाणिनो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष उंचपणे हुया। मोह
नीय कर्मनो स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अबाधायें ७ हजार वर्षे उणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगवियाने अर्थे रचना पूर्वे जे बाध्योछे
ते उदयकाले आणिनो एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनों जेणे समये मोहनीय कर्मनो बांधाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगें तेकर्म

र्गस्थानत्वंपुनरेषांमाभारणमिति । तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति र्गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा
षासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिछदस्य निक्षेपणा
यस्या पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरीषस्य प्रस्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्ठीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणो

अकसाया अजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा
उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम
मेथुन नवभेदेवैक्रियमेथुनएवं १८ भेदेमेथुनथकीविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा
व्रत पांचकामगुण कामियेप्रभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकह्या तेकहेछे
शब्दतेमांभलवो रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह
नेपाश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआववानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो
धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोअणमलिवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्तेणुद्दर्शन १ वि-
रतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणुं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूंखपाव-
ण जूपीकरिवो तेमाथानककहितांउपाय तेनिर्जराठाणकह्यापांचेभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोंउपाय १

५ सगरोद्वितीयचक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणांद्विसप्ततिर्लक्षाणि भवनानिक थम् दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागसाहस्रीश्रीति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो त्रिष्कम्भतश्च दशसहस्रप्रमानालवणजलधिखांवाह्यां धातकीखण्डोपाभिमुखी महावीरो द्विसप्ततिवर्षायुः पालयित्वासिद्धः कथंचिद्गृहस्थभावे द्वादशसार्द्धानिपचच्च

व पव्वइए एव सगरेवि रायाचाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरि पुव्वजावपव्वइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरि नागसाहस्सीओ बाहिरिअ वेल धारंति समपेन्न

अरिहंत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अने एक पूर्वांगाधिक ५३ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एव ७१ लाख पर्व लगे गृहवासमावसीने मुडथया। गृहस्थाश्रमथकी यतीपणू पाम्या एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिवा। एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजोमहाराजा चातुरंत चक्रवर्त्ती एकउत्तर लाखपूर्वलगे गृहवासमहिवसीने राज्यपालीने मुडपणे गृहस्थथकी यतीपणो पाम्या ॥ इति ७१ मो संपूर्ण ॥ ७१ ॥ हिवे ७२ मो लिखेछे। भवनपतीनों तोजोनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणइंद्र ने ३८ लाख भवनावास उत्तरेंद्र ने ३४ लाख भवनावास बेहुंमिली ७२ लाख भवनावास कह्या। ७२ हजार देवता लवण समुद्रनी बाहिरली धातकी खंड तरफनी पांणीनीवेला प्रते धरेछे। एतले १६ हजार योजन ऊपरि २ कोशनो वेलावधे तिवारे चाटूपे करी पाणी उपराडो मारेछे। श्रमण भगवत महावीरस्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायुपालन किधो। एतले ३० वर्षगृहवासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशोन ३० वर्ष केवल पर्याय एव ७२ वर्ष लगें सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया। स्थविर

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्टापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
द्योगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणास्थितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागएवमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
हयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापठमाएसुजेट्ठा । साबीयाएकणिट्ठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

त्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासंवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थि
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनक्खत्तेपंचतारे प० पुणव्वसु

एकमृषावादवेरमण २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोगिरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवोतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-
चालतोसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभातेपणीनूंलेवोतेएषणासमतिकही ३ । आदानक
हतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवो जोईमूंकिवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रस्रवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नांकनोंमल रिंट
जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीप्रवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीये
तेकहेछे धर्मकहियेंचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेविषे अवकासदेवा
नोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या ह

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ६४ खंधनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं
ठरुप्पवायं ५० आससिक्खं ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुव्वेयं ५३ हिरण्णपागं ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
धातुपागं ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुट्ठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाइजुद्धं ६३ सुत्तखेड्डं
६४ वट्टखेड्डं ३५ नालियखेड्डं ६६ चम्मखेड्डं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

तरिवो ४१। शुद्ध कटक नी रचना ४२। खधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३। नगरवासिवानोमान ४४ वसुनामान गजतोलादिक ४५। खंधा
रकटकनो निवासस्थापन ४६। नगर निवेशनो वासवो ४७। वसुनीस्थापनावसुनिवेश ४८। ईषदर्थ थोडानूं घणूं घणानूं थोडूं करवूं ४९। त्सरुखड्गमुष्टित
था छुरप्रमाण तक्षत विचारनो जाणिवो ५०। घोडानी गति शिखाडवी ५१। हाथीनी गति शिखाडवी ५२। धनुर्वेद धनुर्धारी थावूं ५३। हिरण्य
रूपानोपाक पचाविवो ५४। सुवर्णनो पचाविवो ५५। मणिरत्नादिकनो पाक ५६। धातुतांबादिकनो पाक ५७। युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणि
वो ५८। नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९। युद्धनेअति क्रम करीने जूझवो ६०। मुष्टियें जूझवो ६१। लतावेलडीयेजूझवो ६२। बाहुथी जूझवोतेवा
हु युद्ध ६३। सूत्रनो खेडवोवेझनोमाडी सूत्रनो छेदिवो ६४। वर्त वाटलो खेडूं माडीने जूझिवो ६५। नालिकाकमल डांडी तेहनो खडवो बेझूमांडीने वे
धवूं ६६। चर्म खेडू वेडूंमाडीवेधिवो ६७ पचपानडानो छेदिवो ६८। कडग सुवर्णादिकनाचूडो कुंडलादिकनो छेदिवो ६९। मूंयामनुष्यतिर्यंचने मंत्रशक्तिक
री सजीव करिवो ७०। जीवतानीनसचांपोने निर्जीव करिवो ७१। शकुन पचीकाकादिकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२। एकलाथर्ह। सम्मूर्छिम खेचर

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरेवअयराइं॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिइक्किक्कमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १दोसार २साहिय३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउइहस७ सत्तरस८ सहस्सारे तदुवरिइक्किक्कमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनविमानना

नरकत्तेपंचतारे प० हत्थनरकत्तेपंचतारे प० विसाहधणिठानरकत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवी ए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिउवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगइआणं नेरइयाणंपंचसागरो वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेग इयाणंदेवाणं पंचपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पन्नं पच्चंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा

स्तनचत्रना पांचताराकह्या विशाखानचत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानचत्रनापांचताराकह्या इणीयरत्नप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनों पांचपल्यो पममध्यआउषूंकहिये तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआउखोकहिये असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानोंपांच पल्योपमआउखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आउखोकह्यो तीजेसनत्कुमारमाहेंद्रचउथेदेवलोकनेवि षेंकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआउषूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । वीजेप्रतरे ४ । वातावर्त्तनामछे ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ४ । वातध्वज ८ । वातशृंग ९ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए

सप्ततिवर्षाण्यायु रत्नचार्यविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश छद्मस्थपर्यायः, षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाओणमित्यादि अस्यभावार्थः
किलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाह्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ
चतुःसहस्रायाम स्तदेवंपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतायां शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येवं प्र
वाहो भवति वइरामयाएजिभियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति नि
षधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्वीपेनालंकृतमध्यभागे

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाउणं वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिदहाउ सीतोयामहानदीउ
चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६
केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊंचो उपरि १६हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते
गछी मह्या द्रहछे ते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांबोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगछीद्रहथको निकली एहवी सीतोदामहानदी ७४ से
२१ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमईजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुली वहीने जायछे। नि
षध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवो ४८० योजन जंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडें मह्या मो

मानितात्येवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमयतत्त्वसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जीवनिकाय २ बाह्या ३ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ वग्रहार्थानिस
त्राणि षट् नक्षत्रार्थेहिस्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थंत्रयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिद। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

यसिंगं वायसिद्धं बायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूड सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव माइंठिई प० तेणंदेवापंचरहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ सतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ छलेसाउपण्णत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ सूरलेश ७। सूरध्वज ८। सूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेउपनाछे तेहदेवतानें उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआउखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमूके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगये आहारनोअर्थउपजेछे केतलाएक ससारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे सीझसें बूझसें मूंकासें संसारसागरथकी सर्वदुःखनोअंतकरिसें मोचजासें इति पांचमूठाणोसम्मत्तं ॥ ५ ॥ छठोठाणोकहिछे। छलेश्याकही

संख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते इहस्सअनवगम्म स्स निरुवकिट्ठस्सजतुणो एगेऊसासनीसासे एसपाणुतिवुच्चई १ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥ ७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते । सक्कस्सेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालाना चतुर्थउत्तर दिक्पाल सन्निवेशमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीना व्यंतरव्यतरीणां चाधिपत्यंकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नष्टश्यत इहतूक्त मितिमतांतरमिदं आहेवच्चंति आधिपत्यमधिपतिकर्म्म पोरेवच्चंति पुरोवर्त्तित्व

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥
सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साण आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्त महारायत्तं आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेणं अकं

जानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी । दक्षिणदिशे सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेइंद्रना ७८ लाख भव नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तृपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेंकरावतो थको आत्मानीपरे पाल तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणें ४८ वर्ष छद्म

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति । आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति तथाछद्मस्थोऽकेव

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस काए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संली णया छव्विहेअब्भिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्झाउ ज्झाण उस्सग्गो छठाउ

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामीयआत्मनः स्फटिस्येवतत्रायं ले श्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीकृष्णलेश्या १ । नीलासूडानें वर्णेतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापोतलेश्या ३ । हींगलूपरेंत्यांसरीखा तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५ । सखसारीषीउजलीशुक्ललेश्या ६ । संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनणतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायबेद्रियादिक पचेंद्रियलग छप्रकारेबाह्यशरीरने शोषेकर्म्मखपावे तेबाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्म्मकहिये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगे ऊणोदरीऊणे पेटेऊठिवो पूरोआरहानलेवो २ । वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनोंपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे कशतादितापलोचआतापनादि कनोंकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणशनादिकनोकरिवो छप्रकारेंअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्म्मकरिवो तेतपकर्म्मकह्यो तेस

जंबूद्वीपेयदेतौसूर्यौसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरंकृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेशी युत्तर योजनशतं प्रविष्टाभ्यंतरमण्डलभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरभवतीति तथा तत्रतयो चरतो रुत्क्रष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्तारात्रिर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तरं मण्डलमुपसंक्रम्य यदा चारचरत स्तदा नवनवतिर्योजनसहस्राणिषट्चपचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरकृत्वा चारंचरत स्तदा च। ष्टादशमुहूर्त्तोदिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्टिभागाभ्यांन्यूनः द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रि र्भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्टिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य द्वितीयादिषु मण्डले त्रहोरात्रेषु चान्योन्यातर प्रमाणस्य पचभिः एचत्रिंयोजनै. पचत्रिंशताचैकषष्ठिभागै योजनस्य वृद्धिर्वाच्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागा भ्यां दिनहानी रात्रि वृद्धिरिति एवंच एकोनचत्वारिंशत्तमे मंडले सूर्ययोरन्तर नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपंचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक ष ष्ठिभागा दिनप्रमाण चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागाना मष्टसप्तत्या पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

णचत्तालीसइमे मंडले अठहत्तरि एगसठिभाए दिवसखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिव्वुड्ढेत्ता णं चा

नाएकसठ भाग करी एहवा बेबेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३९ मे मांडले एक योजनना एकस ठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रीवधी। एमज सर्वबाह्य मंडलथको दक्षिणायनथको सूर्यनिवर्त्यो पाछोचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३९ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननोपरिभागघटाडीये वधारिये । इति ७८ संपूर्ण

लोतत्र भवाम्छाग्रस्थिकाः समेकोभावेनोत्प्राबल्येनचघातानिनिर्जरणानिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मादेशान्कालांतरानुभाव
योग्यानुदीरणेनाक्रियोदयेप्रक्षिप्यानुभूयनिर्ज्जरयति आत्मप्रदेशैः सञ्श्लिष्टान्शातयतीत्यर्थस्तेचेहवेदनादिभेदेनषडुक्ताः तत्रवेदानासमुद्घातो ऽसावद्यकर्माश्रय
कषायसमुद्घातः । कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्माश्रयः मारणांतिकसमुद्घातोऽतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैक्रुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्मा
श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्गतआत्मावेदनीयकर्मपुद्गलशातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्गतः कषायपुद्गलशातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्गत आयुःकर्मपु
द्गलाघातः वैक्रुर्विकसमुद्घातसमुद्गतस्तुजीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्यशरीरविष्कंभबाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दंडंनिसृजतिनिसृज्य

मत्थियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए ते
यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए छव्विहेअत्थुग्गहे प० त० सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिं

गलेआगलिवखाणस्ये अनुक्रमेकहेछे प्रायछित तेअतोचारदूसण निवारवा भणी आलोचनादिकनीदेवो विनयतेबडेआव्यांजठिवो वेयावच्च आहारादिक
दानेकरी ओठभवो कालवेलायें सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभध्याननों ध्यावो उत्सर्गते कायोत्सर्गकरिवो छयस्थना छसमुद्घातकह्या सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेब
लीनो एकाभावे प्रवलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनो हणिबो निर्ज्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघ णावेदनीयकम
नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यछे तेउदीरणाकरिने आचेपोउदयावलिकाये प्रचेपोभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवडछे वेदनीयकर्मना पुद्गलतेवेगला
कषायसमुकरेंद्वतजीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्गतजीव आऊखाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विकुर्वणासमुद्घासमुद्गवजीवना प्रदेश शरीरथकी

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्सइति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह नष्टह्यते भिन्नप्र
स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या यतस्त स्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यौ चैकैकाध्ययनात्मिके तदेव सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि
काक स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालाना मेतावत्संख्यत्वा त्तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार
यत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस
राणि प्रध्ययनान्येव तृतीयैकाध्ययनात्मिका एवं चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छि
ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्कराईमन्दरावप्येव नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

ण्यायारस्सणं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखंडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पाचमे ६ छेठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कधे ५ चूलिका
तेमाहि पाचमी निशीथ नामे ते इहा नग्रही बीजी ४ ग्रही तेमांहीली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमाहीपहिली चूलिकाना साते अ
ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुअध्ययने वेवे उद्देशा एव उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजी चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चू
लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेल्योछे। पूर्वापरधातकी खडे वेमेरुपर्वतछे ते
वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणेकह्या एकसहस्र योजनजडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

चयथास्थूलोवैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान्प्राग्बद्धान्शातयति एवंतैजसाहारकसमुद्घातावपिव्याख्येयाविति । तथाअर्थस्यसामान्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे
रवेतिप्रथमव्यंजनावग्रहानतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्चयिको व्यावहारिकस्त्वसंख्येयसामयिकः सचपोढा श्रोत्रादिभिरिंद्रियैर्न

दिअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे कत्तियानक्खत्तेबतारे प० असलेसानक्खत्तेबतारे प०
ईमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं बपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया
णंनेरइआणं बसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंबपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मी

वाहिरकाढीयरीरनेंबाहल्यपणेविष्कंभपणे जंचपणें संख्यतायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजोलेश्याभूंकेतिवारे तेजसपुद्गल
निर्जरे ५ पूर्वधवंरसंदेहटा लिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारेंअर्थावग्रह व्यंजनावग्रहानंतर
अर्थनों सामान्यपणेंग्रहिवोते अर्थावग्रह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयेंरहै तेकहेछे श्रोत्रेंद्रियकान तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोग्रहिव
तेश्रोत्रेंद्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोंग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोग्रहण ते घ्राणेंद्रियअर्थाव
ग्रह ३ जीभनेस्वाद ग्रहिवोतेजिब्भेंद्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेंकरी स्पर्शनोग्रहिवो तेस्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५ मनेंकरी अर्थनोग्रहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावहग्र ६
कत्तिकानक्षत्रनाछताराकह्या असलेषा नक्षत्रना छताराकह्या एणीयें रत्नप्रभापहिली पृथवीने विषेंकेतला एकदेवतानोंछपल्योपम मध्यआजखोकह्यो ।

चउणउइसहस्साइं छप्पणहियंसयंकलादोय जीवानिसहस्सेसत्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानके किंचिल्लिख्यते । लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि ॥
पचनवतिः २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्याविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्रमुद्वेधउच्चत्व
'० ॥ मित्यर्थः तदनन्तर म्पचनवतिम्प्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपचनवति प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशा' परिहीयन्ते एवं पचनवति २ प्रदेशाति
क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्वेधस्य हान्या पचनवत्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रातेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वम्भवतीति तथा
समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधस्योच्चत्व तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्पचनवतिम्प्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य ॥

निसह नीलवंतियाणं जीवाणं चउणउइ जोयणसहस्साइ एक्कं छप्पन्न जोयणसय दोन्निय एगूणवीसइ
भागे जोयणस्स आयामेण प० अजियस्सणं अरहओ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥
सुपासस्सणं अरहओ पचाणउइगणा पचाणउइगणहरा होत्था जबूद्दीवस्स ण द्दीवस्स चरमंताओ चउहि

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि बे उगुणीसहाइया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ कला आयामपणे लांबपणेकही। अजितनाथ
अरिहतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ९५ गछ ९५
गणधर हुया। जबूद्वीपना चरमातथकी पूर्वादिक चिहुंदिशि लवण समुद्रमाहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश
कह्या। तेकहेछे। पूर्व मुद्रमांहि बडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखडथकी समुद्रमाहि उरहामध्यभाग भणी ९५ सहस

साणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणंछपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयवाई सयंभू सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगंतं वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पभं वीरकंत वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाछण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ

तोजीवालुकप्रभा पृथवीनेंविषें केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आजखींकह्यो। असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआजखोकह्यो। सौधर्मईशान देवलोकने विषें केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आजखोकह्यो। तीजेसनत्कुमार चोथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आजखोकह्यो। तीजेचोथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयवादी १। स्वयभू २। स्वयंभूरमण ३ घोस ४। सुघोस ५। महाघोस ६। कृष्टिघोस ७। वीर ८। सुवीर ९। वीरगत १०। वीरसेनिक ११। वीरावर्त्त १२। वीरप्रभ १३। वीरकांत १४। वीरवर्ण १५। वीरध्वज १६। वीरशृंग १७। वीरसिद्ध १८। वीरकूट १९। वीरोत्तरावतंसक २०। एहवेविमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आजखोकह्यो तेदेवता छहे अर्द्धमासे एतले छहेपखवाडेसासोसासले घणोसासले उचोलेवोतेऊसास नोचोमेहुवोतेनीसास तेंदेवताने छहजारवर्षे आहारनो अर्थउपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीझस्यें

मौर्यपुत्रो महावीरस्यसप्तमगणधरस्तस्य पचनवतिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व केवलित्वेयुक्रमेण पंचषष्टिचतुर्दशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ९५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव हारिएति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाण चिंत्यते अव्यावहारिको लघुदीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दडोहि चतुःकरउक्तः करचतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्वि

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरि यपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छन्नउइ छन्नउइ गामकोडीओ होत्था वायुकुमाराणं छन्नउइभवणावाससयसह

९५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनोजंचपणो हजार योजननोटले१ हजारनो जंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंत२ ३ सहस्र अने७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ९५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आजखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मोर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ९५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहाश्रमे ६५ छद्मस्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ९५ वर्षथया। इति ९५ मो समवाय थयो ॥ ९५ ॥ हिवे ९६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरतचक्रवर्तीने ९६ कोडी गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ९६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख मिलीमिली ९६ लाख थया। व्यवहारिक दड

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेस्वयंभ्वादीनिविशतिविमानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्थानकंविव्रियते तच्चकठं नवरमिहभयसमुद्घातमहावीरोवर्षधरवर्षचोणमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नचत्रार्थानिपत्र स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीण्येवेति तत्रेहलोकभयंयत्स

संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजेबहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥
सत्तभयठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलो
गभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए
तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेभगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था स

बूझ्यें मूंकासे भवमांहिथी सर्वदुखनो अतकरिस्ये मोक्षजासे इतिछट्ठोठाणोसमत्तं ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक स्मिकभय आजीविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपद नो अर्थछएठाणेकह्योछे तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोंकेवलीसमुद्घातते हकोइक केवलीचार अघातीयाकर्मखपावणेअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवतमहा

निसहकूडस्सणमित्यादि इहाऽभाव: निषधकूटस्यचशतोच्छ्रित निषधवचतु'शतोच्छ्रितइति यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ९०० ॥ सव्वेविणजमगेत्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणत: शीतायामहानद्या उभयो: कूलयो र्द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्त' तेच पचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयो र्भावादृश एव चित्त

णिज्जाउ भूमिभागाउ नवहिंजोयणसएहिं सहुवरिमे तारारूवे चारंचरइ निसढस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्सकंडस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं नवजोयणसयाइं

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर अस्सी योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारोछे। तेह थी ३ योजने शुक्र नो तारो छे तेह थी ३ योजन बृहस्पति नो तोरो छे तेहने ३ योजन उपर मगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्चर नो तारो छे एव नौ सै योजन थया। निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो काडनो बहुमध्य देश भाग एह ९ सै यो जन आबाधाये अंचाले आंतरो कह्यो। एतले निषध पर्वत ४ सै योजन ऊंची अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्द्ध ५ सै योजननो एवं ९ सै योजन थया। एमज नीलवंतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नो मध्यभाग ९ सै योजन जाणिवो॥ इति ९ सै नो समवाय थयो ॥ ९०० ॥ हिवे हजार नो समवाय लिखे छे। सगलाई ९ ग्रैवेयक ना विमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊचा ऊंच पणे कह्या। सगलाई यमक पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवत पर्वत थी दक्षिण पासे शीता नदी ने बिहु पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ वे वे करता ५ मेरुने पासे दस थाय ते दशसै

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात्आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजायते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरापेक्षंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवर मश्लो
कोऽकोर्त्तिरिति। समुद्घाताःप्राग्व त्ववरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति। तथा रत्नि वितताग्गुलिर्हस्तइति ऊर्द्धोच्चत्वेनेतिहोत्याबभूवेति तथा

तवासहरप्पहुया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प०
तं० भरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरन्नवए एरवए खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाउ स
तकम्मपयडीउ वेएई महानरकत्तेसत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनरकत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआरात्तन

वीर सातरत्निवितताग्गुलहाथ रत्निकहिये एतलेसातहाथऊंचापणेहुया। सातवर्षधरपर्वतकहिये भरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या। मर्यादाकारीतेकहे
छे। भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवंतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा
कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा
कारी शिखरीपर्वत। पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत। जवूद्वीपमांहिसातवासाकहिये सातक्षेत्रछे तेकहेछे भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवतक्षेत्रय
गलियांनूं२हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचोथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियांनूं ५ एरण्यवतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७
क्षीणसर्वथापिक्षयगयोछे मोहनीकर्म जेहनो एहवाभगवंतपूज्यतो मोहनीयकर्म वरजीनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १। दर्शनावरणीय २। वेदनी

णास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारय गोचरयेत्यादि यावद्गुप्तयय शय्यादिग्रहणं चव्रतानिच नियमाय तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तच्चतत्सुप्रश
स्तचेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्रक्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधान तत्सर्वतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय
मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य ग्रन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः सक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचार' श्रु
तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्वतात्व्यवहारो निःशकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि
त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारत्ति आचारग्रन्थस्य ण
मित्यलङ्कारे परित्तासख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थ. कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्पिण्युत्सर्पिणीकाल वा प्रतीत्यपरीतेति सख्येयान्यनु

ग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासतं पंचविहो प०
तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणपरित्तावायणा सखेज्जाअणुतगदारा
सखेज्जातपडिवत्तीतं संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा सखेज्जातनिज्जुत्तीतं सेणअंगठयाए पढमेअंगेदो

रे १ दर्शनाचार निःशकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या
चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारागग्रथना सख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो
द्वार उपक्रमादिक । सख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति । सख्याताबेढा छद विशेष२ सख्याता श्लोक अनुष्टुप आदिक । सख्याता

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिहतुमतान्तरमाश्रित्यकृत्तिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थ

रक्खादाहिणदारिआ प० अणुराहाइआसत्तनरकत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनरकत्ता उत्तरदारि या प० पाठांतरेण । अन्नीयाइयासत्तनरकत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प०

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें मघानक्षत्रना सातताराकह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पू र्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाणहारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्य म आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

राय षड्जादयः सप्त गोत्राणिच काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोइसंचालयत्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाणेहिं तारारूवे चलेज्जा इत्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधश्च तद्वक्तव्यश्च तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यक प्रथमेऽध्ययने स्थापयतइतियोगः एव द्विविधवक्तव्यक द्वितीयेऽध्ययने एव तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यक दशमेऽध्ययने तथा जीवाना पुद्गलाना च प्ररूपणताख्यायतइतियोगः तथा लोगट्ठाइचणति लोकस्थायिनाच धर्मास्तिकायादीनाप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेय नवर मेकविंशति उद्देशनकालाः कथ द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशकाः पचमे त्रय इत्येते पचदश शेषासु षट् षणामध्ययनाना षट्उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिपदसहस्साइति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्विगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तव्वयजीवाणपोग्गलाणयलोगठाइचणपरूवणयाञ्चाघविज्जतिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाञ्चणुजोगदारा संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउसंगहणीउ सेणंञ्चगठ याए तइएञ्चगेपणसुयक्खंधे दसञ्चज्झयणा एक्कवीसउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाञ्च

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नैसर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४९ ज्योतिष तारारूप तेहना सचालन तिहिठाणेहिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानागे थापिये। एक विधिनो कहिवो त्रिविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनी पुद्गलनी प्ररूपणा ठाणागे करी। लोकस्थापीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणागे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक सरयाती प्रतिपत्ति

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुअत्थेगइयाणं देवाणंसत्तपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा
सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहि देकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेअत्थेगइ
याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा सम्मं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं
कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तण्हं
अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिंवाससहस्सेहिं आ
हारठे समुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु

आउखोकह्यो । त्रीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कृष्टो सातसागरोपम आउखोकह्यो । माहेंद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कृष्टो झांझेरोसातसागरोप
म आउखोकह्यो । ब्रह्मपांचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमआउखोकह्यो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ ,
प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषे जेदेवताउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टोसात साग
रोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता सातमे पखवाडे सासोसासले घणोसासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्रे सातहजारवर्षे आहारनो अ
र्थउपजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७ ॥

निखिलाना म्वक्तुमशक्यत्वा दर्थानां जीवादीना मेगुत्तरियत्ति एकउत्तरोयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिकाइह प्राकृतत्वात् ह्रस्वत्व म्परिवुड्ढियत्ति परिवृद्धि
र्येति समनुगीयते समवायेनेति योग. तत्र च परिवर्द्धन सख्याया' समवसेय चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशत यावदेकोत्त
रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवग्गति पर्यवपरिमाण अभिधेयादि तद्धर्मसंख्यान यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द
स्यच पल्लवत्ति निर्देश. प्राकृतत्वात् पर्यक. पल्लयक इत्यादिवदिति अथवा पल्लवाइव पल्लवा अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जति समनुगीयते प्रतिपाद्यते
पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सत्ति स्थानकशतस्यैकादीना शताना संख्यास्थानाना न्तद्विशेषिताजीवादिपदार्थानामित्यर्थ. तथा द्वाद
शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तद्द्वादशविधविस्तर तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किम्भूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवत' श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमयपरसमयासूइज्जति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिबुड्ढीए दुवालसगस्सयगणिपिड
गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयवारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवउ समासे

विणचार आदि कोटिलगे एकअर्थे जोवादिक पदार्थनो इकेक आगलि २ परे वधारिवो ते समवायांग कहिये । द्वादशाग केहवो छे । गणी आचार्य तेह
ने पिटकरत्नकरडीया सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहा कहिये स्थानक शत एक आदि सो छे छेहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक
तेहनो बारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानछे । ते श्रुतज्ञान केहवो छे । ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे । वली पूज्यछे । एहवा श्रुतज्ञाननो
सक्षेपे समाचार स्थानक २ प्रति अग अग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे । ते समवायाग ने विषे नाना विध जीव अजीव

इति स्थितिसूत्रेसमादीनिअष्टौविमाननामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकंव्या ख्यायते। सुगमंचैत न्नवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यवृक्षजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषंतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशां गस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्यादयोद्वादशांगेभिहिता आश्रित्यसाक्षात्प्रसगतोवाप्रवर्त्तते भवतिक्षयतो यत्प्रवर्त्तते तस्यतदा श्रित्यमातृकल्पतेति संवपक्षेतु यथा शिशुर्मातरममुच न्नात्मलाभंलभते एवंसंघस्याममुचत्संघत्वंलभते नान्यथेतीर्यासिमित्यादीनांप्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

स्काणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठन्नयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुय मए लान्नमए इस्सरियमए अठपवयणमायाउ प० तं० ईरियासमिई न्नासासमिई एसणासमिई आयाण

हिवे आठनोठाणोकहैछै। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहैछै जातिमदजातितेमातृपक्ष तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १। इमकु लजेपितृपक्षतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोंभणे तेणेकरीम द ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनूं आधारतेसंघ तेह ने मातासरिखो माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहैछै ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचालै तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलेते भाषासमिति २। ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजीलेवो मूंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजीनिर्दोष स्थंडिले

णताया इहानाध्ययणा दन्यथा तद्विगुणत्वे द्वेलक्षे अष्टाशीति सहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का सा ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता
न्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्तत
य ज्ञातानिच धर्मकथाश्च ज्ञाताधर्मकथा सूत्र प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादी
ना नगरादीन्याख्यायते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कथ्यानिच नवर मुद्यान पत्रपुष्पफलच्छायोपगतवृक्षोपशोभित विविधवेषोत्तममानश्च बहुजनो यत्र
भोजनार्थं यातीति चैत्य व्यतरायतन वनखंडो नेकजातीयैस्तत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति ग्राघविज्जति इहयावत्करणा दन्यानि पचपदानि दृश्यानि यावदयसूत्रा

सा ए एव चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥ सेकितणायाधम्मकहाउ
णायाधम्मकहासुण णायाणं णगराइ उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं
धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

लगे। चरण श्रमण धर्मव्रत करण पिंडविशुद्धयादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्याअग एतले भगवती अगपाचमो जाणिवो
॥ ५ ॥ स्यूते ज्ञाता धर्मकथाग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना
नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यारायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित वनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम
समोसरण घणानो एकत्र मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनी ऋधि विशेषनो भोग तेहनो त्या

व्यंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तत्रगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया श्छत्रचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति । तेचैवंश्लोकाभ्यामवगन्त
व्याः कलत्रोउपिसायाणं बडोजक्खाणचेइय । चुलसीभूयाणभवे रक्खसाणतुकंडउय १ असोगोकिन्नराणंच किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खोभुयंगाण गधब्बाण
यतुवुरुत्ति ॥ २ ॥ तथा जबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतितत्राम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेणुदेवाभि

॥

ज्झमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती वाणमंतराणंदेवाणंचेइयरुक्खाअठजोयणाइंउद्दं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइंउद्द उच्चत्तेणं प० कूडसामलीण गरुलावासे अठजोयणइं उद्दं उच्चत्तेणं प० जंबुद्दीवस्सणं जगई अठजोयणाइं उद्द उच्चत्तेणं प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० त० पढमेसमएदंडंकरेइ बीएसमए कवाडंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

परिठवे तेपारिठावणियासमिति ५ । मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ इमवचननोगोपिवो २ इमजकायानो गोपिवो ३ । वाणमतरदेवतानाचैत्य
वृक्ष तेहने निकटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेंद्रना घरआगलवृक्ष छत्रकरीरह्याछे तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनऊंचा ऊंचपणेकह्या । हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमा
हि जबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमांहि शाल्मलीवृक्ष गरुड
जातीय वेणुदेवतानो आवासभूत तेहआठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो जबूद्वीपनें चउफेरजगतीछे जिमनगरनेचउफेर गढहोये तिमतेजगती आठयोजनऊ
चीकही । केवलो छेहडे अंतर्मुहूर्त्त आउखोथके अघातियाकर्म वेदनी १ । नाम २ । गोत्र ३ । आयु ४ । बराबर करिवानेअर्थे आठसमयनो केवलसमुद्घा

य अतस्तेषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगनिःशल्यशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखाना किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानिविमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथाख्याख्यायत इति प्रक्रम इहच भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्यविराधितसयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्त्वा चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् महतआत्यन्तिकान् अर्हान् प्रशस्त तया पूज्यानितिभावः ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतागा यथाव पुनर्लब्धतिमार्गाणा मनुजगता वयामज्ञानादीना सन्तक्रिया मोक्षो भवति तथा ख्यायतइतिप्रक्रमः तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशत' परीषहादा वधीरतया सयमप्रतिज्ञाया. प्रभ्रष्टाना सहदेवै र्मानुषा' सदेवमानुषा स्तेषा सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्तइतिप्रक्रम' इयमत्रभावना यथा आर्याषाढो देवे नधीरीकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पान्थकसाधुना धीरीकृत एव धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किम्भूतानि तानीत्याह बोधना

रसल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूणचिरंच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततोयकालक्कमचुयाणं जहयपुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाणयसदेवमा

दर्शनादि रहित अतीचार रहित थको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेछे। तेह मनोज्ञ शब्दादिक पचेंद्रियना विषय महर्घ्य देवतासबधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपाम्योछे सिद्धिनो मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सङ्घनी अतक्रिया ज्ञाताने विषें कहीछे । कोइक कर्मना वशथी जे चल्याछे सयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित मनुष्य तत्स बन्धी धीर

धानस्यदेवस्यावासइति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्यप्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थंकरस्य पुरिषादाणीयस्त्ति पुरुषाणांमध्ये आदानीयआदेयः पुरुषादानीय स्तस्याष्टौगणाः समानवाचनाक्रिया साधुसमुदायाः अष्टौगणधरास्तन्नायकाः सूरयः । इदंचैतत्प्रमाणं स्थानांगे पर्यूषणकल्पे च श्रूयते केवलमावश्यके अन्यथा तत्रयुक्तम् । दसनवगंगणाणमाणं जिणंदाणंति । कोर्थः पार्श्वस्यदशगणाः गणधराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का

चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपडिसाहरई छठेसमए मंथंपडिसाहरई सत्तमेसमएकवाडं परिसाहरई अठमेसमए दंडंपडिसाहरई ततोपच्छा सरीरत्थेभवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अठ गणा अठगणहराहोत्था तं० सुभेयसुभघोसेय वसिठेबंभयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरभद्देजसेइय ॥ १

तकरै। तेकहैछे केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशवाहिरकाढी दंडाकारकरै हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारितेकहैछै। बीजेसमेकपाटकरेदक्षिणलोकांत लगेप्रदेशेकरीपूरै तीजेसमयें मथानकरैच्यारपांखडीनारवाइयानीपरै पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरै । आत्मप्रदेशविस्तारे। चउथेसमए च्यारविदिशिनाभाग आंतराप्रदेशेंकरीपूरे। पांचमेसमयेमंथाननाआंतराविदिशें जेप्रदेशपूस्याछे तेहआत्माना प्रदेशप्रतें साहरे पाछाले छठेसमये मंथानसंहरे। सातमे समयें क पाटसंहरे १। आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८। तिवारपछे शरीरस्थहोये मूलगेशरीरहोये। श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयहुकमनाधणीजेह नोवचनसहनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगछने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायक ते गणधर यद्यपि पार्श्वनाथना १०। गणधर आवश्यके कह्याछे परं वे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलख्याछे तेकहेछे शुभेय १। शुभघोष २। वासिष्ट ३। ब्रह्मचारी ४। सोम ५

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवंप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्थरेणयत्ति विस्तरेण चशब्दात्क्वचित्केचित् सचेपेण आख्यायन्त इतिक्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्या दि कथ्यमानिगमना नवर मेकूणतीसमज्झयणत्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिर्द्वितीयेच दशेति दशधर्मकथाणवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा ज्ञानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानी त्युक्तभवति तासां च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततश्चार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस

एकमोक्कं एए अज्झेय एवमाइत्थवित्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुजोगदाराजावसं खेज्जाउ संगहणीउ सेण अंगठयाए छठे अंगेदोसुअक्खधा एगूणतीस अज्झयणा ते समासउ दुविहा पन्नत्ता

अन्यभी विस्तार थी तथा सचेप थी ज्ञाताने विषे कह्याछे। ज्ञाताने विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। या वत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणिवी सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अंगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन त १९ ज्ञाताध्ययन सचेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। कोईक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। कोईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मोडके बा तकोधी। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहा एकेकीये धर्मकथाये अधिकारना समूहात्मकअध्ययन ते मांहि ज्ञातानेविषे पहिला दश वर्ग ज्ञाता उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ९ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामाहि पैंतालीस २ अधिक आख्यायिकना सैंकडा

रणीनाविवक्षानुमंतव्येति सुभेत्यादिश्लोकः तथाअष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेणसार्द्धंप्रमर्द्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलक्षणंयोगसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि
तं श्लोकत्रियम् पुणब्बसुरोहिणीचित्ता महाजिट्ठणुराहकत्तियविसाहा चदस्सयजोगत्ति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्द्दयोगीन्यपिकदाचिद्भवन्ति
यतोलोकश्रीटीकाकृतोक्तं । एतानिनक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदक्षिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चद्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्चिरादीन्येकादशविमान

अठनरकत्ताचंदेणं सठिंपमद्दंजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठपलिओवमा
इ ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थे
गइयाणं अठपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं.अठपलिओवमाइंठिई प०
बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वत्तिरोयणं

श्रीधर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगे साथकरे तेकहेछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आऊखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक
नारकीनो । आठसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोंकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषें केतलाएकदेवतानो

तदण्डपटु प्रचलत्पताकिकाशतोपशोभितमहाध्वजपुरः प्रवर्त्तिमं विविधातोद्यनादगगनाभोगपूरणं चैवमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरस्कन्धारोहण च
तुरङ्गसैन्यपरिवारणं छत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशन चैवमादयश्च सम्यक्त्विशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्काणा भवनपति
व्यन्तराणा राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूना ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिन स्तादृशा आख्यायन्त इतिक्रियायोगः तथा पर्षदा सञ्चय
वैमाणित्थी सजइपुव्वेणपविसिओवीर मित्यादिनो क्षत्ररूपाणा आदुर्भावाश्च आगमनानि क्व जिणवरसमीवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविधा
भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवर तथाख्यायतइतियोग' यथाच परिकथयति धर्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणाना श्रुत्वा च
तस्येति जिनवरस्य भाषित अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्माणि येषांते तथा तेचते विषयविरक्तासेति अवशेषकर्मविषयविरक्ता. के नरा. कि यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं भगवउ जारिसाइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउब्भावोय जिणस
मीव जहयउवासतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव
सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं सजमं तवंवाविबहुविहप्पगार जहबहूणिवासा

छछे जेम जगतने विषे जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष
दा नो प्रादुर्भाव आविबो उपासयति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवी। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण
नेधर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित साभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम पामे धर्म उदार

नामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानक सुखावबोधम्। नवरमिह ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पार्श्वार्थसूत्राणांचतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंत्र यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थंचतुष्टय स्त्यानर्द्धयादीनि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपायाः नोस्त्रीपशुपंडकैः संसक्तानि संकी

पन्नंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइठाभं ६ अग्गिच्चाभं ७ रिठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अठसागरोवमाइठिई प० तेणंदेवा अठण्हंअठमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अठहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अठेहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥ नवबंभचेरगुत्तीउ प० तं० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानीं आठसागरोपमआउखोकह्यो। पांचमेदेवलोकें जेदेवता अर्चि १। अर्चिमाली २। वैरोचन ३। प्रभंकर ४। चंद्राभ ५ सूराभ ६। सुप्रतिष्ठाभ ७। अग्निराध ७ रिष्टाभ९। अरुणाभ १०। अरुणोत्तरावतंसक ११। एम ११ विमाने देवता पणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडें श्वासोश्वासलेजे चोसासले नीचोश्वासले नीचोश्वासमूके तेहदेव ताने आठेवर्षसहस्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जेआठभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये। इति आठमोठाणोस मत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे। नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिनीपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

तेचान्येचेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसअज्झयणातिन्निवग्गत्ति इहाध्ययनसमूहो वर्गो वर्गेचदशाध्ययनानि वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्त्रयएवोद्देशनकाला भवतीत्येवमेवच मया मभिधीयन्ते इहतु दश्यन्ते दशेत्यत्राभिप्रायो नज्ञायत इति तथा सख्यातानि पदसयसहस्साइं पयग्गेणति किल षट्चत्वारिंशच्चाख्यष्टौच सहस्राणि ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि प्रश्नः प्रतीत स्तन्निर्वचन व्याकरण प्रश्नानाञ्च व्याकरणानाञ्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अणुत्तरम्मसिणसय

एए अन्नेय एवमाइत्थ वित्थरेण अणुत्तरोववाइयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुजोगदारा सखेज्जाउ संगहणीउसेणं अंगठयाए नवमेअंगे एगेसुयरकंधे दसअज्झयणातिन्निवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखेज्जाणि अरकराणि जावएवंचरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तं अणुत्तरोववाइय दसाउ ॥ ९ ॥ सेकिंतं पण्हावागरणाणि पण्हावागरणेसु अणुत्तर

स्यें मुनिवर अतक्रिया। एह पूर्वेजे कह्यातें अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेछे। एणेंसूत्रे परित्ता वाचना। सख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक। यावत् सख्याती सग्रहणी लगें जाणवो। तेह अगार्थपणें नवमे अंगे एक श्रुत स्कधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग वली दश उद्देशन काल। दश समुद्देशनकाल। सख्याता पदना शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणे कह्यो। सख्याता अक्षर थी जिहां लगे चरणसाधुव्रतनी प्ररूपणा होय तिहां लगे कहिवो। इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दशा नौमो अग जाणिवो ॥ ८ ॥ अथ स्यूं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्नो व्याकरण कहिवोते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्ननां अंगुष्ठबाहु प्र

र्णानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा
यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो
कथिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टेवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी। नो
पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाण यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी। नोपूर्वरत पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतंमैथुनंक्रीडितंस्त्रीभिः सहतदन्याक्री
डेतिसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादंच

वइ नोइत्थीणं गणाइ सेवित्ता भवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता
नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइ समर

ते कहेछे। नही स्त्रीपशुपडक संसक्त व्याप्तशयनपल्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुयें। स्त्रीनीकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनही
स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेंनही। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनही पाणीसरस भोज
न अधिकमात्राएअधिकजोमे नहीं बत्रीसकवलउपरांत जोमेनही स्त्रीने पाछ्ल्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते
अनुरागीहोयनसांभले एमजरूडारूपजोवे नही रूडागधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानी श्लाघा नवांछे एतलेशुं

इतियोग' पुनः किम्भूतानां अइसयगुणउपसमनाणप्पगार आवरियभासियाणति अतिशयायामर्षौषध्यादयो गुणाश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वपरभेद एतेना
नाप्रकारा येषान्ते तथा तेच ते आचार्याश्च तै र्भाषिता या स्ता तथा तासा कथ भाषितानां मित्याह वित्थरेणति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तथाश्चिरम
हर्षिभि' पाठान्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभासियाणचत्ति विविधविस्तरेण भाषितानाञ्च चकारस्तृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुन. कथम्भूताना म्ह
ज्ञाना जगहियाण जगद्धितानां मुक्त्यर्थोपयोगित्वात् किसम्बन्धिनोना मित्याह अद्दागत्ति आदर्शयाङ्गुष्ठ बाहुच असिय चोमंच वस्त्र आदित्यश्चेति
द्वन्द्व स्ते आदि र्येषा कुब्जशङ्खघण्टादीना ते तथा तेषा सम्बन्धिनीना मन्त्रविद्यानि रादर्शकादीना मावेशनात् किम्भूताना प्रश्नाना मतमाह विविधम
हाप्रश्नविद्याय वाचेव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्यः मन प्रश्नविद्याश्च मन' प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासा देवतानि तदधिष्ठातृदेवता स्तेषा प्रयोगप्राधान्येन तद्वा

याण अद्दागगुठवाहुअसिमणिखोमच्चाइच्चनासियाण विविहमहापसिणविज्जामणपसिणविज्जा देवयंपयोग

प्रश्न कहेवाछे। अतिशय आमर्षौषध्यादिक १। गुण ज्ञानादिक २। तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३। एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाजे
आचार्य तेणे विस्तार करी कह्याछे। वीर महर्षि मोटायतीये अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसदर्भे करी भाष्याछे। वली जगतने हित रूपछे। आरो
सी अगुष्ठ बाहु खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशख घटादिक एहमे आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त
पदार्थे अधिष्ठान करीने उत्तरदे। तेमाटे ते प्रश्नविद्याये करी भाषित छे। विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछे थके तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या
कही। मन प्रश्नविद्या मननी चिंतित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक। तथा

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । नोसातसौख्य प्रतिबद्धश्चापि भवति सातासातवेदनीया दुदयम्प्राप्य प्रीयत्सौख्यंतत्तथा अनेनच प्रथमसुखस्य व्यदास इतिनवमी इदच व्याख्यानवाचनाद्वयानुसारेणकृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्वभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं साधिका नवमुहूर्त्ताश्चंद्रेण सार्द्धयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणसेवणया जावसायासुक्खपडिबद्धेयाविन्नवइ नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजओ सीओसणिज्जं सम्मत्तं आयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुत्तं महपरिन्ना पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणंहो

गार नकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूबीरहे नववृह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहे तेकहेछें । स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्याप्तजे शय्यापल्यंका दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाछल्या नवबोल बखाण्याछे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंवोले जेसातासुखनेविषे प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहेछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ सम्य क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोक्षाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

भत्यायु सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैवत्ति तिर्यग्लोके नर लोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्व दीर्घत्व च एव वपु' शरीर न्तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्योदारगौरत्व रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्व कुलस्याप्येवं जन्मनो विशिष्टत्वेचकालनिराबाधत्व आरोग्यस्य प्रक र्षः बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेष' प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृल्लोकः स्वजनः पितृपितृव्यादिः धनधा न्यरूपो यो विभवो लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तथा समृद्धेः पुरान्तः पुरकोशकोष्टागारबलवाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषा

सोक्काणि अणोवमाणि ततोयकालतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाण आउवपुपुस्सरूवजातिकुलजम्मआरो ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधम्मविन्नवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा वऊविहकामभोगुस्सवाणसोक्का

पमादिक जेणे प्रकारे बाधे आउखो सुरगण ने विषे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न जाय ते देवलोक थकी कालातरे चव्या चवीने इहा मनुष्यलोक माहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेंद्रिय पूरा जा तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहा जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पडिताई मित्रजन सुहृल्लोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कह्या विभव सपदा, धणी समृद्धि ते पुरान्त'पुर कोठार बल वाहनरूप समृद्धि सपदा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथी ऊपना सुख

स्यांदिशि स्थितानि दक्षिणाशास्थित चंद्रेण सहयोगमनुभवंतीतिभावः बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्यतस्माद्भूमिभा
गात्तेपर्वतापेक्षया नापि खाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अंतरेक्षत्वेतिशेषः उवरिल्लेत्ति उपरितनं तारारूपं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति
नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचयोजनसत्कामत्स्याः संभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरंध्रेभित्त्येनैव तावन्मानाः ज

त्या अन्नीजिनरकत्तेसाइरेगेनवमऊत्ते चं देणंसठिंजोगंजोएइ अन्नीजियाइयानवनरकत्ता चदस्सउत्तरेणंजोगं
जोएइ तं० अन्नीजिसवणोजावन्नरणी इमीसेणरयणप्पन्नाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिन्नागाउ नवजो
यणसए उड्ढं आबाहएउवरिल्लेतारारूवे चारचरइ जबूद्दीवेणदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

नवहाय जचपणे देहहुया अभोचनचत्रभाभेरो नवमुहूर्तलगे चद्रमासाथेंयोग जोजे संबंधकरे अभीचियकी मांडीनव नचत्र चंद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं
बंधकरें चाले तेकहेछे। अभीचि १। श्रवण २। धनिष्ठा ३। शतभिषा ४। पूर्वभाद्रपद ५। उत्तराभाद्रपद ६। रेवती ८। अश्विनी ८। भरणी ९। एनव
नचत्रजाणिवा। एणीयेरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोऊपल्योभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथि
वीथको नवशतयोजनऊंची जइयें तिहांऊपिल्यो तारारूप एतलेशनीश्चरनोतारोऊंचोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेऊयोजन तारामंडलछे। ७९०
योजने तारा १०। योजनेसूर्य ८०। योजनेचद्रमा ४। योजनेअठावीस नचत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमगल ३ योजनशनैश्चर सर्वमिली नवसेयोजन
थया। जंबूद्वीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमद्रमांहि पाचसेयोजननांमच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्वीपमांही

ण्डिका उच्यन्ते तासामनुयोगोर्थकथनविधि र्गण्डिकानुयोगः तथाचाह गडियाणुओगेअणेगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीना पूर्वजन्माद्यभिधीयते इति एव शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीय यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवर दशार्हा' समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ता' तथा चित्रा

रगइय जत्तियासिद्धापावोवगएय जो जहिजत्तियाइं भत्ताइं छेएइत्ता अंतगडोमुणिवरुत्तमो तमरएघवि प्पमुक्कासिद्धिपहमणुत्तरचपत्ता एए अन्नेय एवमाइया भावामूलपढमाणुओगकहिआ आघविज्जति पन्नवि ज्जंति सेत्तंमूलपढमाणुओगे सेकिंतगडियाणुओगे गडियाणुओगे अणेगविहे पन्नत्ते तंजहा कुलगरगडियाओ तित्थगरगडियाओ गणहरगडियाओ चक्कहरगंडियाओ दसारगंडियाओ वलदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी । सम्यक जे यती तिहां जई जपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाई जपना तेहनी गतिनो कहिवो। जेतला २ यती सिद्ध सकल कर्मक्षय करी मोक्ष गया । पादपोपगमन । अनशन करिवानी अधिकार जेहयती जिहा २ जेणे २ ठामे जेतली २ भात छेदीने अंत कृत सं सारनो अत कीधो । मुनिवर उत्तम । तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूकाणा । सिद्धिपथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पाम्या। एह पूर्वे कह्या ते तथा अनेरा पणि । एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषें कह्या । ते जिहा चौथा पूर्वना भेद माहि आख्यायते कहिये प्रज्ञापिये जाणवीये तेह मूलप्रथमानुयोग पहिलो ॥ अथ स्यंते गंडिकानुयोग । इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखी वाक्यपद्धति ते गंडिका क हिये तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गडिकानुयोग । तं गडिकानुयोग अनेक प्रकारें कह्यो। तेकहेछे । कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनी गडि

गतीरंध्रो चित्येनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय द्वारस्यजंबूद्वीपसंबंधिनः पूर्वदिश्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ

रसणंदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउहूं उ
च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तवरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला
थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढ
वीए अत्थेगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थे

खाडीमांहीआवे जबूद्वीपना विजयद्वारने एकेक बाहानेपासे नवनवभोमानगरछे तथा उत्तठामकह्योछे बाणमतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन ऊंचीऊंच
पणेंकहीजाणवी। दर्शनावरणीयबीजोकर्म्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखें जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३
चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्खुदंसणकहिये आंखतेहनो आवरण पडल तेचक्षुदंसणावरण ६। चक्षुविनाशेष
थाकतां च्यारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचक्षुदंसणावरण ७। अवधि दंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नार
कोनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्यो
पमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम

मात्रस्य विवक्षितत्वा दितिशेषं सूत्रसिद्ध मानिगमना त्रवरं स खेज्जावत्थुति पञ्चविंशत्युत्तरे शेषते सखेज्जाचूलवत्थुत्ति चतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥ ॥

यस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुजोगदारा संखेज्जाजपडिवत्तीउ सखेज्जाजनिज्जुत्तीउ सखेज्जावेढा सखेज्जासिलोगा सखेज्जाजसंगहणीउ सेणअगठयाएवारसमेअंगे एगेसुयखधे चउद्दसपुव्वाइ संखेज्जावत्थू संखेज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाजहा संखेज्जापाजहपाजहा सखेज्जाजपाजहियाउ सखेज्जाउ पाजहपाजहियाउ सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण पन्नत्ता सखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयाकडाणिवडाणिकाइया जिणपसत्ताभावा आघविज्जति पन्नविज्जति परूविज्जति

पूर्व तेहनो चूलिका छे ते पूठें कही छे । शेष थाकता दश पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूवनो पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता गणती वाचना छे । सख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। सख्याती प्रज्ञप्ति । सख्याता वेढा। सख्याता श्लोक। सख्याती सग्रहणी। सख्याती निर्युक्ति सूत्रने विषे अर्थनो योजवो । तेह अङ्गार्थ पणे अङ्ग पणें बारमें अगे एक श्रुतस्कधने विषे १४ पूर्व। सख्याती २२५ वस्तु। सख्याता नान्हावस्तु ३४। संख्याता प्राभृतक अधिकार विशेष। सख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष। सख्याती प्राभृतिका। संख्याती प्राभृतप्राभृतिका । सख्याता पदनां शतसहस्र लाख पदने परिमाणे लिख्या छे ते पूठें। सख्याता अक्षर वर्ण। अनतागमा अर्थना परिच्छेद। अनता पर्याय अक्षर पदना भेद। परित्ता अनतनही एतला २ सवेइन्द्रियादिक। अनता स्थावर वनस्पति प्रमुख पाच थावर । एह पूर्व मांहि भाव पदार्थ शाश्वता द्रव्यार्थ पणे विच्छेद रहित छे वली पर्याय पणे समे २ प्रति

गमं नवरं दंडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदडओएवं ॥ अथानतरप्रज्ञप्ता
ना नारकादीना स्पर्याप्तापर्याप्तभेदाना स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कथ्य नवर तेणनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग

वीए केवइयंखेत्तंउगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पन्नत्ता गोयमा इमीसेण रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्त
रजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्सउगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्सवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त
रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरइयाणंतीस णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकना जीव पर्याप्ता ॥
अपर्याप्ता भणिवा जिहांलगे वैमानिकनो २४ मो दडक आवे तेहदडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइंदिया ४ मणुया १ वतर १ जोइस
वेमाणियाय १ अहदडओ एव एह ठाणागे बीजे ठाणे जिम जीवना भेद वेवे कह्याछे पणि इहा सर्व कहिवो । हिवे २४ दडक मांहि पहिलो नारकीनोछे
तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणीयें हेभदत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो क्षेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने
पछी केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उतरे आगलीछे जेहने एहवो १ लाख योजन वाहुल्य
पणे जाडपणे पृथिवी पिडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठें एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो
जन पृथिवी पिड राखीये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा माहि वाटला बाहिर

दीनिद्वादश सूर्याद्यपि द्वादशैव रुचिरादीन्येकादश ॥ ९ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किंचिल्लिख्यते इहपंचविंशतिसंख्याणि तत्रलाघवं द्रव्यतो ह्यौपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोज्ञ साधुदानं वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशांतता

सिद्धियाजीवा जे नवहिंनवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्काणमंतंकरिस्संति ॥ ९ ॥
दसविहेसमणधम्मे प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चि
याए ९ बंभचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुप्पज्जिज्जा स

उपजे। केतलाएक भव्यजीव नवें भवग्रहणे नवभवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये २५९ इति नवमू ठाणूंसम्मत्तं ॥ ९ ॥ हिवेदशनोअधिकारलिखेछे श्रमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेश्रमणधर्मकह्यो तेकहेछे। क्षमाक्रोधनिग्रह १। मुक्तिनिर्लोभपणो २ आर्जवमायानिग्रह ३। मार्दवमाननिग्रह ४। लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकीहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवत्रयत्याग ५। सत्यभाषी ६। संयम १७ प्रकारे ७। तप १२ प्रकारे ८। त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९। ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १०। दशप्रकारेंचित्तना मननां समाधि प्रशांतपणो तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमाधिस्थानक कहिये तेकहेछे धर्मनीचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवो अथवाश्रुत चारित्रलक्षणधर्मनो चितावासे कहतां जेहपुण्यवंतने एहवोचिंतनहोयतेधर्मनी चिंताकहीछे। असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वेअतीतकाले नही उपनी तेंहधर्मनीचिंता उपन्यापछे सव धर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणितए ज्ञपरिज्ञायेकरी जाणे प्रत्याख्यानपरिज्ञायेकरी छांडवायोग्य कर्महुए तेछांडीये तेधर्मचिंतापहिली स

अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थं तमसस्तमिश्रा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थ. कथमित्यतआह व्यप गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पङ्क्ति पथ शब्दो वाय व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमासानि शरीरावयवा स्तेषा यच्चिक्खिल्लं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलोपनेन सकृल्लिप्तस्य पुन'पुनर्लेपनेन तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमासचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश रीरत्वान्नारकाणा तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो मिश्राः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थं. अतएव परमदुरभिगधाकाऊअगणिवस्सा भत्ति कृष्णाग्निर्लोहादीना ध्यायमानाना तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभा. तथा कर्कश: स्पर्शो येषाते कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढु शक्यते वेदना येषु ते दुरधिसह्या' अतएवाशुभानरकात्र शुभानरकेषु वेदना इति एवसत्तविभाणियव्वत्ति प्रथमा ममुच्चता सप्तइत्युक्त जजासुजुज्जइत्ति यच्च यस्या स्मृधि व्या वाहल्यस्य नरकाणाच परिमाण युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तच्च तस्यां वाच्य तच्चेदं असीतगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्षं रत्नप्र

व्वाउ जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अठावीसतहेववीसंच अठारससोलसगं अहुत्तरमेववाऊल्लं ॥१॥ तीसा

मांहि कहेछे। पहिलोये १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड। बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड। त्रीजिये १ लाख २८ हजार योज न पृथिवीपिंड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड। पांचमीयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड। छठ्ठीये १ लाख १६ हजार योजन पृथिवीपिंड। सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड। पहिलीये ३० लाख नरकावासा। बीजीये २५ लाख त्रीजीये १५ लाख। चौथीये १०

तस्यस्थानान्यात्मया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्रधर्माजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिंतामुप्रेक्षा धर्मस्वाख्यातचारित्रात्मकस्य सर्व
ज्ञभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मेभ्यः प्रधानोयमित्येवचिताधर्मचितावा शब्दोवक्ष्यमाणसमाधिस्थानातरापेक्षया विकल्पार्थः सइति य.कल्याण भागी
तस्यसाधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वक्षिन्नादीऽतीतेकाले ऽनुपज्ञाता तदुत्पादेह्यथार्हपुद्गलपरावर्त्तान्ते कल्याणस्यावश्यभावात् समुत्पद्येत जायेतसकिं प्रयोजनाय चेयम
तथाह सर्वं निरवशेषधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिक श्रुतादिरूपवा जाणित्तए ज्ञपरिज्ञयाज्ञातु ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
कर्मपरिहर्त्तुमिदमुक्तभवति धर्मचिताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति इयच समाधेरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथम तथास्वप्नस्य निद्रावस्थवि
कज्ञज्ञानस्यदर्शनसवेदनंस्वप्नदर्शन तद्वाकल्याणप्राप्ति रूपकसमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्या ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोपसर्गावसाने किंप्रयो
जनवेद मित्याह अहातच्च सुमिणपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्यः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तस्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुज्ञातु अवश्यभाविनोमुक्त्यादे
शुभस्वप्नफलस्यदर्शनायसाधो. स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभावः क्वचित्सुजाणतिपाठ स्तत्रावितथमवश्य भाविसुयानसुगतिद्रष्टुज्ञातु सुज्ञानंवा भाविशुभार्थपरि

झंधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे ज्ञसमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे

माविं १ तथास्वप्ननोदेखवो जेस्वप्नदीठे महाकल्याणनो प्राप्तिहोस्ये तेकहैछे असमुत्पन्नपूर्वक एहवो पूर्वदीठोनथी तेस्वप्नो स्यूंप्रयोजन अहातच्च सुमिणंपासित्त
ए यथातथ्यजूठोनही एहवोस्वप्नो फलजाणि वानेअर्थे अवश्यमोक्षजाणहार शुभस्वप्नदेखी चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीरात्रियें १०
स्वप्नपाम्या प्रभाते केवलज्ञानजपनूं एहबीजू समाधिठाणू २ । सन्ना ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें संज्ञीकहिये तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

हित्ता केवइयानिरया पण्णत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्स वज्जेत्तामज्झेतीसुत्तरे जोयणस यसहस्सेएत्थणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपण्णवीसंनिरयावाससयसहस्साभवतीति मक्खाया तेणनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तंसुगम नवर गाहाहितिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्यर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

हस्सा पण्णाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएण पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

ल एणी विधिये एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान माहि सर्वविमान नी संख्या कहेछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशानें २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत के ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार विमान । सहस्रारलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से विमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुदेवलोकमिली ७०० विमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमाहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी बालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

च्छेदसंवेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थानमिदंद्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञाग्राह्येति सायस्यारिक्त ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञान सज्ञिज्ञानं तच्चेहाधिकृतसूत्रान्यथा सपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वभावात्स्मर्त्तुंस्मृतपूर्वं भवस्यसवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शनं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्वाद्दर्शनंददति किंफलमि त्याह दिव्यांदेवद्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यांदेवद्युतिंविशिष्टां शरिराभरणादिदीप्तिंदिव्यं देवानुभावउत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे वदर्शनाच्चागमार्थेषुश्रद्दधानाद्यं धर्मेबहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानमितिचतुर्थं तथाअवधिज्ञानंवासेतस्यासमुत्पन्नपू

समुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे ञ्जसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुत्तं दिव्वदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे ञ्जसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्व पूर्वेंऊपनूंनथो सेइ अर्थेंऊपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थे पूर्वभवसंभरे विशेष संवेगउपजे एचौजूचित्तसमाधि स्थानक ३ तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेंउपनो नथी तेहजेने उपजे ते सेंअर्थेंउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानी अनुभाव वैक्रिय करिवानी समर्थाई देखवानेअर्थे देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु इ एहचउथूठाणूं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेनथी ऊपनूं तेहजेने ऊपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थे विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एपां

भतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अभुग्गयमुसियपहसियत्ति अभ्युद्गता सञ्जाता उत्सृता प्रवलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि चित्राश्चि त्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्धूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तत्र सूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्याश्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयत्य स्ताश्च तद्वर्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहतसिहरति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि

वासा अभुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेजयोजन तारामडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते जपरि ८० योजने चद्रमा ते जपरि ४ योजन नक्षत्र ते जपरि ४ योजन बुध ते जपरि ३ योजन शुक्र ते जपरि ३ योजन बृहस्पति ते जपरि ३ योजन मगल ते जपरि ३ योजन शनैश्चर छे । तारा मडलथकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जोतिषीछे। ज्योतिषीना देवता असख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या । तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे । अभ्युद्गत कहतां जपना चिहुदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणेकरी शुक्ल ऊजला जेहनी एहवा । अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकातादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेणेकरी चित्रा चित्रवत छे । वली केहवा आश्चर्यवत छे । वायरे कपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे । एतावता व्याप्तछे । वली केहवाछे । अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलघताछे शिखर जेहना । धरनी भीतिने विषे जा

वंसमुत्पद्येत किमर्थमतआह मणोगतेजाणित्तएइत्याह अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः भवतिचविशिष्टज्ञानाच्चित्तस
माधिरिति ७नमतदिति । एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं । तथा मनःपर्यवज्ञान वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतेभावेजाणित्तए अ
ढैतृतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतत्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं । तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्ये
त केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूप वस्तुतत्वज्ञातुं केवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इहवामनस्कतया केवलि
नश्चित्तचैतन्यमवसेय मित्यष्टमं । एवकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवमं । तथाकेवलिमरणंवाम्रियतेकुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमतआह सर्वदुःखप्र

**सणेवासे ञ्ञसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा उड्ढिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे ञ्ञसमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जि
ज्जा जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे ञ्ञसमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोग जाणित्तए केवलदं
सणावासे ञ्ञसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए ।**

चमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वे उपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थ एछट्ठंठाणूं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने
पूर्वे उपनूंनथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अढाईद्वीपमांही संज्ञी पचेंद्रियनो मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केव
लज्ञान सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे केवलसकललोकजाणिवानेअर्थे एहचित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वे उपनूंनथी
तेह जेहने उपजवाने अर्थेउपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थे सर्वदुःख

त्यादि ओरालियसरीरस्सेत्यादि तत्रोदार प्रधानं तीर्थकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवोरालम्विशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य अथवा उरालस्वल्पप्रदेशोपचितत्वात् बृहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबद्धं यच्छरीर तत्तन्मयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्छरीरस्येति प्राकृत

१६ ॥ त्वादोरालियशरीर तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतेकक्षेत्र शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ वौदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किंमहती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागंयावत् पृथिव्यादापेक्षया उत्कर्षेण सातिरेक योजनसहस्रमिति बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति इहएवं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनञ्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णा म्बादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्ताना जघन्यत उत्कृष्टतश्चा ङ्गुलासंख्येयभागो वनस्पतीनां बादरपर्याप्ताना मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्वित्रिचतुरिंद्रियाणा म्पर्याप्ताना मुत्कर्षतस्तानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्रीणिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेंद्रियतिरश्चा जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां समूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्र एव स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्छन जाना म्पर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उर.परिसर्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्र एषामेव संमूर्च्छनजाना योजन

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

झेरी योजन सहस्र बादर वनस्पतीनी अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री पचेन्द्री तिर्यंचनो मान तिमज निरवसेस समग्रपणे तरतमयोगे कहिबो जिहा लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो २ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें । हिवे

हाणायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति । तथाअकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्खत्ति कल्पवृक्षाः । उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उव्वत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिगत्ति भाजनदायिनः तुडियंगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुव्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विरकंभेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था कण्हेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्था रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था दसनरकत्ता नाणवुड्ढिकरा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो । तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा । हत्थोचित्तायतहा । दसवुड्ढिकरायनाणस्स १ अकम्मभूमयाणंमणुआणं दसविहारुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि

चयकरिवानेअर्थे एइकेवलीमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरूपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेपिहुलपणेकह्यो अरिहंतअरिष्टनेमी बावीसमोतीर्थंकर दशधनुउंचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमो तेहनो देहदशधनुषउंचोउंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषउंचा उंचपणेहुया दशनक्षत्र ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ त्रणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४ । पूर्वाषाढ ५ । पूर्वाभाद्रपद ६ । मूल ७ आश्लेषा ८ । हस्त ९ चित्रा १० । एह दशनक्षत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो काहीं विघ्नउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां साखतांछे । तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पवृक्ष । उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आईरह्या थकाभोग्यआवे बांछापूरवे एहवा कह्यातेकहेछे । मत्तंगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः यायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्षणेतथा अभ्युपगमुवक्रमियत्ति द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादिकां द्वितीयातु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेदयतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र सज्ञिन उभयतो ऽसज्ञिनस्त्व निदयेति एतद्वारविवरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य न्पद मध्येयमिति अनन्तर वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिण वेयणं । सीतोसिणंवेयणं । गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंभाणियव्वं ।

साता सातते अनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो । सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो । तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति । विहु प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका । पहिलीवेदना आगमोने ले एतले स्वीकारकरीनेले । जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे । बीजी सेउदीरणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे । तिहां तिर्यंच पचेन्द्रिय मनुष्य विहु वेदना आगमोनेले जिमवेदनावेदे । तथा णीयाएत्ति । विहु प्रकारे वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना । बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना । तिहांसज्ञी पचेंद्रियणीयावेदनावेदे । असज्ञीअणीयावेदनावेदे । हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे । किवाउष्णवेदनावेदे किवाशीतोष्ण वेदनावेदे । गौतम नारकीनी वेदना एहपन्नवणाना पैत्रीसमापदधकी भणिवो

दीवत्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्तरसाभोजनदायिनः मण्यंगाआभरण
दायिनः गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः अनग्नत्वंसवस्त्रत्व तपेतुल्यादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानीति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

अंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुढवीए
अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइ
आणं नेरइआणं दसपलियउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ
वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाण नेरइ
याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

वाजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ९ वस्त्रना
दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केललाएक नारकीनो जघन्यनो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो
दशपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो
आउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ
न्य दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्क

नदमित्ते दीहबाहूमहाबाहू । अइबलेमहाबले बलभद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय आगमिस्सेणव रिहणो । जयंतेविजएभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आणंदे नदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवण्हं बलदेववासुदेवाण पुव्वभवियाणवनामधेज्जाभविस्संति । नवधम्मायरियाभविस्संति । नवनियाणभूमीउ नवनियाणकारणाभविस्सति । नवपडिसत्तूभविस्सति तजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी पल्हा एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं । सव्वेविचक्कजोही हम्मिहतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति त्थकराभविस्सति तजहा । सुमगलेअसिद्धत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्माज्झएयअरहा आगमिस्सेणहोक्खई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नदन ७ । पद्म ८ । सकर्षण ९ । एह ९ वलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजघ २ वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह पतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सघलाई प्रतिवासुदेव चक्रे करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जम्बूद्दीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्वाण ३

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाण जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं

ष्ट जघन्य आउखो एकसागरोपम झाझेरोछे। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कृष्ट दसहजारवर्ष आउखोकह्यो भगवंते। वानवंतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दशसहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतनो दशपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोकें केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतंसक ११ एणेविमाणे देवतामणेउपना तेहनो देवतानो उत्कृष्टो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दशपखवाडे स्वा

नमः श्रीवीरायप्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमःश्रीवाग्देव्यैवरकविसभायाअपिनमः ॥ नमःश्रीसद्भावस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमःसर्वस्मैचप्रकृतविधि साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाच्यजलधे र्लक्षसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामानम्मदानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिन्निदधतःकालादि दोषात्तथा । दुर्लेखाऽखिलताङ्गतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिम्मादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्गष्टेतिनिधायकष्टमधिकम्मामेन्यदाजायता । व्याख्यानेस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पश्रु तानामम ॥ इत्यालोचयतातथापिकिमपिप्रोक्तमयातत्रच । दुर्व्याख्यानविशोधनविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यता. ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् । क्वचनतदवभासोयःसमाद्यावृबुद्धे. ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशे । गणधरवचनानाञ्चस्खलनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानयद्यपीदम्प्रवरकविवचःपारतन्त्रे णदृष्ट । सम्भाव्योस्मिस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोर्थादिभेदः ॥ किन्तुयौसद्बुद्धेरनुशरणविधेर्भावशुद्धेश्चदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रशमपरमनास्तान्नदेवीश्रु तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदर्प्पीयसांवा ग्मिनां । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृति.कृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमासत' ॥ ७ ॥ एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमाना ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । गृन्थमानम्विनिश्चित ॥ त्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीरस्तु

मिहप्रतिमादार्थानि सूत्राणिसप्त स्थित्यादार्थानितुतदेति तत्रउपासंतेसेवंते श्रमणान्येते उपासकाः श्रावकास्तेषांप्रतिमाः प्रतिज्ञाअभिग्रहरूपाः उपासकप्र तिमाः तत्रदर्शनंसम्यक्त्व तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा प्रतिमावंतोनिर्देश्यः कृतः एवमुत्तरपदे ष्वपि अयमत्रश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानां प्रक्रातत्वेपि प्रतिमाभावार्थः सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशल्यरहितस्याणुव्रतादि गुणनिकल्पस्यायमभ्युपगमः सा प्रतिमाप्रथमेति । तथाकृतमनुष्ठितं व्रतादीनांकर्म तत्राणुव्रतंज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सकृतव्रतकर्माप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भावः

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंभवग्गहणेहिं सि ज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्का रसउवासगपडिमाउ प० तं० दंसणसावए कयव्वयकम्मे सामाइअकडे पोसहोववासनिरए दियाबंभया

सोखास घणोलेइ । उ'चोखासले नीचोखासमूंके तेहदेवतानो दशसहस्रवर्ष गएथकें आहारनो अर्थउपजेछे केतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीझसे बूझसे मूंकासे सर्वदुःखनो अंतकरिसे मोक्षजासे इति दशमूठाणूं सम्पत्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां श्रावकसाधुनी सेवाना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगली दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत वोचेंभेद नजाणिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरोने दर्शनश्रावकनो नामलिधोंएम आगलीएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अधिकार ग्रन्थांत रथी जाणवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजी प्रतिमा २ सावद्ययोगनो टालिवो निरवद्य

सकल भव्यजनोको सविनय निवेदन करतेहै कि लुपकगणोपासक मुर्शिदावाद अजीमगज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ छपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भडारकरके स्थापित किये जिस्से साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम सग्रहका यह समवायाग चतुर्थभागहै इस ग्रथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोको यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमे कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोमें नये २ पाठ नजर आतेहै इस पुस्तकोमे इस पाठ है इसलिये बहुसमत टीकासमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो आपलोगो की साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्रकिरणै र्ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।
पुस्तककमलविकासी द्युनिशंजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

———ooo———

इतीयंद्वितीया। तथासामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतंविहितंदेशतोयेनसामायिककृत आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्षांतस्योत्त
रपदत्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्यप्रतिदिन मुभयसंध्यंसामायिककरणं मासत्रयंयावदिति तृतीयाप्रतिमेति। तथापौषंपुष्टिकुशलधर्माणंधत्ते
यदाहारत्यागादिक मनुष्ठानंतत्पौषध तेनोपसेवनमवस्थान महोरात्रंयावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिन मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौष
धोपवासइति इयंव्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्यशब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्रपौषधोपवासे निरतआसक्तः पौषधोपवासनिर
तः सएवत्रिधस्य श्रावकस्यचतुर्थीप्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्रभावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमीचतुर्दश्यमावस्या पौर्णमासीष्वाहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिप
द्यमानस्यचतुरोमासान् यावत्चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथापंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थंच सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्त
केषुनदृश्यते दशादिषुपुनरुपलभ्यते इतितदर्थउपदर्शितः तथाशेषदिनेषु दिवाब्रह्मचारी रत्तीत्ति रात्रौकिमतआह परिमाणं स्त्रीणातद्भोगानांवा प्रमाणंकृतं
येनसपरिमाणकृतइति अयमत्रभावोदर्शनव्रत सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्यपर्वस्वेकरात्रिक प्रतिमाकारिणः शेषदिनेषुदिवाब्रह्मचारिणो रात्रौब्रह्मपरि

योगनो सेविवो तेसामायिककृत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणिलगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोखवो तेपौषध आहारादिकनो त्यागरूप
अनुष्ठान तेपौषधतेणेकरी उपवसवो रहिवो अहोरात्रिलगेते पौषधोपवासनिरत पाछिलीत्रिणि प्रतिमासहित अष्टम्यादिक पर्वनेविषे मासच्यारलगे चतु
र्विध पौषधकरे चउथी पौषधप्रतिमा ४ पांचमीप्रतिमानेविषे अष्टम्यादिकपर्वनेविषे एकरात्रि काउसग्गकरे शेषदिनेदोहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रेंपरिमाणकरे
अरात्रिभोजी अस्नानीकाछडी नबांधे पांचमासलगे एतले एपांचमीप्रतिमा ५ छठीप्रतिमाएं दिवसे अनेरात्रिएंपिण ब्रह्मचर्य पाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिनः अबद्धकच्छस्यपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमट्ठाएगराईया। पयार्द्धं असिणाणवि यडभोई मउलियडोदिवसबंभयारीएय। रत्तिंपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिसुज्जत्तेसुत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि वर्जकः क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्रावित्यर्थः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुंक्तेऽशनाद्यभ्य वहरतीति विकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमेतिप्रक्रतं अयमत्रभावः प्रतिमापचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या वत्पष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरुपादिप्रतिज्ञानाप्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमेति प्रक्रतं इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः श्रावोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरे रप्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिज्जाविरात्तविवंभयारीज्जसिणाई विज्जडभोई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए ज्जारं

भोजीदिवसेजिमे मौलिकृतनथी बांध्योपहिरणानो कछजेणेमासछलगे छठ्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणेपरिज्ञात पच्चख्योते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या रंभनेविषे परिज्ञात पच्चखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपाछिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति । तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ठ भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृतं इहायंभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुंडितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचिद्गृहव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमेति । तथा श्रमणेति निर्ग्रन्थसद्वेषस्तदनुष्टान करणात् सश्रमणभूतः सा धुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जम्बूस्वामिन मामन्त्रयतोक्त मित्येकादशीति । इहचे यभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रवेशेसतिश्रमणो पासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षादेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासान् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरेत्वेवंवाचना दसणसावएप्रथमा कयवयकद्वितीया । कयसामाइए तृतीया । पोसहोववासनिरए चतुर्थी । राइभत्तपरिन्नाए पंचमीसचित्त

न्नपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठ्ठन्नपरिन्नाए समणभूएच्चाविन्नमइ समणाउसो लोगंसाइ इक्कारसएहिं एक्का

भातकरो तेजेणेपरिज्ञात पच्चख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगें दशमीप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाए पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया साथलेता जइये एतलेइग्यारमी प्रतिमाएंश्रमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुंडितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी जीमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकहिये मुझश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोणेवापूछ्योथोको कहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्या रमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमंत्रेछे हेआयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाछेहडाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेंयोजनेआवा

परिव्राएषष्ठी दियानभयारी रात्रोपरिमाणकडेसप्तमी दियाविरात्रोवि बंभयारी। असिणाणपयाविभवति वोसट्ठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिव्राएनवमी उद्दिष्ठभत्तनज्जएदशमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिन्नातइतिनवमी प्रेष्यरंभपरिन्नातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनलवेतिशेषः ज्योतिषंज्योतिश्चक्रचारपरिभ्रमणं। चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकुलेतिशेषः ज्योतिसतेति। ज्योतिश्चक्रपर्यंत. प्रज्ञप्तइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यातं उक्तंच एक्कारएक्कावीसा सयएक्काराहियायएक्कारा। मेरुअलोगावाहे जोइसचक्कचरइट्ठाइत्ति। अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्वयं व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतितिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

रेहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोयणसए हिं जोइसेचारचरइ समणस्सणंभगवउमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गि भूई वायभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनरकत्तेएक्कारसतारे प०

धायेंपवतेकहतांकह्यो भगवते। एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्रारह्योछे। ज्योतिषनोछेहडोकह्यो भगवंते। जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोचो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिश्चक्रचारचरे भ्रमणकरे। श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर णहारहुया। तेअनुक्रमे कहेछे आगले। इन्द्रभूति १। अग्निभूति २। वायुभूति ३। व्यक्तनामे ४। सौधर्मा ५। मंडित। ६। मौर्यपुत्र ७। अकंपित ८। अच

दयमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएकारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कभापेक्षया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्स उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रज्ञप्तः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशस्वं गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

हेठिमगेविज्जयदेवायं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जविमाणसतंनवइत्तिमरकायं मंदेरणंपव्वए धरणितलाओसिहरतले

लभ्राता ९। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनक्षत्रना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारअ धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाएं एकारसभाग परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊचा बडीये तिहां विखंभपणें एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरा। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेऊंसहस्र योजने ऊंचीवडिये तहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन ऊगरां। पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊण्डोभूमिमध्ये नेऊसहस्र भूमिथकी ऊंचोस

मेति ब्रह्मादीनिषादशविमाननामानि। षादशस्थानमथतश्चसुगमं। नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागेकादशसूत्राख्याह। तत्रभिक्षूणांविशिष्ट संहननस्तुतवतां प्रति

एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं एक्कारसपलिउव
माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं
अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा
इंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बभप्प
भ बंभकंतं बंभवण्णं बभलेसं बंभज्झयं बभसिगं बंभसिठ्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताएउववन्ना
तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाएकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

र्थमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गण
धर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला
एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनोकेतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म इशानदेवलोक
नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छठ्ठेदेवलोके केतलाएकदेवनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। छठ्ठेदेवलोकें जेहदेवता
ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकात ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माअभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्यादयः सप्तमासिक्यन्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिर्येति तथासप्तसप्तसमरात्रिंदिवान्याहो

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसरहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआभवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंक रिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खपडिमाओ पन्नत्ता तंजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआ भिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभि क्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा त

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे खासोखास घणीले जद्यो खासले नीचोखास मूंके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वंछाउपजेछे। संसारमाहें केतलाएक भव्यजीव जेह ग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी झस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमूं ठाणूंसम्मंतं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहननो धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्व कोईएकगुरुनी पाछा मांगी गछमांहि पिणहोइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदाथीले एकमासदीठ भातपाणी नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेंमासे सातसात भातपाणीनीदातीलें लवणखड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा बिमासिकी २। त्रीजीप्रति

र्वस्त्रपात्रादिस्तंसंभोगिकः संभोगिकेनसार्द्धंतुभक्तमोत्पादनैषणादोषैर्विशुद्धं गृह्णन्शुद्धः अशुद्धंगृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो वारत्रयंयावत्सम्भोगार्हश्चतुर्थवेला या: प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति । विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा सयत्यवासार्द्ध मुपधिशुद्धमशुद्धंवा निःकारणं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चि त्तोपि वेलात्रयस्योपरिनसंभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्यश्चेति उक्तंच एगंचदोवितिन्निच आउट्टंतस्सहोइच्छित्तं। आलोचयतइत्य र्थः आउट्टंतेवितओ परेणतिल्लिं विसंभोगोत्ति सुयस्ससम्भोगिकस्य विसम्भोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छनादिक विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनोप सम्पन्नस्याऽनुसम्पन्नस्यवा पार्श्वस्थादेर्वात्रयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसम्भोग्यः तथा भक्तपाणेत्ति । उपधिद्वारवदवसेया नवरमिहभोजनंदातुच परिक र्मपरिभोगयो. स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपग्गहेइत्ति इहेतिशब्दउपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्उपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवंदनादिकमपीहद्रष्टव्यं तथाहिसम्भोगिकानामन्यसम्भोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रग्रहं नमःक्षमाश्रमणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणच कुर्वन् शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसम्भोग्यो विसम्भोग्यश्चेति। तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपग्रहासमर्थे सम्भोगिकेऽन्यसम्भोगि केऽन्यसम्भोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्धः निःकारणविसम्भोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव सम्भोग्योविसम्भोग्यश्चेति तथा निकाएयत्ति नि

प० तं० उवहिसुअन्नत्तपाणे अंजलिग्गहेइ अदायणेअ निक्काएअ अभुट्ठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

ही तेहसंभोगीनकरीये १ । श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना पृछादिककरतो संभोगी तेहीज सिद्धांत अवधिएं भणतो क्रोधीनें तथा पासथानें भणानो विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसभोगी ३ अंजलि प्रग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकोवगृहइति । एवचैतेश्ववगृहेषु 'आकुट्यादिना अभाव्यंमचित्तशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्प्पयतः समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावगृह एवनास्ति तथापियदितत् क्षेत्रकुलकमन्यत्रैवचसंविग्गानिर्वहंतिततस्तत्क्षेत्रपरिहरं त्येवायं पार्श्वस्थादीनांवावगृहक्षेत्रं विस्तीर्णं सविग्गाद्यान्यत्रन निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशति सचित्तादिवगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवंतीति आहच समण त्रममणुन्ने अदिन्नअणा भवगिण्हमाणेवासम्भोगवीसुकरण पृथक्करणमित्यर्थः इयरेयअलंभेणल्लिन्ति इतरान्पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या आसनविशेषः साचसम्भोगकारणभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा र्श्वस्थादिसाम्भोगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादाद्वनिषद्या विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि ष्टः सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादादिकापचधातस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनतत्रसम्भो गाऽसम्भोगौभवतः तत्रसमभ्युपगम्यपचावयवेन त्रयावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनसछलजाति विरहितो भूतार्थाऽन्वेषणापरोवादः सएवछलजाति निर्गतस्थानप रोजल्पः यत्रैकस्यपक्षपरिग्रहोस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्तावितण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति श्रमणीभिक्षुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचन्नपिविसम्भोगा र्हइति रूपकद्वयस्य संक्षेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपचमोद्देशकभाष्याद्वसेयइति तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रश्नसंद्वाद शावर्त्ततामेवास्यानुवन्दनशेषांश्च तद्धर्मानभिधित्सितरूपकमाह दुओणएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रणमनमित्यर्थः द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्यवनतं तत्रैकय

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्याततमेजबूद्वीपे आद्यजंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं बधिनीति तथारामोनवमोबलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देवत्वंगतः तथासर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहूर्ति

णसयसहस्साइं आयामविरकंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विरकंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं विरकंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

वर्त छछवेला गुरुनेपगें वांदणाकीजे। अहीकाय एपाठकहीविहुवेलाथई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला गुरुनेंपगें मस्तकनमाडिये। त्रिणीगुप्ती मनवचन कायानी गुप्तिकीजे। उपवेसवींवेला वांदणानेअर्थे अवग्रहमांही आवीने एगनिखमण अवग्रहबाहिरि पहिलेवांदणे एकवेला नीकली बीजीवेला गरुपगें बेठा ज वांदणो समापीएपाठकही एहसमवयांग वृत्तिनोभाव। जंबूद्वीपनी पूर्वनी पोलीनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपेंछे बारयोज नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेंकही रामबलदेव कृष्णवासुदेवनो वडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखूंपालीने देवपणूंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे। तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंची चूलिकाछे। तेहनोमूल १२ योजनबीचो आठउपरि शिखरे चारयोजन पिहुलपणो कह्यो। जबूद्वीपनी चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे। जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेंकही भगवंते सर्वजघ न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपूनिमनी घणीनाहोरात्रि बारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनी रात्रिकही। एमदिवसपणिजाणिवो।

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा

नो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आऊखोकह्यो। सौधर्म ईशानकल्पें देवलोकें केतलाएक देवतानो बार पल्योपम आऊखोकह्यो। लांतक छठादेवलोके केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। लातकाकल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २। कंबु ३। कंबुग्रीव ४। पुंख ५। सपुख ६। महापुख ७। पुड्र ८। सपुंड्र ९। महापुड्र १०। नरेन्द्र ११। नरेन्द्रकात १२। नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३। एणे १३ विमाने दे वतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। तेहदेवतानो बारअर्द्धमासे पखवाडे खासोखास घणोले जंचोले नीचोउस्वासले

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थानके किंचिल्लिख्यते इहस्थिति सूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणंक्रियाकर्मनिर्वं धनचेष्टातस्याः स्थानानिभेदाःपर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रप्रथाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्त्रसस्थावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानप्रतिप्रथमः १। तद्विलक्षणोऽनर्थदण्डः २। तथाहिंसामाश्रित्य हिंसितवान्हिनस्ति हिंसिष्यतिवा अयंवैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेनदण्डोविनाशनं हिंसादण्डः ३। तथा ऽकस्मादनभिसंधिना व्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो ऽन्यस्यविनाशोऽकस्माद्दण्डः ४। तथादृष्टेर्विपर्यासितावादृष्टिर्विपर्यासिका दृष्टिर्विपर्यासितायां मतिभ्रमइत्यर्थस्त

जेबारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सं ति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ अठादंडे अणठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दि

तेहनो बारेवर्षसहस्रे आहारनो अर्थजपजें। केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभवग्रहणे १२ भवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूंठाणूं सम्मत्तं २० ॥ १२ ॥ हिवे तेरक्रियानो अधिकार लखियेछे। तेरक्रियाठाणां कह्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थे त्रस थावरने दंडेहणिये तेअर्थदंड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २ एह मुझनेहणतोहुतोहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हूंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने बधवा प्रवर्त्योहुतो अने अनेरोहणाण्यो तेअ कस्मात्दंड ४। दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अमित्रनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूंठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे जेहदंडनो तेमृषावाद प्रत्यया ६। एमअदत्तादानप्रत्यया ७। अध्यात्ममन तेहनेंविषेहो तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनोचिंतवो ८। मानप्रत्ययश्च

यादण्डः प्राणिवधोदृष्टिविपर्यासितावा एकोदण्डोदृष्टिविपर्यासितादण्डोवा मित्रादेर्मित्रादिबुद्ध्या हननमितिभावः ५। तथामृषावादे आत्मपरोभयार्थम लीकवचनंतदेवप्रत्ययः कारणंयस्यदंडस्य मृषावादप्रत्ययः ६। एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७। तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिको वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष शोकाभिभवइतिभावः ८। तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९। तथामित्रदेषप्रत्ययः मातपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १०।

ठिविपरिञ्चासिञ्चादंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मा यावत्तिए लोभवत्तिए इरिञ्चावहिए नामंतेरसमे सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरसविमाणाएपत्थडा प० सोहम्म

भिमानेकरी आगत्याने दंडदेवो ९। मित्रद्वेषप्रत्यय मातापितानें थोडोअपराधे घणोदंडदेवो १०। मायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्तांव्योदंड ते मायाप्रत्यय ११। एमलोभप्रत्यय १२। ऐर्यापथिकीनामे तेरमोक्रियास्थानक काययोग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलीसमें क्रियालागे बीजेसमेदेदे तीजेस मेनिर्जरे १३। सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेछे तेमाटे विहुंदेवलोके तेरविमान प्रस्तटछे उपराउपरि पावडीरूप कह्यो। पहिलो सौधर्मलोक मेरुथकी दक्षिणदिसें अर्द्धचंद्राकारछे। पूर्वपश्चिमेलांबी दक्षिणउत्तरेपिहुलो। तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेंद्रनो आवासभूतविमान अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणें पिहुलपणेकह्यो। एममेरुथकी उत्तरदिसें अर्द्धचंद्राका रईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकह्यो। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे कुलकोटिनी योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसढीबार कुलकोटि जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीछे। योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोबर कुलते

कायानां व्यापाराणांप्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाचारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तौहिसयमिनाम वस्तः सयमवतश्चसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च कायप्रयोगाः एवत्रयोदशेति । तथासूरमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूरमंडलयोजनं तत् । णमित्यलंकारेत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागै र्येषां भागानामेकष ष्ठायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य सबंधिभिरूनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशयोजनभागाद्वत्यर्थः वज्राभिलापेनद्वादश वइराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

ञ्सच्चामोसमणपज्जंगे सच्चवइपज्जंगे मोसवइपज्जंगे सच्चामोसवइपज्जंगे ञ्सच्चामोसवइपज्जंगे उरालिञ्सरीरका यपज्जंगे उरालिञ्मीससरीरकायपज्जंगे वेउव्विञ्सरीरकायपज्जंगे वेउव्विञ्मीससरीरकायपज्जंगे कम्मसरीरकाय पज्जंगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसठिभागेहिं जोयणस्सऊणइमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ञ्सत्थेगइञ्ञाणं

मनोव्यापार सांचोनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एमसवावचनयोग तेहनूंकारण २ । सत्यासत्य तेमिश्रभाषाएं बोलवो ३ । असत्यामृषा तेव्यवहारवचनयोग जाइआवी लेदे एहवीभाषा ४ । कायाना सातयोगछे तेमाहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यचनेनहोय तेहोय तेहपूरबधरनेहोई तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं। कार्मणशरीर काययोग ५। एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ थया सूर्यनूंमांडलू योजनने एकसठीए तेरभा गेंजणीकह्यो । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनूंमंडलछे । एतले एकसठीया ४८ भागसर्यनूंमांडलूं पिछलूंछे । एणीएरत्नप्रभा पहिली

नानीति । अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मोदयव र्त्तित्वात् पृथिव्यादयएकेंद्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकोग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति द्वितीयः एवंबादराबादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्ततरभेदाद्विधा एवद्वीद्रियादयोपि नवरंपचेंद्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्युपेताइतरेत्वसंज्ञिनइति

गसिंगं लोगसिहं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं भवग्गह णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥ चउद्दसभूअग्गामा प० तं० ॥ सुहुमाअपज्जत्तया सुहुमापज्जत्तया बादराअपज्जत्तया बादरापज्जत्तया

लोकोत्तरावतसक १२ । एम छत्रीसविमाने देवतापणें उपनाछे तेदेवतानोउत्कृष्टो तेरसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले ऊचोले नीचोमूंके । तेदेवतानो तेरवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव तेरेंभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्ये इति तेरमूंठाणूं सम्मत ॥ १३ ॥ हिवे चौदमो अधिकार लिखेछे । चौदभूतानाग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे । सूक्ष्मए केंद्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मोदयथकी सूक्ष्मपणूंपाम्या एहवापृथिव्यादिक एकेंद्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तछे आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासोस्वास ४

नाणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रोच्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पच्चक्खाणभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपंवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशया वर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवझपाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवध्यनेकादश यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयंते तत्क्रियाविशालापुर्व्वं तह बिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्टव्य. तत

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायंपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं नवेनवमं विज्जाअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसपुव्वं तत्तोकरियविसालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चऊ

प्रकाशो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेंकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्व सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुभेदेंकह्यो ६ । तिवारपछे आत्मप्रवादपूर्व जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमूं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांवर्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्याना अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमू जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार पछीक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

यविशेषः तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरत. श्रावकइत्यर्थः प्रमत्तसंयतः किञ्चित्प्रमादवान् सर्वत्रविरतः अप्रमत्तसंयतः सर्वप्रमादरहितः सएव
नियट्टि इहक्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिवा प्रतिपन्नोजीवः क्षीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिप
न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतत्प्रधानोबादरो बादरसपरायोनिवृत्तिबादरः अणियट्टिगायरेत्ति अनिवृत्तिबादरः सचकषायाष्टकक्षपणारम्भान्नपुंसकवेदोपश
मनारम्भादारभ्य बादरलोभखंडं क्षपणोपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसपराएत्ति सूक्ष्मः संज्वलनलोभासंख्येयखण्डरूपः संपरायः कषायोयस्यससूक्ष्मसंपरायो लो
भानुवेदकइत्यर्थोयद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदशमजीवस्थानमिति तथा उपशांतः सर्वथानुदयावस्थो
मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोहः उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयचोपशमश्रेणि समाप्तावंतर्मुहूर्तंभवति ततःप्रच्यवतएवेति तथाक्षीणो निःसत्ताकीभूतोमोहोय

म्मद्दिठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टिअनियट्टिबायरे सुहुमसंपराय उवसमएखीणव

कांइक प्रमादवंत ६। अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७। आठमोठाणाथी क्षपकश्रेणि तथा उपशमश्रेणी जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४। क्रोध १ मान २
माया ३ लोभ ४। क्षणिमोहनी सम्यक्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७। दर्शनसप्तक्षयकरतो क्षपकश्रेणी आरूढकही अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणूंकह्यूं ८
नवमूं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुसकवेदोदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखडखपावे कैउपशमावे ९। सूक्ष्मसपराय दसमूं
तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदवोछे जिहा सूक्ष्मसपराय गुणठाणेठाणी जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नहोय कै क्षप
कश्रेणी प्रतिपन्नहोय १०। इग्यारमूं उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयछे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमूं गुणठाणे अंतमुहूर्तरही कालकरेतो अनुत्तर

स्यस तथाक्षयवीतरागइत्यर्थोऽयमप्यंतर्मुहूर्त्तएवेति तथासंयोगीकेवली मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाअयोगीकवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः शै
लेशीगतोऽह्रस्वपंचाक्षरोच्चिरणमात्रंकालयावदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतेरवत्योजीवे इहभरतमेरवतचारोपितगुणको दडाकारपनस्त्रयज्जी
वेभवतः तत्रभरतस्यहिमवतोऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः श्रेणिजीवाः ऐरवतस्यचशिखरिण' परतोनतरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली भरहेवयाउणजीवाउ चउद्दसचऊद्दसजोयणसहस्साइं चत्तारि
अएऊत्तरेजोयणसए छच्चएकूणवीसेभागेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेस्सणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

विमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छठ्ठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोचपकश्रेणी करेतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेवडेतेह ११ । वार
मोक्षीणमोह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिहांक्षिणवीतराग १२ । तेरमो सयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवत केवलज्ञानी १३ । चौदमो असंयोगी केव
ली मनप्रभृतियोगत्रणि जिहांरुंध्याछे ह्रस्वपंचाक्षरकालमात्र १४ गुणठानकालमान मिछे १ सासण २ अविरय ३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिछस्सति
भेभगछावलियाहोय सासणे १ तिन्नीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसम १३ । लहुपचक्खरचरम १४ अतहुसे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहबिहु
क्षेत्रना जीव तिहां हिमवंतपर्वतथकी ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगे लांबीभरजीवा प्रत्यचाकारे अने ऐरवतक्षेत्रमाजीव शिखरीपर्वतथकी परहीश्रेणी जाणी
वी एहबीहुजीव चौदचौदयोजन सहस्रनी चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लाबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक
त्रणिसमुद्र चउथोहिमवत पर्वत एतलालगी भूमिना अतभाग ४ छे । जिहातेह भूमिनोधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमाहि जे

त्वारोन्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयतिवस्तूनीति यदाह रत्ननिगद्यते तज्जातीयदुत्कृष्टमिति गाहावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वड्ढइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहसप्तात्वानिपचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानांनामानीति

दस्सरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्दीवेणंदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वावरेणलवणसमुद्दं समुप्पति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकता सीआ सीओदा नरकंता नारिकांता सुवस्सकूला रूप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयायाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरत्नकहिये तेकहेछे । स्त्रीरत्न १ । सेनापतिरत्न ३ । गृहपतिरत्नतेकोठारी ३ । पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४ । वार्द्धकीसूत्रधार ५ । अश्व घोडोरत्न ६ । हस्तिरत्न ७ । एहसातपचेंद्रियरत्न । असिखड्गरत्न ८ । दंडरत्न ९ । चक्ररत्न १० । छत्ररत्न ११ । चर्मरत्न १२ । मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३ । काकिणीं सुवर्णमयी अहिरणसठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कह्या । जबूद्वीपनेविषे चौद महानदीजाणवी । पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्प्ये पहुचेछे । पूर्वलवणसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुंचे तेंकहेछे । गंगा १ । सिंधु २ । रोहिता ३ । रोहितंसा ४ । हरिता ५ । हरिकांता ६ । सीता ७ । सीतोदा ८ । नरकांता ९ । नारिकांता १० । सुर्वणकूला ११ । रूप्यकूला १२ । रत्ता १३ । रत्तवती १४ । एणीएरत्नप्रभा-पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदोपल्योप

चऊद्दसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० अ
सुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण चऊद्दसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं
देवाणं चउद्दसपलिओ वमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प०
महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेण चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहि
अं सिरिसोमनस लंतयं काविठ महिद महिदकत महिदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
देवाणं उक्कोसेणं चऊद्दससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहि आणमतिवा पाणमंति
वा ऊस्ससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआज

म आउखोकह्यो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपल्योपम आउ
खोकह्यो। सोधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो। लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो
महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छठ्ठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहांतक २ श्रीसोमनस १ लां
तक ४ कानिष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेन्द्रोत्तरावतंसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह
देवता चौदेअर्धमासे पखवाडे घणोखासले थोडोखासले ऊचोखासले नीचोखासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे। केएक भव्यजीव चौ

अथपंचदशस्थानके सुगमेपिकिंचिल्लिख्यते इहस्थितेर्वाक्सप्तसूत्राणि । तत्रपरमाश्चतेऽधार्मिकाश्च संक्लिष्टपरिणामत्वात्परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयंतीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेचव्यापारभेदेन पंचदशभवंति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् इतिपातयति बध्नाति नीत्वावारं २ खतलेविमुचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्विहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सोंबऋषीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारार्दितानधःशातनपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकइति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकनान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति

वसिट्ठिज्जा जीवाजेचऊहसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीज्जा प० तं० ॥ अंबे अंबरिसीचेव सामसबलेत्तिज्जावरे रुद्दावरुद्दकालेज्ज महाकालेत्तिज्जावरे असिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेज्जरणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे

दभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति चौदमोठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्लिष्ट परिणामनाधणी चिखिनरकलगे नारकीने वेदनानादेणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणीपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअबकहिये १ । हण्यानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहनारकीने हाथपगनें प्रहारेंकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हृदयाकालिजां जपाडेंतेशबलक कहि

तवत् पलायमानान् नारकान् पशुन्इववाटकेषु महाघोषं कुर्वन्विरुणद्विसमहाघोषइति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्यंवादिक्रमेणते परमाधार्मिकाः पञ्च दशाख्याताः कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराहुणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिपौर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्हंराहुविमाण निच्चंचदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलकारे बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिवयस्तिप्रतिपद प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपंचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिज्जा णेमीणंज्जरहा पन्नरसधणूइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहुणं वक्कलपरकस्सपक्खिवए पन्नरसति भागेणं चंदलेसज्जावरेत्ताणं चिठ्ठति तं० पढमाएपढमंभागं बीज्जाएदुभागं तइयाएतिभागं चउत्थीएचउभागं पंचमीएपंचभागं छठीएछभागं ज्जठमीएज्जठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इचाडेघालीमेले पोकारकरे तानेरूंधीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पनरजातीना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस मा पनरधनुषजंचा ऊंचपणीकह्या । राहुना विहिंभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीएं अमावास्याए चद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापक्ष नीरात्रीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानी लेश्यादीप्ति आवरीने आछादीने तिष्ठेरहे तेकहेछे । एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानी एकएककला आ छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने बीजोभाग २ । त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३ । चउथें चौथोभाग ४ । पंचमीए पांचमोभाग ५ । छठेछठोभाग ६ । सातमे सातमोभाग ७ । आठमेदिने आठमोभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इग्यारभाग ११ । वारसे बारभाग १२ । तेरसे

यथापदं पदेनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभाव' चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डलंलेश्यातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति
एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पढमाइत्ति प्रथमायातिथ्यां प्रथमंभाग पचदशांशलक्षणं चंद्रलेश्यायाआवृत्यतिष्ठतीति प्रक्रमः अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुत्ति
पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशभागमावृत्यतिष्ठति तच्चेवत्ति तमेवपञ्चदशभाग शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषु चद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पंचदशभागतः स्वयमपसरणतः
प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायभावार्थ. षोडशभागीकृतस्यचद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहुः प्रतिदिनमेकैकभाग कृष्णपक्षे
आवृणोतिशुक्लपक्षेतु विमुचतीति उक्तचज्योतिष्करण्डके सोलसभागेकाजण उलुवइहायएत्थपन्नरस। तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवढइजोण्हंति। ननुचन्द्रविमा

वारसमीए वारसभागं तेरसीए तेरसभागं चउद्दसीए चउद्दसभागं पन्नरसेसु पन्नरसभागं सुक्कपक्खस्स उवद
सेमाणे चिठ्ठत्ति तं० पढमाएपढमंभागं जावपन्नरसेसु पन्नरसभागं छणक्खत्ता पन्नरस मुहुत्तसजुत्ता प०
तं० सतभिसय भरणि अद्दा असलेसा साइ तहाजेठाय एतेछणक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

तरमोभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पनरमेदिने पनरमी कलाढाके १५। तेहीज चन्द्रनो पनरमोभाग शुक्लपक्षे राहुमूंकतो चंद्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे
शुक्लपक्षने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पनरमेदिने पनरमोभागमूंके। छनक्षत्र पनरमूहुर्तलगे चंद्रमा साथे चंद्रसंयुक्तथका
रहे तेह तुलासंक्राति जाणिवो तेकहेछे। शतभिषा १। भरणी २। अर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह छनक्षत्र पनरमूहुर्त सयुक्तकहीये
१५ मुहुर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रआसौ मसवाडे पनरमुहुर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पनरमुहुर्तनी ३० घडीनीरात्रीहोय। विद्या

नस्यपचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वा त्कथंपंचदशैर्दिनैश्चंद्रविमानस्य महत्वेनेतरस्यच लघुत्वेनसर्वा वरणंस्यादित्यत्रोच्यते। यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्रायिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपिविमानसम्भाव्यते लघीयसोपिवाराहुवि मानस्यमहतातमिस्त्ररश्मिजालेन तस्यावरणान्नदोषइति तथा षण्णचत्वाणि पचदशमूहूर्त्तानि यावच्चद्रेण सयोगोयेषांतानि पचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्य था सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेसयाइजेट्ठाय। एएछत्तक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता। संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्व युजिचमासे पचदशमुहुर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतस्तु मेषसक्रातिदिनेचैवंदृश्यमिति पओगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्पदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियापरिणामेनकर्मणासहाऽत्मनेति प्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबंधनंमनः सत्यमन स्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

मासेसुपन्नरसमुहुत्ते दिवसोभवति सइअपन्नरसमुहुत्तारात्तीभवति विज्जाअणुप्पवायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसव त्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसपओगे असच्चामोसमणप

अनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनी १५ वस्तुअध्ययन विशेषकह्यो। मनुष्यने पनरप्रकारें प्रयोगकहतांयोगकह्या। तेकहेछे। सत्यमनोयोग मननोसांचोव्यापार १। एमज मृषामननोव्यापार २। सत्यमृषामनोयोगमिश्र ३। असत्यअमृषा मनोयोग ४। एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५। मृषावचनयोग ६। मिश्रवचनयोग ७ असत्यामृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्ति समय औदारिकपुद्गल अने कार्मणपुद्गलमिश्रीभावे अतर्मुहूर्तलगे रहेतेभाटे औदारिक मिश्रकाययोग १०। एमज वैक्रियकाययोग ११। वैक्रियमिश्रकाय

त्यमनःप्रयोगः एवमेपेश्वपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः अयचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अयचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमिश्रोयावद्वैक्रियपर्याप्तानपर्याप्तिगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

ङंगे सच्चवइपङंगे मोसवइपङंगे सच्चमोसवइपङंगे असच्चामोसवइपङंगे उरालियसरीरकायपङंगे उरालिअ मीससरीरकायपङंगे वेउव्वियसरीरकायपङंगे वेउव्विअमीससरीरकायपङंगे आहारयसरीरकायप्पङंगे आहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग १५ । जिवारें केवली ८ समयक केवलसमुद्घातकरे केवलीनेचौजे चौथे पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरेपल्योपम आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलोकें जेदेवतानंद १ । सुनंद २ । नदावर्त ३ । नंदप्रभ ४ । नदकांत ५ । नदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नदमिद्र १० । मदकूट ११ । नदोत्तरावतंसक १२ । एहवारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेश्याद्यावामौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येकेत्वा हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदनिनिवृत्तौ सत्या तस्यैवप्रधानत्वा त्तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आइगतत्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्वर्तित तिष्ठत्येवतत्कार्यं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्णात्येवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमंचेदं नवरं

रयमीसयसरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरकायपओगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआण नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिगं णंदसिठ्ठं णंदकूडं णंदुत्तर

ने उत्कृष्टी पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासघणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेआंतरे सीझसे बूझसे मूंकासे सर्वदुःखना अंतकरसे मोक्षजासे इति पनरमूंठाणूंसम्मत्त ॥ १५ ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यआरात्सप्तसूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रसमयत्ति नास्तिकादि समय प्रतिपाद परमध्ययन समयएवोच्यते वैतालीयकृद्दोजातिबद्धं वैतालीयमेवशेषा

वक्रिंसग विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं प. न्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर सरहं अद्धमासाण आणमंतिवापाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्स. पंतिवा तेसिणं देवाण पन्नरसहिं वाससह स्सेहिं आरठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेपन्नरस हिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प० त० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिन्नासिए वीरएधम्मे

हिवेसोलवो अधिकार लिखियेछे । सूगडांगने पहिलेखंधेसोल अध्ययन मांहि गाथा एहवोन नाम सोलमोछे । तेकहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिककृद्देबाध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिन्ना ३ । स्त्रीप परिन्ना ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७ वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । सभाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपा खडीनोमत जिहांतेसमोसरण १२ । सत्यभावकहीते यथातथा नाम १३ । ग्रंथतेअध्यन १४ । ग्रंथनोकथक यमकछंदेबांध्योतेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्यननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग वंते कषकहियेसंसार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकषायकह्या तेकहेछे । अनतानुबधी क्रोध जेह अनंतांभवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्तआविवा

णां यथाभिधेयनामानि समोसरणेत्ति समवसरणं त्रयाणां षष्ट्यधिकानां प्रवादिशतानां मतपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतद्यथा तथिका यथाभिधायकग्रंथः जमइत्ति यमकीयं यमकनिवद्धंसूत्रं गाहतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथोगाथायातप्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रेगाथा

समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणुबंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोभे अपच्चक्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएमाया अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणेकोहे पच्चक्खाणावरणेमाणे पच्चक्खाणावरणामाया पच्चक्खाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया सजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधेया प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झलोगस्सनाभीय अ

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २। अनंतानुबंधीमाया २। अनंतानुबधीलोभ ४। एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे१ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोच्चय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणादे १२। सूर्यावरण रात्रें सूर्यने आवरेआछादे १३।

हपरिवहीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० पंच मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया णं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिओवमाइंठिई प० जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव त्तं महाणदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेण सोलससारोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाण

पाणी ऊचोगयोछे। तेहनी जंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पां चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदे वलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २ नदिकावर्त ३। महानदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलंब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतसक ११। एह इग्यारविमाने देव तापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेस्वासोस्वाघणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेदे

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागद्दश्य तथा अजीवकायासंयमो विकटसुवर्णबहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेक्षायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

घसिद्धियाजीवा जेसोलसहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० त० । पुढविकायअसजमे आऊका
यअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसजमे वणस्सइकायअसंजमे बेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे च
उरिंदियअसजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टूअसंजमे अप्प

वतानो सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये ॥ इतिसो लमूंठाणूं सम्मत्तम् ॥ १६ ॥ हिवे सतरमो अधिकारलिखियेछे । सतरप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो पांचवोसंघटनो हणवोते पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय असंयम ५ । बेइन्द्रियअसंयम ६ । तेइन्द्रियअसंयम ७ । चउरिंदियअसंयम ८ । पचेंदियअसंयम ९ । वस्त्रपात्र अणपुजीलेवो मेलवो तेअजीवकाय असंयम १० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रचासंयम १२ । असंयमयोगनेविषे व्यापारवो संयमयोगनेविषे अव्यापारवो तेउपेक्षा असंयम १३ । अवविए परिठवणीमात्रादिकनो अवधिएपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूंडोव्यापार तेमनअसंयम १५ । एमवचननो

अप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेषुव्यापारणं संयमयोगेश्वव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसंयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतोयः तथाअप्र
मार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयाचेति मनोवाक्कायाऽसयमास्तेषामकुशलानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः संयमः वेलंधरानुवेलधरावासपर्वतस्व

मज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वइअसंजमे कायअसंजमे सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे
आउकायसजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदिअसंजमे तेइंदिअसंजमे चउरिंदि
यसंजमे पंचिदिअसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहट्टूसंजमे अप्पमज्जणासंजमे मण
संजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसत्तरेणपव्वए सत्तरसएक्कवीसजोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वसिपिणवेलं
धरअणुवेलंधरणागराईणं आवसपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइ जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुद्दे

असंयम १६। कायानोअसंयम १७॥ सतरप्रकारेसंयमकह्यो तेकहेछे। पृथिवीकायनो राखवो तेपृथिवीकयसंजय १। एम अपकायसजय २। तेजकायस
जम ३। वायुकायसजम ४। वनस्पतिकाय संजम ५। बेइन्द्रियसजम ६। तेइन्द्रियसजम ७। चउरिंदियसजम ८। पचेंद्रियसंजम ९। वस्त्रपात्रपूंजीन
लीजे तेअजीवसंजस १०। प्रेक्षासंजम ११। उपेक्षासंजम १२। अपहृत्यामंजम १३। अप्रमार्जनसंजम १४। मनसजम १५। वयणसजम १६। कायसंज
म १७॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुष्करार्द्धअर्द्धो एमअढाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणषोत्तरपर्वतछे तेहसतरसे एकवीसयोजन जंचो
जंचपणेकह्यो सगलेवेलंधर अनुवेलंधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीथकी चिंहुपासेछे चालीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजई

रूप नेत्रसमासागाथाभिरवगंतव्यमेता । दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवालउगंदा । सोलससहस्साउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा । देसूणमद्धजोयण लवणसि
हीयरिदगंतुकान्तदुगे । अतिरेग२ परियउढइहायएवावि। अब्भ त्तरियवेल धारतिलवणोदहिस्सनागाण। वायालीयसहस्सा ओसत्तरिसहस्सावाहरिय। सट्ठीन
गसहस्सा धरतिअरुणोदयसमुद्दस्स । वेलंधरआवासा लयणेयचउदिसिचउरो। पुव्वादि अणुक्कमसो गोथुभ १ दगभास २ यख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सित
ए २ सग्गे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो । अणवेलधरवासा लवणेविदिसासुसखियाचउरो । कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव । कक्कोडयकद्दमए केल
सरुणप्पभेय नागरायाणो । वायालीससहस्से गंतुउवहिमिसव्वेवि । चत्तारिजोयणसए तीसेकोसंचउग्गयाभूमी । सत्तरसजोयणसए इगवीसेजसियासव्वे

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वगेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाउ भूमिभागाउ

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछेगोथुभ १ । एम दक्षिणादिकेदगभास २ । सख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
अनुवेलधरनापर्वतविदिशिए ईशानकोणेकर्कोट १ । एमजअग्निकोणेंविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजकर्कोट १ कर्दम २ के
लास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रछगाउ ऊचापाछे तिहां दिनप्र
ति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमांहिलेपासे जबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखडभणी ७३ सहस्रदेवता छसहस्रशिखे वाटेकरी पा
णीबांधता उपराठामारेछे। वेलंधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन ऊंचाऊचपणेकह्या। जगतीथकी पंचाणूं यो
जनसहस्सजइये समुद्रसांहि तिहा दससहस्रजोजन चक्रवालसमुद्रपाणीछे तिहाथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी ऊचाआकाशेंगयाछे तोसमुद्रपाता

चारणाणंति जघाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यक्षेत्रागमनायोत्पतति सचेतो ऽसख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उड्ढंउप्पतित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिअगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदरुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

समांहिजडो एकयोजनसहस्रजंचो सोलहस्रसब्बगोणसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेइथकोभाझेरोबीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेजचोउत्पति उडीनेएतलेलवणसमुद्रनी गिखालगेजचाउत्पतितिवारेपछे जघाचारण विद्याचारणनी तिरछोगति पर्वततले तिरछिदीपे रुचिकवरद्वीपे एमनंदीश्वरद्वीपें जीवप्रतिमावादिवाजाई चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानोइन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यक्षेत्रें आविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये। तेअसख्यातमे अरुणसमुद्रथकी दक्षिणदिशें ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोजचपणेंकह्यो। बलींद्रनो असुरेंद्रनो बलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस जचोऊंचपणे तेद्वीपणि अरुणसमुद्र असख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। क्षणक्षणथितिए आउखनोदल उछाथायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकी नरका

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वेहासमरणति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायोभवत्वंच त स्य वृक्षशाखाद्युद्वद्धत्वेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिश्च स्पृष्ट स्पर्शनंयस्मिन् स्तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृद्धाणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षण त्वाउंदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृद्धादिभिरात्मान भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतियदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेक्ष्यते आसामनशनक्रि यामितीगिनी तया मरणमिंगिनीमरण तद्धिचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्नि.प्रतिकर्मशरीरस्यें गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममसमिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

तमरणे बालपण्डितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धिपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगि णीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीउ णिबंध

मरणतेपण्डितमरण ९। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसीलेईमरेतेविहा सकमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणोआत्माखवाडीमरेते गृध्रपृष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेआहा रपच्चखी भूमिनियमीसंस्थारेमूये भवतोवेयावचनकरावेते इगिनीमरण १६। पादपवृक्षनीशाखाछेदी भूमिएपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकह्या पछीसा धुहाले बोलेनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसपराय दशमूंठाणूं सूक्ष्मसलोभनोअसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेवर्ततोथ

तद्भवतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः क्षपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किट्टिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि
त नातीतागत सूक्ष्मसपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थ. पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्या
न्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका साताप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बधमश्नित्यनुयाति शेषाः षोडशैवव्यवच्छिद्यंते । यदाह नाण ५
तराय ५ दसग दंसणवत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसायं मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परेनबध्नतीत्यर्थः ॥ सामानादीनि सप्त

ति तं० आभिणिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्कु
दसणावरण अचक्कुदंसणावरण ओहीदंसणावरणं केवलदसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागो
य दाणंतराय लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे
गइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीओवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा क्षपभावेवर्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबंधछे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबधपाडे तेकहेछे । आभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु
तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदसणावरण ६ । अचक्षुदसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८ ।
केवलदसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगातराय १६ ।
वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीभूमप्रभा पृथिवीए केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिओवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअ सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं ना
विअं विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हि अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाण सत्तरसहिं वाससहस्से

तरसागरोपमआउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीएं केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
ल्योपमआउखूकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमआऊ
खोकह्यो। सहस्रार आठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो। सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक १। सुसामायिक २। महासामा
यिक ३। पदम ४। महापदम ५। कुमद ६। महाकुमद ७। नलिन ८। महानलिन ९। पौंडरीक १०। महापौंडरीक ११। शुक्र १२। महाशुक्र १३।
सिह १४ सिहकात १५। सिहविद १६। भाविक १७॥ एणेविमानेदेवतापणि उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो। जेहदेवतासतरे

दशविमानानां नामानीति ॥ १७ ॥ अथाष्टादशस्थानक मिहचाष्टौसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सूत्रमानिच भवरंबभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका
म भोगान् मनुष्यतिर्यग् सबधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसबधिनइत्यर्थः तथासखुड्डगवियत्ताणति सहक्षुद्रकैर्व्यक्तैश्च येक्षुद्रकव्यक्ता तेषां तत्क्षुद्र

हि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति
मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतकरिस्संति ॥ १७ ॥ अठारसविहेबंभे प० तं० ।
उरालिएकामभोगे णेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्नंमणेणं सेवावेइ मणेणसेवंतंविअन्नं नसमणुजाणाइ उरालि
एकामभोगे नेवसयं वायाएसेवइ नेविअन्नवायापसेवावेइ वायाएसेवतवि अन्नंनसमणुजाणाइ उरालिएका
मभोगे नेवसयकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएण सेवावेइ काएणं सेवतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेव

भईभाषे पखथाडे खासोखासघणोले जचोले नीचोखासमेले तेहदेवताने सतरर्षसहस्रे आहारनोअर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीझ
स्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोचजास्ये ॥ इतिसतरमूठाणूंसम्मत्तं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमोठाणोलिखियेछे । अठारभेदेब्रह्मव्रतकह्योतेकहे
छे । उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतिर्यंचनीस्त्रीतेसाथेपचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतेकामघ्राणरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतेसवेनही १ । मनेकरीअनेरा
नेपिणसेवाडेनही २ । मनेकरी अनेराएंमैथुनसेवतांप्रति अनुभावनामकरे ३ । औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४ । ननिश्चयें अनेरानेप्रतिवचनेकरी
वसोडे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवताथका अनुमोदनानकरे ६ । औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७ । अनेराने कायाएंनसेवाडे ८ । कायाएंकरीअ

कायप्रसाश्रुतेनवा व्यक्ताः व्यक्तासु वयःश्रुताभ्यांपरिणताः स्थानानिपरिहाराः सेव्यतेसचाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं महाव्रतानि रात्रिभोजनविरतिश्च कायषट्कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीस्य पिंडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहिभाजनं खाट्यादिः पल्यकंखट्वादि निषद्या स्त्रियासहासनं। स्नानंशरीरक्षालन

रायंमणेणंसेवइ नोविअन्नंमनेणंसेववाइ मणेणंसेवंतंबिअन्नंनसमणुजाणइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंवायाएसे वइ नोविअन्नवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि अन्नंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीउ उक्कोसया समणसंपयाहोत्था समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणंविग्गंथाणं सक्कुम्मयवियत्ताणं अठारस ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्क अकप्पोगिहिभाणयं पलियंकनिसेज्जाय सिणाणं सोभवज्जणं आयारस्सणंभ

नेरा प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनाकरे ९। देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १०। अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११। मनेंसेवता आगिलाने पिण अनुमोदेनही १२ दिव्वेसेवतां कामभोग देवांगनासबधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमोदेनही १५ देवांगनासबधी कामभोगकायाएंसेवेनही १६ अनेरापाहिकायाएंसेवावेनही १७ कायएंसेवतांथकां अनुमोदेनही १८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थंकने अठारश्रमणसहस्रनी उत्कृष्टीसाधूनी संपदाहुई। श्रमणनेतपस्वीने निग्रथने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने क्षुद्रव्यक्षसाधेजेह तेसक्षुद्रव्यक्षएतले क्षुद्रबोलिकव्यक्ष तेवयकरी वडीतयाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांइकछांडवो कांइकआदरवो तेकहेछे। व्रतषट्क पंचमहाव्रत छठोरात्रि

शोभावर्जनं प्रतीतं तथाआचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिंडेषणाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिकाः सचनवब्रह्मचर्याभिधाना
ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्यैवचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नवबंभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइसपचूला बहुबहुतरओपयगेणति
यत्र सचूलिकाकस्येति विशेषण तत्तस्य चूलिकासत्रा प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नदीटीकाकृता अट्ठारसपयसहस्साणि पुणपढमसुय
खधस्सनवबभचेरमइयस्स पमाण विवित्तत्थाणोय सुत्ताणि गरुवए सवोतेसि अत्थोजांणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं पदीयेति पदपरिमाणे
नेति तथा बंभित्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादर्शिताचरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्तस्या

गवतो सचूलिआगरस अठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अठारसविहलेक्खविहाणे प०तं०

भोजनविरति एमकायषट्क पांचप्रावरत्रनेछठ्ठो उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पल्यंकोमां
चादिक १५ । निषद्यासिंहासन १६ । स्नानशरीरधोइवो १७ । शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे
तहनां पूज्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेतले अर्थनीसमा
प्ति तेहपदकहीए । पदाग्रेसर्वसंख्याएंकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे । पाचबीजेश्रु
तस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनही उक्तंच । नवबभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइयपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति । अनेंसूत्रमांहि चूलिकाग्रहीछे ते
एकसूत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो । ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकह्या ।

ब्राह्मालिपेर्णमित्यलंकारे लेखोल्लेखनं तस्याविधानंभेदो लेखविधानं प्रश्नं तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति नदर्शितम् । तथायलोके यथास्ति यथावाना स्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वंतस्य । तथा धूमप्रभाऽपंचमी । अष्टादशोत्तर मष्टादशयोजनसह स्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहूर्त्तोदिवस

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अरकरपुत्थिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिण्हइया अंकलिबि गणिअलवि गंधव्वलिबि आदस्सलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिदि लिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अठारसुत्तरंजोयण सयसह स्सं वाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अठारसमुहुत्तादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अठारस

तेकहेछे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेंकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषऊपरिका ३ । वरोहियाप्रभृति णिन्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेश्वरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८। आस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथूंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधि कारविशेषकह्या । धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहल्यपणे जाडपणेकही । पोसाआसाढमासइत्ति एकदाउत्कृष्टपणे अ ठारमुहुर्तीयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसाढीपुनीमे अठारमुहूर्तीयोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्ती रात्रिहुई । एणीए रत्नप्र

मुञ्जतारात्तीन्नवइ इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठारसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठारसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अठारसपलिओवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० आणएकप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेण अठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिठिसालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं अठा

भा पृथिवीनेविषे कीतलाएकानारकीनो अठारपमल्योपम आजखोकाही छठीतमा पृथिवीयें कीतलाएकानारकीनो अठारसागरीपम आजखोकाही। असुरकुमारदेवतनी कीतलाएकानी अठारपल्योपम आजखोकाही। सौधर्मईशानकल्पे कीतलाएकदेवतानो अठारपल्योपम आजखोकाही। सहस्रारआठमेदेवलोके कीतलाएकानोजघन्यो अठारसागरीपम आउखोकाही। आठमेदेवलोके जेदेवता काल १। सुकाल २। महाकाल २। अंजन ४। रिष्ट५। साल ६। समान ७। द्रुम ८। महाद्रुम ९। विशाल १०। सुसाल ११। पद्म १२। पद्मगुल्म १२। कुमुद १४। कुमुदगुल्म १५। नलिन १६। नलिनगुल्म १७। पौंडरीक १८। पौंडरीकगुल्म १९। सहस्रारावतंसक २०॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे। तेहदेवतानो अठारसागरोपम आउखोकाही। तेहदेवता अठारभ

भवति षट्त्रिंशद्घटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमाननामानि ॥ १८ ॥
अथैकोनविंशतितमस्थान तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्रातिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्ति

रसेहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंति तेसिणं देवाणं अठारसवास सहस्से हिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जेअठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं० ।

उक्खित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते

र्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतनो अठारहर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएकभव्यजीव अठारभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति अठारमूंठाणूं सम्पत्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे। ज्ञाताछठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ ज्ञायरूपनीतेमार्ग सूचकअध्यनकह्या। तेकहेछे यथाक्रमे। उत्क्षिप्तज्ञाय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिशशलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १। धनावहसेठीनो संघाडकज्ञाय २। बीजोमोरडीनाईडानो ३। चउथोकाछवानो ४। पाचमो सेलकाचार्यनो ५। छठोउछडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७। आठमोमल्लिकुमारीनो ८। मांकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९। दशमोचंद्रमानो १०। इग्यारमोदावद्दवनामहत्तनो ११। बारमोउदकज्ञीयजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२। मंडुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहतानो १४। पनरमोनंदिफलनो १५। सोलमो अमरकंका

चसएछव्वीसे छच्चकलावित्थडंभरहवासमित्यादिषु जंबूद्वीपगणितपु याःकलाउच्यंते तायोजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभावः आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेहं अस्त्येकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनतः मामर्यादायदीक्षां वसित्वाउषित्वा तत्रावासंविधायेति अध्येव्यप्रव्रजिताः ये षास्तुपच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिट्ठनेमिं पासंमल्लिंचवासपुज्जंच । एएमोत्तूणजिणे अवसेयाआसिरायाणोत्ति ॥ १९ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं आगाराओअणगारिअंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एहवी छकला प्रसाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना बीजा उगणीसतीर्थंकर गृहस्थाश्रमेवसीने मुडपणूंपाम्या द्रव्यमुडलोचादिकभावमुड तेकषायत्याग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याधरनथी जेहनेते अनगारीतेहपणूंपाम्या । एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुरमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पें केतलाएक देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आणतं पाणतं णतं विणत पणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइ ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्संतिवा तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संते गइया भवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुंचिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काणं अंतंकरिस्संति ॥ १९ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० तं० । दवदवचारिआ

जघन्यो उगणीससारोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द्र ७ । इन्द्रकांत ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे अर्ध मासे पखवाडे खासोखासे घणोले ऊचोले नीचोमूंके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्रेगए आहारनोइच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरीसे मोक्षजासे ॥ इति उगणीसमूंठाणूं समाप्तम् ॥ १९ ॥ हिवे वीसनो अधिकारलिखिये छे । वीस असमाधिस्थानककह्या । तेसूचित्तठामिराखिवू मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिकार तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेछे अनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेघणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने अबाधाउपजावे अनेपडेतो आत्माने असमाधिउपजावे १ । अणपूज्येचालेअर्थ

ने किंचिल्लिख्यते । तत्रस्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सप्तसूत्राणि तत्रसमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थ्यंमोक्षमार्गेवस्थानमित्यर्थः नसमाधिरसमाधिस्तस्याः स्थानान्याश्र यभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योहिद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीत्युच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया समुच्चयार्था भवतीतिसिद्धम् । सचद्रुतं २ संयमात्मनिरपेक्षेव्रजन्नात्मान प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति अन्यांश्चसत्वान् घ्नन्ऽसमाधौयोजयति सत्वबधजनि तेनचकर्म्मणापरलोकेप्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्रुतगंतृत्व मसमाधिकारणत्वादसमाधिकं स्थान मेवमन्यत्रापियथायोगमवसेयं १ तथा अप्रमार्जितचारी २ दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वात्मादिविराधनांलभते तथा अतिरिक्ता अतिप्रमाणाशय्यावसतिरासनानिच पीठकादीनि यस्यसंति सोतिरि क्त शय्यासनिकः सचातिरिक्तशय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपिकीटिकादय आवसयंति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमा धिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं तथाअप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारीच संभवादात्मापरेचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिक्येपि वाच्यमिति ४

विन्नवइ अपमज्जिअचारिआविन्नवइ दुप्पमज्जियचारिआविन्नवइ अतिरित्तसज्जासणिए रातिणिअप

पूर्वनीपरी २ । भूंडीपरीपूजीचालेमर्यादाथकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे३ । अधिकउपाश्रयराखे तिहां योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । रात्रिकपरिभाषी आचार्यादिकाएंसाम्होबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे ५ । थविरतेगुर्वादिकतेहने उववातीमारे तेस्थविरोपघाती ६ । एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७ । चणचणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रोधांधहुए तेक्रोधन ९ । परपूठिपा रकोअवर्णवादेबोलेतेपुष्टिमांस १० । अभीक्ष्णमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निःशंकितथकोकहे तथापारकागुणखमीसकेनही नवांअधिकरणकलहतथा

राजनीतिपरीभाषी आचार्यादिषु परिभवकारी सचात्मानमन्यांश्चासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेण शीलदोषेणच ज्ञा
नादिभिर्वावहतीत्येवशीलः सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्ताननर्थत उपहतीति भूतोपघातिकः ७ तथारुज्वलतीति सज्वलनः प्रतिक्षणं
रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकरी १० अभिक्खण २ ओहारयित्तति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण
मवधारयिताशकितस्याप्यर्थस्य निशकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारियितापरगुणाना मवहारकरी यथाअदासादिकमपिप
रभणति दासस्त्वचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणाणंति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्यमुपशमितना
क्षमितत्वेनोपशातानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादौ यःसचेतनादिरजोगुडितेनहस्तेन दीयमानाभिक्षांगृह्णाति तथायोऽस्थडिलादेः
स्थडिलादौ सक्रामन्नपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्पाविना अनतरिताया मासनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

रिन्नासी थेरोवघाइए भूतवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अभिक्खणं ओहारइत्तानवइ णवाणंअधिक
रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्तानवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविअणंपुणोदीरेत्तानवइ ससर

गाडलादिक तेपूर्वेअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२ । पुरातनजूनानेकलहाने खभाविवापणे उपशमाव्याछे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३ ।
सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरडाएंहाथेंभिक्षदेताले अथवासचित्त अचित्त स्थडिलजेपगनपूजे १४ । अकालेस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाछिले प्रह
रें कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अणेचौदप्रहरलगे उकालिक दशवै कालिक नभणे १५ । अकालेभणतादेवतादिकनोउछलहोय। कलहकरे १६ । शब्दकोरे

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकरः रात्रौमहताशब्देनोल्लापःस्वाध्यायादिकारको गृहस्थ
भाषाभाषकोवा १७ । तथाझझाकरोत्येवं येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्करो येनच गणस्यमनोदुःखसमुत्पद्यत्यतोझझा १८ तथासूरप्रमाणाभोजी सूर्योदयादस्तम
य यावदशनपानाद्यभ्यवहारी १९ एषणाअसमितश्चापि अनेषणानैव परिहति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहायते तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधी
वर्त्तते एवचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिद विंशतितममिति २० तथाघनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिका. इन्द्रसमानर्द्ध
यः साहस्र्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतोबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिबन्धइत्यर्थः प्रत्याख्याननामकपूर्वंनवमं सातादीनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

रुक्खपाणिपाए अकालसज्झायकारए अविनइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणाजोई एसणासमिते आ
विनवइ मुणिसुव्वएणंअरहा वीसधणूइं उड्ढउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविअणंघणोदही वीसंजोयणसहस्साइं बाह
ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरन्नोवीसं सामाणिअसाहस्सीओ प० णपुंसयेअणिज्जरस्सणं कम्मस्सवीसं

रात्रिएमाटे सादेसज्झायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७ । झझकार जेणेकरी गछनोभेदहोय एहवोकरे १८ । सूरप्रमाणाभोजी सूर्यआथमे तिहांलगेन जिमे
१९ । एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले बीजोयतो इसीषदेतां कलहकरे २० । एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २० । मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष
उंचाऊचपणेथया । सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि । वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो । ग्राणतदेव
लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या । नपुसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुसककर्म

सागरोवमोकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पञ्चरकाणंपुव्वस्सवीसंवत्थू उरसप्पिणिमंझले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ याणं वीसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेण वीससारोवमाइ ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमा इं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थिय पल रुइलं पुप्फं सुपु

मो वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकीमांडी बंधनी स्थितिकही। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनायीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंड लनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो। एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो। एणी ए रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोक ह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमेक ल्पे देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिक ८। पल ९। रुचिर १०। पुष्प ११। सुपुष्प १२। पुष्पावर्त १३। पुष्पप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंयःक्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त द्योगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेष कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येकः १ एवंमैथुनंप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

ष्फं पुप्फावत्तं पुप्फपन्नं पुप्फकंतं पुप्फवन्नं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमा णं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइ प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आ णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमु प्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि निव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसबला पन्नता तंजहा ।

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पशृङ्ग १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पोत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देव तानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिवीसमूं ठाणूं सम्पूर्णम् ॥

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे ॥ एकवीस सबलाकह्या जेणेकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर तोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे । हस्तकर्ममुष्टिजापकरतो शबलकह्यो । १ । मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २ । रात्रिभोजन करतोथको ३ । आधाक

तथारात्रिभोजनं दिवागृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिश्चतु र्भिर्भगक रतिक्रमादिभिश्चभुंजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ उद्देशिकं क्रीतमाहृत्यदीयमानभुजानः उपलक्षणत्वात् पामित्येच्छादानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्करणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्यायाऽशनादिभुजान' ७ अन्तः षण्मासानामेकतोगणाद्गणमन्यंसंक्रामन् ८ अतर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंतर्मासस्यत्रीणिमार्गास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादंव

हत्थकम्मंकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोअणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियकीयं आहट्टदिज्जमाण भुंजमाणे सबले अभिक्खणं अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाउ गणंसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तउदगलेवंकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतउमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं

र्मोभोजन भुजतोथको ४ । जेहनो उपासरोहुयो तेगृहस्थाना घरनोपिंड आहारभुजतोथको ५ । उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्दश कतथा क्रीतवेचातो आण्यो आहृतसमाहृतआण्यो आहारते तोशबल ६ । अभीक्षणं बलीबली अशनादिक पच्चक्खीने जीमतो ७ । छेहले छमासमांहि गछ पालटथको शबल ८ । एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९ । मासमांहि त्रिणिठाण सेवतोथको १० । राजपिंडभुंजतो ११ । आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणतो १२ । आकुटि एमृषावाद वदतो १३ । आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोको १४ । आकुटीए

दन् १३ अदत्तादानंगृह्णन् १४ आकुट्यवानंतर्हितायापृथिव्यास्थानं वानैषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वन्नित्यर्थः १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज स्कायांपृथिव्या विस्तारवत्यां सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेषामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथाप्रकारे सप्राणेसबीजादौ स्थाना

करेमाणेसवले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सवले आउट्टियाएअदिन्नाणंगिण्हमाणे सवले आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीएठाण वानिसिहियंवावेलिमाणेसबले एवंआउट्टियाचित्तमंताए पुढवीए एवंआउट्टि या चित्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतेमाणेसबले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए सउत्तगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंताणए तहपगारठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतेमाणे सबले आउट्टियाए मूलभोयणंवा कदभोयणवा तयाभोयणंवा पवालभोयणंवा पुप्फभोयणंवा फलभोयणंवा हरियभोयणंवा

सचित्त पृथिवीजपरि बैसतो अथवा सूवतो वा स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ जपरिबैसतो सूवतो अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिक जीवविराधना करतोअथवा उपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमाहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमाहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली शाती

दिकुर्वन् १७ आकुव्यामूलकंदादिभुंजानः १८ अंतः संवत्सरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथांतःसंवत्सरस्यदशमायास्थानानिच २० तथाअभीक्ष्णंपीनःपुन्येनश
तोदकलचण यद्विकटवततेनव्यापारितोव्याप्तोयः पाणिर्हस्तः सतथा तेअशन प्रगृह्यभुजानः शवलाइत्येकविंशतितमः २१ तथाहि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकर
णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिनइत्यर्थः णवाक्यालंकारे क्षीणंसप्तक मनंतानुबधिचतुष्टयदर्शनत्रयलचणं यस्यसतथा तस्यमोहयनीयकर्मणः एकविंशतिकर्माशा अ
प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपाउत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थंकर्मप्रचप्तमिति तथाश्रीवत्सम् श्रीदाम कांड माल्यकृष्टिं चापोन्नत आरणावर्त

भुंजमाणेसबले अतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्सदसमाईठाणाइं सेवमाणेसबले
अभिखणं सीतोदयवेयफ्रवग्घारियपाणिणा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहित्ताभुंजमाणे
सबले णिअट्टिबादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० अपच्च
क्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणकसाएकोहे पच्चक्खाणाव

दकलचण जेविकटजल तेणेकरी वग्यारीयतिव्यापास्यो तथा व्याप्योभीनो पाणिहाथ जेहनो तेणेकरि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त
पाणीभीने हाथेंकरि जीमतोअबल २१ निवृत्तिबादरअपूर्वकरण आठमे तिहांवर्तताने तथा खपाव्योछेजेणेसप्तकचारअनतानुबधी कषाय अने त्रिणिदसण
मोहनीएम ७ प्रकृति जेणेखपावीछे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंशउत्तरकर्म प्रकृति संतकम्मत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्याते कहेछे।
अप्रत्याख्यान कषायक्रोध १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यानावरणी त्रीजोकषायक्रोध ५। प्रत्याख्यानावर

रणकसाएमाणे पच्चक्खाणावरणकसाएमाया पच्चक्खाणावरणकसाएलोभे संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोभे इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे अरति रति भय सोक दु गंच्छा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमछठ्ठाइसमाइ एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमबितिआइसमाइ एकवीस एकवीससहस्साइंकालेणं प० तं० दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिओवमाइं

ण कषायमान ६। प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७। प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८। संज्वलचौथो कषायक्रोध ९। संज्वलकषायमान १०। संज्वलनक षायमाया ११। सज्वलनकषायलोभ १२। स्त्रीवेद १३। पुरुषवेद १४। नपुसकवेद १५। हास्य १६। अरति १७। रति १८। भय १९। शोक २०। दुगंछा २१। एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पाचमोअरो अने छठ्ठोअरो समयकाल एवेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे। दुखमअरो पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमआरो बिलवासीनो छठ्ठो २१ वर्षसहस्रनो एकेकी उत्सर्पिणीएं चडेते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेंकह्यो तेकहेछे। उत्सर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बी जो आरो २१ वर्षसहस्रनो। दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष। एणीए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठ्ठीत माप्रथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशा

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीस पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कवीसपलिओवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीससागरोवमाइ ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्नेणं एक्कवीस सागरो वमाइ ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छ सिरिदामं कडं मल्लकिट्टं चावोन्नतं अरसवडिं सग विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

नकल्पे केतलाएक देवतानो एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो। आरण इग्यारमेकल्पें देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। अच्युते बारमेकल्पे देवतानो जघन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ काड ३ माल्यकडक ४ चापोन्नत ५ आरणावतंसक ६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो एकवीसे अर्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रें आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अतकरीस्ये

सकं चेतिषट्विमाननामानीति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तत्रमार्गच्यवननिर्जरार्थं परिषह्यंते इति परीषहाः दिगिछति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंछापरीषहइति सहनंचास्यमर्यादानुल्लघनेन एवमन्यत्रापि १ तथा पिपासाछट् २ शीतोष्णेप्रतीते ४ तथादंशाश्चमशकाश्च दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्त्वकृतश्चैषांविशेषो ऽथवा दंशोदशनंभक्षणमित्यर्थः तत्प्रधानामशका दशमशकाः एतेचयूकामत्कुणमत्कोटकमक्षिकादीना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासगधनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वेषांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

च्छिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० ।

दिगंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोक्षजास्ये इतिएकवीसमं ठाणंसम्मत्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे । बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो खमवो तेपरीसहकह्या । तेकहेछे । दिगंछा परीसह दिगछाशब्द देशीभाषण क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगंछापरीसह १ । एम पिपासा छ्यापरीसह २ । शीतठाढ तेहनोपरीसह ३ । उष्णतापनोपरीसह ४ । डांस मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५ । आंचलवस्त्रनो अभावनोपरीसह ६ । अरतिमानसी विकारपरीसह ७ । स्त्रीनोपरीसह ८ । चर्यागामादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९ । सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १० । अम

द्वाविंशतिःसूत्राणि तत्रसर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थस्तवमासूत्राणि च्छिन्नच्छेयणाइयाइंति इहयोनयः सूत्रंच्छिन्नंच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल
मुक्कइमित्यादिश्लोकः सूत्रार्थतः च्छेदनस्थितो नद्वितीयादिश्लोकानपेक्षते इत्येव यानिसूत्राणिछिन्नछेदनयवंति तानिच्छिन्नछेदनयिकानि तानिचस्वसमयाया:
जिनमताश्रिताया: सूत्राणांपरिपाटिः पद्धतिस्तस्या: स्वसमयसूत्रपरिपाट्यांभवन्ति तयावाभवंतीति तथा अछिन्नच्छेयणपियाइ'त्ति इहयोनयः सूत्रमच्छिन्नंच्छे
देनच्छतिसोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमगलमुक्कइमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेक्षमाण इत्येवंयान्यच्छेदनयवंति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता
निचाजीविकसूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वत्र्यात्मकप्रतिबद्धसूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अक्षररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो

अछिन्नछेयणाइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूलिका ५ । तिहां बीजेभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाथकी सूत्रकहिये छिन्नछेयनया
इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहतांछेद्यांखंड्यांछेदवेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किट्ठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथकी छेदवेकरीरह्योबीजाश्लोकनी अपे
क्षा वांछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवंत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे । बावीससूत्र अ
छिन्नछेदनयकछे नयकहता सूत्रछेदवेकरी छिन्ननथी खंडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थथकी बीजाश्लोकनी वांछाकरी
तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिबद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे । बावीससूत्र त्रिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे मज्जरर सपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणा मे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमी सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे णं बावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं साग रोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६। दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७। तीखेंरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८। कटुकरस परिणाम ९। कषायरस परिणाम १०। अबिलरस परिणाम ११। मधुररस परिणाम १२। कर्कशस्पर्शकरी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३। मृदुस्पर्शपरिणाम १४। गुरुस्पर्श परिणाम १५। लघुस्पर्शपरिणाम १६। शीतस्पर्श परिणाम १७। उष्णस्पर्श परिणाम १८। स्निग्धस्पर्श परिणाम १९। रूक्षस्पर्श परिणाम २०। अगुरुलघुस्पर्श परिण तद्रव्य तेखिरसिद्धिक्षेत्र घटाकारेरह्यामनुष्यक्षेत्र बाहिर जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यगामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वालुआ दिक २२ एणीयेंरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो छट्ठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपमआउखोकह्यो हेठेसातम पृथिवीयें केतालाएकनारकीनो जघन्योबावीससागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्मईशानदेवलोके

तेवीसंसुयगडज्झयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिन्ना थीपरिन्ना नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिन्ना पच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुयं अद्दइज्ज णालंदज्जं जबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंति केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसगिणो होत्था तं० अजितसंभवअभिणंदणसुमई जाव पासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

यनकह्या तेकहेछे । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुशीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८ धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । याथातथ्यमान १३ । ग्रथनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । ऐहसोल अध्ययन प्रथम श्रुतस्कंधे बीजेश्रुतस्कंधे सात अध्ययनछे तेकहेछे । पुंडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकुमार २२ । नालदीनो २३ । जबूद्वीपनेविषे भरतक्षेत्रने विषेएणी अवसर्पिणीयें । आदिनाथथकीमांडि पार्श्वनाथलगे तेवीस जिनने तीर्थंकरने सूर्यनेउदय मुहूर्तें एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोज्ञानतेविशेषावबोध दर्शनतेसामान्यावबोध गाथाचाव तेवीसाएनाणा उप्पन्नजिणवराणपुव्वण्हे । वीरस्सपच्छिमन्हा पसाणपत्ताइचरिमरइ ॥ १ ॥ जंबूद्वीप नामद्वीप इण अवसर्पिणीयें आदिनाथविना बीजातेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारअ

चत्वारिसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तदविगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च
तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जंबूद्वीपलक्षणक्षेत्रस्य

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे
वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणे
हिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥
चउव्वीसं देवाहि देवा प० तं० । उसभ अजित संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि
धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण

ष्टो तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासोस्वासादिक बोलकरें ऊचोले नीचोमूंके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां
छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेत्रेवीसभवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय सम्मत्तम्
॥ २३ ॥ हिवे चोवीसमो समवाय लिखियेछे । चौवीस देवाधिदेव देवइंद्रादिक तेमाहि अधिकादेव पूज्यपणाथकीते देवाधिदेवकह्या तेकहेछे ऋषभ १
अजित २ । सभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । श्रेयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३
अनंत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्द्धमान

रेनिवर्त्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आहच आसाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीप्रवहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मद्रहात्तोरणेन

साअहमिंदा अपुरोहिआ उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिव्वत्तइत्ताणं णिअहति गंगा सिंधूणण महाणदीणपवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती णणंमहाणदीण पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिणवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिणवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइया

क इन्द्रसहितकह्या। शेषथाकता नव ग्रैवेयक पाचअनुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनोभावनही। उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे सर्वाभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चोबीस अगुले हस्तप्रमाणे त्रणनीछाया एपौरुषीछाया प्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तेरहे। आसाढे सि दुपयाइति वचनात्। गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी। प्रवहे तीजेस्थानकथकी पद्मद्रहथकी निकली तेप्रवाहनेविषे सातिरेकभाझेरो चौवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथकी २५ कोसहुई। रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुंडरीकद्रहने विषे सातिरेक झाझेरो २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झांझेरापणाथकी २५ कोस। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौवीसपल्योपम आउखोकह्यो। हेठीए सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतलाएकनो चौवीस पल्योपम आउखो

 ॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिहस्थितेरर्वाग्नवसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्सत्ति पञ्चानांयामानां महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा ओत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा लोकभाजनभोजन आलोकनपूर्वंभाजनपात्रेभोजन भक्तादेरभ्यवहरण अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचित्यभाषणतादिकाद्वितीयस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञान ज्ञातायाचसीमायांस्वयमेव उग्गह मिति अवग्रहस्यानुग्रहणता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां सविग्नानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

लोयन्नायणन्नोयणं आदाणन्नंक्रमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुइंतिन्नासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयवि वेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहंअणुगेण्हणया साहम्मियउग्गहंअ

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गे जोईचालवो एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूंकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे लेवो मूकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पाच विचारी बोलवो १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासनो छाडिवो ५। हिवे त्रीजा महाव्रतनी भावना पाच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थ अवग्रह आज्ञानो जणावणो १। अवग्रहगृहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो जणावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनो अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीनेअवग्रहमागिएं तथा उपाश्रयने

शादिक्षेत्ररूपः साधर्मिकावगृहस्वतोनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थानं साधर्मिकाणां क्षेत्रेवसतोवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभावः ४ साधारणं सामान्य यद्भक्तादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनचेति ५ ॥ तथास्त्र्यादिससक्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारोतिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेंद्रिय रागोपरत्यादिकाः पंचमस्य अयमभिप्रायोयोयत्रसजनितस्य तत्परिगृहेवतरति ततश्चशब्दादीरागंकुर्वता तेपरिगृहीताभवंतीति परिग्रहविरतिर्विराधिता

णुस्सवियपरिन्नुंजणया साहारणन्नत्तपाणं ञ्णुस्सवियपरिन्नुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्जणया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणंइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरत्तपुव्वकीलियाणंञ्णुस्सरणया पणीताहारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई

विषे तेहीज साधर्मीकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवो ४ । साधारण सङ्घने समुदायें भातपाणी विहस्योहोय तेह आचार्यादिकने अनुज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवो ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पडकनपुंसके ससक्तव्याप्त शय्यासननो वर्जिवो १ । स्त्रीसाथे कथानो वर्जिवो १ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवो तेहनोवर्जवो ३ । पूर्वेगृहस्थपणे सभोगे क्रीडाकीधीहुई तेहनो अनसभारवो ४ । प्रणीत आहार घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवो ५ । हिवे पांचमा महाव्रतनी पाचभावना । श्रोत्रेंद्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग तेहनी उपरति छांडवो १ । चक्षुरिंद्रियराग २ । घ्राणेंद्रियराग ३ । जिह्वेंद्रियराग ४ । स्पर्शइन्द्रियराग एम पाचइन्द्रियनो वियषराग तेहनो छांडिवो ५ । जेह

फासिदियरागोवरई ५ मल्लीणंअरहापणवीसंधणुउहंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविदीहवेयड्ढपव्वयापणवीसंजोयणाणि उहंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउव्विद्धेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० आयारस्सणंभगवउ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजउ सीउसणीअ सम्मत्तं। आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिन्ना ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणायवत्थ पए

परिग्रहने भोगवीए तेपरिग्रह मांहिलेखवीयें ५ मल्लिनाथ उगणीसमा तीर्थंकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊंचाऊंचपणेहुया। सघलाइ दीर्घवैताढ्य जंबूद्वीप मांहिल्या ३४ धातकी खडना ६८ पुष्करार्द्धभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताढ्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊंचपणेकह्यो। पचवीस पचवीसगाऊ ऊंडपणे भूमिमाहि कह्या। बीजी नरक पृथिवीयें पचवीस शतसहस्र एतले पंचवीसलाख नरकावासाकह्या। आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पचवीस अध्ययनकह्या तेकहेछे। शास्त्रपरिज्ञा १। लोकविजय २। शीतोष्णीय ३। सम्यक्त ४। आवंती ५। मतांतरे लोकसार। धूताध्ययन ६। विमोक्षाध्ययन ७। उपधानश्रुत ८। महापरिज्ञा ९। पिंडेषणाध्ययन १०। सिज्जा ११। ईर्या १२। भाषाध्ययन १३। वस्त्रेषणा १४। पात्रेशणा १५। अवग्रह प्रतिमा १६। सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानी

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामइत्युक्तमयमपि द्वींद्रियाद्यपर्याप्तादिकाः कर्मप्रकृ
तीर्बध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहण विकलेंद्रियोद्विचिचतुरिंद्रियाणामन्यतमः णमित्यलकारे पर्याप्तोन्याअपिबध्नातीत्यप
र्याप्तग्रहणमपर्याप्तकएवद्येता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिसोप्येताः संक्लिष्टपरिणामोबध्नातीति संक्लिष्टपरिणामइत्युक्त मयमपिद्वींद्रियाद्यपर्याप्त

सा उग्गहपडिमा सत्तिकसत्तया जावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइम मिच्छादिठिविगलिंदिए

सीय चूलिकानो अधिकारनथी परचूलिकाकही सूत्रमाहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रन्थाख्य विमुक्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पचवीसनो जाणिवो
आचारागे बीजोश्रुतस्कधछे तेमाहि पहिलेश्रुतस्कधे नवअध्ययन तेमांहि नवमो अध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रम
णें विछे दोपल्योपूर्व्वाये आठअध्ययन उगग्रा तेहना उद्देशा ४४ छे एकावनमे ठाणेलिख्याछे। हिवे बीजे श्रुतस्कधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि
अतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कधे अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकह्या। अने पहिला श्रुतस्कधना ९ अध्ययनना उद्देसा
६० बीजा श्रुतस्कधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशाथया। हिवे बीजे श्रुतस्कधे १६ अध्ययनछे तेमाहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे
आगल्या ७ अध्ययन एकसरा बीजी चूलिकारूप पनरमू अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमू अध्ययन चौथी चूलिकारूप पाचमा निशीथाध्ययननो इहां अ
धिकारनथी। मिथादृष्टि। विकलेंद्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय अपर्याप्तथका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडो अध्यवसायें उपार्ज्योकर्म तेहनी पचवीस उत्तर
प्रकृतिबांधे तेकहेछे। तिर्यचगति नामकर्म १। विकलेंद्रिय जातिनाम २। औदारिक शरीरनाम ३। तैजस शरीरनाम ४। कार्मण शरीरनाम ५। हुडक

कप्रायोग्यवध्नाति तत्रविगलिंद्रियजायनामंति कदाचित् द्वीद्रियजात्यासह पंचविंशतिः कदाचित्त्रींद्रियजात्या एवमितरथापीति । गंगेत्यादि पचविंशतिगं व्यूतानि पृथुत्वेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहत्रोत्ति द्वयोर्दिशोः पूर्वतोगगा प्रपरत. सिंधुरित्यर्थः पद्मद्रहाद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादक्षि

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगठीउणिवंधति तिरियगतिनामं विगलिं दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं ऊठगसठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग नामं छेवठसघयणनामं वन्ननामं गधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलऊनामं उवघाय नाम तसनाम वादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनाम दुभगनामं अणादेज्जना मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनाम २५ गंगासिंधूउणंमहाणदीउपणवीसगाऊयाणि पोहत्तेण घठमुहपवित्तिए

सस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अगोपांग ७ । छेवठसघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी १३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम २१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गगासिधूनदीपंचवीस पचवीस गाउनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशे प्रवर्ती घडमुहपवत्तिएण घडानामुखनीपरी पचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसंठाणे सस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गगानदी गगाप्रपात कुडमां पडेछे सिधुनदी सिंधुप्रपाते पडे

णाभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपवित्तिएणंति घटमुखादिव पचविंशतिक्रोशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेनमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं स्थितेन प्रपतज्जलसतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयो' प्रपततः एवरक्तारक्तावत्यौ नवरशिखरिवर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईणणं महाणदीणपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेण रयणप्प भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

छे। रक्तारक्तावती ऐरवतक्षेत्र सबधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिहुलपणे पुडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पाचसय योजन चालीने मगरमु खप्रणालीये मुक्ताहारसठाणप्रपातेकरि हेठौउतरीछे रक्ता रक्तकुडमाहिपडेछे रक्तवती रक्तावतीकुडमांहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसव स्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पचवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीये केतलाएकनो २५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योप म आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकें एतले अधेग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके त्री

पुंडरीकह्रदात्प्रपततइति तथालोकबिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्रश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भ वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० त० । दसदसाणं

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो २५ सागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे खासोखास घणोले ऊंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये ससारना परितापथकी ठाढाथा स्ये सर्वदुःखनो अतकरिस्ये इति पचवीसमो ठाणो सम्मत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छव्वीसमो समवाय लिखेछे । छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश नकाल जेह श्रुतस्कधे जेतला अध्ययनहुया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

न्यध्ययनान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशनकाला उद्देशावसराःश्रुतोपचाररूपाइति। तथा अभव्यानांत्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्त्वमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्माणिभवतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितेरर्वाक् तत्रअनगाराणा साधूना गुणाश्चारित्रविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पचेंद्रियनिग्रहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्ययत्र

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइ ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीसंसतिवा तेसिण देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदु क्खाण मतंकरिस्सति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं० । पाणाइवायाउ वेरमणं मुसावायाउ वेरमणं अदिन्नादाणाउ वेरमणं मेहुणाउ वेरमणं परिग्गहाउ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो। ते हदेवता छव्वीसे पखवाडे खासोखास वणोले जचोले नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये ससारदु खनो अतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे। प्राणातिपातनो विरमण १। मृषावादनो विरमण २। अदत्तादाननो विरमण ३।

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तांसम्यगुपयुक्तःकुरुते योगसत्यंयोगानांमनःप्रभृतीनामवितथत्व १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा
वः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहितइति नपुनरुक्तातापीति १८ विरागता अभिष्वगमात्रस्य
भावः अथवामायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतीहापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण
तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानांनिरोधास्त्रय. २२ ज्ञानादिसपन्नतास्त्रिस्र. २५ वेदनातिसहताशीतादयतिसहन २६ मारणातिकातिसहनता क

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो
भविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया जंपूद्दीवेदीवेअज्झि

मैथुननो विरमण ४। परिग्रहनो विरमण ५। श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६। चक्षुरिंद्रिय निग्रह ७। घ्राणेंद्रिय निग्रह ८। रसनेंद्रिय निग्रह ९। स्पर्शनेंद्रिय निग्रह १०
क्रोधनो विवेकत्याग ११। मान विवेक १२। माया विवेक १३। लोभ विवेक १४। भावसत्य शुद्धआत्माराखिवो १५। करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि
क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६। योगसत्य मन.प्रभृतियोगत्रिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७। खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८। विराग
ता लोहसाथेप्रसगनही १९। मननो समाहरणता अकुशल व्यापारथकी रुधिवो २० एम वचन समाहरणता २१। काय समाहरणता २२। ज्ञानकरी स
म्पन्नता सहितपणो २३। एम दसण सम्यक्तसपन्नता २४। चारित्र सपन्नता २५। वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६। मारणांतिक अधिसहन

त्याणमित्रवुद्धामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिद्वर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्त्तते अभिजित्नक्षत्रस्योत्तराषा
ढचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्पचविधान्योक्तनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविं
शतिरात्रिदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिदिवाग्रेणैत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षयेदंपरिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकवि
शत्येति । विमाणपुढवित्ति विमानानांपृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त बधाः क्षायोपशमिकसम्यक्त्वहेतुभूतशुद्धदलिकपुंजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

इवज्जोहिं सत्तावीसाएणरकत्तेहिं संववहारेवट्टति एगमेगेणंणरकत्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गे
णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं वाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जबूद्वीपनेविषे अभिजित्नक्षत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठोछे तेमांटे अभीचिनक्षत्र वर्जीने अ
श्विनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरी व्यवहार प्रवर्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे
तेमांहि एकें नक्षत्रमासें सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवाग्रें सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणें पूरोथाय । सौधर्म ईशान देवलोके
विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेंकही सत्तावीससया इपुढवी पिडोइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त बध तेक्षायोपशमिक सम्य
क्तनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उपरोति वियोजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमाही
सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकर्मे सत्तापणेंकही १६ कषाय ९ नोकषाय एव २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्तायें हुए एकसम्यक्त मोहनीटली २८

त्तमदिन तत्रोक्तरूपापौरुषीछायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरमिहपंच स्थितेःप्राक्सूत्राणि तत्रआचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि
ओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीस वाससहस्सेहिं आहारठे स
मुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छठे विमाने देवतानो जघन्य सत्तावीस सागरो
पम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही। ते
हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवनेआंतरे सीझसे बूझसे मूंकासे सर्वदुःखनो अंतकरिसे मोक्षजा
से इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठावीसमो समवाय लिखेछे। अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विशेष

प्रकल्पोध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रक्वचित्ज्ञानाद्याचारविष येअपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तंदत्तं पुनरन्यमपरा विशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यमासिक प्रायश्चित्तमारोपितमित्येव मासि क्यारोपणाभवति तथापचरात्रिकशुद्धियोग्यंमासिकशुद्धियोग्यचापराधद्वयमापन्न स्तत:पूर्वदत्तप्रायश्चित्तेसपचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपंचरात्रमा सिक्यारोपणापट् ६ एवंद्विमासिक्य: ६ त्रिमासिक्य: ६ चतुर्मासिक्य: ६ चतुर्विंशतिरारोपणा:तथासार्द्धदिनद्वयस्य पक्षस्यचोपघातनेनलघूनामासादीनाप्राप्ती नप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नमेस पुव्वद्धेणंतसजुयकाउं॥ देज्जायलहुपहाण गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ यथामासार्द्ध १५ पचवि शतिकार्द्धंच सार्द्धद्वादशवर्षसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरितिलघुमासा: तथामासद्वयार्द्धं मासोमासिकस्यार्द्धपक्ष उभयमीलनेसार्द्धोमासइति लघुद्विमासिक २५ तथातेषामेवसार्द्धदिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरूणामारोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतीनांतच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

मासियाऊारोवणा सपंचराइमासियाऊारोवणा सदसराइमासियाऊारोवणा सपक्खरसराइमासियाऊारोव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अठावीसभेदेंकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपा म्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेथी तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहनयोग तेमासिकी प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिका रोपणाहुई पहिली १ । सपंचरायेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पंचरात्रिसहित मासप्राय श्चित्त आरोपणाथकी सपंचरात्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २ । एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाञ्चारोवणा सपंचवीसराइमासियाञ्चारोवणा एवंचेवदोमासियाञ्चारोवणा सपंचराइ
दोमासियाञ्चारोवणा एवतिमासियाञ्चारोवणा चउमासियाञ्चारोवणा उवघाइयाञ्चारोवणा ञ्णुघाइया

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वनेप
री कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही
७। पंचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीयें अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चितनें पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकर
वी तेसपंचरात्रि बेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नौमी ९। सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि बेमासि
कारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२। पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८। चौमासिकारोपणा एव २८ मासनोअर्द्ध १५। अनेपूर्व
पूर्वपचवीसनोअर्द्ध १२॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनूंअर्द्ध मासवली मासार्द्ध १५ विहूंमि
ली देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवी
समी २५। यदाह। अद्धेणछिससेस पुब्बद्धेणतु संजओकाओ। देज्जायलहुपहाण गुरुदाणंतत्तियंचेव॥ बेमासमांहिथकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन
साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधला
ग्योहोय तेहने तेतलीपूरी आलोयणां आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणोजघणो अपराधलाग्योछे परछमासी उपरांत आलोयणनथी तोवीजा सग

२६ तथाबह्वनपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भाव्यंशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साअकृत्स्नारोपणीत्यष्टाविंशतिरेतच्च सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवक्षितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्येत घातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयरियव्वे नव सिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअणिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अठा

लायेंकर्म छमासीमाहि अतर्भव्याछे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलेओ आचार आचरिवोकह्यो। जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामोहनीयकर्मनी अठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्तायेकही तेकहेछे। सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १। मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २। सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिश्रमोहनी ३। सोलकषाय अणंतानुबंधी यादिक कषकह्यो संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोहनी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेंलिखीछे। आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेंकह्यो तेकहेछे। श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

शुभयोरादेयानादेययोश्चपरस्परंविरोधित्वेनैकदाबन्धभावादव्यभचरद्बन्धातीत्युक्तं तत्रचैकशब्दग्रहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइविहे प० तं० सोइंदियञ्ञत्थावग्गहे चक्खिंदियञ्ञत्थावग्गहे घाणिंदियञ्ञत्थावग्गहे जिब्भिंदियञ्ञत्थावग्गहे फासिंदियञ्ञत्थावग्गहे णोइंदियञ्ञत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदिञ्ञवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदिञ्ञ वंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चिक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियईहासोतिंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिञ्ञ

प्रकारें ग्रहिवो तेअर्थावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी काइक अर्थनो ग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३। जिह्वेंद्रियार्थावग्रह ४। स्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराई तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ७। गंधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराई तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावग्रह ९। स्पर्शेंद्रियव्यंजनावग्रह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविषे ईहा देवी आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आखेंकरी आलोचवो स्थाणुवापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहे। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने ऊपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वे

धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं कप्पे अठावीसविमाणवाससहस्सा प० जीवेणदेवगइम्मिबंधमाणे नामस्सकम्मस्स अठावीसंउत्तरपगडी ओ णिबंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनाम तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंससठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनाम गधनामं रसनाम फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २० । स्पर्शनेंद्रियावाय २१ । नोइंद्रियावाय तेमनेंकरी निश्चयार्थकारिवो २२ । अवाय अर्धमुहूर्त्तरहे । पूर्वेकाननेकरी शब्दसांभल्योहोय तेसांभलि ये तेश्रोत्रेंद्रियधारणा २३ । नेत्रेंकरी संभारिये तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४ । एमज घ्राणेंद्रिय धारणा २५ । जिह्वेंद्रियधारणा २६ । स्पर्शनेंद्रियधारणा २७ नोइंद्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८ । एहधारणा कालसंख्याता असंख्यातालगिरहे । एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या। ईशान वीजे देवलोके अठावीसला खविमान भगवतेकह्या । जीवदेवतानो भवबाधतोथको नामकर्मछठ्ठो तेहनो १०३ उत्तर प्रकृतिछे तेमाहिथी २८ उत्तरप्रकृतिबांधे तेकहेछे । देवगतिना मकर्म १ । पचेंद्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ कार्मणशरीर नाम ५ । समचउरससस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपाग ७ । वर्णनाम ८ गंधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपूर्वीनाम १२ । अगुरुलघुनाम १३ । उपघातनाम १४ । परावातनाम १५ । यशनाम १६ प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । त्रसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहबिहुमाहे अन्यतर अनेरो

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोरहं अस्सायरंएगनामंणिवंधइ सुन्नासुन्नाणंदोरहं अस्सायरंएगनामंनिबंधइ सुन्न
गनामं सुस्सरनामं आइज्जअणाइज्जनामेणं दोरहंअस्सायरं एगंनामणिवंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं
एवंचेवनेरइयाविनाणत्तं अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडगसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुन्ननामं दुस्स
रनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावी
सं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई
प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

एकनामबांधे २२ शुभतथा अशुभ एहविहुमांहे एकबांधे २३। शुभगनाम २४। सुस्वरनाम २५। आदेयनाम अनादेयनाम एहविहुमांहे एकनामबांधे २६
यशकीर्त्तिनाम २७। निर्माणनाम २८। एमज जीवनरक गतिनो वधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकृतिनो बंधकरे। एतलो विशेष जाणिवो इहां अप्र
शस्त विहायोगतिनाम १। हुडकसंस्थान २। अस्थिरनाम ३। दुर्भगनाम ४। अशुभनाम ५। दुस्वरनाम ६। अनादेयनाम ७। अजस अकीर्त्तिनाम ८। नरक
गती ९। नरकानुपूर्वी १०। एह १० प्रकृति बीजी प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतियें नामकर्मनी होय। एणीयें रत्नप्रभा प
हिली नरक पृथिवीनेंविषें केतलाएक नारकीनो अठ्ठावीस पल्योपम आजखोकह्यो। नीचे सातमी पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अठ्ठावीस सागरोपम
आजखोकह्यो। असुरकुमार देवतानी केतलाएकनों अठ्ठावीस पल्योपम आजखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोकने विषें केतलाएक देवतानी अठ्ठावीस

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावत्याबध्नातिएतदेवाह एवंचैवेत्यादि नानात्वंविशेषः ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थितेःप्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषांप्रसंगस्तथासेवनारूपः पापश्रुतप्रसंग' । सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्त' पापश्रुतविषयतया

अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिओवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्नेणं अठावीसंसा गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जाएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उ क्कोसेण अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अठावीसाए अद्धमासेहि आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं अठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसि द्धियाजीवा जेअठावीस भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्काण मतकरिस्सति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेण प० तं । भोमे उप्पाए सुमिणे अं

पल्योपमनी स्थितिकही । उपरिम हेठिम एतले सातमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातमे छठ्ठेग्रैवे यक विमाने जेदेवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठ्ठावीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता अठ्ठावीस पखवाडे सासोस्वास ऊचोले घणोले नीचोमे ले तेदेवतानें अठ्ठावीस वर्षसहस्रगयें आहारनी व छाउपजै । छेकेतलाएक भव्यजीव जेअठ्ठाईस भवनें आतरे सीझसें बूझसें मूकासें सर्वदुःखनों अंतकर सें मोक्ष जासें अठ्ठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवें गुणतीसमो समवाय लिखियेछै । उगुणतीस प्रकारें पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यतेऽतएवाह भौमेइत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधानं निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवस्वप्न स्वप्नफलाविर्भावक अन्तरिक्षमाकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदक अंगंशरीरावयवप्रमाणस्फुरितादिविकारफलोद्भावक स्वरंजीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायक व्यञ्जनंमषादिव्यंजनफलोपदेशक लक्षण लांछनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणावार्त्तिकवृत्तेर्व्याख्यानरूपंकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रंलक्षणवृत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्ञानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

तरिक्के छुंगे सरे वंजणे लक्खणे भोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती बत्तिए एवंएक्कोक्कंतिविहं विकहाणुजोगे

तथाशास्त्र तेपापश्रुत तेहनोप्रसग सेवारूप तेपापश्रुतप्रसंग कह्या । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जेआकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनां फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी ऊपनो ग्रहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अंगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्यो तेत्रिहुभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेंकरी एमजपूर्वे अष्टांग निमित्तकह्यो तेत्रिणभेदे । एवं सर्वमिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगपेटकादिमत्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि करमेखलादि
योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्य' सकाशाद्यःप्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्करणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थ.
सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकातरितापक्षमासा एकोनत्रिंशद्रात्रिदिवसपरिमाणेनभवति स्थूलन्यायेनक्षणपक्षे प्रत्येकरात्रिदिवस्यैकत्वचयादाह च। आसाढब
हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानांद्वात्रि
शत् ऋतुमासस्य त्रिंशद्देवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासाऽहोरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशतासाधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्र चद्रदिनमेकेकेनाधिप

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइरा
इंदियग्गेण प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणमासे वइसाहेणंमासे मासोचंदादिणाणं

कामनसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र करमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकभद्दतानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक थी प्र
वर्त्यो पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह नर्थ २९ । आसाढमास गुणतीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय
एकतिथि अधारा पखवाडानी घटे एम एकातरित छेपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥
फग्गुणवेसाहेसुअबोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनो। कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनो । पोसमास २९ रात्रि दिवसनो।
फागुणमास २९ रात्रिदिवसनो। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनो। चद्रदिवस पडिवातिथि एगूणतीसमुहूर्त्त झांझेरानो २९ मुहूर्त्तनो कह्यो। जोयभला

ष्ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठ्याचंद्रदिवसानामेकपक्षहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्ददिणेणंति चंद्रदिनं प्रतिपदादि कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि त्रिंशच्चदिनद्विषष्ठिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिन चंद्र मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे णवैमानिकेष्वुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्बध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेंद्रियजाति २ वैक्रियद्वय ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्क ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघात १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादर १९ पर्याप्त २० प्रत्येक २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुस्वर २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थं

एगूणतीसंमुञ्जत्ते सातिरेगेमुञ्जत्तगेणं प० जीवेणंपसत्थज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक्र सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चें २९ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेंविषे देवतापणे उपजे। ते कहेछे। देवगति १। पचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियागोपांग ४। तेजस ५। कार्मण ६। समचउरससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०। स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०। प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय माहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

करस्येति ॥ २९ ॥ त्रिंशत्तमंस्थानकंसुगमं नवरं स्थितेरर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनिमित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाआवितस्सेत्यादिश्लोकः यश्चायत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादादिनासइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहप्रकरोति १ तदेवभूतंत्रसमारणैनैकं मोहनीयस्थानमेवसर्वत्रेति १ सीसाश्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णभृशन्तीव्रोऽशुभः समारःसइति इत्यस्यगम्यमानत्वात्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनआत्मनो महामोहंप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

च्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसंमोहणियठाणा प० तं० ।
जेयावितसेपाणे । वारिमज्झेविगाहिया ॥ उदएणकम्ममारेई । महामोहंपकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावट्ठेइजेकेई ।

सारना परितापथी ठाढायासे सर्वदुःखनो अतकरिस्ये मोक्षजास्ये । इति गुणत्रीसनों ठाणो समत्तम् ॥ २९ ॥ हिवे तीसमो ठाणो लिखियेछे त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या । तिहां सामान्येंकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे । जेकोइ स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमांहे बोलीनें उदक शस्त्रें करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे । भवनाशतसहस्रलगें वेदनीयकर्म उपाजें १ । शीर्षा वेष्ठनेंकरी चर्ममय बाधेंकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थे बींटे तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतानें महामोह उपजाविवा पणाथकी आत्मानें

चित्दृश्यंत एवेतितेव्याख्यायन्ते २ पाणिनाहस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वाकिंतत् श्रोतोरंध्रंमुखमित्यर्थः तथाआवृत्यावरुद्धा प्राणिनंतत' अतर्नदंगलमध्येरवकुर्वत घुरघुरायमाणमित्यर्थः मारयतिसद्गतिगम्यते महामोहप्रकरोतीतितृतीयं ३ जाततेजसवैश्वानर समारभ्यप्रज्वाल्यबहुप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिषुप्रचि प्यजनलोकं अतर्मध्यंधूमेन वह्निलिंगेन अथवा अतर्धूमोयस्यासावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्थं ४ शीर्षेशिरसियः प्रहतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिपाणिनमितिगम्यते क्षिपूतेऽभावत शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवाना प्रधानावयवे तद्विघातेऽवश्यमरणा चेतसा

श्रावद्वेइश्रन्निरुकणं ॥ तिव्वासुन्नसमायारे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २ ॥ पाणिणारंपहित्ताणं । सयमाचरियपा णिण ॥ श्रंतोनदंतंमारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३ ॥ जायतेयंसमारश्न । वक्कउरुंनियाजणा ॥ श्रतोधूमेण मारेई । महामोहपकुव्वइ ॥ ४ ॥ सीसम्मिजेपहणइ । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ विन्नज्जामत्ययफाले । महामोहंप कुव्वइ ॥ ५ ॥ पुणोपुणोपणिधिए । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणश्रदुवदण्डेणं । महामोहपकुव्वइ ॥ ६ ॥ गूढा

महामोह उपार्जे २ । हाथेंकरी आगलानो मुखरूंधी आच्छादी भीचोनें गलामांहे घुर्घुराट शब्दकरताथकानेंमारे तेमहामोहनीय कर्मउपार्जे ३ । जाततेजा अग्नि बहोत प्रज्वालीने वाडादिकनें अवरूंधीने रोकीने अतो मंडपादिकमां धूमेंकरी मारे तेमहा मोहनीय कर्मकरें ४ । जेप्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी ना उत्तमागनें माथानेविषे खड्गादिकेंकरी मारें विहचीनेमस्तकनें काटीने मारे तेपुरुष महामोहनीयकर्म उपार्जे ५। पुन' पुनः वारंवार कपटें करीनें जि मवाटपाडा वाणियानो वेशकरीने मार्गे परने साथेचालीनेमारे मारीनें आनंदपणाथकी उपहसे विजोरादिक फलेकरी अथवा दडेकरी हन्यमान मूर्खज

सङ्क्लिष्टेनमनसा यथाकथचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयतिविदारयति ग्रीवादिकं कायादपोतिगम्यते सद्भत्यस्यगम्यमानत्वात् मह
मोहप्रकरोतीतिपचमं ५ पोनःपुन्येनप्रणिधिनामायातः यथा २ वणिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतासहगत्वा विजनेमारयंति तथाहत्वा विना
श्यइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनमूर्खलोकंहन्यमानं केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलिगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्धेन सद्भतिगम्यते
महामोहप्रकरोतीतिषष्ठ ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयतेगोपयेत् स्वकीयंप्रच्छन्नंदुष्टमाचारं तथामायापरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा
शकुनिमारकाश्छदैरात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांछादयन्ति । तथाअसत्यवादीनिह्नवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर
गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वसयतिमाययाभ्रशयति इतियः पुरुषोभूतेनासद्भूतेनकं अकर्मकमविद्यमानदुश्चेष्टित आत्मकर्मणा
त्मकना ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृततदाश्रित्य परस्यसमक्षेसचत्वमकार्चीरेव तन्महापापमिति वदति वदिक्रियायोगः गम्य

यारीनिगूढिज्जा । मायंमायाएछायए ॥ असच्चवाईणिण्हाई । महामोहंपकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोअभूएणं । अ

ननें हसें ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहनो तेगूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रतें गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया
करीढांके असत्यवादी झूंठबोलिवो मूलगुण उत्तरगुण खडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनों एहवा पुरुषप्रते पोताना
कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारें अथवा पोतानुं कीधूं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षेकहे जे एह खोटोकर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनी

मानत्वात् सद्भूतस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टम ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थ सत्यामृषा किंचित्सत्यानि वह्व
सत्यानिस्तूनिनाख्यानिवाभाषते अक्षीणझझ. अनुपरतकलहः य.सइतिगम्यते माहामोहम्प्रकरोतीति नवमः अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान्
नीतिमानमात्यः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्र हारवा अर्थागमस्योपाय ध्वसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति रूवधः किंकृत्वा विपुल प्रचुरमित्यर्थं विक्षोभ्य
सामतादिपरिकरभेदेन सक्षोभनादनायक तस्यक्षोभजनयित्वेत्यर्थं कृत्वाविधाय णमित्यलंकारे। प्रतिवाह्या मनधिकारिणी दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार
न् राज्यवास्वयमधिष्ठायेत्यर्थः। तथाऽपगतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वस्वापहारेकृते प्रावृतेना तुल्योपमै करुणैर्वचनैरनकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थ. भं
पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि वचनै रेतादृशस्तादृशस्त्वमित्यादिभि रित्यर्थ' भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

कम्मंअत्तकम्मणा ॥ अदुवातुममकासित्ति । महामोहपकुव्वइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसउ । सच्चमोसाइआसड
अज्झाणझझेपुरिसे । महामोहपकुव्वइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं । दारंतस्सोवधंसिया ॥ विउलविक्खोभइत्ताणं

यकर्म उपार्जे ८। जाणतोथको पर्षदामाहि बेसीने सत्यामृषा काइक साची काईक झूंठी वाणीबोलेकलहथकी पोमस्योनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो
हनीयकर्म उपार्जे ९। नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहवा राज्यना नयवत अमात्यमत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय
प्रति ध्वसे विनसाडे स्यू करी ध्वसे प्रचुर सामतादिकप्रति विक्षोभीने भेदपाडीने बली करीनें स्यूं करीने कलत्रथकी अथवा अर्थागमद्वारथकी लेवाने योग्य
नथी एहवी राज्य लक्ष्मीयें पोतेंज अधिष्ठान करीने तथा समीपे आवताने एतले सर्वधन लीधेंथकें दीनस्वरेकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने झांपीने सामो

विदारयतियोसौमहामोह प्रकरोतीतिदशम १० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीसन् य' कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृद्धोवसकश्चस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहप्रकरोतीत्येकादशं ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोय' कश्चित्तत्कालएवासेव्याब्रह्मचर्यं ब्रह्मचारी साप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपचनायवदति तथाच एवमशोभावह सतामनादेय भणन् गर्दभइवगवांमध्ये विस्वरंनवृषभवन्मनोज्ञं नदतिमुञ्चति नदनादंशब्दमित्यर्थः तथायएवभणन्नात्मनोऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगशाठ्यानृत प्रभूतभाषते यश्चैवंनिदितभाषते कथा स्त्रीविषयगृद्धया

किच्चाणंपडिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतपिकंपित्ता । पडिलोमाहिंवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेई । महामोहंप कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥ अबंभयारीजेकेई बंभयारीत्तिहवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएबाले । माया

ओसियालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तूं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हरे तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परखो छे जेकोई लोकमाहि छ कुमारभूतकु एतले बालब्रह्मचारी छं छूं एहवूं कहे वली स्त्रीसाथें गृद्ध लोलुप वली स्त्री ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमाहि छ ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवो कहे ते शोभा रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरे गायना टोलामां वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लुपट थईने माया सहित मृषा घणू बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

हेतुभूतया सद्र्थभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानराजामात्यादिकं वा निश्रितआश्रितउद्वहते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य
राजादेः सत्कीयमितिप्रसिद्धाअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहप्रकरोतीति त्रयोदशं १३
ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रगृहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभ्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाअसाधार
णाआगताप्राप्ता अतुलवायथाभवतीत्येव श्रीः समागता आगता श्रीकथप्रभ्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षणपापेनाविल
माकुलवाचेतोयस्य सतथा योंतरायंव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगाना चेतयतेकरोति प्रभ्वादे रसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्दश १४ सर्प्पीनागीयथाअण्डउड

मोसंवज्झंनसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥
तस्सलुब्भइवित्तम्मि । महामोहपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणअदुवागामेणं । अणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससपयहीण
स्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणआविट्ठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेअंतरायंचेएइ । महामोहपकु

आत्मानेधारे अने राजसबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवाथकी तेआश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामें
जनसमूहें अनीश्वरहुतो तेइश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वे अनीश्वरहतो सपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असा
धारण आवी पामीछे जेहने ते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेंकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी आकुल व्याप्तो
छे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अतरायप्रति चेतेकरे तेहनी आजीविकानो विच्छेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

अण्डककूटस्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटंसंबद्धदलद्वयरूपंहिनस्ति एवंभर्त्तारंपोषयितारं योविहिनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा
ठकवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेबहुजनदुस्थताभवतीति पंचदशं १५ योनायकंवाप्रभुंराष्ट्रस्यराष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु
निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कंश्रेष्ठिनंश्रीदेवताङ्कितपट्टबद्धांकितभूत बहुरवभूरिशब्द प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडश १६ बहुजनस्यपच
षादीनांलोकाना नेतारंनायक द्वीपइवद्वीप.ससारसागरगतानामाश्वासस्थान अथवादीपइवदीपो ऽज्ञानांधकाराहतबुद्धिदृष्टिप्रसराणा शरीरिणांहेयोपादे
यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् त अतएवत्राणमापद्रक्षणंप्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयोभवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुषहत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश

बुइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाअंडउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥
जेनायगंचरठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेठिंबहुरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ बहुजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवठियंपडिविरयं । जेनिरकुंजगजीवणं ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारें। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतियें राजायें प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म
करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टबद्ध तथा घणायशनो
धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत
आपदाथकी रक्षक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरत सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंशोभनंवातपः श्रितमा
श्रित क्वचित् जेभिक्खुजगजीवणतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माच्छ्रुतचा
रित्रलक्षणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तन मोहनीयस्थान तथैवेदमपि अनतज्ञानिना ज्ञानस्यानतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजि
नानामर्हतां वरदर्शिना क्षायिकदर्शनत्वात् तेषां येज्ञानाद्यनेकातिशयसपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवर्णवअवर्णवादोवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथाना
स्तिकवान् सर्वज्ञोज्ञेयस्यानतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाण अज्जवियअणतओअलोगोवि अज्जविनकोइविउहं पावंतिसब्बसुयजीवो अहपावतितोसभोहोइ अ
लोउनवेयमठतित्ति अदूषणचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञान युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकातर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा
दिति बालोऽज्ञोमहामोह प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रांतस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोक्षपथस्यदुष्टोहिष्टोवा ऽपकरोति

कम्मधम्माउन्नसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणतणाणीण । जिणाणंवरदंसिण ॥ तेसिंअवन्नवंबा
ले । महामोहपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेआइअस्समग्गस्स । दुठेअवयरईबहु ॥ तंतप्पियतोन्नासेइ । महामोहंप

भिक्षु जगजीवन अहिंसादि धर्मे जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी भ्रंसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज
पूर्वनोपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन क्षायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते
महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारंकरोतीति बहुअत्यर्थपाठांतरेणापहरति बहुजनं विपरिणमयतीतिभावः तंमार्गतिप्पयंतोत्ति निंदन्भावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं चयःसमहामोहंप्रकरोतीति विंशतितम २० आचार्योपाध्यायैर्यैः श्रुतस्वाध्यायविनयच चारित्रग्राहितः शिक्षितः तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतेइत्यादि ज्ञानत' अन्यतीर्थिकससर्गकारिणइत्यादिदर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिनः इत्यादि चारित्रतः यःसएवंभूतोबालो महामोहप्रकरोतीत्येकविंश तितम २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिभिस्तर्प्पितवत' उपकृतवत. सम्यक्नतान्प्रतितर्प्पति विनयाहारोपध्यादिभि र्नप्रत्युपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितम२२ अबहुश्रुतश्चयः कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानम्श्लाघते श्रुत वानहमनुयोगधरोहमित्येव अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मनःस्वाध्यायवाद वदति विशुद्धपाठकोह मित्यादिकंयः स

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवझाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसईबाले । महामोहपकुव्वई ॥ २४ ॥
आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणें आचार्यें उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाद्यो सिखाद्यो तेहीज आचार्यने खीसे निंदे बाल अज्ञानी ते महामो हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्प्पेनही उपराठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे२२। अबहुश्रुत अपडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकथे श्लाघायेहु श्रु तवतकु एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहु पाठककु एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्मानें

महामोहं श्रुतालाभहेतु प्रकरोतीति त्रयोविंशतितम २३ सुगमं पूर्वार्द्धं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकृष्टस्तेनः चौरो भावचौरत्वात्
पकुव्वई अतपस्विनोहेतु प्रकरोतीति चतुर्विंशतितम २४ साधारणार्थं मुपकारार्थं य.कश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतेप्रभु समर्थं उ
पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह ममाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्निर्विशेषेणा सम
र्थोवाऽय बालत्वादिना किंकृतेनान्यपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिलोभेनेति शठः कैतवयुक्तः शक्तिलोपनात् निकृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानयस्य तथा ग्लानःप्रतिचर
णीयो माभवत्विति ग्लानवेषमहकरोमीति विकल्पवानित्यर्थ. अतएवकलुषाकुलचेताः आत्मनश्चाबोधिको भवातराप्राप्तव्य जिनधर्मलाभाप्रतिजागरेणाज्ञो

केई । सुएणंपविकत्थई ॥ सज्झायवायंवयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीएउजेकेई । तवेणपवि
कत्थइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २७॥ साहारणठाजेकेई। गिलाणम्मिउवठिए ॥ पन्नूणकुणई
किच्च । मज्झंएसेनकुव्वइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपसाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ अप्पणोयअबोहीए। महामोहंप

विकथे श्लाघाकरे हुतपस्वी छु एमकहे ते सर्वलोकथकी परमस्तेन चोरछे ते महामोहनीय कर्मकरे २४। साधारणने अर्थे उपकारने अर्थे जेकोइ आचार्या
दिकने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित ढुकडो आव्यो निकट आव्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेंकरी उपकार करवामां समर्थछे पणि मुझने एह
न करतोहुतो एमाटेहुं कांइक नकरू एह शठधूर्त निकृति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनूं हु औषधोपचार करूछु एहवी कल्पनायेंकरी कलुषितछे चित्त
जेहनो आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरें धर्मनो अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५। जेकोइ कथा प्रबध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

विबोधना च्चशब्दात्परेषांवाऽबोधिकः अविद्यमानो बोधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखाभवति तेषामबो धिकस्तथेति सएवभूतो महामोहम्प्रकरोतीति पञ्चविंशतितमं २५ यः कथावाक्यप्रबंधःशास्त्रमित्यर्थं स्तदूपाण्यधिकरणानि कथाधिकरणानिकौटिल्यशास्त्रा दीनि प्राण्युपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा चेत्राणि क्षपत गानमसूयतेत्यादि तया अधिकरणानि तथाविधप्रवृत्तिरू पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानिच यत्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि सम्प्रयुक्ते पुनःपुनरेव सर्वतीर्थानां भेदायसंसारसागरतरण कारणत्वात् तीर्थानिज्ञानादीनि तेषासर्वथानाशायप्रवर्त्तमानः समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितम २६ । कथ्य नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा दिप्रयोगः किमर्थञ्चाघाहेतोः सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थः इतिसप्तविंशतितम २७ । यश्चमानुष्यकान्भोगान् अथवापारलौकिकान् तेत्ति विभक्तिपरिणामः

कुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणन्नेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥
जेअ्यअहम्मिएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउसहीहेउ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जेअ्यमाणुस्सएन्नोए ।

उपमर्दहेतु आत्माने दुर्गतीमांहि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशें प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रतें श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे सम्प्रयुजे वली वली व्या पारे ते महामोहनीय कर्मकरे२७। जेकोइ मनुष्य संबधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकनेविषे अतृप्तहुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८। जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनी सपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्लादि शरीर सबंधी

जावसव्वदुक्खप्पहीणे एगमेगेणं अहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप ० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पाया वच्चे उवसमे ईसाणे नठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे भूमहे रिसभे सव्वठसिद्धे रक्खसे ३० । अरेणंअरहा तीसंधणु उड्ढंउच्चत्तेण होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स दे वरन्नो तीसं सामाणियसाहस्सीओ प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अण गारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए

अर्द्धेकरी कर्मथकी मूकाणो सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथयो । एकएक अहोरात्र त्रीस मुहूर्तनी होय । ते त्रीसमुहूर्तना त्रीसनामधेयनामकह्या । तेकहेछे । रौद्र १ शक्र २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचद्र ६ । माहेंद्र ७ । प्रलब ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनद ११ । विजय १२ । विश्वसेन १३ । प्राजापत्य १४ । उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैश्रमण १९ । वरुण २० । शतऋषभ २१ । गाधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९ । राक्षस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष ऊंचपणेथया । सहस्रार नामा आठ मा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या । पार्श्वनाथ अरिहत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास माहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणो यतीपणो पाम्या श्रमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या । एणीयें र

रयणप्पभाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण तीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसंपलिओवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे तीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

त्नप्रभा पृथिवीने विषें केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनी त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही केतलाएक असुरकुमार देवतानी त्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम उपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयक विमानें देवतानी जघन्य त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी उत्कृष्टी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता त्रीमें पखवाडें स्वासोस्वास घणोले जचोले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्रगये आहारनो अर्थ उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने आत

वरणादिचयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतभवति मण्डलचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रंत्रीणित्रिं

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइआउए खीणे तिरिआउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुन्ननामे खीणे असुन्ननामे खीणे दाणंतराए खीणे लान्नांतराए खीणे न्नोगांतराए खीणे उवन्नोगांतराए खीणे वीरिअंतराए ३१ मदरेणंपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियमंडलं उव

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय क्षय १७। चारित्रमोहनीय क्षय १८। नरकायुक्षय १९। तिर्यंचायुक्षय २०। मनुष्यायु क्षय २१। देवायु क्षय २२। उच्चैर्गोत्रक्षय २३। नीचैर्गोत्र क्षय २४ शुभनाम क्षय २५। अशुभनाम क्षय २६। दानातराय क्षय २७ लाभांतरायक्षय २८। भोगांतराय क्षय २९ वीर्यांतराय क्षय ३०। उपभोगांतरायक्षय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधीये कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनी परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रेतीस योजन कही। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जबूद्वीप मांहि एकसो चौरासी मडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमडलें उपसक्रमी आवीने सूर्य मकर सक्रातिदिने भ्रमण करे। तेणे दिनें भरतचे

शदधिकानियोजनशतान्यवगाह्येवीनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतंभवति तत्रचसर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भौ लक्षंषट्शतानि चयोजनानांषष्ट्यधिकानि परिधिसुवृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावच्चक्षेत्रमादित्योऽहोरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ठ्याभागापहारे यल्लब्धतन्मुहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाण भवति तच्च पचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्ते एतच्चदिवसार्द्धेनगुण्यते यदाचसर्वबाह्यमंडलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाण द्वादशमुहूर्त्ताः तदर्द्धंचषट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणित मुहूर्त्तगतिप्रमाणं चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१।३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर

संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिअएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं

चगत मनुष्यने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचत्रीसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्शे शीघ्र आवे । एतलेपो सी पूनिमे मकर सक्रांतिदिने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहां ना मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्द्धितमास त्रीजे वर्षे आवे तेरहमामनो वर्ष होय । ते अधिक मास एकत्रीस रात्रिदिवस प्रमाणेंसातिरेक कांइएक भां झेरोजाणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

स्य चतुश्चत्वारिंशदहोत्रिषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरश्चासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र
मासात्मकत्वाच्चन्द्रमासस्य एकोनत्रिंशतादिनाना द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानांभवतीति साद्वरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

सातिरेगाइ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० आइच्चेणं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं
दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई प०
अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अ
त्थेगइयाणं एक्कतीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिओव
माइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजियाण देवाणं जहन्नेण एक्कतीसंपलिओवमाइं ठिई प० जे

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस कांईक विशेषाधिक जणा ओछा अहोरात्रिअर्द्ध जणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरो कह्यो । एणीयें रत्नप्रभा पहिली
नरक पृथिवी यें केतलाएक नारकोनी एकत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो एकत्रीससागरोपम आउखो
कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही । सौधर्मईशाने कल्पें केतलाएक देवतानो एकत्रीस पल्योपम आउखोकह्यो ॥ पू
र्वदिशाथकीमांडीकरीने विजय १ वैजयत २ जयंत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता
उपरिमउपरिम ग्रैवेयके एतले नवसे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाछेतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

त्तरशतेनाधिकानीति आदित्यमासेयेनकालेनादित्योराशिंभुंक्ते किंचिविसेसूणाइंति अहोरात्रार्द्धेनन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं। नवरं। युज्यते इतियोगा मनोवाक्कायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवविवक्षितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते। तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तत्रआलोय

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कतीसाए अद्धमासेहि आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एक्कतीसं वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥

बत्तीसं जोगसंगहा प० तंजहा आलोयण निरवलावे आवई सुदढधम्मया। अणिस्सिउवहाणेय सिक्खा,

स्वासोस्वास घणोले जचोले नोचोमूके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगयें आहारनी इच्छाउपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवाथकी ठाढाथास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोचजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे बत्रीसमो समवाय लिखेछे। बत्रीस योग सग्रह मन बचन कायानायोग तेहनो सग्रह शिष्यें आलोयणालेवी गुरूयें कहीआगली-नकहिवी इत्यादि प्रकारें सग्रह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंग्रह ते कहेछे। मोचसाधक योगसंग्रहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलोयणकही १। आचार्यभणी आलोयण

णत्ति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या
न्नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदृढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय साधुनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि
स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधान परसाहाय्यानपेक्षतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिक्षासेवितव्या सा
चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नाययत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू
जाद्यर्थित्वेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १०
सुइत्तिशुचिः सत्यसयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिश्चेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

निप्पडिकम्मया ॥ १ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिठी समाहीय । आयारे

कही अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ ।
सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिक्षानी सेवो ५ । शरीरनो निष्प्रतिकर्मना करवो एतले सुश्रूषानकरवो ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवो
८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यसनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनूं स्वस्थपणूं १३ । आचार सहित थईने
मायानकरे १४ । विनय यक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणूं १६ । सवेग संसारथीभय अथवा मोक्षनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

चारोपगतःस्या क्रमायांकुर्यादित्यर्थः १४ विनयोपगतोभवेन्नमायांकुर्यादित्यर्थः १५ धिइमईयत्ति धृतिप्रधानामतिर्धृतिमतिरदैन्य १६ सवेगोत्ति सवेगः ससा
राज्ञयमोक्षाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति प्रणिधिर्मायाशल्यनकायमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठानं १९ सवरस्त्र आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसहरेत्ति स्वकीयदोष
स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयत्ति समस्तविषयवैमुख्य २२ पच्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानमूलगुणविषय २३ उत्तरगुणविषयच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे
दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षण तेन क्षणे २ सामाचार्य्यनुष्ठानकार्य २८ झाणसंवरजोगेत्ति ध्यानमेवसवरयोगो ध्यान
सवरयोगः २८ उदएमारणंतिएत्ति मारणातिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्यः २९ सगाणयपरिण्णत्ति संगानांज्ञपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणउवए ॥ २ ॥ धिईमई य सवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥
पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ झाणे सवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिण्णा

शुभ अनुष्ठान करिवो १९ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ ।
व्युत्सर्ग द्रव्यथकी उपधीनो त्याग भावथकी त्रिणगौरवनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । क्रियानोकालें समाचरिवो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ ।
संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मनने क्षोभ न करिवो २९ । सगनो परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचक्खवो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ ।
आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग सग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । बलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानेंद्र ४ । वेणुदेव ५ ।

१० पच्छित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तकरणंचकार्यं २१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति २२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणाद्वेण देववेणुदाली हरिकंते हरिस्सहे अग्गिसीहे अग्गिमाणवे पुण्णे वसिट्ठे जलकंते जलप्पहे अमियगइ अमियवाहणे वेलंबे पहंजणे घोसे महाघोसे इतिदृश्यम्पुनर्या वत्करणात् माहिंदेबभेलंतएसुक्के सहस्सारेत्तिद्रष्टव्यमिद षोडशानांव्यन्तरेन्द्राणा षोडशानामेव या अणपण्णकादीन्द्राणामलेंद्रकत्वेनाविवक्षितत्वा दसख्याताना मपिचद्रसूर्याणां जातिग्रहणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्वात्रिंशदुक्ताइति। कुथुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्चकेवलिशतान्यभूवन् द्वात्रिंशद्विधनाट्यमभिनयविषय

या । पच्छित्तकरणेविय ॥ आराहणायमरणंते । बत्तीस जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बत्तीसं देविंदा प० त० चमरे बली धरणे भूयाणंदे जाव महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए कुंथुस्सणंअरहओ बत्तीसं जिणसया होत्था सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाणवाससहस्साणं प० रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे प०

वेणुदाली ६ । हरिकांत ७ । हरिशिख ८ । अग्निशिख ९ । अग्निमाणव १० । पूर्ण ११ । वशिष्ठ १२ । जलकान्त १३ । जलप्रभ १४ । अमितगति १५ । अमित वाहन १६ । वेलंब १७ । प्रभंजन १८ । घोष १९ । महाघोष २० । चंद्रमा २१ । सूर्य २२ । शक्रेंद्र २३ । ईशानेंद्र २४ । सनत्कुमारेंद्र २५ । माहेंद्र २६ । ब्रह्मेंद्र २७ । लांतकेंद्र २८ । शुक्रेंद्र । २९ । सहस्रारेंद्र ३० । प्राणतेंद्र ३१ । अच्युतेंद्र । ३२ । भवनपती ना इन्द्र २० सौधर्मेंद्रादिक इन्द्र १० ज्योतिषी ना २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यंतरेंद्र छे पणिते अल्पऋद्धिया तेमाटे न लख्या ज्योतिषी चंन्द्र सूर्य असंख्याता छे पणि जातिवाची लख्या कुंथुनाथ १७ मां अरिहंत ने ३२ से जिन केवली थया । सोधर्म पहिले कल्पे बत्रीस विमान रूप आवासमे विमान वास शत सहस्र कह्या । एतले ३२ लाख विमान

बत्तीसतिविहेणट्ठे प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाण बत्तीसंपलिओवमाइं ठिई प० जेदेवा बिजय बेजयंत जयंत अयराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेबत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतं करि

कह्या। रेवती नक्षत्रना बत्रीस ताराकह्या। बत्रीसभेद नाटकना कह्या तेरायपसेणीथकी जाणवा। एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनी बत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही। हेठेंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनी बत्रीस सागरोपमनीस्थितिकही। केतलाएक असुरकुमारनी बत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही। सौधर्म ईशाने कल्पे केतलाएक देवतानी बत्रीसपल्योपमनीस्थितिकही। जे देवता विजय १। वैजयत २। जयत ३। अपराजित ४। एहचिहुंअनुत्तरविमाने देवतापणेउपनाछे तेहदेवतानीबत्रीससागरोपमनीस्थितिकही। तेदेवता बत्रीसमे पखवाडे थोडोस्वासले घणोस्वासले ऊर्ध स्वासले नीचोस्वासमूंक तेहदेवताने बत्रीसवर्षसहस्रेआहारनीवांछाउपजे। केकेतलाएकभव्यजीव जे बत्रीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अतकरिस्येमोक्षजास्ये॥

वस्तुभेदा यथाराजप्रश्नकृताभिधान द्वितीयोपांग इतिसम्भाव्यते द्वात्रिंशत्याप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानक तत्र आयः सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्याशातनाः खण्डनानिरुक्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासत्ति र्यथारजोचलादिस्तस्यलगति तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनाशैक्षस्ये त्येवंसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगंताभवति सपक्खत्ति समानपक्षं समपार्श्वेयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिट्ठित्तिस्था ताआसिताभवति यावत्करणा इमाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याइहद्रष्टव्यास्तास्वेवमर्थतः आसन्नपुरः पार्श्वतःस्थानेन तिस्रोऽत्रनिषीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ

स्संति ॥ ३२ ॥ तेत्तीसंआसायणाउ प० तं० । सेहेराइणिअस्स पुरउ गताभवइ आसाय णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खंगताभवइ आसायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नंगंताभवइ आसायणासेहस्स ३ एवंएएणंअभिलावेणं सेहेराइणियस्स पुरओचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ४ सेहेरा इणियस्स सपक्खचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेह

इति बत्रीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ हिवेतेत्रीमोसमवाय लिखियेछे । तेत्रीस आशातना । आगमदर्शनचारित्रप्राप्तिनो सातवो खडवो तेआ शातना कही तेकहेछे । शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्रिकधणी दीक्षानोधणी तेहने आसन्नो ढूंकडोगताहोय चालेएहपहिलीतेआशातनाशिष्यने १ । रा त्रिकबडानेआगलथकीगंताहोयचालेतेआशातनाशिष्यनें २ । रात्रिकने सपक्खकहताबरावरीचालवोते आशातनाशिष्यने ३ । इम एणे अभिलापें शिष्यबडाने आगलजभोरहे तेआशातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेआगल जभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५ । शिष्यगुरुने बरावरजभोरहे तेआशातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाचमतः शचस्याशातना १० एवं पूर्वंगमनागमनमालोचयतः ११ तथारात्रौकोजागर्त्तीतिपृष्टे रात्रिकेनतद्वचनमप्रतिशृण्वतः १२ रात्रिकस्या

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरओनिसीइत्तान्नवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपक्खंनिसीइत्तान्नवइ
आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्नंनिसीइत्तान्नवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणअभिलावेणं
सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारभूमिनिक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसीहतराए आयामइपच्छाराइणिए आसा
यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं बहियाविहारभूमि वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसीहतराएआलोएइ
पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सरात्तवाविआलेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत
त्थसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पडिसुणेत्तान्नवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं सलवत्तए तंपु

मे आगलथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरूने बरावरि बेसे तेआशातनाशिष्यने८। शिष्यआशन्नंकहतां ढुकडोथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने९। एवएणे
भाभिलापे ९। आशातना। शिष्यगुरूबेहुफेरेंगयाथका तिहांशिष्यपहिलेआचमनलेई जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरूसाथें बहिर्भूमिथडिलें
चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकायें जातांथका पहिलेशिष्य इरियावही पडिकमे पछेगुरूपडिकमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरूनेपहिलेंहीज आवणहा
रसाथे गुरु बोल्याविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रतें गुरूयें पूछ्यो कवण रात्रियेसूतोछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ

पूर्वमालपनीय कचनभवमस्यपूर्वतरमालपतः १३ अशनादिलब्धमपरस्य पूर्वमालोचयतः १४ एवमन्यस्योपदर्शयतः १५ एवंनिमन्त्रयतः १६ रात्रिकमनापृच्छ्या ऽन्यस्मैभक्तादिददत. १७ स्वयप्रधानतर भुजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेन्याहरतो रात्रिकस्यचवाप्रतिगृण्वतः १९ रात्रिकप्रतितत्समचताहतताशब्देन बहुधा

ह्यामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा पडिगाहित्ता तपुव्वामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणवा४ पडिगाहित्तापुव्वामेवसीहतराएगिहस्सपडिदसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणवा४पडिगा हित्ता पुव्वामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १६ सेहेराइणिएणंसद्धिंअस णवा४पडिगाहित्तातराइणियं अणापुच्छित्ता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दययइ आसायणासेहस्स१७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३। शिष्यअशनपान खादिम खादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपछे गुरूनेआगलआलोवे तेआशातना शिष्यने १४। शिष्यअशनपान खादिमखादिम विहरीनेपेहिले बीजासाधूने देखाडे पछे गुरूने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५। शिष्य अशनपान खादिम खादिम विहरीने पहिले बीजासाधुने निमन्त्रणादे पछे गुरूने निमत्रे तेआशातना शिष्यने १६। शिष्यगुरू साथे अशन पान खादिम खादिम विहरीने गुरू ने अण पूछे यकें जेजे साधुबाछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७। शिष्य गुरूने साथे असनपान खादिम खादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ स्निग्धस्नि

भाषमाणस्य २० व्याहरतोनमस्तकेनवन्दे इतिवक्तव्येकिम्भणसीतिब्रुवाणस्य २१ प्रेरयतिराज्ञिके कस्त्वंप्रेरणायामितिवदतः २२ आचार्यस्यानंकिंनप्रतिचरसीत्या
युक्ते त्वकिंनतंप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मअर्थयतिगुरावन्यमनस्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकथामाच्छिदतः

सेहेराइणिएणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे रुक्खं रुक्खं झायं झायं रसियं रसियं उसढं उसढं मणुन्नं
मणुन्नं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्खं लुक्खं आहारेत्ता भवइ आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स बाह
रमाणस्सअप्पडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताभवइ आसायणासेहस्स
२० सेहेराइणियं किंवइत्ताभवइ आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमंइइवत्ताभवइ आसायणासेहस्स
२२ सेहेरायणियं तज्जाएणं तज्जायंपडिभणित्ताभवइ आसायणा० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

ग्ध रूचरूच आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९। शिष्य गुरुयें बोलाव्यो
थको ठामे बेठोथको उत्तर देते आशातना शिष्यने २०। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको मत्थेण वंदामि एहने स्थाने शूंकहीछो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने
२१। वडायें प्रेरणाकरतां कांईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तूं कोण प्रेरणा करणहार एहवो बोले तेआशातना शिष्यने २२। शिष्यप्रते वडाये स्नान आचा
र्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तूं केमनथी करतो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने २३। गुरुयें धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय
तेणे जेशिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४। शिष्य गुरुयें कांइएक वार्ता कहतांथकां तमे भूली गयाछो एमनथी एमछे एहवो बोले ते आशातना

२६ भिक्षावेलावर्त्तेइत्यादिवचनतः पर्षदभिंदानस्य २७ गुरुपर्षदभेदोत्थितायास्तथैवव्यवस्थितायाः धर्मकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेनघट्टयतः २९ गुरोः संस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेपेव ३२ नयस्त्रिशत्तमासूत्रोक्ताच रात्रिकस्यालपतस्तत्रगतएवासनादिस्थितएव प्रतिशृणोति

मिणेन्नवइ आसायणासेहस्स २४सेहेरायणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसरसि एववत्तान्नवइ असायणा०२५ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स कहआच्छिदित्तान्नवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहकहेमाण स्स परिसन्नित्तान्नवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुठिआए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्तान्नवइ आसायणासेहस्स २८ सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगंपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणंअणुमवेत्तागच्छइआसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथा रए चिठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा चिठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा नवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

शिष्यने २५। जेशिष्य गुरुयें धर्मकथा कहता थका धर्मकथानो छेदन करे तेआशातना शिष्यने २६। शिष्य गुरु सभाये बेठा थका भिक्षानी वेलाथई इत्यादि कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७। शिष्य गुरु सभायें बेठा थका पर्षदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८। शिष्य गुरुना आसनप्रतें पांवथकी सघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९। शिष्य गुरुने आसनें बेसे ते आशातना शिष्यने ३०। शिष्य गुरु थकी ऊंचे आसने बेसे ३१।

आगत्यहिप्रत्युत्तरंदेयमिति शचस्याशातनेति ३३ तेत्तीसंभोमत्ति भौमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरिएइत्यादि इहसूर्यस्यमण्डलयो
रतरे द्वेद्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणपचयोजनानि पचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागा एतावताहीनविष्कम्भ सर्वबाह्यमण्डलाद्द्वितीयं मण्डलभवति
ततश्चवृत्तक्षेत्रपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकषष्ठिभागैर्न्यून द्वितीयमडलसर्वबाह्यमडलाद्भवति एवतृतीयमडले एतद्विगुणेनहीनभ
वति तथाहि तद्विष्कम्भतएकादशभिर्योजनै र्नवभिश्चैकषष्ठिभागै. पर्यन्तिमाद्धीनभवति परिधितस्तुपचत्रिंशतायोजनैः पचदशभिश्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनभवति तश्च
त्रीणिलक्षाणि अष्टादशसहस्राणि द्वेशतएकोनाशीत्युत्तराःषट्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाइति तथान्तिममडलान्मडले२द्वाभ्यामुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यांदिनवृद्धिर्भ

चेत्रपक्खिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स ३३ चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचचाएरायहाणीए एक्का
मेक्कावाराएतेत्तीस २ भोमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्कंभेणं प० जयाणंसू
रिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताणं चारंचरइ तयाण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से

गुरुने समान आसने बैसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुयें कांई क वार्ता पूछ्यां थकां आसने बैठीई उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्रीस आशा
तना कही ३३ ॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचचा राजधानीने विषें एकेकें वारें तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारे भला स्थानक
कह्या । जबूद्वीप सबधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरो पिहुलपणें कह्यो । जिवारे सूर्य सर्वबाह्य मडल थकी त्रीजे मडले आवीने भ्रमणकरे
तिवारे भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हजार योजनथकी दृष्टिगोचर आवे । ते पोसी पूनिमे मकर सक्राति पछें माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

णादिति ॥ ३३ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइसेसंति बुद्धानांतीर्थंकृतामप्यऽतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमहद्धि

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्काणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंवुद्धाइ

अप्पइट्ठाण नरके नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घणोले उचोले नीचो मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे। छे केतला एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

स्वभावंकेशाश्चशिरोजाः श्मश्रूणिचक्रूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीताइतिद्वन्द्वैकत्वमित्येकः १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस्त
नुलतेतिद्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरंमांसशोणितमितितृतीयः ३ तथापद्मचकमलगधद्रव्यविशेषोवा यत्पद्मकमितिरूढ उत्पलच नीलोत्पलमुत्पलकुष्टंवा गधद्रव्य
विशेषस्तयोर्योगधः सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमितिचतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यमसच
क्षुषानपुनरवद्यादिलोचनेन इतिपचम ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कंजन्मप्रत्यय आकाशकेचक्रंपष्ठ तथाआगाशगतव्योमवर्ति आकाशकवा, प्रकाशमि

सेसा प० तं० अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी २ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३
पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो कह्या तेकहेछे।
वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूछ शरीरनारोम। नीरोगवलीनिर्मलशरीर २। गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३। पद्मकमलतेहनागधसरीखो स्वा
सोस्वास नो गध ४। अदृश्यदीसेनही मांस चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेंकरी, एहवोप्रछन्नगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५। एणी
येछद्मस्थदृष्टीयें येपाचअतिशयथया। तेमाहिपहिलो मूलीबीजाथकीपचमालगें चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५। जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचा
ले ६। आकाशगत छत्र ७। आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८। आकाशनीपरें अत्यत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९। आका

त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशकेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगच्छत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकेइत्यष्टमः ८ आगा
सफालियामयत्ति आकाशमिवयदत्यत मच्छंस्फटिकं तन्मय सिंहासनसहपादपीठमितिनवम ९ आगासगओत्ति आकासगतोऽत्यर्थतुङ्गमित्यर्थः कुडिभित्तिस्त
घुपताका. सभाव्यन्ते तत्सहस्रै. परिमडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रह. इदज्झओत्ति शेषध्वजापेक्षयातिमहत्वादिद्रश्चासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति
पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिट्ठतिवानिसीयतिवेत्ति तिष्ठतिगतिनिवृत्त्यानिषीदत्युपविशतितत्क्षणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः
पत्रैः सच्छिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संच्छन्नपत्रइत्युक्त सचासौपुष्फपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अकुराः सच्छत्र सध्वजः सघंट. सपताकोऽशोकवरपादप

आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा
सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणंअरहंताभगवंताचिठं
तिवा निसीयतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्खणादेव सछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

शगत एतले अत्यतऊचो लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेक्षायें मोटो तेमहेंद्रध्वजजिननेआगलथकीचाले १० । जिहा जिहा अरहत भगवत ऊभारहे अथवा वैसे तिहातिहा तत्काल पत्रे करीछायो अने फूलपल्लवकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घटापताका सहित वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरें ११ । वेगलो थोडोपूठे मस्तकने प्रदेशे तेजमडल भामडल होय तेभामडल अधकारने दसोदिशे नसाडे १२ । जिहा

त्येकादश: ११ ईसित्ति ईषदल्प पिट्ठओत्ति पृष्ठत: पश्चाद्भागे मउडट्ठाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डलं प्रभापटलमितिद्वादश' १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग इतित्रयोदश: १३ अहोसिरत्ति अधोमुखा: कटका भवतीति चतुर्दश: १४ ऋतवोविपरीता: कथमित्याह सुखस्पर्शाभवतीति पचदश: ५१ योजनयावत् क्षेत्र शुद्धि: सवर्त्तकवातेनेति षोडश: १६ जुत्तफुसिएणत्ति उचितबिन्दुपातेनेति निहयरयरेणयति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तीतुरेणुरिति गंधोदकवर्षाभिधा न:सप्तदश: १७ जलस्थलज यद्भास्वरंप्रभूतच कुसुमतेनवृतस्थापिताजर्द्धमुखेनदशार्द्धवर्णेन पचवर्णेनजानुनोरुत्सेधस्य उच्चत्वस्ययत्प्रमाण यस्यसजानूत्सेधप्रमाणमा

गोच्छसोगवरपायवे अन्निसंजायइ ११ ईसिपिठउ मउडठाणंमि तेयमंडल अन्निसंजायइ अंधकारे वियणं दसदिसाउ पन्नासेइ ११ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३ अहोसिरा कंटया जायति १४ उऊविवरीया सुहफासा भवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणामारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वउ समता संपमज्जिज्जा

तीर्थंकर विहारकरे तिहा वणोसम रमणीक भूमिभाग होय १३। जेणें मार्गें तीर्थंकर विहारकरे कांटा अधेमस्तकेहोय १४। ऋतु विपरीत एतले उष्णा लायें शीयालानोभाव शीयालायेउष्णालानोभाव तेमाटें सुखरूपस्पर्शहोय १५। शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढो मद गधयुक्त एहवा सवर्तवायरेकरी एकयोज नमडललगे सगली दिसाविदिसा प्रमार्जे १६। जेणे मार्गें तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेमेघआकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म विंदु ये करीनसाडे १७। स्थल कुसुम तेचपाजाईप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवत प्रभूतघणा नीचाछेवींट जेहना एतलेजर्द्धमुखे पांचवर्ण फूलेंकरीढीं

च: पुष्पोपचार: पुष्पप्रकरइत्यष्टादश: १८ तथाकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धयाभिरामे भवइत्ति कालागुरुस्वगंधद्रव्यविशेष: प्रवरकुंदुरुक्कश्चचीडा
भिधान गंधद्रव्यतुरुक्कंचशिल्लकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततएतक्षचणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगधउद्धुतउद्भूतस्तेनाभिराममभिरमणी
ययत्तत्तथा स्थाननिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितम: १९ तथाउभयोपासिचणं अरहंताणं भगवताण दुवेजक्खाकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव
ण करंतित्ति कटकानिप्रकोष्टाभरणविशेषास्तुटितानि बाह्वाभरणविशेषास्तैरतिबहुत्वेनस्तंभिताविवस्तंभितौभुजौयययोस्तौ तथायच्चौदेवाविति विंशतितम: २०
वृद्धवाचनायामनतरोक्तमतिशयद्वयनाधीयते अतस्तस्यापूर्वेष्टादशैव अमनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकोनविंशतितम: १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति
विंशतितम: २० पव्वाहरओत्ति प्रव्याहरतोव्याकुर्वतोभगवत: हियगमणीउत्ति हृदयगम: जोयणनीहारीत्ति योजनातिक्रमी स्वरइत्येकविंश: २१ अद्धमाग

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयन्नासुरपन्नूतेणं विंटठावियदसद्धवन्नेणं
कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो
भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ १९ उभउ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

चणना ऊंचप्रमाणमात्रें फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८। खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गधनो अभाव होय १९। मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगंधनो प्रादुर्भाव होय
सिद्धात मूलमतीयें वलीवाचनांतरे कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे विहूंपासे वेयच्चऊभा चामरउखेवे २०। वखाण करतां भगवंतनी हृदयंगम अनेसोहामणीयोज

हीयत्ति प्राकृतादीनाषणांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितखकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते तयाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश. २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणति आर्यानार्य देशोत्पन्नाना द्विपदा मनुष्याश्चतुष्पदागवादय मृगाश्चाटव्या. पशवोग्राम्या. पक्षिण प्रतीता' सरीसृपा उर.परिसर्प्पाभुजपरिसर्प्पाश्चेति तेषाकिमात्मनआत्मातया आत्मीययेत्यर्थ. भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्ध. किंभूतासौभाषेत्याह हितमभ्युदय' शिवंमोक्ष. सुखश्रवणकालोद्भवमानदन्ददातीतिहितशिवसुखदे तिचयोविश. २३ पूर्वभवातरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्ध निकाचित वैरममित्रभावोयेषातेतथा तेपिच आसतामध्येदेवावैमानिका असुरानागाश्चभवनपतिविशेषा.

जरका कहगतुहियथनियन्नुया चामरुरकेवण करति २० पन्नाहरन्न वियणं हिययगमणीन्न जोयणनीहारी सरो २१ भगवंचणं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२ सावियणं अद्धमागहीभासा भासिज्जमाणी तेसिसव्वेसि आरियमणारियाण दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण अप्पप्पणोहियसिवसुहदायभास

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१ । भगवंत छ भाषामाहि अर्द्धमागधीभाषायेकरी धर्मप्रते कहे २२ । तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनाउप नानेद्विपदमनुष्यने चतुष्पदगवादिकने मृगअटवीजीव पशुग्रामसबधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनदतेहने देएहवी भाषापणे परिणमे २२। भवातरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकबद्धनिकाचित वैर बाध्या जेणे एहवादेव मावैनिक १ । असुरनागकुमार एहभवनप तीदेव सुपर्ण शोभनवर्णोपेतते ज्योतिषी यक्ष राक्षस किनर किंपुरुष एह चारव्य..र विशेष गरुडलाछनपणाथकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गधर्वमहोर

सुवर्णाःशोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायक्षराक्षसकिन्नरा.किंपुरुषाःव्यंतरभेदाःगरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषा'गन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि
शेषाएव एतेषाद्वद्वः पसतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमङ्गतानिचित्ताणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशातचि
त्तमानसा धर्मनिशामयति इतिचतुर्विंशः २४ द्वद्वादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वदंतोभगवंतमितिगम्यते
इतिपचविंशः २५ आगताः संतोऽर्हतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवति इतिषड्विंशः २६ जओजओवियणति यत्रयत्रापिचदेशे तओ २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच
विंशती योजनेषु ईतिर्व्याध्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंशः २७ मारिर्जनमरकइत्यष्टाविंशः २८ स्वचक्र स्वकीयराजसैन्य तदुपद्रवका

**ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेराविय णं देवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाअरहंत
पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउच्छियपावयणिया वियणमागया वदति २५ आगया
समाणा अरहंत पायमूले निप्पडिवयणाहवति २६ जत्थ जत्थ वियण अरहंतो भगवतो विहरति तत्थ तत्थ**

गच्यतरविशेष एहसगला वैरभावछाडीने अरिहतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतथयोछे चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रतें साभले २४ ।
अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीतेहीपणिआव्याथकाभगवतप्रते वादे २५ । तेहअन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्याथका
अरिहतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६ । जेणेप्रदेशे अरिहत भगवतविहरे विचरे तिहा योजन पचवीसलगे ईति धान्यादिउप
द्रवकारी प्रचुर मूपकादिक न होय २७ । मारी लोगमरकीनहोय २८ । स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९ । परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३० ।

रिनभवतीति एकोनत्रिंशः २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितिनिंशः ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षप्रत्येकत्रिंशः ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावप्रतिहात्रिंशः २२ दुर्भिक्षंदुः
क्षालप्रतिनयस्त्रिंशः २३ उत्पाद्यायावाक्षित्ति उत्पातानिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तेषु तायेऽनर्थास्तेषोत्पातिका व्याधयोज्वरादयस्तेषां उपशमोऽभावप्रति
चतुस्त्रिंशत्तमः ३४ अन्यच्च पद्मादरमोद्धतप्रारभ्ययेभिरितास्ते प्रभामंडलचक्रभवयक्ताः शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृतवादृति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तत्सतांतर
मेवमतव्यमिति चक्रवर्त्तिविजयत्ति चक्रवर्त्ति विजेतव्यानिचेनखण्डानि उ शेषेणंएएचोत्तीस तित्थगरासमुप्पज्जतिति समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थः नत्वेकसमयेजा

वियणं जोयणपणवीसाएणं ईती नभवइ २७ मारी नभवइ २८ सचक्क न भवइ २९ परचक्कं न भव
इ ३० अइवुठी न भवइ ३१ अणावुठी न भवइ ३२ दुब्भिक्क न भवइ ३३ पुव्वुप्पन्नावियणं उप्पाइया

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय २१ । अनावृष्टि अवर्षणनहोय २२ । दुर्भिक्षकालनहोय २३ । पूर्वे उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा
व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंही उपशमे २४ । एह एकवीसमाथकीमांडी चौवीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकीहोय शेषवीजाभवप्रत्यय
थको वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे । एहचौवीस अतिशयकह्या ॥ जंबूद्वीपनेविषे चौवीस चक्रवर्त्तीनें जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं
ड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे । मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेंमिली २२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखंड ३४ जंबूद्वीपनेविषें ३४ ।
दीर्घवैताढ्यकह्या बत्रीस महाविदेह विजयना ३२ । भरतऐरवतना २ एवं जंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टपारे २४ । तीर्थंकरउपजे विदेहना बत्रीसविजय भरतऐरवत
ना २ एवं २४ एकेंसमेंजन्माश्रीचारहोय शीताशीतोदाने विहुकांठे एकसमयें वेपेहोय अनेवर्त्ता ३४ कह्या । महाविदेहेरात्रीयेंतिवारे भरतऐरवते दिवस

यन्ते चतुर्णामेवैकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरौपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो स्तदानीदिवससद्भावा न्नभरतैरावतयोर्जिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रएवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकावासानाल क्षाणि पंचम्यात्रीणिषष्ठ्यांपंचो नलक्षं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्वं मीलने चतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो नरहेरवए जंबूद्दीवेणद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेइहांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय। तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्रीसनो जन्मसमकालेनकह्यो। मेरुनी पूर्वपश्चिम शिलात लने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो हीज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो। असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवास शतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या। पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छठ्ठीयें पांचजणा एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैत्रीसमो समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या। सस्कारवचन सस्कृतलक्षणवत्तपणो १। उदात्तत्व ऊचेस्वरेंबोलवो २। उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल

न दृष्टा एतेतुग्रंथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवद्गाह्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्धं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदारं २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताक्षिप्तकौतूहलम् २६ अद्भुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिगृहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति। वचनम् महानुभावैर्वक्तृभिति तत्रसंस्कारवत्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गंभीरशब्दमेघस्येव ४ अनुनादित्व प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वंसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्व मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाप्रतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तामहार्थत्वम् बृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वंअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतासूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्व असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३। गंभीर उंडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरसवचनबोलवो ६। मालकोसादि राग सहित स्वरे बोलवो ७। थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचने पराभवे नही १२। सांभलहारनो मनहरे १३। दे

स्तत्वम् सुसंबंधस्यसतः प्रसरणं अथवाऽसंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभि
जातत्वचक्षुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अ
र्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुंफगुणविशेषवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्ला
घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतृ
णा जनितमविच्छिन्न कौतुक येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृ
मनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थे प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपद्वासकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्त
यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनातरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

शकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकरी अणमिलतोनहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारेहोय १६। पहिलापदने पाछिलूंपद सापेक्षपणेबोलवो १७
प्रत्यक्ष समझवायोग्य बात कहिवी १८। घृतगुडनोपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मननेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट
अर्थनूं कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रससा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६
बोलता उतावलोनहोय २७। रहो रहो ने अक्षर उच्चारण करवूं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें सबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल
वो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३०। वचन कहतां वचनातरनीअपेक्षाये बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

तथागोलवट्टाबर्त्तुलायेसमुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु। जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसक्तान्पस्थीनिप्रक्षप्तानीति बीयचउत्थी त्यादि द्वितीयपृथिव्यांपचविंशतिर्नरकलक्षाणिचतुर्थ्यान्तुदशेति पचत्रिंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकंसप्टमेव नवर चैत्राश्वयुजोर्मासयोः

रिंच अहुतेरसअहुतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस कहाउ प० बितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ छत्ती सउत्तरज्झयणा प० तं० । विणयसुयं १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५ पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं १२ चित्तसंभूय १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी बिहुंनामिली ३५। नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीयें २५। लाख नरकावासा चौथी यें १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेछे। छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्य यन कह्या तेकहेछे। पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १। परीसहाध्ययन २। चउरंगीयो ३। असंखय ४। अकाम सकाम मरणाय ५। अविद्यावतपुरुषनो ६ उरभिकबोकडानो ७। कपिलकेवलीनो ८। नमिप्रव्रज्यानमिराजानो ९ द्रुमपत्रकनो १० बहुश्रुतपूजानो ११। हरिकेशीबलनो १२। चित्रसभूतिनो १३ इषुकारियराजानो १४। भिक्षु अध्ययन १५। समाधिस्थानक १६। पापश्रमणनो १७। सयतीराजानो १८। मृगापुत्रनो १९। बलीअनाथीनो २०। समुद्र

सकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना माहच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया

मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्ज २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ
२४ जन्नतिज्ज २५ सामायारी २६ खलुकेज्ज २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गी ३० च
रणविही ३१ पमायठाणाइ ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयण ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्तीय
३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा छत्तीसजोयणाइं उड्ढउच्चत्तेणं होत्था समणस्सणं अर
हउ महावीरस्स छत्तीस अज्जाणंसाहस्सीउ होत्था चेत्तासोएपुण्णमासीसु सइछत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

पालनो २१ । रथनेमीनो २२ गोतम गणधर केशीअणगारनो २३ । सुमति गुप्तिनो २४ । जयघोष विजयघोषनो २५ । समाचारीनो २६ । खलुकीय गर्गा
चार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विधिनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ ।
अणगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन ऊंची कही । श्रमण तपस्वी भगवत ज्ञा
नवंत महावीरने छत्रीस आर्यांना सहस्र थया । एतले छत्रीस सहस्र साधवी हुई । चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य
पोरुषी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे छणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया त्रिणनी होय

होइपोरसीति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशस्थानकमपिव्यक्तम् नवरम् कुथुनाथस्येहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आवश्यकेतुपञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव तादिजीवयोरुक्तप्रमाणसम्बादगाथा सत्ततीससहस्सा छच्चसयाजोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किंचूणासोलसकलायत्ति कलाएकोनविंशतिभागोयो जनस्येति तथाविजयादीनिपूर्वादीनिजम्बूद्वीपद्वाराणि तन्नायकास्तन्नामतोदेवास्तेषाराजधान्यस्तन्नामिकाएव पूर्वादिदिक्षुद्वतोऽसंख्येयतमे जम्बूद्वीपइति क्षुद्रि

बायंनिव्वत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहओ सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्न वयाओणं जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पौरुषी होय । इति छत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ कुथुनाथ अतिहत ने सैत्रीस गच्छ । अने सै त्रीस गणधर कह्या । आवश्यके पैत्रीस सांभलियेछे तेमतांतरछे । हिमवंत क्षेत्र १ । ऐरवत २ । एहवेहु युगलक्षेत्रनो जीवा सैत्रीस सैंत्रीस योजन सहस्र छ से चि हुत्तरियोजन ३७६७४ । १९ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजननाकाइक विशेषऊणी लावपणे कही । सगलाई जबूद्वीप ना पूर्वादि दिशे चार पोलीना धणी बिजयादिकदेव तेहनी पूर्वे विजय दक्षिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैत्रीस योजन जंच पणे कह्यो । क्षुद्रिकायें लहडीयें बिमान प्रविभक्ती कालिकश्रुत विषे पहिले वर्गे सैंत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या । आ

कायां विमानप्रविभक्तीकालिकश्रुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्ययेकालाइति यद्यश्वयुजः पौर्णमा स्यांपट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिंगतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशस्थानकव्य क्तमेव नवरधणुपिट्ठत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यत तत्पर्यंतभूतेसरलप्रदेशपङ्क्तौतु जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थस्सत्ति अस्तोमेरुर्यतस्तेनां

तत्तीसं सत्ततीसं जोयणाइ उड्ढउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएण विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता ण चारंचरइ ॥ ३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजोपूनिमे हस्त प्रमाण तणनी छाया मापीये ३६ अगुलें पोरुषी होय अने अगुल सत्तरेण सातेदिने एकेक अगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक कृष्ण सातमी दिने सूर्य सैत्रीस अगुल पौरुषी छाया प्रते निवर्तावीकरीने चारप्रते करे। इतिसैत्रीसनो समवाय सपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सोभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जबूद्वीपल क्षण वृत्तक्षेत्र ने हेमवत ऐरवत बीजे अने छट्ठे क्षेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भूत सरल सूक्ष्मप्र देश पङ्क्तिते जोवा सरीखी जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगुणीसहइया ए

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टत्रिंशद्योजनसहस्राण्युन्नतत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्ठिसहस्राणिय
दाह मेरुस्सतिन्निकडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रयएयजायरूवे अंकेफलिहेयबीयंतु एकागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणचबी
यंतु २ तेवट्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिचूलाओ चिट्ठोजोयणदुवीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकंव्यक्तमेव नवरं अहोहि
यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादनिबन्धनानि भवन्तीती

या होत्था हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठे अठतीस जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस एगूणबीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अठतीसं जोयणसहस्साइं उद्धंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएण विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

क योजनना कांईएक विशेष ऊणा परिक्षेपे परिधिये कही। जेणीये अतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनो राजा
तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो। मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे। क्षुद्रिकाये लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ
ठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवशर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे
नमिनाथ एकवीसमा अरिहतने अवधि ते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९। हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया। समय

हतैरुपमाकृता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषण्णांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोचेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति चतुर्थ्यांदश पचम्यात्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति। नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतसइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३९ ॥

स कुलपव्वया प० त० तीसं बासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चतुत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आ उयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ प० ॥ ३९ ॥ अरहओ

चेत्र अढाई द्वीप तेमाही ३९। कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कह्या लोकमाहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणछें तेकहेछे। जबे द्वीप माही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमाहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खड मांहि बेपुष्करार्द्ध माहि एव ४। मेरू ५। जबूद्वीप माहि एक मेरू धातकीखडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमाहि २ मेरू एवं ५ मेरू सर्वमि लीकुल पर्वत ३९ थया। बीजो नरक पृथिवी ये २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठीये पाचे जंणा १ लाखसातमी यें ५ नरकावासा सर्वमिलो ३९। लाख नरकावासा कह्या। ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनीयनो २८। गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३९ गोसमवाय सपूर्ण ॥ ३९ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे। अरिष्टनेमी

नकव्यक्तमेव नवरं बायालीसंत्ति छद्मस्थपर्यायेद्वादशवर्षाणि षण्मासार्द्धमासाश्चेति केवलिपर्यायस्तुदेशोनानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यूषणाकल्पेद्विचत्वारिंशदेववर्षाणि महावीरपर्यायोभिहित इहतु साधिक उक्त स्तत्र पर्यूषणाकल्पे यदल्पमधिकं तत्रविवक्षितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेअंतगडे परिनिव्वुडेसव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं जम्बूद्वीपस्येत्यादि पुरत्थिमिल्लाओचरिमताओत्ति जगतीबाह्य परिधेरपसृत्य गोस्तूभस्यावासपर्वतस्य वेलधरनागराजसबधिनः पाश्चात्यसीमातश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणत्ति एतदतरंद्विचारिंशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मतरशब्देन विशेषोप्यभिधीयते इत्यतआह अ

समणेभगवंमहावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमते एसणं बायालीस जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे संखो दयसीमेय कालोएणंस

त् शब्दे करी बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया। जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम वेलधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमात एतलाविच ४२ सहस्र योजन आबाधा विचे आंतरो कह्यो। एम चिहुदिसे दक्षिण जम्बूद्वीपनी जगती थकी माडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांहीज दगभास पर्वत वेलधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थकी माडी पछिम समुद्र माहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम। पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चद्रमा ४२ सूर्य उद्योत करेछे। समूर्च्छिम भुजपर सर्पनो अंदर गोह नोलियादिकनो उत्कृष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखूं कह्यं। नाम कर्म छट्ठोते ४२ भेदें कह्यो

बाहाएत्ति व्यवधानापेक्षयायदतरतदित्यर्थः कालोयणोत्ति धातकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरकरोति यदुदगादंगानाशिरः प्रभृतीनाउपागानांचांगुल्यादीनाविभागोभवति तच्छरीरोपागनाम बध्यमानानाच सबधकारण शरीरोपागनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलाना पूर्वबद्धाना बध्यमानानाच सबधकारणशरीर बन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलामाग्टहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसघातनाम तथास्नायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनाविशेषोभवति तत्सहननाम सस्थानसमचतुरस्राणिलक्षणभवति तत्सस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुद्दे बायालीस चंदाजोइंसुवा जोइतिवा जोइस्सतिवा बायालीससूरियापन्नासिंसुवा ३ समुच्छिमभुयपरिसप्पाण उक्कोसेणं बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० त० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरोबंधणनामे सरीरसंघायणनामे सघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहेछे । नरकादिक नीगतिपामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जाति पामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एमजे कर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अगोपाग अगते अगुलीनखादि ते अग उपाग ४ औदारिकादिक पाच शरीरनो बधनो करबो ते शरीर बधननाम ५ औदारिकादि पाचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरस घातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचना ना विशेषते सह नननाम ७ सस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गध सुगधादिक सुरभि गंध दुरभिगध १० रस मधुरादिक पांच

दगुरुलघु स्वयशरीरंजीवानांभवति तदगुरुलघुनाम तथायतोगंगावयवः प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातकोजायते तदुपघातनाम तथायतोंगावयव एवविषात्म कोदष्ट्रान्वगाहि परेषामुपघातकोभवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतौजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास

रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयव नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे वायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुब्भगनामे

जाणिवा ११ स्पर्श गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरी आत्माने उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अतराल गतिये जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्सास नीसासलीजे तेउसा स नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदें शरीर उद्योतवत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९। जेह कर्मने उ दयें भली भूंडी गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते त्रस नाम २१। जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर रहे ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३। जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय तेबादरना म कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरे तेअपर्याप्ति नाम २६। जेह कर्मने उदये अनता जीवनो एक शरीर पामिये ते साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९। अगोपाग ताखांथका तूटे ते

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे
तरगमनयुक्तोभवति तद्विहायोगतिनाम नसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम वतथभ्रूजिह्वादीनाम
स्थिराणानिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवथिर प्रभृतीनाशुभाना तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेषुस्त्र्या
दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामेति पचमछठ्ठीओसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचेत्यर्थः पढमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे
तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भितरियंवेल धारंति महालियाएणं विमाण
पविभत्तीए वितिएवग्गे बायालीस उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पचमछठ्ठीओसमाओ बायालीसं

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहुने वलभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४
जेह कर्मनेउदये कंठभलोहोय तेसुस्वर नाम ३५। भंडोकठहोय ते दुस्वर नाम ३६ जेहकर्म थो बचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम ३७। बचनकोईनमाने
ते, अनादेय नाम ३८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम ३९ यश कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्त्ति नाम ४०। ठामो ठाम अगो-पांगनो रचिबो तेनिर्मा
ण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी संहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बेतालीस हजार नागदेवता जबूद्वीप तरफनी पाणी
नी बेला प्रते धरेछे। वडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकेक अवसर्प्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छठ्ठो दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कर्मविवागज्झयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयोः सम्भाव्यतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जम्बूद्वीपपौरस्त्याताद्गोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विष्कम्भस्य सहस्रतदधिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवक्षणा देवं त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवंचउदिसिपित्ति उक्तादिगतर्भावेन चतस्रोदिशउक्ता अन्यथा एवति

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाउ समाउ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दीवस्सण द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिपि दगभासे

दुखम दुखमा वेहु मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छट्ठो २१ हजार वर्षनो वेहु मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एकेक उत्सर्पिणी कालें चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो वेहु मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कह्यो ॥ इति बैतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमो समवाय लिखेछे ॥ तैयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एव ४३ अध्ययन कह्या। पहिली यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पाचमोये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक पृथिवी नां मिली तेयालीसलाख नरकावासा कह्या। जबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना छेहल्या प्रदेश

दिसिंपित्तिवाचंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सणदीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणंतेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वय नवरं पश्चिमायांसखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशत इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोक च्युताभासितानिक्वचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥
चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउअालीसंपुरि

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्लो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आबाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थ की ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एव ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुदिशे दक्षिण जगतीथकी माडी दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडी विमान प्रविभक्तिये त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या ॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चोतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशे षनी परें अनुक्रमे साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपृष्ठें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट मोक्षे गया यावत् शब्दें करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया। दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिट्ठत्ति आनुपूर्व्या अणुबधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख प्पहीणाइतिदृश्य महालियाएण विमाणपविभत्तीए चतुर्थेवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकाला.प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पचचत्वारिंशस्थानकेत्विदंलिख्यते समयखेत्तेत्ति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

णदिग्रे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कह्या। बडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेतालीसमो लिखेछे। पेतालीसलाख योजन प्रमाणें पहिली पृथिवीये पहिले पाथडे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिंहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लाब

टवर्त्तिवतसणाविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिवृत्तविमानकेन्द्रकमुडुविमानमिति ईसिपब्भारत्ति सिद्धिपृथिवी मदरस्सणपव्वयस्सेत्यादिसूत्रे लवणसमुद्रान
न्तरंम्परिध्यपेक्षातरद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशन्मुहूर्त्तांभोग्यनक्षत्रक्षेत्र समक्षेत्रमुच्यते तदेवसार्द्धद्वार्द्ध द्वितीयमर्द्धमस्येतिद्वार्द्ध मित्येवव्युत्पादना
त्तथाविधक्षेत्रपेषामस्ति तानिद्वार्द्धक्षेत्रिकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तां चंद्रेण सार्द्धंयोग.सम्बन्धोयोजितवति तिन्नेवगाहा त्रीण्युत्तराणि उत्त

धणूइं उहंउच्चत्तेणं होत्था मदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिपि पणयालीस २ जोयणसहस्साइ अबाहाए अंतरे
प० सव्वेविणं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइतिवा जोइस्सतिवा
तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

पणे पिहुलपणे कही। एमज धर्मनाथ अरिहंत पैंतालीस धनुष प्रमाण ऊंचपणे हुआ। मेरु पर्वत ने चिहुदिशें पैंतालीस पैंतालीस हजार योजननो अबा धायें आंतरो कह्यो। लवण समुद्रनो अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कह्यो। महाविदेह क्षेत्रनो जीवा लाख योजन लांबपणेछे तेमाथी दसहजार योजन नो मेरु काढिये तो नेज लाख ऊबस्या तेहनो अर्द्ध मेरुथकी पूर्वनी जगती ४५ हजार योजने थाय। एम चिहुदिशे। चंद्रमाने ३० मुहुर्त्त पर्यंत भोग्य जे नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहीज क्षेत्र सार्द्ध कीजियें एतने ३० मुहूर्त्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्त्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्त्तिया नक्षत्र द्वार्द्ध क्षेत्रि या कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त लगे चंद्रमाने साथे योगकरेछे। करता हुआ करस्ये। तेकिहा नक्षत्रछे तेकहेछे। उत्तराफाल्गुनी १ उत्त राषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त लगे चंद्रमानें साथे योग करे। वडी विमान प्रविभक्तियें पा

राफाल्गुन्यु त्तराषाढी त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचिल्लिख्यते। दिठिवायस्सत्ति द्वादशांगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिमातृकाः पदानीव दृष्टिवादार्थप्रश्नवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमध्रौव्यलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदे नकथमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशद्भवंतीतिसम्भाव्यते। तथाबभीएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणि तानिचककारादीनिहकारां तानि सचकाराणि ऋऋलृलृलृइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभंजणस्सत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य

नत्तीए पंचमेवग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिठिवायस्स णं बायालीसं माउयापया प० बंभीए णं लिवीए बायालीस माउयक्खरा प० पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स बायालीसं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारंचरइ

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या। इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमो लिखेछे ॥ दृष्टिवाद पूर्व ना छेतालीस मातृकापद कह्या सकल शास्त्रने अकारादि छेतालीस अक्षर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसववाना कारणछकी मातासरीखा कह्याछे। ब्राह्मी लिपीने विषे छेतालीस मातृका अक्षर कह्या। अकारादिक हकारांत चकारे सहित ५२। मांहिथी ऋ ॠ ऌ ॡ ळ एह ५ अक्षर वर्जित कीजे ४६ अगरे प्रभजन अठारमो भवनपती वातकुमारेंद्र तेहना ४६ लाख भवनावास कह्या। इति छेतालीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य

ते जयाणमित्यादि इहलक्षप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभ्यंतरे ऽशीत्युत्तरयोजनशते ३६०ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कंभोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि
पंचदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतच्चसूर्योमुहूर्त्तानापष्ट्याऽगच्छतीति षष्ट्याऽस्यभागहारेमुहूर्त्तगतिर्लभ्यते साचपंचयोजनसहस्राणि द्वेचैकपंचा
शदुत्तरयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्टिभागायोजनस्य ५२५१ । २९ यदाचाभ्यंतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तोदिवसप्रमाण तद्दिनेनवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त
गतिर्गुण्यते ततश्चतुर्थीतां चक्षुः स्पर्शं प्रमाणमागच्छतीति अग्निभूएति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्यास्यचेद सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तः प्रावश्यकेतुप
ट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासपूर्णत्वादविवक्षा इहत्वसपूर्णस्यापि पूर्णविवक्षेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशस्थानके

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठेहि जोयणसएहिं एक्कवीसाए
यसठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसवासाइं अगारमज्झेव
सित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारिय पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सण रन्नो चाउरंतचक्क

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढी पूनिमे कर्क सक्रांतिये निषध पर्वतने ऊपरि ६५ मांडलाछे तेमांहिथी पहिले माडले उपसक्रमीने भ्रमणकरे तिवारेइहा भर
तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे त्रेसठि योजन अने १ योजननां ६० हिया २१ भाग एतनो वेगलो थके दृष्टिगोचर आवे। स्थविर बडा वयपर्या
यगुणेकरी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुंड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय
सपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अठतालीसमो समवाय लिखेछे॥ एकेक चिहुदिशिना अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण कह्या।

किमपिलिख्यते। पट्टणति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतंति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्पठ्यते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेत्ति सूर्यविमान येषांभागानामेकषष्ट्या योजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयोदशभिस्तैर्न्यूनयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपंचाशस्थानकंलिख्यते। सत्तसत्तमियाण सप्तसप्तमानिदिनानियस्यासासप्त २ दिनानिभवति सप्तसु सप्तकेषु अतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपंचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्नउणभिक्खासएणति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदिनमेकोत्तरयाभिक्षावृद्ध्या अष्टविंशतिभिक्षाभवति एवञ्चसप्तस्वपिषण्णवतिभिक्षाशतंभवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्ध्यायथोक्त भिक्षामानभवति तथा

वहिस्स अहयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणअरहउ अहयालीसंगणा अहयालीसं गणहरा होत्था सूर मंडलेण अहयालीसं एकसठिभागे जोयणस्स विक्खम्भेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं ति

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया। आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे। सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठि या ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिहुलपणे कह्यो। एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग ओछो सूर्य मंडलछे ॥ इति अठतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते सप्तसप्तमिका भिक्षुनीप्रतिमा उगुणपचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीये पूरीथाय। एकसो छन्नू १९६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधिये सिद्धांतोक्तमार्गे आराधी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजे सप्तके पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४। एम

हि प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो २ र्गहणाच्चतुर्दश एवंसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपंचाशदित्येवंसर्वमीलनेयथोक्त
मानश्चभवतीति अहासुत्तंति यथासूत्रंयथागमंसम्यङ्न्यायेनसप्तभवतीति शेषोद्रष्टव्यः संपन्नजोव्वणाभवतिति नमातापितृपरिपालनामपेक्षतइत्यर्थः ठिइत्ति
आयुष्क ॥ ४९ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनतजिज्जिनकालभावी तथाकचणत्ति उत्तरकुरुपुनीलवदादीना पञ्चानामानुपूर्व्वीव्यवस्थिता

१ ॥

एकुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउयजिक्कासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा
सुण मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्नराइंदिया ठिई
प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणअरहओ पंचासअज्जियासाहस्सीओ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

चौजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम
पाचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२
एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९। एमसर्वमिली १९६ भिक्षाथई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषें युगलिया
मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगें मातृत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते। तेइ
न्द्रिय जोवनो उत्कृष्टो ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय संपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखेइ। मुनिसुव्रत वीस

नांमहाह्रदानांपूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येकदशकांचनपर्वताभवंति तेचसर्वेशत एवदेवकुरुषुनिषधादीनां महाह्रदानां पार्श्वत' शतभवंति सर्वएतेजबूद्वीपेद्वि शतमानाभवंति तेयोजनशतोच्छ्रिताः शतमूलविष्कभा स्तन्नामकदेवनिवासभूतभवनालक्तशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचाशस्थानकं। तत्र

सं धणूइं उद्दं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उद्दंउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खम्भेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिरस गुहा खण्डगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२

मा अरिहंतने पचास आर्यानी साध्वीनी सपदाना सहस्र थया। अनतनाथ तेरमा अरिहत पंचास धनुष जंचा जंचपणे थया। अनतनाथने वारें पुरुषोत्त म नामा चौथो वासुदेव पचास धनुष जचो जचपणे हुयो। सगलाई दीर्घ वैताढ्य ३४ जवूद्वीपना ६८ धातकीखडना ६८ पुष्करार्द्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या। लातक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या। सगला जवूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेबे गुफा छे तेमाहि तिमिस्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहु गुफा पचास पचास योजन आयामपणे कही। उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक द्रहने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्वमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्वमिली २०० कांचनगिरि हुआ। ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषें पचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ज

बंभचेराणंति आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमेसप्तोद्देशका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वार
चत्वारः एव पच अष्टौ चत्वारः षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुप्पहेति चतुर्थोबलदेवअनतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपचाशद्वर्षलक्षायुः पुनरुक्तमावश्यकेतु
पचपचाशदुच्यते तद्दिमतातरमिति एकावन्नउत्तरपगडीओति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपचाश

जोयणाइं विरकंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवरहंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं
असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसन्निविठा प० एवचेवबलिस्सवि सुप्पभेणं बलदेवे
एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दसणावरणनामाणं दोरहंक

चाछे। इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मो समवाय लिखेछे। आचारागे प्रथमश्रुतस्कधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते
हना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययने ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१
उद्देशनकाला कह्या। बीजो विचार २५ ठाणे जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनो सुधर्मासभा एकावन से स्तभेकरी संनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र अ
सुरेंद्रनो असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्तभेकरी सन्निविष्ट कही। अनतनाथने वारे सुप्रभनामा चोथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने
सिद्धबुद्धथयो सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतांतर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनी उत्तरप्रकृति ९ छठ्ठीनामकर्म तेहनी

स्थानक॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति । इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्त तत्रा पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चडिकेत्ति चाडिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्त उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति

म्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स बावन्नंनामधे ज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गब्बे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे । माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे । लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ मिहुकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही । इति ५१ समवाययो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे । मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या । मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतस्याछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे । क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अचमा ५ सज्वलन ६ कलह ७ चाण्डिक्य ८ भंडण ९ विवाद १० । मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्नत्त १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्बिषिक १२ आत्मरणता १३ गूहनता १४ बचनता १५ परिकुचनता १६ सातियोग १७ । लोभाश्रितनाम १४ । लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५

व्यवमं कालेत्ति कालं कुरुएत्ति कुलकं भिमेति जघं तणाणोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिज्झाअभिज्झत्ति अभिध्यानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्यादा
विव वैकल्पिके प्रकारलोपे भिध्यावेति शब्दभेदावामद्वयमिति गोथूभेत्यादि गोस्तुभस्य प्राच्यांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलंधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य
पोरत्थाचरमातादपस्तत्य बडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाशात्यचरमांतीयेन भवतीति गम्यते एसणति एदतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः
द्विपंचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती त्यचरपटना भावार्थस्त्वय एक लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण बडवामुखकेत

कंखा गेही तिण्हा भिज्झा अभिज्झा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे। गोथूभस्सणं आ
वासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमताउ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसण बावन्नं

तृष्णा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीवितासा ११ मरणाशा १२ नंदी १३ रागी १४। सर्वमिली ५२ थया। पूर्व लवण समुद्रमांहि
गोस्तूभ नाम वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना परिमांत थकी छेल्लाप्रदेश थकी मांडी बडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो
चरिमांत छेल्लो प्रदेश एह बावन सहस्र योजन आबाधा विचाले आंतरो काढ्यो। जंबूद्वीपनी जगती थकी माडी चिहुदिसे ९५ सहस्र योजन लगे समुद्र
अवगाहीये तिहां पूर्वादिक चिहुदिसि क्रमे बडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीयें तथा जंबूद्वीप पर्यंत थकी ४२ सहस्र
योजने समुद्र मांहि जई तिहां चिहुदिसे ४ वेलंधरनां पर्वत गोस्तूभादिकछेते सहस्रना पिहुलाछे सर्वमिलो ४३ हजार योजन प्रमाण थया तो ९५ सहस्र
माहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठें गोस्तूभ पर्वतनो बडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आंतरोउगरे एमज चिहुदिसि एम दक्षिणे

कजूपकेश्वराभिधाना महापातालकलशा भवंति तथा जंबूद्वीपपर्यंता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कंभा श्चत्वारएव वेलंधरनागराजपर्वता गोस्तुभादयो भवंति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राण्यंतरं भवति सौधर्मे त्रिंशद्विमानानांलक्षाणि सनत्कुमारेद्वादश माहेंद्रे चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवंतेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्साइं नवयसएजोयणाणिइगतीसे

जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव दगभासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसिण तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीउ प० सोहम्म स णंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु बावन्नं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

दगभास पर्वतनां पूर्वात थकी मांडी। केतुक पाताल कलश बिचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमें शंख पर्वतना पूर्वांत थकी माडी यूपनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत बिचे ५२ सहस्र योजन। उत्तर समुद्रमांहि दगसीम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमात बिचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो। ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्रिहुंकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही। सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान। सनत्कुमारे १२ लाख विमान माहेंद्रे ८ लाख विमान। एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कह्या एतले ५२ लाख विमानावास कह्या। इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिले५३ समवाय लिखेछे। देवकुरु उत्तरकुरु सदधिनी

जीवामहाहिमवओ अद्धकलाछक्कलाओत्ति ॥ १ ॥ सवच्छरपरियागत्ति सवच्छरमेक यावत् पर्यायः प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते संवत्सरपर्यायाः महइमहालएसु महाविमाणेसुत्ति महातिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया यात्यंतनुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया स्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति विग्रहः एतेचाप्रतीता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धीयते तत्र चयत्रिंशत् बहुवर्षपर्याया येति ॥ ५३ ॥ चतु.पचाशस्थानके लिख्यते । पाउणित्तत्ति प्राप्य

यासणं जीवाउ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ तेवन्नजोयणसहस्साइ नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं प० समणस्सणं भगवओमहावीरस्स तेवन्न अणगारासवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महा विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

जीवा प्रत्यंचारूप चेपनचेपन योजन सहस्र झाझेरी लाब पणे कही । महाहिमवंत बीजो वर्षधर एह चिहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यंचा चेपन २ सहस्र योजन प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाद्र छकला । ५३९३१ योजन १९ । ६ काला आयामे लाब पणे कह्या । श्रमण भगवतमहावीर ना ५३ अणगारयती सवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीचा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे सवारीआरो अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो चेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगनिसेज्जाएत्ति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइंति व्याक्रियंते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागरिच्छत्ति व्याकृतवान्स्तानि चा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपचाशद्गणा गणधरा शेला. आवश्यकेतु पचाशदुक्ता स्तदिह मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत्

नरहेरवएसुण वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए नसप्पिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकराबारसचक्कवट्टी नववलदेवा नववासुदेवा अरहोण अरिठनेमी चउवन्नराइंदियाइं छउमत्थपरिया यपाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणेभगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना इ वागरणाइं वागरित्या अणंतरसणं अरहउ चउपन्न गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे। भरत ऐरवत क्षेत्रने विष एककोये अवसर्पिणीये एककोये उत्सर्पिणीये चौपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे। उपजस्ये ते कहेछे। २४ तीर्थंकर। १२ चक्रवर्ती। ९ बलदेव। ९ वासुदेव। सर्वमिलो ५४ थया। अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली ने जिन हुया केवली। सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसकल ससारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया। श्रमण भगवत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या ये एके आसणे बैठे ५४। व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवत कहता हुया। अनतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया। इति चौपनमो समवाय थयो॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे। मल्लिनाथ अरिहत पचावन वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् शब्दे सर्वदुःख थकी

पूर्णतया विवक्षितेति अंतिमरायसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्रौ रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्ति
कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिषण्णः पंचपचाशदध्ययनानि कल्याणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य
स्य कर्मणः फल कार्यं विपाच्यते व्यक्तीक्रियन्ते ये स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्धोबुद्धः यावत्करणात् मुत्ते
अंतकडे परिनिब्बुडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयाया पंचविंशति रिति पंचपचाशत् दसणेत्यादि दर्शनावरणी

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु
पणपन्न निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्न उत्तरपग
डीओ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंद्दीवे छप्पन्नं नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रियें कार्त्तिकबदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बैठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमे हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा
बीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्धा
तनेविषें सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रचीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकह्या बीजीयें २५ लाख बिहु नरक पृथिवीना
मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ९ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमत्रीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा
यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जंबूद्वीप द्वीपने विषें ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग सबध योजना करता हुया सबध करेछे संबंध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्यवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्वीपेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा शोक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतर मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणपिटकानि तेषा आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययन विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कंधे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशाना मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पचदश सूत्रकृते

अरहओ छप्पन्न गणा गणहरा होत्था ॥ ५६ ॥ तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाण सत्तावन्न अज्झयणा प० त० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सण आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ

कारस्थे एनले जूद्वीपमांहि २ चद्रमाछे एकेक चद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ तिहु चद्रमाना मिलो ५६ नक्षत्र होय। विमलनाथ अरिहतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेछे। त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचारांग प्रथम श्रुत स्कधे ८ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे। तेमाहीथी छेल्ला अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडाग पहिले श्रुतस्कधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणागे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडाग २ ठाणाग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांगे प्रथमश्रुतस्कन्धेषोडशद्वितीयेसप्त स्थानांगे दशमे त्यवं सप्तपंचाशदिति गोथूभेत्यादौ भावार्थोय द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतर सहस्र गोस्तुभस्य विष्कम्भः द्विपचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रतर दशसहस्रमानत्वा वडवामुखविष्कम्भस्य तदर्द्धं पचेति ततो द्विपंचाशतः पंचाना च मीलने सप्त पचाशदिति जीवाणधणुपिट्ठत्ति मण्डलं खण्डाकार क्षेत्र इह सूत्रे सम्बादगाथार्द्ध सत्तावन्नसहस्सा धणुपिट्ठेणउयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स वज्झमज्झदेसत्ताए एराणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतरूप्पीणवासहरपव्वयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

मांहि पूर्वदिशे गोस्तुभनामा वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांतथकी छेहल्या प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो वहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो एतले गोस्तूभ पर्वतथकी शुद्ध पर्वे ५३ सहस्र योजने वडवामुख पाताल कलशछे अने ते वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया। एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथकी माडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शंखनामा वेलधरथकी मांडी यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। उत्तरे दगसीम वेलधर थकी ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। मल्लिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७०० थया। जंबूद्वीप लक्षण मंडलक्षेत्र तेमांही हिमवंत बीजो वर्षधर रूपी पाचमो एहबीहु वर्षधर पर्वतनी धनुपृष्टि ५७ योजन सहस्र वली बेसय अने बाणो

अष्टपंचाशत्स्थानकेपि लिख्यते । पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वाण्यष्टपंचाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पंचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणा वसेयः एवंचउद्दिसिंपि नेयव्वंति अनेन सूत्रेत्वयमतिदिष्ट तत्रैव दगोभासस्सणआवासपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरमताओ केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अट्ठावन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नते एव संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओजूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणराए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदो च्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अठावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंत राइयस्स एएसिणपंचण्हकम्मपगडीणं अठावन्न उत्तरपगडीओ प० गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२९३ योजनना एगुणीस हाइया भाग १० कला परिक्षेपे परिधि कही ॥ इति ५७ गोसमवाय संपूर्ण ॥ ५७ ॥ हिवे अठावन मो समवाय लिखेछे । पहिलीयें २० लाख नरकावासा बीजीयें २५ लाख पाचमीयें ३ लाख एमत्रिणना मिली अठावन नरकावासा सतसहस्र एतले ५८ लाख नरकावासा कह्या । नाणावरणीय ५ प्रकृति वेदनीयनी २ आउखानी ४ नामकर्मनी ४२ अंतरायनी ५ एह ५ कर्मनी उत्तर प्रकृति अठावन कही । समुद्र मांहि पूर्वदिशें गोथूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत छे तेहना पश्चिम चरमातथी छेहला प्रदेशथकी मांडी बडवामुख महापाताल कलशनी बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । जंबूद्वीपनी पूर्व जगतीथकी मांडी ४२ सह

पातालस्स एवदगसीमस्स आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ चरमंताओ ईसरस्स महापायालस्सत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानके लिख्यते।
चंदस्सणमित्यादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानागादिषू क्त स्तत्र य चद्रगति मगीकृत्य संवत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चऋतवो भवन्ति
तत्रचैकैकाऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिदिवाग्रेण भवति कथ एकोनत्रिंशद्रात्रिश्च द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्येवं प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

ल्लाउ चरमताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहा ए अंतरे प० एवचउदिसपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि

सु योजन गोस्तूभ पर्वतछे ते एकसहस्रनो पिहुलो छे ते एकसहस्र योजन हाथेलीजे अने गोस्तूभ थी ५२ सहस्र योजन वडवामुख कलशछे। तो गोस्तूभस
वधो एक सहस्र ५२ सहस्र माहि घालिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोछे तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही
घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणिवो। एम चिहुंदिशि ना वेलधर पर्वत अने चिहुं पाताल कलशनो आंतरो जाणिवो दगभास पर्वत
दक्षिण समुद्र माही तेहना उत्तर चरिमांतथी माडो केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमात
अने यूप कलशनो मध्यभाग५८ सहस्र योजननो आंतरो कह्यो। उत्तरे दगसीम पर्वतनो दक्षिण चरिमांत ईसरं पातल कलश ५८ सहस्रनो। इति ५८
समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५९ मोसमवाय लिखेछे। चद्रमानी गतिने अगीकार करीने जे सवत्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये।
चद्र सवत्सर १२ मासनो ऋतु ६ होय। एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस छे तिहां एहवो रात्रि दिवाग्रे ५९ अहोरात्रि प्रमाणे कह्यो तो विहु

नां सूर्यमडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ट्याषष्ट्यानुहूर्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक स्मिनहियत्रस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अग्रोदयति षोडशसहस्रोद्धिताया वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमान दृष्टिहानिस्तभा वतदग्रोदक वर्धिष्यति औदोच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवन वंभस्सति ब्रह्मलोकाभिधान पचमदेवलोकेंद्रस्य सट्ठित्ति सौधर्मेद्वात्रिंशद्दीशानेचाष्टा वशतिर्विमान लक्षाणीतिकृत्वा षष्ठिस्थानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानक तत्रपचेत्यादि पचभिः सम्वत्सरैर्निष्पन्नमिति पचसांवत्सरिकं तस्यणमि त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचायं भावार्थः युगंहि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेण ञ्ञरहा सठिधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बलिस्सणं वइरोयणिदस्स सठि सामाणियसाहस्सीओ प० बंभस्स ण देविंदस्स देवरन्नो सठिं सामाणियसाहस्सीओ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सठि विमाण वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेण मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। बलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या। ब्रह्मनामा ५ मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहु देवलोकना मिली साठलाख विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपचनी पडिवा थी पौर्ण

तद्यथा चंद्रयंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामा
रभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण श्चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यङ्कांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा
दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशदङ्कां एकविंशत्युत्तरंचशत चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ ।
१२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यङ्कांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्वि षष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४
६२ तदेवत्रयाणांचन्द्रसवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासस्य
त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग

सठिं उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणीकीजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे
तिवारे१०६२ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय
१२१ भाग प्रमाणें थाय तेहने१२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान३८३ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणाकीजे ७६७
सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु
मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० नें ३० भागें हरिये तो १ युगनेविषें ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊचपा

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्तः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्तः क्षेत्रसमासेतु कन्देनसहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्त स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयंत्रिषष्ठि स्तृतीयंषट्त्रिंशदिति। चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानणमित्यलक्तो एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितविभागैर्व्यवस्थापिते समांशंसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांश योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पचाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति। एवंसूर्यस्यापिमण्डलंवाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् हितत्रचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानक पचेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसंवत्सराभवंति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित संवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

एगसठिं विभागविभाइए समंसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावठिं पुन्निमाउ बावठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासठिं गणा बासठि गणहरा होत्था सुक्कपरक

कह्यो। मेरु पर्वत ९९ हजार योजन जंचोछे तेहना वेभाग कीजे तेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योछेक्षेत्रसमासमेंतो कदसहित मेरू येकलाख योजन प्रमाण छे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६३ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो चद्रमानो मडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणें व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्योछे। चंद्रमाना मंडलमांहिथी ५ विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांस एणे परे सूर्य मंडल मांथी १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो लिखेछे। पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कही १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष होय तेमांहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६

मास्यइत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधरायोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति। सुक्लपक्ख
स्सेयादि शुक्लपक्षस्य संबन्धीचन्द्रोद्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनंवर्धते एवंकृष्णपक्षेचंद्रः परिहीयते अयंभावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाणं निच्चं
चंदेणहोइअविरहिय चउरंगुलमप्पत हेट्ठाचदस्सतं चरइ॥ १॥ बावट्ठिं बावट्ठिदिवसे२उसुक्कपक्खस्स जंपरिवड्ढइचंदो खवेइ तंचेवकालेण॥ २॥ पन्नरसयभागेणय
चंदंपन्नरसमेवतंचरइ पण्णरसयभागेणय पुणोवितंचेववक्कमइ॥३॥ एवंवड्ढइचंदो परिहाणीएवहोइचंदस्स कालोवाजोण्हावाएयणभावेणचंदस्स॥४॥ तथातत्रैवो
तं सोलसभागाकाजण उडुवइंहायएत्थपन्नरस तत्तिगमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढएजोण्हत्ति॥१॥ तदेवं भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रि
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोयस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवस द्विषष्ठिंकृत्वा वर्धन्ते ततःपंचदशे चंद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पंचद
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावट्ठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एवं व्याख्याते

रसण चंदे वासट्ठिं वासट्ठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ तंचेववकुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्धितवर्ष २ तेहना मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावास्या
होय। वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चंद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागें जडे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कोजेपछे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे झाझेरा चार चार भाग आवे तो पनरेदिन लगे राहुविमान झाझेरा चार २ भाग चंद्रमानेमूकें चंद्रज्योत्स्नावधे
पनरेदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने झाझेराचार २ भाग दिवसे चंद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा चार २ भाग करतां

वावट्ठिं २ इत्यत्र द्विषष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्त्तते चन्द्र चतुरंशाधिकान् द्विषष्ठिभागान् क्षपयन्ति तदे
व कालेन तदेवाह पंन्नरसइत्यादिना चंद्रविमान द्विषष्ठिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां
पचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पचदशभागेन चोक्तलक्षणेन चद्रमधिकृत्य पचदशैवदिवसा स्तद्राहुविमान चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति
अत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुते निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो
र्दश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो चत्वार एव मारणाच्युतयोः ग्रैवेयके त्रयस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे
ष्वेकइति द्विषष्ठि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानाता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव विमानेंद्रका भवन्ति
तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पढ
मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्या चतस्र आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमामूलभूता विमानेंद्रकादारभ्य या चा

मीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १२ प्रतरके तेमाहि पहिले प्रतरेपहिली आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां
डिये तिहां पहिली श्रेणियें पूर्वादिक येकेकें दिशे आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणा मोटा कह्या । १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्ताग्र परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १२ सनत्कुमार मांहेंद्रें १२ ब्रह्मे ६ लांतकें ५ शुक्रे ४ सहस्रारें ४ आनत प्राणते

वलिका विमानानुपूर्वी तया अथवोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाआद्यावलिका तस्यां पढमावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्ठिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्यां पूर्वादिका या दिशि द्विषष्ठिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्विषष्ठितमे ऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे तदेकैकमेव भवतीति तथा सव्वेत्ति सर्वेवैमानिकानां देवविशेषाणां सम्बन्धिनो द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तटाग्रेण प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२ अथत्रिषष्ठिस्थानकं तत्र संपत्तजोव्वणत्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

बासठिविमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए तेसठिं पुव्वसयस हस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

मिली ४ आरण अच्युतना४ सर्व १२ देवलोकनां ५२ प्रतर नव ग्रैवेयकें ९ पांच अनुत्तरनो १ एवं सर्वमिली ऊर्ध लोकें ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकेक विनानस्वविमानेंद्रनो जाणिबो। इति ६२ सम्पूर्ण ॥ ६२ ॥ हिवे ६३ लिखेछे ॥ ऋषभनाथ अरिहंत कोशल देशना ऊपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे महाराज्य वासमांहि वसीने मुडपणो पामी गृहस्थाश्रमथकी अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एव सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो ययो हरिवर्षतोजोनेत्र रम्यकपांचमो क्षेत्र तेह युगल क्षेत्रने विषे मानुस ६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयौवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे माइतपालना करे। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय। हरिवर्ष रम्यक

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवद्वर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानी त्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्याउपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषुत्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानकं अट्ठेत्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यांसाष्टाष्टमिका यस्याहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवंत्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति निसढेणं पव्वएतेवठिं सूरोदया प० एवंनीलवंतेवि ॥ ६३ ॥

अठठमियाणं भिक्खुपडिमा चउसठीए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जावभवइ

क्षेत्रे बीजोआरोहोय। हिमवत ऐरण्यवंतक्षेत्रे तीजोहोय। महाविदेहे चौथोआरोहोय। देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४९ दिननी अपत्यपालनाछे। आरादीठ १५ दिननी वृद्धि अपत्यपालनामें छे। एम करतां ४९ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय। इहां सूत्रमांहि ६३ दिन आंखां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो। सूर्यना मंडल १८४ सगलाईछे तेमांहि निषधपर्वतने माथें १८० योजनमांही तेबठी तेवठी सूर्योदयस्थानरूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११९ सर्वमिली १८४ एवनीलवंत पर्वत नेपणि एम जाणिवो ऐरवत क्षेत्र सबधी सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलीने बीजा ११९ पश्चिम समुद्रमांहि जाणिबा ॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेछे। आठ दिहाडा आठगुणांछे जेहनेविषे तेभिक्षु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठुंआठी चौसठदिनहोय जिहां तेअठ्ठमिया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये। पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ त्रीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेतो

शेषः अष्टावष्टकानि यतो सौ भवत्यत चतुः षष्ट्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा
वष्टाविति सकलनया द्वेशते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिके भवतो ऽतउक्तं द्वाभ्यां चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया
किर्तिया सम्म आणाए आराहियावि भवतीति दृश्यम् सव्वेविणमित्यादि इतो ऽष्टमे नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोजनकपर्वता भवन्ति तेषां चः
प्रत्येक चतसृषुदिक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासांच मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्तितेच षोडशपल्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क
म्भेन मूलादिषु दशसहस्र विष्कम्भत्वा त्तेषां क्वचित्तु विक्खंभुस्सेहेणति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कंभेनेति व्याख्येयं तथा उत्सधेनो च्चत्वेन चतु

चउसठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसठिं सामाणियसाहस्सीओ प० सव्वेविणं दधिमुहापव्वया पल्लासठाणसठिया सव्वत्थसमा विक्कंभुस्सेहेण चउसठिंचउसठिं जोयणसहस्साइं प०

आठेदिने ३२ भिक्षाथाय एम करताथकां आठ अष्टकलगे २६ भिक्षालीजे एतले सर्वमिली २८८ भिक्षाये यथामार्गं आराधीहोय पालीहोयने असुरनिकाय
ना २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें बली तेहने ३० लाख भुवन बिहु भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख
आवास भवन कह्या। चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या। जबूद्वीपथको आठमूं नदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशे ४ अज
नगिरिछे एकेक अजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी बावी छे ते बावोने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वत छे एतले बिहुं। पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन
तेहने सठाणे आकारे संस्थित छे। सगले समान मूले विष्कंभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा। उत्सेधे ऊंचपणे चउसठि २ हजार यो

ष्षष्ठिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मेद्वात्रिंशदीशाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारिविमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसट्ठिलट्ठीएत्ति चतुःषष्टिर्लष्ठ
नाशराणांयस्मिन्नसौचतुः षष्ठिलष्ठिकः मुत्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्चमुक्ताफलानि मणयश्चंद्रकांतादिरत्नविशेषाः मुक्तारूपावामणयोरत्नानिमुक्तामणयस्तद्विकारो
मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानक तत्रमोरियपुत्तेणंति मौर्यपुत्रो भगवतोमहावीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठिवर्षाणि गृहस्थ
पर्याय आवश्यकेप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभ्राता मण्डितपुत्राभिधानः षष्ठोगणधरः तद्दीक्षादिन एवप्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपचाशद्वर्षाणि गृह
स्थपर्यायउक्तो नचबोधविषयमुपगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्टिर्युज्यते लघुतरस्यत्रिपचाशदिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसक विमान सौधर्मदेवलोकस्थम

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत
चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जबूद्दीवे पणसट्ठिं सूरमंड
ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराओअणगारियं पव्वइए

जन प्रमाण कह्या। सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसट्ठिलाख एतला विमानावास कह्या
सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुदिशिना अतना धणीने चउसट्ठिलष्टि कहतां शरी छे तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ शरी महग्घो महार्घ्य
बहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्यो। ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैसठमो समवाय
लिखेछे। जबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या। स्थविर वयश्रुत पर्यायें वडा मौर्यपुत्र सातमा गणध

ध्यभागर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यां दिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्ठिस्था
नक तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धमर्द्धमनुष्यक्षेत्रं दक्षिणच तत्रेति दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रं तत्रभवादक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रा णामित्यलकारेषट्षष्ठिचन्द्राःप्रभासितव
न्तः प्रभासनीयं अथवा लिङ्गव्यत्ययाद्दक्षिणानियानि मनुष्यक्षेत्राणामर्द्धानितानि तथातानिप्रकाशितवन्तः पाठांतरे दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रेप्रकाशनीयं प्रभासित
वंत स्तेचएव द्वौजम्बूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिश्चपुष्करार्द्धे सर्वेचैतेद्वात्रिंशदधिकं शत एतदर्धञ्चषटष

सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा प० ॥ ६५ ॥
दाहिणड्ढ माणुस्सखेत्ताण बावट्ठिं चंदापभासिंसुवा ३ बावट्ठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरड्ढमाणुस्सखेत्ताणं

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुड द्रव्यभावभेदे थईने अगार गृहस्थाश्रमथकी अणगार पणूं साधूपणूं पाम्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप
णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ८५ जाणिवा। सौधर्म देवलोके मध्यवर्ति सोधर्मावतंसकविमान शक्रेंद्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये बाहाये एके
की दिशेगढने समीपवर्ती ६५ भोमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कह्या। इति पेंसठमो समवाय सपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे। मनु
ष्यक्षेत्र आखोअढी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते मांहि दक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चंद्रमा प्रभासता हुया उद्योत करता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्ये। एतले
जबूद्वीपं माहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र माहि ४ सूर्य ४ चंद्रमा धातकीखड मांहि १२ सूर्य १२ चद्रमा कालोदधि माहि ४२ सूर्य ४२ चद्रमा पुष्करार्द्ध
माही ७२ सूर्य ७२ चद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चद्रमाथया। सुदर्शण मेरुथकी चारपति चिहुदिसे मांहिये मेरुथकी दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

ष्ठिर्दक्षिणपङ्क्तौस्थिता षट्षष्ठ्योरात्तरपंक्तौ यदाचोत्तरपंक्तिःपूर्वस्यांगच्छति तदादक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति छावट्ठिंगणत्ति आवश्यकेतु ॥
पटसप्ततिरभिहितेतोदम्यतांतरमिति छावट्ठिंसागरोवमाइठिइत्ति यच्चातिरिक्तं तदिहनविवक्षितं यतएवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारेविजयाइसु गयस्सतिन्निचुए

छावठिंचंदापन्नासिंसुवा ३ छावठिसूरियातविंसुवा ३ सेज्जंसस्सणं अरहउ छावठिंगणा छावठिंगणहरा

लगे रात्रिये ६६ चंद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र मांहि १३२ चद्रमाछे। तेहनो अर्द्ध ६६ होय ते ६६ चद्रमा जबूद्वीप संबधी हरिवर्ष १ हिमवंत २ भरत ॥
क्षेत्र ३ एव दक्षिण धातकी खडे३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्धे एहीज विहूंक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुथकी उत्तर दिशें जबूद्वीप सबधी रम्यक १ ऐरण्यवत २ ऐर
वत ३ धातकी खंडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्रें ६६ चद्रमा प्रकाश करे तिवारे जबूद्वीप सबंधी पूर्वविदेह १ धातकीखंड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध
पूर्वविदेह ३ तिहा ६६ सूर्यतपे पश्चिम जबूद्वीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेहें ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरु
थकी दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुथकीउत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुथकी पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रि
करे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्धलगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चद्रमा कह्या। श्रेयांस ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यके ७६ गण
धर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिबोधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम झांझेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाइसु गयसातिन्निचुएअ
हवताइ अइरेगनरभवीअं नाणाजीवाणसिद्धंति। विजयविमाने मतिज्ञानी दोवेलाजाय तिहांतेतीस सागर २ वेलाउत्कृष्टो आउखो भोगेतो त्रेसठ्ठसदूणा

वज्जीवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानक्षेत्रप्रदेशपङ्क्ती हैमवतवर्षजीवांयावत्ते हैमवतबाहुउच्येते एवमैरण्यवतबाहुअपिभावनीयौ इहप्रमाणसंवादः बाहासत्त
ष्ठिसद्दपणपन्नेतिन्नियकलाओत्ति कलाएकोनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनुःपृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ एव
लक्षणात् ३८०४० । १० । १९ हिमवद्धनुःपृष्ठे धणुपिट्ठकलचउक्क पणवीससहस्सदुसयतोसहियत्ति एवलक्षणे २५२३० । ४ । १९ । अपनीतेयच्छेषंतदर्द्धी
कृतसद्भवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वांताज्जावूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पचपचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति ततः
परद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमधिकृत्यसूत्रार्थं सगच्छति पचपचाशतोद्वादशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्नियभागाजोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पु
रत्थिमिल्लाउ चरमताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

क्षिछे हिमवतक्षेत्रनी जीवालगे तेहिमवंतक्षेत्रनी बाहुसरीखीबाहुछे। एम शिखरीनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवतक्षेत्रनी प्रदेशपंक्तिछे ऐर
ण्यवतक्षेत्रनी जीवालगे ते ऐरण्यवंतक्षेत्रनी बाहुकहिये। जेहिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रनीबाहू ६७ से ५५ योजन एकयोजननाउगणीसहाथात्रिणिकला ६७५५।
३ १९ योजननाभाग लांबपणे कही। मेरुपर्वतना पूर्वचरिमातथकीमाडी लवणसमुद्रमांही पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल
वणसमुद्राधिपति तेहनो निवासभूत गौतम द्वीपछे तेद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आंवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरूप
र्वत १० हजार योजन विष्कभलीजे अने तिहांथी ४५ हजारे पश्चिम जगती तिहाथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आतरो थयो

यद्यपिसूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्दोनदृश्यते तथाप्यसौदृश्य. जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचंद्ररविद्वीपात्विनाद्वीपांतरस्याश्रूयमाणत्वादितिसर्वेसिपिणमि त्यादि सर्वेषामपि णमित्यलकारे नक्षत्राणांसीमाविष्कम्भः पूर्वापरतश्चद्रस्य नक्षत्रभुक्तिक्षेत्रविस्तारः नक्षत्रेणाहोरात्रभोग्यक्षेत्रस्य सप्तषष्ट्याभागैर्भाजितोविभक्त समांसः समच्छेदः प्रज्ञप्तः भागातरेणतुभज्यमानस्य नक्षत्रसीमाविष्कम्भस्य विषमच्छेदनाभवतिभागातरेण नवक्तुशक्यतेइत्यर्थः तथाहि नक्षत्रेणाहोरात्रगम्य स्य क्षेत्रस्यसप्तषष्टिभागीकृतस्यक्षेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नक्षत्रस्यक्षेत्रतः सीमाविष्कम्भोभवति ॥ एतावतिक्षेत्रेचद्रेणसह तस्ययोगोव्यपदिश्यतइत्यर्थ. तथातस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशन्मुहूर्त्तत्वादहोरात्रस्य त्रिंशतागुणिताया ६३० सप्तषष्ट्याहृतभागायायल्लब्धम् तत्कालसीमाभवति चंद्रेणसहतस्य योगकालइ त्यर्थः साचनवमुहूर्त्ताः सप्तविंशतिश्चसप्तषष्टिभागाः ९ । २७ । ६७ आहच अभिइस्सचदजोगो सत्तट्ठीखंडिए अहोरत्ते भागाओएक्कवीस होतिहिगानवमुहुत्ता यत्ति क्षेत्रतः कालतस्तथा शतभिषगभरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्ठाना त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्टिभागास्तद्भागार्द्धंच क्षेत्रसीमाविष्कम्भोभवति तस्यामेवसार्द्धत्रयस्त्रिंशतिः त्रिंश तागुणिताया १००५ सप्तषष्ट्याहृतभागायां यल्लब्धम् तदेषाकालसीमा तत्रपचदशमुहूर्त्ता. आहच सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेससाइजेट्ठाय एएक्कनक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसजोगत्ति ॥ १ ॥ तथोत्तराश्चयः पुनर्वसुरोहिणीविशाखाना सप्तषष्ठिभागानाशतं तद्भागार्द्धंच क्षेत्रविष्कम्भः सीमाभवति तथातस्मिन्नेवत्रिंशद्दिने

अंतरे प० सव्वेसिं पिण नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिभागभइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला नक्षत्रनी सीमा विष्कभपणे पिहुलपणें सतसठ भागें विभजिये विहचेथकें समोअश क्षेत्रनो भागआवे एम कह्यो नक्षत्रें अहोरात्रीयें जेक्षेत्रनी सी मा क्षेत्रथकी विष्कभपणो होय । एतले क्षेत्रे चद्रमा साथें तेअभोचनो योग सबंध कहीये बीजा नक्षत्रनी वार्ता सर्वटीकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

ते ३०१५ तथैवहृतभागेयल्लब्धम् तदेषांकालसीमाभवति साचपचचत्वारिंशन्मुहूर्त्ताइति गहच तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछन्नक्खत्ता पी
णयालमुहुत्तसजोगत्ति ॥ १ ॥ शेषाणांपचदशानां नक्षत्राणांसप्तषष्टिभागानां चेत्रसीमाएकाभोभवति तस्याश्चतथैवगुणितायां २०१० हृतभागायांचयल्लब्धम्
तत्कालसीमातत्रियन्मुहूर्त्ता आहच अवसेसानक्खत्ता पन्नरसविहुति तीसइमुहुत्ता चंसतेहिजोगोसमासओएसवक्खामि ॥ ३ ॥ एवचैकस्यषष्ठां २ पचद
शाना चेत्येवमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागाना मेदेवद्विगुणं षट्पंचाशतो नक्षत्राणांभवति तत्रसहस्रत्रयंषडशतानिष
ष्ट्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्ठिस्थानके किंविशिष्यते धायइसडेत्या इहयदुक्तम् एवंचक्रवट्टी बलदेवावासुदेवत्ति तत्रयद्यपिचक्रवर्त्ति
नांवासुदेवानानैकदाअष्टषष्टिः सभवति यतोजघन्यतेप्येकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णांतीर्थादीनामावश्यभावः स्थानागादिष्वभिहितः नचैकक्षेत्रेचक्रवर्त्ती
वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिना वासुदेवानां चाष्टषष्ट्याविजयो भवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

धायइसडेणं दीवे अट्ठसठिं चक्क वट्टिविजया अट्ठसठिंरायाणो प० उक्कोसपए अट्ठसठिंअरहंता स

य पूरोथयो ॥ ६० ॥ हिवे ६८ मो लिखेछे । पूर्व पश्चिम धातको खंडे ६८ वर्तीनौविजय चक्रवर्तिये जीपिवा योग्य क्षेत्रना खंड कह्या ।
एतले पूर्वधातकीखंडे ३२ विजय विदेहमांहि अने भरत ऐरवत मिली २ एवं ३४ विजय पश्चिम धातकी खंडे पणि ३४ सर्व मिली ६८ विजयहोय । वि
जयदीठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातकी खंडे ६८ राजधानीछे जिहाराजाथकरे तेराजधानी कहिये । उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातकी खंडे
६८ अरिहंत उपजताहुया उपजेछे उपजसे । एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहंत उपजेम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिवा । यद्यपि वर्त्तमान

राइति सर्वसंख्यैकोनसप्ततिरिति। मंदरस्येत्यादि लवणसमुद्रंपश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमु
द्राधिपतेर्भवनेनालङ्कृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पचचत्वारिंशतोजबूद्वीपसबधिनाद्वादशाना
मन्तरसबधिनांद्वादशानामेवद्वीपविष्कंभसंबधिनांचमीलनादिति।मोहनीयवर्ज्जानाकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवतीति कथं ज्ञानावरणस्यपच दर्शना
वरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वेअतरायस्यपचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकेकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइ अबाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीउ

भरत हिमवतादिक क्षेत्रछे ते पाचसतां पैंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें हिमवत महाहिमवतादिक ६।६। वर्षधर छे छपच त्रीस वर्षधर थया धात
की खंड माहि २ इषुकार पर्वतछे पुष्करार्द्ध माहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुना पश्चिम चरमांत थी गौत
म द्वीपनो पश्चिम चरमात एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनी जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन
गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एकी करिये तिवारे ६९ हजार योजन
थाय। मोहनीय कर्म वर्जी नें सात कर्मनी ६९ उत्तर प्रकृतिकही। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली
उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय सपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखे छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल

क्तिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्म्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपाच यतः स्थितिरवस्थान तेनभावेनाप्राच्यवन तत्र कर्म्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहति किमुक्त भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणित तावत्कर्म्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्म्मदलिक पूर्वनिषिक्त उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्म्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तत्र प्रथमसमये बहुकं निषिचति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयसमये विशेषहीन मेवयावदुत्कृष्टस्थितिकर्म्मदलिक तावद्विशेषहीन निषिचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहु पढमाएठिईएबहुतरदव्व सेसेविसेसहीणजावुक्कोसंतिसव्वेसि ति बाधलोडने बाधत इति बाधा कर्म्मणउदयइत्यर्थः नबाधाअबाधा अन्तरं कर्म्मोदयस्येत्यर्थः तथा जनिका आबाधोनिका कर्म्मस्थितिः कर्म्मनिषेकोभवतीत्येवमेकेनाहु रन्येपुनराहु रबाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्म्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्म्मनिषेको भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित्। चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्व

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीउ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिसामाणियसाहस्सीउ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेनाये ते माटे ७० कोडाकोड सागर माहि थी ७ हजार वर्ष ऊणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकोडि सागर लक्षण कर्म निसेक होय। माहेंद्र चोथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय सपूर्ण ॥ ७०

त्सरा भवन्ति तत्रायौ चन्द्रसम्वत्सरौ तृतीयोभिवर्द्धितसम्वत्सर चतुर्थश्चन्द्रसम्वत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशतच द्विषष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अयञ्च द्वादशगुणः चन्द्रसंवत्सरो भवति त्रयोदशगुणश्चाय मेवा भिवर्द्धितोभवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्वत्सरत्रयेदिनानांसहस्रं त्रिनवतिः षट्त्रिषष्टिभागाभवन्ति १०९२ । ६ । ६२ तथाआदित्यसंवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्टिश्चभवति तत्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिकमभवति इहचकिलचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिआरभ्यते एवचादित्ययुगसंवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रय पंचभिर्दिनैःषट्पंचाशताचदिनत्रिषष्ठिभागैरूनंभवतीतिकृत्वा आदित्ययुगसंवत्सरत्रय श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंवत्सरत्रयत्वाषाढ्यां तत

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कतेहिं सव्वबाहिराउ मंडलाउ सूरिएआउहिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

हिवे ७१ मो लिखेछे । १ युग मांहि ५ संबच्छर होय ते चद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र सबच्छर एकेको चद्र मास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधां चद्र संबत्थाय तेहनां ३५४ दिन झांझेरा थाय २९। ३२।६२ अहोरात्रि १३ गुणाकरिये तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संबत् १ अभियर्द्धित संवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संबत्सरना त्रिण से छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चंद्रयुग अने सूर्ययुग येके आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण बदी पडिवाये प्रारभियें एम आदित्ययुग संबत्सरनी अपेक्षायें चद्रसंबत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन भागें ऊणां करिये । आदित्ययुग संबच्छर ३ श्रावण बदी पचना चंद्र दिन थकी छहें दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संबच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तिवारपछी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

श्रावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने नादित्य श्चरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद
शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना चतुर्णाहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त
तितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यआवृत्ति करोति दक्षिणायनान्निवृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स
रेषूत्तरायणतिथयः क्रमेणैवं यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूरोसुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं
चमीउआवट्टी एयाआउट्टीओसव्वाओमाघमासमित्ति दक्षिणायनदिनानिचैव पढमाबहुलपडिवए १ वीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल
स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपचमीउआउट्टी एयाआउट्टीओ सव्वाओसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारवि
शेषः। अजिएत्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्व त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न्न विवक्षित मिति

एकसत्तरिंपाऊणा प० अजितेणं अरहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

सूर्य चालतोथको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि अतर्भूतछे एकसो अठारमा दिन कार्त्तिकीयें येकसो बारमां पोतानां मडलमांहि सूर्यचार करे
तिवारपछे सोआला संबधी मागशिरादिक मासमाहि एकत्तर माडला सूर्य चरे पछे बहत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमाहिला सर्वबाह्यमां
डला थको सूर्य आवृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या। अजितनाथ

छद्मस्थभावे देशोनानिचिंशत्केवलित्वे इतिद्विसप्ततिः अचलभ्रातेति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधरः तस्यायु र्द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे
द्वादशछद्मस्थताया चतुर्दशकेवलित्वेइति पुष्करार्द्धेद्विसप्तति चन्द्रास्तत्रैकस्यां पक्षौ षट्त्रिंशदन्यस्याच तावंत एवेति बावत्तरिंकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थः
ताश्च कलनीयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखनं लेखो ऽक्षरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञान लेख एवोच्यते एवं सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र
लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि विविधवित्तोपाधिभेदतोवा ऽनेकविधेति तथाहि पत्र वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो
अक्षराणामाधार स्तया लेखनोत्कीर्णनस्यूतच्यूतछिन्नभिन्नदग्धसंक्रांतितो ऽक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभार्यापति

गवंमहावीरे बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं
सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे अब्भिंतरपुक्करद्धेणं बावत्तरि चंदापभासिसु ३ बावत्तरिसूरिया
तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीओ प० बावत्तरिकलाओ प० तं०

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२वर्ष लगें सर्वायुपालोने यतोपणूं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभावे १२ वर्ष केवलि पर्यायें १४वर्ष एम ७२ वर्षपालोने सिद्ध थया। पुष्करवरद्वीप १६ लाखनोछे तेमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमांहिते अब्भिंतर पुष्करार्द्ध कहिये तिहां ७२ चंद्रमा ७२सूर्य प्रभासता हुया प्रभासेछे प्रभासस्यें पहिली पंक्तिये ३६ दूजी ३६ एव ७२ थया। तपता हुया तपेछे तपस्यें एकेक चातुरंत चक्रवर्ती नें ७२ पुरवर मोटा श्री नगरना सहस्र कह्या। पुरुषनी ७२ कला कही ते कहेछे। लिखवो अक्षरनो स्थापिवो तेहीजकलाते लेख क

शत्रुमित्रादीनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वा त्तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषा यैते अतिकार्श्यमतिस्थौल्यं वैषम्यमंतिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव यवेषुचेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्याटीप्रसिद्धं २ रूप लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माण ३ नाट्यकला भरतमार्ग स्थलिकलास्यविधान मित्यादिभेदादष्टधा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूप चात्रभरत शास्त्रादवसेयं ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग स्थलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समा स्वरमण्डलं इयञ्च विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्यति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वादाना चतुः पंचत्रयेक प्रकारतया त्रयोदशधा ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

लेहं १ गणिय २ रूव ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्करगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोरकच्चं १२ अठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

ला १८ भेदें कहीछे ।१। गणित अकनीकला २ । चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ वाजित्र वजाडानीकला ६ । कठ संबधी स्वर ने ओलखिवानीकला ७ । बाजित्रनीगतिनीजाणवी ८ । ताल देवानीकला ९ । जूवारमवानीकला १० । लोगथी आलाप सलापनी कला ११ नगररचा दिकनी कला १२ । सारपासारमवानी कला १३। पाणीअनेंमाटी एकठीकीधांअमुकयोग होय तेकला १४। अन्ननीपजाविवा राधिवानीकला १५। पाणी नीपजावानी विधि १६ । वस्त्र नीपजाविवारगवानी पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८ । आर्या सस्कृतनीबध तेहनी जाणियो १९ । प्रहेलिका

ज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्ति २४ मधुसित्थं २५ आभरण विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलक्खणं २८ पुरिसलक्खण २९ हयलक्खणं ३० गयलक्खणं ३१ गोणलक्खणं ३२ कुक्कुडलक्खणं ३३ मिंढयलक्खण ३४ चक्कलक्खणं ३५ छत्तलक्खणं ३६ दंडलक्खणं ३७ असिलक्खणं ३८ मणिलक्खणं ३९ कागणिलक्खण ४० चम्मलक्खणं चंदलक्खणं सूरचरियं राहुचरियं गह चरियं सोन्नागकरं दोन्नागकरं विज्जागयं मतगय रहस्सगयं ४१ सन्नासचारं ४२ वूहं ४३ खंधावा

नीकला २० । मगधदेशसबधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानो जाणपणूं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४ । मधुरादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रीजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७ । स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषना बत्तीस लक्षणजाणिवानो कला २९ । घोडाना लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीना लक्षण जाणिवानीकला ३१ । वृषभ लक्षण कला ३२ कूकुडाना लक्षण कला ३३ । मीढाना लक्षण । ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । छत्रना लक्षण ३६ । दंडवंशलष्ठीनालक्षण ७३ । खड्गना लक्षण ३८ । मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सूर्यनो चरित्र एहवो ज्योतो एमथास्ये एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तप्रत विचार मत्र आराधे हरिणेगमेषीआवे । रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु भावना प्रयोग चार कटक मानो उ

सुचि दंऽतर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते । हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीवासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिर्वर्षलक्षण्यायु रुक्त मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते । तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाणं णं जीवाणं तेवत्तरि २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरे जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० बिजएणंबलदेवे तेवत्तरि वाससय सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पचीनो पचेंद्रियतिर्यंचनी उत्कृष्टी ७२ हजार वर्षनी स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेछे । हरिवर्ष अने रम्यक एयुगल क्षेत्रसबधी जीवा पिणचरूप तेहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी । नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजननां उगणीसहाइया सत्तर भाग एकयोजननो वली उपरि अर्द्धभाग आयामपणे लांबपणेकही। विजय वोजो बलदेव ७२ लाख वर्षलगें पूरो आउखूंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रचीण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे ॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेछे । स्थविर ब

शीतोदाप्रपातक्रदे महयन्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहओत्तिकचित्दृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्सस्थान तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता त्प्रपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवरं नीलवद्वर्षधराद्दक्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायांत्रिंशत् द्वितीयायांपचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनलक्षं सप्तम्यापंचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। सुविधे र्नवमतीर्थकरस्य ना

सजोयणविक्कंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीतावि दक्खिणमुहीभाणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सा प०

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने सठाणें सस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे। एम नीलवत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुडनेविषे पडेछे। सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो। चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीयें २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पाच जंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो सपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ पुष्पदत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया। सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगे

मांतरतः पुष्पदन्तस्येति तथाशीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासे कथ म्पंचविंशतिः कुमारत्वे पंचाश्यराज्य इति तथाशांतिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा णि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः कथं पचविंशतिः कुमारत्वे पंचविंशतिः मांडलिकत्वे पंचविंशति चक्रवर्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके लिख्यते किंचित्। तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्यां चत्वारिंश दुत्तरस्यात षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इदमेवभवनमान शेषा

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्था सीतलेणं अरहा पन्न त्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा रवासमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ बावत्तरिंविज्जुकुमा रावाससयसहस्सा प० एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं बारहंपिजुगलयाणं बावत्तरिस

गृहवास माहिवसीनेमुंडथया यतीपणंपाम्या। २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५०हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वथया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु १ लाख पूर्व जाणिवो। शांतिनाथ अरिहत ७५ हजार वर्षलगें गृहाश्रम मांहि वसीने मुंडथया गृहस्थथको यतीपणूं पाम्या। २५ हजार वर्ष, कुमार पणे २५ हजार वर्ष मडलीक राज्यपणें २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या। २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष। इति ७५ मो संपूर्ण ॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मो लिखेछे। विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशें ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एवं ७६ लाख भवन कह्या एमज द्वीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ स्तनित कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इंद्र करतां १२ थया। एहना अंतर

णां द्वीपकुमारादि भवनपतिनिकायाना मिहार्थं गाथा दीवेत्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥
अथसप्तसप्ततिस्थानके विव्रियते किंचित्तत्र भरतचक्रवर्त्ती ऋषभस्वामिनः षट्सु पूर्वलक्षेष्वतीतेषुजात स्त्र्यशीतितमेचतत्रातीतेभगवतिचप्रव्रजिते राजासंहृत्तः
ततत्रस्त्र्यशीत्याः षट्सु निष्कर्षितेषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अंगवंशीराजसन्तानस्य संबंधिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गद्दतोयेत्यादि
ब्रह्मलोकस्याधोवर्त्तिनीष्वष्टासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकांतिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्दतोयानातुषितानांच देवाना मुभयपरिवार

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ भरहेरायाचाउरतचक्कवट्टी सत्तहत्तरि पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासम
ज्झेवसित्ता महारायाभिसेयसपत्ते अंगवंसाउणं सत्तहत्तरि रायाणामुंडे जावपव्वइया गद्दतोयतुसियाणं

२ लाख भवन कह्या दक्षिण उत्तर नामिलीने। इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिवे ७७ मो लिखेछे। श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें थके भ
रत चक्रवर्ती जन्म पाम्या। ८३ लाख पूर्वमांहीथी ६ लाख पूर्व काढेथके ७७ लाख पूर्व उगस्या तोभरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार वासमांहि
वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपदवीनोअभिषेक पाम्या। एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु च
रासी लाख पूर्व जाणिवो। अंगराजाना संतान सबंधी अंगवंशना ७७ राजा मुंड थईने गृहस्थथकी अणगार पणूं पाम्या। पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अ
धोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमाहि गर्दतोय १ तुसित २ एविहुं देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार
कह्यो। एके के मुहूर्तें ७७ लवकाल विशेष लवाग्र परिमाणे कह्या। इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिवे ७८ मो लिखेछे। शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

मंग्रगामित्व मित्यर्थः भट्टित्तति भर्तृत्वं पोषकत्वं सामित्तंति स्वामित्वं स्वामिभावत्वं महारायत्तंति महाराजत्वं लोकपालत्वमित्यर्थः आणाईसरसेणावच्चति आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकाना कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्या ष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथ गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणति उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना न्निवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छतो रवे र्यत्प्रथम न्तस्मा न्नतु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यंतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे अउत्तरिति अष्टसप्तति एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुट्टेत्तत्ति निर्वर्त्तयन्नपयित्वेत्य र्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुट्टेत्तत्ति अभिनिवर्त्तयन् वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारंचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू

स्थपणे ९ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया। उत्तरदिश गमन थकी निवर्त्यो प्रारंभ्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी एकोन चालीसमे मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्त्तीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रने रात्रिने अभिवर्त्तावीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यतर मडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त

स्त्वष्टसप्तत्यां विप्तायां त्रयोदशमुहूर्त्ता सप्तदशैकषष्ठिभागाश्चेति एवंदक्षिणायननिवृत्तेक्ति यथोत्तरायणनिवृत्त एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति
मेकषष्ठिभागान् हापयति वर्द्धयतिच एवंदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्तान्हापयति वर्द्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् हापयति रात्रिभागां
स्तवर्द्धयति इहतु दिनभागान् वर्द्धयति रात्रिभागाश्च हापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किंचिल्लिख्यते । तत्र वलयामुहस्सेति वड
वामुखानिधानस्य पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य पायालस्सेति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता द्रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा
हि अशीतिसहस्राधिकं योजनानां लक्षबाहल्यतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणावगाहो वलयामुखपातालकलशो भवति
तत स्तच्चरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाच्या इति छट्ठीरत्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि बाहल्यतो योजनानां लक्ष

रंचरई एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ वलयामुहस्सणं पायालस्स हिठिल्लाउ चरमंताउ

॥ ७८ ॥ हिवे ७९ मो लिखेछे। पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश बडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी
नो हेठिलो चरिमांत एह ७९ हजार योजन आबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेमांहीथी एक
सहस्र योजन समुद्र ऊंडोते काढीने १ लाख योजन पाताल कलशो छे तेनाढो तेहनो हेठलो विभाग लीजे तो पूठें ७९ हजार योजन उगरा जणिवा ।
एमज दक्षिण समुद्रें केतु पाताल कलश २ पश्चिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह बिचाले ७९

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्तु स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं षष्ठपृथिवीबाहल्यार्द्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाण चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति र्भवति ग्रथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वात्पंचमोमाश्रित्येद सूत्रमवसेयं यत स्तद्बाहल्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्त यतप्राह पढमाशीइसहस्सा १ वत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अट्ठय ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा द्बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या श्चत्वारिद्वाराणि विजयवैजयंतजयतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचत्वा

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाउ छठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमते एसणं एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन अंतरो जांणिबो। छठ्ठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छठ्ठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८ हजार योजन छठ्ठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आबाधाये बिचाले आतरो कह्यो। एतले छठ्ठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छठ्ठीयेज कहियो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मित्यर्थः एसणति एतदेकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थान्तर मग्रमं कथं ज म्बूद्वीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अगुलानि १३ सार्द्धानीत्येव लक्षणस्यापकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥ ७९ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिल्लिख्यते । श्रेयांसएकादशोजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू इ उहंउच्चत्तेण होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइधणूइं उहंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उहं उच्चत्तेण होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउवझुले कहे असीइजोय

योजन कहिवो । जंबूद्वीप नी जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिकें विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे । चार दरवाजानो परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे। जंबूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाऊ १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीथी ४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगणा योजन चिंहु भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये । इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे ८० मो लिखेछे । श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया । श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंचो ऊंचपणे थयो । पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंचो ऊंचपणे थयो । त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो । रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलक्षाणिसर्वायुरिति चत्वारिलक्षाणिकुमारत्वे शेषंतुमहाराज्येइति आउबहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलक्षबाहल्याया स्त्रीणिकाडानि भवन्ति तत्र प्रथम रत्नकाड षोडशविधरत्नमय षोडशसहस्रबाहल्य द्वितीय पककांड चतुरशीतिसहस्रमान तृतीय मब्बहुलकांड अशीतिर्यो जनसहस्राणीति जबूद्वीवेणमित्यादि ओगाहित्तत्ति प्रविश्य उत्तरकठोवगयत्ति उत्तरां काष्ठादिश मुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथममुदय करोति सर्वाभ्यन्त रमडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंचिदुच्यते। नवमनवमिकेति नवनवमानि दिनानि यस्या सा नवनवमिका भवति नव सु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिदिनानि भवत्येव नवानां नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा त्तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेकै

णसहस्साइं बाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणियसाहस्सीउ प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे असी उत्तर जोयणसय उगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढमं उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाणं

जाडपणे। सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पक कांड ८४ हजार योजन। त्रीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो। ईशानेंद्र बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणीसारिखा कह्या। जबूद्विपनी जगतीने माहीले पासे एकसो असी योजनलगे अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भणी अभिमुख थयोथको सर्वाभ्यतर माडलेआषाढो पूनिम दिने निषध पवतने माथेप्रथम उदय करे। इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥ द्विवे ८१ मोठाणूं लिखेछे। पहिला नवदिनलगे एकेको भिक्षा बीजा ९ दिन लगे २ भिक्षा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय। नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिक्षायें दातेंकरी यथासूत्र क

काभिक्षा एवमेकोत्तरया वृद्ध्या नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिक्षाशतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिक्षाशब्देन
दत्तिरभिप्रेता अहासुत्तंति यथासूत्रं सूत्राण्यतिक्रमेण जावत्तिकरणा यथाकल्प यथामार्गंयथातत्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोधिता तीरिता कीर्तिता
आज्ञया राधिते तिद्रष्टव्यं विवाहपन्नत्तीएति व्याख्याप्रज्ञप्त्या मेकाशीति ऽहायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा
दिलक्षणराशिविशेषविचाररूपाणि अवांतराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्व्यशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र ज
म्बूद्वीपे द्व्यशीतिद्व्यशीत्यधिकंमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशत तद्भवतीति वाक्यशेषः किंभूतं यत् सूर्योऽिःकृत्वो द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तद्यथानि

निक्खुपडिमा एक्कासीइराइंदिएहि चउहियपंचुत्तरेहिं निक्खासएहि अहासुत्तं जाव आराहियाकुंथुस्सणं
अरहउ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था विवाहपन्नत्तीए एकासीतिंमहाजुम्मसया प० ॥ ८१ ॥
जंबू द्वीवेद्वीवे वासीयं मंडलसय जंसूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ताणं चारंचरई तं० निक्खममाणेय पविसमाणेय

हेके सूत्रोक्त विधिमार्गे आराधी होय । कुंथुनाथ सतरमा अरिहतने ८१ शत मनपर्यवज्ञानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषें ८१ शत महायुग्म कह्या । इहां
शत शब्दें अध्ययन कह्याछे युग्मशब्दें गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं संपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणो लिखेछे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मां
डला सूर्यनाछे यद्यपि जंबूद्वीप मांहो ६५ माडलाछे परं बाह्य मांडले पणि जंबूद्वीप संबधी सूर्यनो चार छे तेमाटे जंबूद्वीप बाहिरला ११९ मांडला पणि
जंबूद्वीपना कह्या । जे १८२ मांडला सूर्य बे वेला सक्रमी प्रवेश करी चारचरे भमे एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध ऊपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो भने

क्रामत्य जंबूद्वीपात् प्रविशत्य जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलगत भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि तु द्वौवाराविति इहच द्वाशीतिविवक्षयै वेह द्वाशीतिस्थानके ऽधीत मितिभावनीय यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चपठिरेव मंडलाना भवति तथापि जंबूद्वीपादिकस्य चारविषयत्वा च्छेषाण्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपक्षपञ्चम्याप्रारभ्यद्वाशीत्यारात्रिंदिवेषतिक्रांतेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशयात् देवानंदाब्राह्मणी कुक्षित इत्यर्थः गर्भ त्रिशलाभिधानक्षत्रियाकुक्षि संहृतो नीतो देवेंद्रवचनकारिणा हरिणैगमेषाभिधानदेवेनेति इह च सूत्रे द्वाशीतिरात्रिंदिवान्यधिकृत्य द्वाशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितम रात्रिंदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति मन्त्र

समणेभगवमहावीरे वासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहि गब्भाउ गब्भ साहरिए महाहिमवतस्सण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ सोगधियस्स कण्डस्स हेठिल्ले चरमंते एसण वासीइजोयणसयाइ अबाहाए अंतरेप०

समुद्रमाहिलो छेहिलो सर्वाभ्यंतर माडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कोडी सत्यातिसे गेप वाजता १८२ माडला वेवेलाफिरथी सर्वाभ्यंतर माडलावली जंबूद्वीपे निकलतो एकवेला जंबूद्वीप माहो पैसतो एम वेवेला १८२ माडला सूर्यचरे भमे गगने फिरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी नुं माडी ८२ रात्रिंदिवसव्यतिक्रमे थके ८३ मोरानो वर्तीयके त्रागोजमहो १२ नोरानोये देवानंदानो कुखथकी गर्भ त्रिशला देवीनी कुखमांये हरिणैगमे षी देवतायें साहस्यो पहुचाड्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊंचो छे ते महाहिमवंतनो उपरलो चरमांत छेल्लो प्रदेश तेउ थकी मांडी रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनो हेठिलो चरमांत एह ८० शत योजन आबाधायें विचाले आंतरोछे। काउ दूनो अपाहल २ तेमाही पहिलो काउ

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिल्लाओत्ति उपरिमा श्चरमांतात् सौगंधिककांडस्या धस्तनश्चरमान्तो द्वाशीतिर्योजनशतानि
कथ रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकाडं पंककांडमब्बहुलकाडं चेति तत्र प्रथम काण्डं षोडशविधं तद्यथा रत्नकांड १ वज्रकांडं २ एववैडूर्य ३ लो
हिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजनं १० अजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडचे
ति १६ एतानि च प्रत्येक सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगधिककांडस्या ष्टमत्वा दशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येव त्यशीतिशतानीति
एव रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्यं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिन
स्य त्यशीतिर्गणा त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतांतरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चत्यशीतिवर्षा

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासीइं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए
राइंदिए वट्टमाणे गब्भाउ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहओ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

१६ भदे रत्नकाड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अजनपुलक ११
रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगंधिक कांड आठमो तो आठ कांड मि
लीने ८० शत योजनथया अने बेसे योजन महाहिमवत ऊंचोछे सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनथया । इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे
८३ मो लिखेछे । श्रमण भगवत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मो अहोरात्रि वर्त्तता थकां देवानंदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भे साहस्रा हरिणे

णि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्र्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीइंति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्र्यशीतिः तथा भरतचक्रवर्त्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्र्यशीतिमगारवासम ध्युष जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिक्षयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादित्रययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसभेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्सा इं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

गमेसीये पहुंचाड्या । शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यकें ८१ कह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छठ्ठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल गे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदुःख रहित थयो ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया । ऋषभ आदिनाथ अरि हंत कोसल देशना उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयीने अगार गृहस्थथकी अणगारी यतीपणूं पाम्या । २० लाख पूर्व कुमारपणें ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमें एवं ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अंतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एवं ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया । राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान् जेहनेछेते केवली विशेष जाणे ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया । इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे ।

प्रव्रज्यागहणपूर्वकं कोसलिलेन विहृत्य सिद्धइति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकलक्षाण्यमुना विभागेन तीसा
यपणवीसा २ पणरस २ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पचूणसयसहस्सं पचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकरः एकत्रिंशतिर्वर्षलक्षाणि
कुमारत्वे तावंतेव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा त्रिपृष्ठ प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति प्रतिष्ठा

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे
एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे
जावप्पहीणे तिविट्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइ

सातें नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठीये ५ जंणा १ लाख सातमीये ५ एव ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना अपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो पाऊ पालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणें एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरत चक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वरनो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपालो सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणे २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपालो सिद्धथया। सर्वदुःखथी प्रक्षीणथया

नी नरकः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यमं इति तथा समाणियत्ति समानर्द्धयः तथा बाहिरयत्ति जंबूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता चत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह स्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषुदिक्षुचत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि वासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगाथार्द्धं धणुपिट्ठकलचउक्कं चुलसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पंकबहुलंकाण्डं द्वितीयं

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ प० सव्वेविणं बाहिरया मंदरा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविण धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सोलसजोयणाइ चत्तारियभागा जोयणस्स परिक्खेवेणं प० पंकबहुलस्सणं कण्डस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ

त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांही बिचले अपइट्ठाण नरकावासेनारकी पणे उपनो। पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कह्या। जबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासगलाधातकी खंडना २ पुष्करार्द्धना २ मेरु चौरासी चौरासीहजारयोजन ऊंचा ऊच पणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जबूद्वी पथकी आठमे नदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुंदिशि ४ अंजनक पर्वत छे चारोअजनक पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन ऊचा ऊचपणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना। हरिवर्षबीजो रम्यकपांचमो तेहनो धनुवर्ती प्रत्यचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिक्षेपे परिधीयें कही। रत्नप्रभायें त्रिणकांडछे तेमांही पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

तस्यच बाहुल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्तं सूत्रार्थं इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्तौ भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्वेलक्षे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाभवन्तीति तथा चतुरशीति र्नागकुमारा वासलक्षाणि चतुश्चत्वारिंशतो दक्षिणाया चत्वारिंशच्चोत्तरायां भावादिति चतुरशीतिर्योनयोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिंदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोंतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २

हेठिल्ले चरमते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषें ८४ पदना सहस्र छे पदांग्रें पदने परिमाणें जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरें आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अंगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ लाख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिली नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान छेहे

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसंख्येयत्वेपि समानवर्ण गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षया त्रयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुव्वाइयाणमित्यादि पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसंख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानांतराणिच अनतरस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि अथवास्वस्थाना त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानातराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासराशिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्गभवतीति स्वस्थानांतरादेवचतुरशीत्यालक्षै र्गुणितं पूर्वमुच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एव पूर्वंस्वस्थानातरादेव चतुरशीत्यालक्षै र्गुणित मनन्तरस्थान त्रुटिताङ्गाभिधान भवतीति इहसग्रहगाथे पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणत्थिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ चू लियसीसपहेलिय चोइसनामाउअंगसजुत्ता अट्ठावीसठाणा चउणउयहोइठाणसयंति ॥२॥ अभिलापास्वैषा पूर्वाङ्ग म्पूर्वं त्रुटितांगंत्रुटित मित्यादि रिति चउ रासीतिमित्यादि इहविभागोय बत्तीसअट्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवभलोगो विमाणसंख्याभवेएसा १ पचासचत्तछच्चेव सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे

रसाइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

डे छे स्वस्थानक थकी स्थानांतरे २ चौरासी आंकें गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलूं स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय। ते ८४ लाख गुणोकरीये स्थानातरे तिवारे त्रुटितांग होय। इहां संग्रह गाथा। पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय। नलिणत्थिनिउरअउ

सयचउरीआणय पाणएसुतिआरणचुयओ॥ एक्कारसुत्तरंहे छिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि विमानान्येवम्भवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा च्चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्राचारस्य

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्था उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण पामोक्खाओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था सव्वेविचउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवतीतिमक्खायं ॥ ८४ ॥

रानउएपउएयनायव्वो। चूलियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअग संजुत्ता। अट्ठावीसठाणा चउणउयंहोइठाणसय॥ एम चौदेठामे८४ लाख ८४ लाख गुणाकरे करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहां१८४ आंक आवे। आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गछ हुआ। कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिहतने ऋषभसेन प्रमुख ८४ श्रमणयतीनी सपदा हुई। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख त्रीजे १२ चौथे८ पाचमे ४ लाख छठे ५० सहस्र सातमे ४० हजारआठमे ६० सहस्र नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमेबारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० विमान। पाचे अनुत्तरविमाने ५। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुतरविमान मिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि२३ विमान भगवते कह्या। इति ८४ समवाय थयो ॥ ८४ ॥ हिवे ८५ मोलिखेछे। आचाराग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कह्या प्रथम श्रुतस्कधे ९ अध्ययन छे पहिले

दशद्वीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्सच सहस्रमवगाढस्तावदीतिरुच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्ताच्चरमांतात् सौगंधिककाण्ड स्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्ताच्चरमातः पञ्चाशी तिर्योजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ मन्यथतानि मेरोः सम्बन्धीनि प्रत्येक सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टमकाण्डमयीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयएगं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेठिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कण्डस्स हेठिल्ले चरमंते एस ग पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांही गढने आकारे मडलाकारेछे तेमाटे मडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगे सर्वपरिमाणे कह्यो। भूमिथकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचोचढीये तिहा प्रथममेखलानेविषे नंदन वन छे तेहना हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगंधिक काड तेहनो हेठिलो चरमात एह ८५ से योजन अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। रत्नप्रभाये ३ कांड छे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया। नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहतने ८६ गणधर हुआ आवश्यके

अथ षडशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। तत्र सुविधे र्नवमजिनस्येह षडशीतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यके त्वष्टाशीति रिति मतांतरमिद तथा द्वितीयापृथिवीशर्करप्रभा साच बाहल्यतो द्वात्रिंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदर्द्ध षट्षष्टिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विंशतिसहस्राणि बाहल्यत इति षडशीति र्यथोक्तमन्तर भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते मन्दरेत्या दिमेरोः पौरस्त्यातात् जम्बूद्वीपात: पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशच्चसहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यांदिशि भवत्येवं सूत्रोक्तमतर

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ बलसीइगणा बलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स ण अरहओ बलसीइ वाइसया होत्था दोच्चाएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमते एसणं बलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसण सत्तासीइं जोयणस

८८ गणधर तेमतातरके सातमा सुपाश्व अरिहतने ८६ से वादीनीसपदा हुई। बीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपणेके तेह बीजी पृथिवीना वहु मध्यभागथकी माडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे बीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो चरमात ८६ हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेके। मेरुपर्वतना पूर्व चरमात थकी वेलधर नागराजा वास गोस्तूभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो। मेरुपर्वतथकी पूर्वनी जगती

भवतीति एवमन्येषा त्रयाणा मतरमवसेयमिति तथा षण्णां कर्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनी यायुष्कनाम गोत्रसंज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथ दर्शनावरणादीनाषण्णां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत

हस्साइं अबाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाउ चरमंताउ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अंतरे प० एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमं ताउ संखस्स वा पुरत्थिमिल्ले चरमंते एवं चेव मदरस्स उत्तरिल्लाउ चरमंताउ दगसीमस्स आवासपव्वय स्स दाहिणिल्ले चरमते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० छण्हं कम्मपगडीणं आइम

४५ हजार योजन तिहांथकी ४२ हजार योजने गोस्तूभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया। दक्षिण चरमांतथकी दक्षिण समुद्रमांही दगभास पर्व त तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतनी परें अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकीमांडी पश्चिमे श ङ्खनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतथकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। आठेकर्मनी प्रकृति मांही थी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति उपरिम कर्मअंतराय तेहनी ५ प्रकृति एवं १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ मोहनीय २८ आयुखो ४ ना

सप्तां मीलने सूत्रोक्त संख्यास्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि देशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिककाण्डावसानाना रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डाना मित्येवं मीलिते सप्ताशीति रन्तरभवतीति एवं रुप्पिकूडस्सवित्ति रुक्मिणिपर्वतमवर्षधरे यद्वितीय रुक्मिकूटाभिधानं कूट तस्याप्य तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किंचिद्विव्रियते ॥

उवरिल्लबज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगडीउ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताउ सोगंधयस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई। महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊंचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवत कूटछेते ५०० योजन ऊंचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया। तेमहाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमाहि सौगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमात एतले आठो कांडना ८० से यो जन थया अने महाहिमवतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। महाहिमवंत कूटनी परें पांचमोरूपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सौगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखेछे। चद्रमा सूर्य असख्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाश्चसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्यइत्यर्थः अष्टाशीतिर्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यश्च
श्रूयते तथापि सूर्यस्यापींद्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिट्ठिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पञ्च
प्रकारस्य सुत्ताइति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवति जहानंदीएति अतिदेशत. सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः
पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च त्रिचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा द्य
थोक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभाससखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अठासीइ अठासीइ महग्गहा परिवारो प० दिठिवायस्सणं अठासीइसु
त्ताइं प० तं० उज्जुसुय परिणयापरिणय एवं अठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स
पुरत्थिमिल्लाउ चरमताउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअठासीइं जोयणसहस्साइं

ताछे तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चद्रमानोछे तोहीपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो
पिण एतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व
कह्या तेहना सूत्ताइति बीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरु
पर्वतथको पूर्वनो जगतो ४५ हजार योजनछे तिहांथको पूर्वसमुद्रमांहि ४२ सहस्र योजन गोस्तूभपर्वतछे ते १ हजारपिछलोछे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

एव चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराओण मित्यादि बाह्यायाः सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराओत्ति न दृश्यते सूर्यः प्रथ मषण्मास दक्षिणायनलक्षण दक्षिणायनादित्वात् सम्वत्सरस्य अयमाणेत्ति आयात्आगच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो ष्टाशीतिमेकषष्ठिभागान् दिवस खेत्तस्सत्ति दिवसस्यैव निवुड्ढेतत्ति निवर्धयहापयित्वा रयणिखेत्तस्सत्ति रजन्यास्तु अभिवर्धा सूरिएचारचरइत्ति भ्राम्यतीति इहच भावनैव अतिमण्डल न्दिन स्यमुहूर्त्तैकषष्ठिभागद्वयहाने र्दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेस्तएव वर्द्धन्त इति द्विःसूर्यग्रहण चेह दिनरात्र्याश्रितवा क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्त मवसेयमिति इदच सूत्रमष्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्खिणाओइत्यादि सूत्र पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनद्वयी

अबाहाए अंतरे प० एव चउसुविदिसासुनेयव्वं बाहिराउ उत्तराउणं कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अय माणे चीयालीसइमे मण्डलगते अठासीति एगसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स

ना चरमांतथकी नागराज वेलधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनथयो अबाधायें बिचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा णिबो दक्षिणे दगभास पश्चिमें शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आतरा जणिबा । निषधपर्वत संबधी सर्वाभ्यतर मांडलाथकी सूर्य पहिलो छम्मास दक्षिणायन लक्षण तेहप्रतें अयमान दक्षिणायने आवतो चुआलीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसने घटाडी रजनीनोक्षेत्र रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभ्रमे । सर्वाभ्यतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथकी सर्वाभ्यतर म ण्डलथकी दक्षिणायने सूर्य चालतोथको दिनप्रतें एकमुहुर्तना एकसठिया वे भाग दिवस घटाडीये रात्रिवधारिये एकेमासे एकमुहूर्तबाधीये वली ३१ मा

रात्रिहानिय भावनीयेति ॥ ८८ ॥ अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते। तइयाएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्द्धमासेषु
त्रिषु वर्षेषु अर्द्धनवम् च मासेषु सत्स्वतिगम्यते जातत्तिकरणात् अतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिदृश्यं हरिषेणचक्रवर्त्तीदशम स्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारंचरइ दक्खिणकठाणणं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलग
ते अठासीइ इगसठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं
चरइ ॥ ८८ ॥ उसप्पेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

मांडनायकी एकनठिया दिनप्रतें बे बे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे माडले ८८ भाग वधेरात्रि। दिवस घटे। समुद्र माहिलो १८४ मों
मंडलाग्र मडले मकर मक्रांतिये सूर्य जगो दक्षिण दिशि थकी सूर्य बीजे छमासे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में माडले गयो थको १ मुहूर्त्तना
एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारो सूर्य चार करे सर्ववाह्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणें चालतो १ मुहूर्त्तना
एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटता ३० मे माडले १ मुहूर्त्त रात्रि घटे दिवस वधै इमकरता ४४ मे माडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वधै इति ८८ थयो ॥
८८ ॥ हिये ८८ लिखेछे। चौआदिनाथ अरिहंत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने चौजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले
भागे ८८ अर्द्धमासे एतले ८८ पखवाडे चौजा आरा माहि शेष थाकते आखे चौजे आरे व्यतिक्रमे गये थके सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। आदिनाथने
मोक्ष पहुता पछी त्रीणवर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडा चौजो आरो रह्यो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव। श्रमण भगवंत महावीर एणी

अथ शतोनानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाण्येकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु भवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु
क्तान्यावश्यकेलेकपञ्चिः सहस्राणि शतानिचपडभिर्वीयत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८९ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तत्रा

ए पच्छिमेभागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्व
दुक्खप्पहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था सतिस्सणं अरहउ
एगूणनउइ अज्जासाहस्सीउ उक्कोसिया अज्जियासपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८९ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमें गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख प्रक्षीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछी ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव जाणिवो। नमिनाथने बारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८९ वर्षलगे एकसोवर्ष ऊणी नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११०० वर्ष माहि कुमार पणे मडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८९ हजार साध्वी एके ऊणी हुई एतले ८९ सहस्र ९९९ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनो संपदा हुई इति ८९ मो समवाय थयो ॥ ८९ ॥ हिवे ९० लिखेछे। शीतलनाथ

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पंचनवतिरजितस्य षट्त्रिंशत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयम्भूतृतीय वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजय पृथिवीसाधनव्यापारः सम्पेक्षिणमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्याना शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा नवसु सहस्रेषु नवते. शताना भावात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंमु स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ रोगधिय कंडस्स हेठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइ

दशमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया। आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर। शांतिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुया। आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छे। विमलनाथकालीन स्वयंभू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव। सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जंबूमांहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरण्यवत ४ ए चिहु क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छे धातकीखंड माहि एणेजक्षेत्रे आठछे पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिली २० वृत्त वैताढ्यछे सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छे सगलाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ९० से योजन थया॥ इति ९० समवाय

अथैकनवतिस्थानके किञ्चिदिदितन्यते । तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्म्माणि भक्तपानादिभि रुपष्टम्भक्रिया स्तद्विषयाः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः परवैयावृत्तकर्म्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवल विनयवैयावृत्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा दिदशधा विनयः आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ सणमभिग्गहो ४ तहय आसणअणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इतस्सगुणच्छण या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छताणुव्वयय १० एसोसुस्सूणाविणओत्ति तत्र सत्कारोवंदनस्तवनादि अभ्युत्थानमासनत्यागः सन्मानोवस्त्रादिपूज न आसनाभिग्रहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकमुपविशतानेतिभणनमिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्म्मादीनि प्रकटानि तथा तीर्थंकरादीना म्पंचदशाना म्पदाना मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधोऽनाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि

परवेयावच्चकम्मपडिमाउ प० कालोयेणं समुद्दे एकाणउइजोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प०

थयो ॥ ९० ॥ हिवे ९१ मो समवाय लिखेछे। ९१ भेदे वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च कर्म भक्तपानादिके उपष्टभक्रिया तेहनेविषे प्र तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच कर्म प्रतिमा कही। दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदें विनय आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ समणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्म ६ अजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गच्छंताणुवयण एह दशे प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ सघे ८ सभोगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एव १५ बोलने विषे बोल लगाडी एह १५ नी आसातना टालवी १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवीयें ४ तोपनरचीकें साठिथया पछे ७ लोकोपचार विनय अ

य ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोइय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ अत्रभावना तीर्थंकराणामनाशातना तीर्थकराऽनाशातना तीर्थंकरप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनाशातना एव सर्वत्र कायव्वापुणभत्ती बहुमाणोतहयवण्णवाओय अरहंतमाइयाण केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथौपचारिकविनय. सप्तधा यदाह अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइंतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणण सव्वत्थेसुतहयअणुमइंभणिया ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासन उपचरणीयस्यान्तिके ऽवस्थान छन्दानुवर्त्तनमभिप्रायानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदान पदकारितनिमित्तकरण सम्यक्शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनयेवर्त्तन तदर्थानुष्ठान च शेषाणि प्रसिद्धानि तथा वैयावृत्य दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं। साहम्मिय कुलगणसंघ सगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा त्तदेव चतुर्दशधेत्येकनवति विनयभेदा एते एव अभिग्रहविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणेत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आधिक्य

भासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइंतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुःखत्तगवेषणा ५ तहय तह देशकाल जाणण ६ सव्वत्थेसुतहयअणुमइंभणिया ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दर्शननी वेयावच्च करी आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाण ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० सगयतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदें प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्यायादिक नवने पांच १४ अने सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थंकरादिकनी आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ९१ बोलथया। कालोदधि वी

प सप्तत्यासहस्रैः षड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु
र्गोत्रवर्जानां षण्णामिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायानां क्रमेण पच नव द्वा ष्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति ॥
९१ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके त्रिमध्यनिधीयते। त्रिनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पच प
तिमाउक्ता स्वयथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसलीनता प्रतिमा ४ एकाविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

**कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छण्ह कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त
रपगडीओ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाओ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउय पाल**

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिक भांभेरो ते कहिछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अगुल एतलो परिक्षेप परिधि कही। कुथुनाथ अरिहंत
ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबधी अवधि ज्ञानी हुआ। चउथो आउखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
प्रकृति ९१ ज्ञानावरनीयनी ५ दर्शणावरणीनी ९ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय
थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदें प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिली ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
प्रतिसलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिली समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ श्रावकनी ११ एव २३ विवेकप्रो

तसमाधिप्रतिमा चारित्रसमाधिप्रतिमाच दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता तत्रश्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्टिभेदा कथं आचारे प्रथ
मे श्रुतस्कन्धे पच द्वितीये सप्तत्रिंशत् स्थानागे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्रस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवताम्भवन्तीति श्रुतप्रधानत
या श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयामः पचसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या श्चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदा
त्तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसप्ततादित्यादिना भिहितस्वरूपा द्वादश उपासकप्रतिमास्तु दसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति
र्विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्बाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रि
यस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चभ्येकविहारप्र
तिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्वन्तर्भावितत्वादित्येवंद्विषष्टिः पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति र्महा
वीरस्य प्रथमगणनायकः सच गृहस्थपर्याय पञ्चाशत वर्षाणि त्रिंशति छद्मस्थपर्याय द्वादशच केवलित्व माप्यत्रिला सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मदर

इत्ता सिद्धे बुद्धे मंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते

धादिकनो त्याग एकभेद प्रतिसलीन ताये इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच त्रेवीस एकएक सर्वमिली ९२ भेद प्रतिमाना
थया। स्थविर इद्रभूति महावीरनो प्रथम गणधर गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थ पर्याये ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्याये सगलो ९२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया
मोक्षपहुता तत्वना ज्ञानीथया। मेरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीहुई तेहथकी वेतधर नागराजानो आ

स्मेत्यादि भावार्थ. मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति एवं शेषा णामपि ॥ ९२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते । तेणउइमडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्वबाह्यात् सर्वाभ्यन्तरम्प्रति गच्छन् नि वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यप्रति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः सममहोरात्र विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्र तयोः समता तदा भवति यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यतरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्वबाह्येतु व्यत्ययः तथा त्र्यशीत्यधिकमण्ड लशते द्वौद्वावेकषष्टिभागौ वर्द्धते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धि स्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र त्रिनवतितमे मण्डले प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकष

एसण वाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाएअंतरे प० एवंचउरहंविआवासपव्वयाणं ॥ ९२ ॥

चंदप्पहस्सणं अरहउ तेणउइगणा तेणउइगणहरा होत्था सतिस्सणं अरहउ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया

वास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्र मांहि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथकी गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमात ९२ हजार योजन आवाधाये विचाले आतरो कह्यो । मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमात दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो छेहलो भाग ९२ हजार योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । मेरुपर्वतना पश्चिम चरमातनो शखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ९२ सहस्र योजन अवाधाये लिचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वतना उत्तराभि मुख चरमातनो दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनो चरमांत ९२ सहस्रयोजन अवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। इति ९२ समवायथयो ॥ ९२ ॥

हिवे ९३ मोलिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहतना ९३ गछ ९३ गणधरहुया । शातिनाथ सोलमा अरिहंतने ९३ से चौदहपूर्वधर हुया । सूर्यनो एकसोचौ

ष्टिभागद्वयवृद्धा त्रयोमुहूर्त्ता एकैनैकषष्टिभागेनाधिकाः वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येक्षिप्तेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयत्रैकैनैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवंत्यतो द्विनवतितममण्डलस्यार्द्धे समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति द्विनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ९३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिदिद्यते । निसहेत्यादि इहपादोना सम्वादगाथा

होत्था तेणउइमंडलगतेणं सूरिए अनिवट्टमाणे विनिवट्टमाणे वा समअहोरत्त विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥

राशिमो मांडलो समुद्रमाहि तेसर्ववाह्य मडलतेहथकी सूर्यअभिवर्त्तमान सर्वाभ्यतर मडलभणी उत्तरायणे जातो तथा निषधमाथें सर्वाभ्यतर मंडल तेहथ को दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ९३ मे मडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मडले नि षधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौवीसी पछे श्रावणवदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्र तिदिन बे बे भाग दिवस घटाडी रात्री वधारी दक्षिणायने चालता ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिवधे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडी एमकरतां ९२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीपुनिमे ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरेपछे ९३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि वधे तेमाटे दिनरात्रि विषमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमेकरी उत्तरायणभणी चाल्यो तोही एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ९२ मेमांडले चैत्रीपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रीकरी ९३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस वधे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ९३ मो समवाय थयो ॥ ९३ ॥ हिवे ९४ लिखेछे । त्रीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवत एवेहनी जो

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिंप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिके चोत्सेधहानि र्भवति एवं पचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव त्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्सेत्ति अथचोद्वेधा र्थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यापंचनवतिः प्रदेशाः प्रज्ञप्ता स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशेहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य सप्तदशतीर्थंकरस्य कुमारत्वमाडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते र्वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पचनवतिर्वर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभओ पासपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उद्धेऊस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपथकी परहा ९५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेतो बिहूं ९५ मिली १ लाख ९० हजार योजन थया बिचाले दस स हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीछे तिहा पृथ्वी तलनी अपेक्षायें १ हजार योजननी जडी खाड पडीछे १ हजार योजन लगे ऊचोपाणी चढ्यां पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिये तोते मध्यपिड १० हजार योजनलगे दगमालथकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त था जबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतोही ९५ आंगुले एकअगुल तथा ९५ हाते १ हात ९५ योजने १ योजन एम ९५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशें २ मात्रायें २ उद्वेधपणो जडपणोघटाडीये एमकरतां ९५ सहस्र योजन अतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय जंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट थकी ९५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो ऊचपणो प्रदेशें २ मात्राये २ हानिकरी भूमिजडीकरतांजईये एमकरतां

शतो चतुर्गुणितायां षण्णवतिः स्यादेवेति अभ्यंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षण्णवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशागुलमान शंकुमाश्रित्य षण्णवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्त प्रमाण भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाछेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शकुर्गुण्यत इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षण्णवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

रसा प० ववहारिएणं दंडे छसउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अक्के मुसलेवि अप्पिंतरउ आइ मुहुत्ते छसउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदररसणं पच्चयरस पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ

तेजेणे गाउकोस चितवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दड ९६ अगुल प्रमाणे कह्यो २४ अगुल नोहाथहोय चिहुहाथे १ दड होय एम करतां ९६ अगुल कह्या। एम ९६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप झूसरो अच मूशलएहसर्व ९६। ९६ अगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यं तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यतर मडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाणे होय १२ अगुलनो छणजभोकरीये तेहनी छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क सक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अगुल २ घडी दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अ गुल छण त्रिगुण कीजे एतले १८ वार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमाहि छण प्रमाण अगुल १२ काढी पूठी ९६ अगुल उगरे ॥ इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखेछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथकी पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते। मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा त्तदायुष्कस्येति ॥ ९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किंचिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पचयोजनशतोच्छ्रि

गोथुन्नस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव चउदिसिंपि अठरहं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीउ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी दे सूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताण जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लाउ चरमंताउ पंडयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

स्त्रयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलधर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आबाधाये विचाले आतरो कह्यो । एमज चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई । नमिनाथ अरिहतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन कांइकऊणां ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षझांझेरा दीक्षापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपाली सीधोमोक्षपहुंतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिली मेख

तं तद्गतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्ग्रहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम तो नवनवत्यामेरी रुचैस्त्वस्य भाये सहस्रे अपकृष्टे यथो क्तमन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थः पूर्वव त्रवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे क्षिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेयड्ढस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप पाठः सम्यक्पाठ स्वाय दाहिणभरहद्धस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेण पण्णत्ते इति यतोन्यत्रोक्त नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दहिणभरहधणुपट्ठति वैताढ्यधनुः पृष्ठ त्वेवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवतितेयाला धणुपट्ठवेयड्ढे कलायपण्ण

हाए अतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अठा णउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिठे अठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊचोछे तेमांहि ५०० योजना कूटऊचाछे तोभूमीथकी तेकूटना शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगी नदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेमाहि १ हजार योजन भूमिमाहि १ सहस्रनो नदनवन एव २ सहस्रनीकल्या लाखमाहिथी तेमाटे नदनवननो उपरिलो चर मांत मेरुने माथे पडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमांत एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुईते थकी पूर्व समुद्रमाहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलधर नाग राजानो आवास गोस्तूभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमांत ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुदिशि दक्षि ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एहचिहुनोआंतरोगोस्तुभनीपरेजाणवो दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

सहवति उत्तराश्रीणमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेत्ति एको

सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० उत्तराउ कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडल गते अठाणउइ एकसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ दक्खिणाउणं कठाउ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अठाणउइ एक

से योजन कांइ ओछो लांबपणे कह्यो। उत्तर दिसथकी सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनोदिवस १२ मुहूर्तनो रात्रिहुये पछे श्रावण बदी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथकी दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले आयो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग कीजे एहवा प्रतिदिन माडले बेबेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे त्रीसमे माडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्रि वधे एमज सर्वबाह्य मडला लगें कीजे सर्वबाह्य मडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी माडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलाथको मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक बांधोये सर्वाभ्यतर मडल लगे पछे सर्वाभ्यतर मडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुयें सूर्य प हिले छम्मासे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपचासे माडले गयोथको ९८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसे घटाडी रात्रीनूं क्षेत्र रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे। सर्वबाह्य मडल थकी दक्षिणायनथको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपचासमे मडले गयोथको ९८ एक सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीनां क्षेत्रने घटाडीने दिवसनोक्षेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस वधे दक्षिणायने रात्रि बधे

नपचाशतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति द्वयगुणनच प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयवद्वे दिनस्यरात्रे वेति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथ
मानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानिचतानिचेति कर्मधारयः तेषामेकोनविंशते र्नक्षत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्तथाहि रेवतिनक्षत्रं
द्वात्रिंशत्तार अश्विनीत्रितारं कृत्तिकाषट्तार रोहिणीपचतारं मृगशिरस्त्रितार आर्द्राएकतार पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षड्तारं मघा सप्ततारं
पूर्वाफाल्गुनीद्वितार उत्तराफाल्गुनीद्वितार हस्तः पचतार चित्राएकतारं स्वातिरेकतार विशाखापचतार अनुराधाचतुस्तार ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामी
लने यथोक्तं ताराग्रमेकोन ग्रथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥

सट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखित्तस्स बुद्धेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिबुद्धित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईप
ढम जेठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइतारा तारग्गेणं प० ॥ ९८ ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबेभाग प्रति मडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनक्षत्रे पहिलो ज्येष्टानक्षत्रे पर्यवसान छेहडो जेहने एहवा उ
गणीसनक्षत्र ने ९८ तारा ताराग्रेणतारापरिमाणे कह्या । रेवतीनक्षत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । कृतिकाना ६ । रोहिणीना ५
मृगसिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अश्लेषाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ ।
स्वातो १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्टाना ३ । एह १९ नां सर्वमिली ९८ ताराथया । इति ९८ मो थयो ॥ ९८ ॥ हिवे ९९ मो लिखेछे

॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतिर्योजनश
तानि चतु.पचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतु:पंचाशदधिकानि ष
ट्चैकादशभागा स्तथा पचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर आयोभवति पढमसूरिय

मंदरेणं पछ्एणवणउइजोयणसहस्साइं उद्दं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि
मिल्ले चरमते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते
एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइ

मेरुपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊंचो ऊंचपणे कह्यो । भूमियको ५०० योजन मेरुने विषे ऊंचा चढीये पहिलो मेखला तिहां नदनबन पामीये तेह नदन
बन ५०० योजन पिहुलो छे नदनबननो पूर्व चरमांत तेहथी पश्चिम चरमात लगे ९९०० से योजन आबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो । मेरुनो विष्कभ मू
ले १०००० योजन नदनबन स्थाने बाह्य गिरि विष्कभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नदनबन मांहि मेरुनो विष्कभपणो ८९ से योजन ५४
योजने ११ हीया ६ भाग नदनबन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यतर विष्कभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नदनवनना
दक्षिण चरमातथकी नदनबननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलोछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

मडलेत्ति इहजम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योरगिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद्
धिकानि द्वितीयन्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पचत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलसमण्डलस्यचान्तर द्वेद्वेयोज
ने सूर्यविमानविष्कम्भ शाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणित पचयोजनानि पचत्रिंशदेकषष्ठिभागाश्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कंभे क्षिप्त जातमुत्तप्र

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवंत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर मांडलो जम्बूद्वीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोज छे तो जम्बूद्वीपन
जीवा लावपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमाकाढी लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यतर मडल अने पश्चिम सर्वा
भ्यतर मडलने ९९४० योजन आंतरो थयो। पहिलो सर्वाभ्यतर सूर्यनो माडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक झाझेरोते ६४० योजन आयाम पश्चिमे लाव
पणे दक्षिण उत्तरे विष्कभपिहुलपणे आतरो जाणिवो लाख योजन माहिथी ३६० योजन काढी पूठें ९९६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो
मांडलो अने पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आतरो। तेकेम पहिला मांडलाथी बीजो मांड
लो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहदियमिली पहिला बीजामांडलानां आतराना योजन
मडल पिहुलपणो मिली ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यतर मांडलाना प्रथमना आंकमाहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैंत्रीस
भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१। ९

माणमिति तृतीयमण्डलविष्कम्भोप्येतमेतावसेयः सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपंचाशत्योजनानि नवैकषष्टिभागाश्चेति इमोसेणमित्यादि भावार्थीयं अञ्जनकाण्डदशम तत्र च रत्नप्रभोपरिमांताच्छतं शताना भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतेच व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्यन्तरं सूत्रोक्त भवतीति ॥ ९९ ॥ अथ शतस्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्र दशदशमदिनानि यस्या सा दशदशमिका याहि दिनानादशदशका

नेण प० तइएसूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइ साहियाइं आयामविक्खंभेण प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अजणस्स कंडस्स हेठिल्लाउ चरमंताउ वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमते एसणं नवनउइजोयणसयाइ अबाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं भिक्खुपडिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मडले आंतरो तेहीपिण बीजामाडलानीपरे ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारिये ९९६४५ योजन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ९९६५१ योजन ६१। ९ भाग आंतरो थाय। त्रीजो मांडलो आयाम लाबपणे विस्कभ पिहुलपणे कह्यो। एणीये रत्नप्रभा पृथिवी ये ३ कांड माहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येके १ सहस्रनोछे तो रत्नप्रभानो दशमो अजन कांड तेहनो हेठिलो चरमात समभूतलथी १० हजारयोजनछे तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभाना १०० योजन मांहीवानव्यतरनाभूमि संबधी बिहार क्रीडा नगरछे तेहनोउपरिलो चरमांत ९९०० से योजनआबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो। एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन वाहिर काढीये तिवारे ९९ से योजन उगरे। इति ९९ मोसमवाय थयो ॥ ९९ ॥ हिवे १०० मोलिखेछे। पहिला दस दिहाडा लगे एकेकी भिक्षा दातीसे पछे बीजे

नि भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतञ्च दिनाना मतउच्यते एकेनरात्रिंदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिचा द्वितीयेद्वे द्वे एवं यावद्दशमेदशदशेत्येव सर्वभिचासकलने सूत्रोक्तसख्याभवत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्व सप्ततिचानगारत्वमित्येव शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं थेरेविअज्जसुहम्मेत्ति आर्यसुधर्मामहावीरस्य पचमोगणधरः सोपि वर्षशत सर्वायुः पालयित्वा सिद्ध स्तथाच तस्यागारवासः पचाशद्वर्षाणि छद्मस्थपर्याय।

इंदियसतेणं अट्ठबठेहिं निक्कासतेहि अहासुत्तं जावआरहियाविभवइ सयहिस्सिया नरकत्ते एक्कसय तारे प० सुविहीपुप्फदतेणं अरहा एगंधणुसय उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पासेणंअरहापुरिसादाणीए एक्कंवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे सव्वेविणं दीहवेयड्ढपव्वयाएगमेगं गा

दशके वे वे भिचा एम दस दसक लगे एकेक भिचावधारीयेते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिचा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रियें अने साढे पाच से भिचाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गे आराधी होय एणे प्रकारे। शतभिषा नक्षत्रना एक सो तारा कह्या। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदत अरिहत १०० धनुष ऊचा ऊंच पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृहाश्रमे कुमारपणें ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथकी प्रक्षीणथया। एमज श्री महावीरनो पाचमो गणधर आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थपणे ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जबूद्वीपमांहि ३२ विजयना ३२ भ

द्विचत्वारिंश क्षेवलिपर्यायोष्टौभवति चैतद्राशित्रयमीलने वर्षशतमिति वैताढ्यादिषूच्चत्वम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पचानां महाह्रदाना मुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जम्बूद्वीपे शतद्वयसख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचनां परित्यज्य

उयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उड्ढंउत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविण कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसय उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसय मूले विक्खम्भेण प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतना २ एवं ३४ दीर्घवैताढ्य एह बेगुणा धात को खड पुष्करार्द्ध मांहि तो सगला दीर्घ वैताढ्य पर्वत एकेक सो गाऊ ऊंचपणें कह्या । एतले वैताढ्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाऊ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनी मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्वेधपणे भूमि मांहि ऊंडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने विहूंपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरूमांहि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने विहूंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरू उत्तरकुरू मिली २०० कांचनगिरि छे । जम्बूद्वीप माहि बेगुणा धातकी खड पुष्करार्द्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकसो गाऊ उद्वेधें भूमि मांहि ऊंडा एकेकसो योजन मूलें एतला पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहत १५० धनुष ऊंचा ऊं

पञ्चाशच्छतादि द्वया तां कुर्वन्नाह चदप्पहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमाद्वादशाङ्गगणिपिटकसूत्रा न्नवरं॥ १५०॥ २००॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसका: शेखरका' कर्ण पूराणिवा अवतसका: प्रधानाइत्यर्थ: प्रासादाय ते अवतंसका: प्रासादानाम्वा मध्ये अवतंसका: प्रासादावतंसका: ॥ २५०॥ तथा पचधणुसतियस्सणमित्यादि

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पभेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। वारमेअच्युतकल्पे १५० विमान विहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणें थया। सगला महाहिमवत पांच रूपी वर्षधर अढाई द्वीप माहिला बेबेसो योजन ऊंचा ऊंच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेधपणे भूमिमांहि ऊंड पणें कह्या। जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूठें कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठा पद्मप्रभ अरिहत २५० धनुष ऊंचाऊंच पणें हुया। असुरकुमार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन उंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

पञ्चधनु' शतप्रमाणस्य अतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिङ्गतस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषा जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकर णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग मिमुच्य घनप्रदेशीभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहनः सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैव तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोय

उच्चत्तेणं होत्था अरिठनेमीणं अरहा तिन्निवाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्व इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था पंचधणुसइयस्सणं अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति रेगाणि तिन्निधणुसयाणि जीवव्वदेसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादा

मो लिखेछे। पांचमा सुमतिनाथ अरिहत ३०० धनुष ऊंचा ऊंच पणेंहुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुडथया ७०० वर्ष दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनउंचा उंचपणे कह्या। श्रमण भगवंत श्री महावीरने ३०० चौदह पूर्वधरहुया। ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अतिम शारीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष झाझेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही। केवलीनांजेतलो शरीर होय उंचपणें तेहनां ३०० भाग करीये त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक ना शरीरांतर्गत पोलार पूरीये पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छाईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागोक्त शरीरना ३३३ ध नुषआवे एतला सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेछे पार्श्वनाथ अरिहत पुरु

होइबोधव्वो एसाखलुसिडाणं उक्कोसोगाहणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंवक्खारपव्वएत्यादि वक्षस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिबद्धाविंशति स्तेच वर्षधरा

णीयस्स अठुठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था अभिनंदणेणं अरहा अठुठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३५० ॥ सम्भवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवं तावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० रुव्वे विणं वक्खार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेण प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं भगवन्त

षादानी महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया। चौथा अभिनदन अरिहंत ३५० धनुष ऊंचा उच पणे कह्या। इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥ हिवे ४०० नो लिखे छे। त्रीजा सभवनाथ अरिहत ४०० धनुष उंचा उंच पणे हुया। सगलाही अढाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवतवर्षधरपर्वत चेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन उचा उच पणे हुया। चार चार से गाउ उद्वेध पणे उडपणे कह्या। जबूद्वीप मांहि सगलाई वीस वक्षस्कार पर्वत छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वक्षस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदत मिली २० वक्षस्कार पर्वत कह्या। निषध नीलवत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन उंचा उच पणे कह्या। सीता नदीने पासे मेरुने पासे ५०० योजन उंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उड पणे कह्या। आनत प्राणत नवमा दशमा देवलोकने विषे ४०० विमान कह्या।

सत्तौ चतुःचतुशतोच्चाः ॥ ४०० ॥ ४५० ॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य ॥

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगमि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीआ सीओआउ महानईउ मंदरेणं वापव्वएणं पच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विण वासहरकूडा पंच पच जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

श्रमण तपस्वी भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी सपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा हुई। इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहत अर्द्ध पचम साढा चार से धनुष उ चा उ च पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिहु दिशना अतनो धणी ते ४५० धनुष उंचा उच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वक्षस्कार पर्वत अने ४ गजदंत एव २० वक्षस्कार निषध नीलवतने पासे उ चा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जन उंचा उच पणे ते २० वक्षस्कार निषध नीलवतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० से गाउ उद्वेध पणे उंड पणे कह्या। वर्षधर

धिकं कथं लहुहिमवनिसहे एक्कारस अट्ठनवयकूडाइं नीलाइसुतिसुनवगं अट्ठेक्कारसजहासंखं एंतेषा म्यक्षगुणत्वात् वक्षस्कारकूटानि त्रयोत्यधिकचतुः शतीसंख्या
नि कथ विज्जुपहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसवक्खारेसु चउरोचउरोयकूडाइं एतेषा म्यचगुणत्वात् पंचगुणत्व जम्बूद्वीपादिमेरूपलक्षितक्षेत्राणां पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया
चाउरतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पव पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवंतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां ईक ११ छे किहा ईक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पाच से योजन उंचा
मूले पांच पांचसे योजन विष्कंभपणे पिहुल पणे कह्या। आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। भरत राजा चातुरत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उचा उच पणे हुया। मेरु पर्वत थकी विदिशि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वक्षस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे पाच पाच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या। सगलाई
वक्षस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जी ने एतले एह २ कूट। गजदंत संबधीकूट सहस्र योजन उंचा छे। ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उच पणे कह्या। मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या। सगलाई नंदनवनना कूट पणि बलकूट वर्जीने

ला सर्वाण्येतानि पंचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तरादिष्वपि वैताढ्यकूटानितु सक्रोशषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति हरिकूट हरिसहकूट वर्जनविजयोः सहस्रोच्छ्रयला दाश्च विजयभहरिकूडो हरिसहोमालवंतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उच्चिजाजोयणसहस्सति ॥ ५०० ॥ चुल्लहिमवत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मप्यशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंद्रेणकुलकरेत्ति

आयामविक्खंभेणं प० सव्वेविणं नंदणकूडावलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले पंच २ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं प० ॥ ५०० ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएराणं छजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एव सिहरीकूडस्सवि पारस्सण अरहउ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसपया होत्था अभिचंदेण कुलगरे छधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उंचो छे मोटाई टालीने बीजा सातकूट पांच पांचसे योजन उंचा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्या। सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उंचा उंच पणे कह्या। इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥ हिवे ६ स्से नो लिखेछे। सनत्कुमार माहेन्द्र कल्पे बीजा चौथा देवलोकें विमान ६ स्से योजन उंचा उंचपणेकह्या। लघु हिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि ॥ ६०० ॥ श्रमणस्य भगवतोम
हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिट्ठेत्यादि देसूणाइति

अरहा छहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥
बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं भगवओ महावीरस्स
सत्तजिणसया होत्था समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिट्ठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ रसे योजन आवाधायें विचाले आतरो कह्यो। एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप
रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ रसे योजन थया। वलीएमज छठ्ठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ रसे योजन थ
यो। पार्श्वनाथ अरिहतने ६ रसे वादीथया तेकेहवा। देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे
अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनी उत्कृष्टी संपदा हुई। एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ रसे
धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। वारमा वासु पूज्य अरिहत ६ रसे पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या॥ इति ६ रसे मो समवाय थयो
॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नो लिखेछे। ब्रह्मलांतक पांचमे छठ्ठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊचपणे कह्या। श्रमण तपस्वी भगवंत महा
वीरना सातसे जिन केवली थया। श्रमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

चतुःपंचाशतादिनानामूनानि तत्रमाणत्वाच्छ्रमणकालस्येति महाहिमवंतेत्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित स्तत्कूटंच पंचशतोच्छ्रितमिति ॥

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एव रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अठजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकडे अठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्ज

वर्ष देशोन ५४ दिन जणा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। महाहिमवतवर्षधर २ से योजन ऊंचोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणी तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंचो रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया ॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र सहस्रार सातमे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उच पणे कह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ बिभाग तेहनो पहिलो रत्नकाड १ हजार योजन पिड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशाचादिक वान व्यतर कह्या। ते केहवा छे भौम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सूत्रोक्तमन्तरभवतीति ॥ ॥ ७०० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्ड खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योज
नसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय म्विमुक्त्वान्येष्वष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा वाना स्तेच ते व्यन्तराश्च तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच
ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अट्ठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणंदेवाणंति देवे
षूत्पत्स्यमानत्वा द्देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याण येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याण येषांते

विहारा प० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइ कल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात उपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण
छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये कालें एक भवने आतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी
सपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो घणो समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से
नेउ योजने तारा मडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी
सपदा हुई ते वादी केहवा छे देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहु भुवने वादने विषे अपराजित जीत्याम जाय एहवी

तथा तेषांतथाततच्युतानामागमिष्यद्भागामिभद्र कल्याणं निर्वाणगमनलक्षण येषान्ते आगमिष्यद्भद्राः तेषां किमित्याह उक्कोसिएत्यादि ॥ ८०० ॥

बंभसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ अठहि जोयणसएहिं सूरे चारंचरति अरहणं अरिठनेमिस्स अठस
याइं वाईणं सदेवमणुयासुरमि लोगमि वाएअपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था ॥ ८०० ॥
आणयपाणय आरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइ उद्ध उच्चत्तेणं प० निसढकूडरसणं उवरि
ल्लाउ सिहरतलाउ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समेधरणितले एसण नवजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प०
एवं नीलवंतकूडस्सवि विमलवाहणेण नवधणुसयाइं उद्ध उच्चत्तेणं होत्था इमीसेण रयणप्पभाए बंभसमरम

उत्कृष्टी बादीनी सपदा हुई ॥ इति ८ सो नो थयो ॥ ८०० ॥ हिवे नौ सै नो लिखे छे। आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ एह
विहु कल्पने विषे विमान नौ सै योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। निषध पर्वत चार सै योजन ऊंचो तेह उपरि पाच सै योजन निषध कूट छे सर्वमिली
नवसै योजन थया। तो निषध कूटनो उपरिलो शिखरनो तलो तेहथकी निषध पर्वतनो वर्षधर पर्वतनो समोभूमितल नौ सै योजन अवाधायें विचाले
आंतरो कह्यो। एमज नीलवत कूटथकी पणि धरणीतल नौसै योजन आंतरो उपरिलो शिखरनोतलो तेहथकी निषध पर्वतनो समो भूमितल नौसै योज
न आतरो कह्यो। एह अवसर्पिणी ये विमल वाहन पहिलो कुलगर ९ सै धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। एणीवे रत्नप्रभा पृथिवीनो पहिलो घणो समरम
णीक भूमिभाग तेह थकी ९ सै योजने सर्व उपरिलो तारा रूप शनैश्चरनो तारो चार चरे छे। समभूतल थकी ७ सै नव्वे योजन उपर तारा मंडल छे तेह

विचित्तकूडा विति पचसुदेवकुरुषु यमकवत्तसज्ञावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि सर्वेपिवृत्ता वैताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादयः
सव्वेविणहरीत्यादि हरिकूट स्विद्युत्प्रभाभिधानेगजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वक्षस्कारे तानिच पंचस्वपि मन्दरेषु भावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

२॥

अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सव्वेविण गेवेज्जविमाणे दस दस जोय
णसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउ
यसयाइ उव्वेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि नाणि
यव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

योजन उंचा उच पणे कह्या । दश दश सै कोस उद्वेध पणे भूमि माहि दश दश सै योजन लगे आयाम विष्कंभपणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५
देवकुरुने विषे निषध थकी उत्तरदिशे शीतोदा महानदीने बिहुपासे सर्वमिली दशचित्र विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य
बीस छे तेकिम जम्बूद्वीप माहि हिमवत क्षेत्र माहि रम्यक क्षेत्र ऐरवण्यत क्षेत्र मिली बीस एवं ४ वृत्त वैताढ्य थया । ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमा
हि सर्वमिली बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश सै योजन उंचा उच पणे कह्या । दश दश सै कोस उद्वेधपणे भूमिमाहि उंडपणे मूलने विषे हजार योज
न पिहुलपणे । सगलाई समा गुर्जरदेश माहि धानभरिवानी पाली तेहने संस्थाने संस्थित छे । १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या । मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्षारकूडवज्जत्ति शेषवक्षस्कारकूटेष्वेव मुच्चत्वं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या न्दिशि बलकूटाभिधान कूटमस्ति ततः पचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नदनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्कंभेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावरकार पल्लयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्कंभेणं एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पा सस्सणं अरहउ दससयाइ जिणाणं होत्था पासस्सण अरहउ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइ जावस

विदुपासे चार गजदत के आकारे पर्वतछे तेनांहि विद्युत्प्रभ गजदतने उपर हरिकूटछे। माल्यवत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसै योजननांछे मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उचा उच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वक्षस्कार कूट वर्जी नें वक्षस्कार कूट हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्जी ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषे ५ नदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषें प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे। ते ५ बलकूट हजार योजन ना उचा छे नदन वन कूट वर्जी ने नदन वनने विषे पूर्वादिक दिशे विदिशें ४० कूट छे ते हजार योजन उचा नथी ए माटे छोडीने कह्या। अरिहत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तत्वना जाण थया सर्वदुः ख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहतने १ हजार केवलीनी संपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहतना १ हजार शिष्य कालगत थको सीधा यावत् शब्देंकरी स

संख्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरक्तेत्यादि कुमारत्वे त्रीणिवर्षशता न्यनगारत्वे सप्तेत्येवं दशशतानि पउमद्दहपुंडरी यद्दहति पद्मह्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकह्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

वदुक्खप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाण विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाण होत्था ॥ ११०० ॥ महापउमम्महापुंडरीयदहाण दो दो जोयणसह

वदुःख प्रक्षीण थया। लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एम बिहु द्रह श्री अने लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवंत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते श्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्या। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना खण्डकाडना उपरला चरमांत थी लोहिताक्ष काडनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

हापद्ममहापुण्डरीकद्रहौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ श्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्रभापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्ड नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्ड चतुर्थं तानिच प्रत्येक साहस्रिकाणीति त्रयाणां यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्रहौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासाविति ४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरणांसमेभूभागइत्यर्थः रुयगनाभीओत्ति अट्ठपएसोरुयगो तिरियलोगस्समज्झायारमि एसपहवोदिसाणं एसे

स्साइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरिल्लाउ चरमंताउ लोहियक्खकंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥ धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीउ चउदिसिं पंच २ जोयणसहस्साइं अबाहाए

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत छे ते ४ हजारयोजन लांब पणे कह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ † × † × † + † × † × हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषें मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कह्या नाभिथकी चिहुदिशि विदिशिपाच पांच-सहस्र योजन अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिंहुदिशि

वभवेत्रणुदिसाणंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि सतबतसृष्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कम्भत्वादिति ॥ ५००० ००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथम पुलककांडसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्द्धं हरिवासेइग

मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ पुलगस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अट्ठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पामीये। इति पाच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्रार आठमे देव लोकें ६ हजार वि मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो उपरिलो चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र योजन सातिरेक भांभेरा पतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा तुलसीयसयाकलायएक्कायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणोभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन प्रपूर्वतः प्रतीचीन प्रपश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्र लवणसमुद्रं स्पृष्टा शुभवतोनवसहस्राण्यायामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽय नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ९००० ॥ १०००० ॥

पहीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं प
हुए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्कंभेणं प० ॥ १०००० ॥ जंबूद्दीवेणं द्दीवे एगं जोय
णसयसहस्सं आयामविक्कंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेण समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं

द्विवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा पाचीन पूर्वथकी माडी पतीचीन पश्चिमें आयत लाबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगी स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकही इति ९ हजारनोथयो ॥ ९००० ॥ द्विवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ द्विवे लाख नो लिखेछे। असख्यात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप शतसहस्र एतले लाख योजन लाबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ द्विवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने वीटी रह्यो छे॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ द्विवे त्रिण लाख नो लिखे छे।

१००००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ लवणेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्षं चत्वारिच लवणस्येति पंच ॥ ५००००० ॥

चक्कवाल विक्खंभेण प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं अरहउ तिन्निसयसाहस्सीउ सत्तावी सचसहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ॥ ३००००० ॥ धायइखंडेणं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थिमिल्ले चरमते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥ भरहेण राया चाउरतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रज्जमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं

पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी श्राविकानी सपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥ ॥ हिवे चार लाखनो लिखे छे। बीजो धातकी खंड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कंभपणें पिहुलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नो थयो ॥ ४००००० ॥ हिवे पांच लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाख बिचे जबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिवे छ लाखनो लिखेछे। श्री आदीश्वरनो वृद्ध पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कुमारपणें रह्या छ लाख पूर्व महाराज पणे वसीने मुंड थया अगार थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६००००

६००००० ॥ जबूद्वीपस्येत्यादि तत्र लक्षं जबूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारिधातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्त भवतीति ॥ ७००००० ॥

८००००० ॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राण्यतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इद सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधो

पञ्चइए ॥ ६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ वेइयंताउ धायइखंडचक्कवा
लस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते सत्तजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ मा
हिंदेणं कप्पे अट्ठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहओ साइरेगा
इं नवओहिनाणिसहस्साइं होत्था ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिवे सात लाखनो लिखेछे। जबूद्वीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतथकीमाडी धातकी खंड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमात सातलाख योजन आबा धायें बिचाले आंतरो कह्यो तेकेम। जबूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन थया। इति ७ लाखनो थयो ॥ ७००००० ॥ हिवे ८ लाखनो लिखेछे। माहेंद्र चौथे कल्पे ८ लाख विमान कह्या ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥ हिवे ९ हजार नो लिखेछे। अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ९ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ। लाख लगे सख्या कह वली उपराठा ९ सहस्र कह्या ते सूत्रनी गति विचित्र छे एथी अथवा लेखकने प्रमाद थी जाणिवा ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश लाखनो लिखे छे

तन्तत् सहसृशब्दसाधर्म्यां विचित्रत्वाद्वा सूत्रगते लेखकदोषाद्वेति ॥ १००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम
णेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिमप्रव्ज्या प्यालितवानित्येकोभव. ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राज
सूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव
दिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड
ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन सहृत स्तीर्थंकरतया च जातइति षष्टः उक्तभव

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ सम
णेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाउ छठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पाच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पाचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें ऊपनोछे ॥ इतिदश
लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे। श्रमण भगवत महावीर तीर्थंकर पणो उपार्ज्यो ते भवनाग्रणहथको एतले तेभवथकी
पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीक्षापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें ऊपना ते छठ्ठो भव केम श्रीमहावीर
नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ ओ एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ ओ बीजो भव
तिहा थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नद राजा हुया तिहा गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या। पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ४ से ४५

गहणं हि विना नान्यहणग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठभवग्रहणतया आख्यातं यथाच भवग्रहणा दिदं षष्ठं तदध्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्ठूच्यते तीर्थक ॥
रभवग्रहणात्षष्ठे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सन्ति प्राकृतत्वेनशीत्रऋषभ इति वाच्येऽत्ययेननिर्देशः कृतः
एकसागरोपमकोटाकोटी त्रिचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः त्रिभिस्त्राधिकैरूनाप्यस्पत्वा त्रिशेषस्या विशेषितोक्तेति ॥ + ॥ दुवालसंगेत्यनंतरं संख्याक्रमस
ग्रन्थमात्रेण सम्बन्धविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्त्रएवविशिष्टतरसम्बन्ध संबद्धा द्वादशांगे प्ररूप्यन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल
संगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसंख्याक्रमसंबद्धार्थं प्ररूपणमनन्तरमकारि सामतंसंख्यामात्रसंबद्धपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तत्रश्रुतपरमपुरुष

सहस्सारे कप्पे सत्तठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ उसभस्स भगवओ
महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए

मास क्षमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया। तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंजप
मा ५ तिहां थकी ८३ मे दिने रत्नीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणे गमेषी देवें त्रिशला देवीनी कूखें भवतस्या एक छठ्ठो भव
जाणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने बेयालीस
सहस्र ऊणी एक सागरोपम कोडा कोडी आबाधायें त्रिचाले आंतरो कह्यो। एकथकी मांडी कोडा कोडीनी संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग

स्यांगानी याङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिन्द्वादशांग गुणानागणीस्यात्तीतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटक सर्वस्वभाजन गणिपिटक अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारमि ग्रहीए जना प्रोहोइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भणइपढमगणिठाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च परिछेदसमूहो गणिपटकमत्रचैवपदघटना यदेतद्गणिपिटक तत्तत्रागमप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचार. साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालकारे श्रमणाना तपःश्रीसमालि

प० त० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइयदसाउ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिठिवाए सेकित आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अग बारमो पूर्व एव श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अगसरीखाअग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचाराग १ सूयगडाग २ ठाणाग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अतगडदशाग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यूते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनो प्रतिपादक ग्रथ पणि आचार कहिये ते आचारागने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रथ बाह्याभ्यतर ग्रथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मच

गितानां निर्ग्रन्थानां सवाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणा निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्तश्च निर्ग्रंथसक्कतावस
गेरुयआजीवपचहासमणत्ति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिक्षाग्रहणविधिलक्षणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिक तत्फलं कर्म्मक्षयादिस्थान
कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चंक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरण प्रमाण भक्तपानाभ्यवहारोपध्या
देर्मानं नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या
दयस्त्रिस्रः तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्त चाशनादिपानं चोष्णोदकादीतिद्वन्द्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग
मोत्पादनैषणाविशुद्धिस्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धाशुद्धाना तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहण शय्यादिग्रहण तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन विहार भूमिचालवो । चंक्रमण उपाश्रयातरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग
योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप
धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेशणा लक्षण दोषनी विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि
कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्व सुप्रशस्तभलो
जेह आचारांग ने विषे कह्यो जायछे । ते आचार सक्षेपे करी पाच प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामेव सख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संखेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा सखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिबद्धवचनसकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि सख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्ताना सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थाना युक्ति र्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिंश्चवाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिर्युक्तयाद्याः संख्येयाइति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथम पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वीश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिण्णा १ लोग विजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्त ४ आवति ५ धुयविमोहो ७ महापरिण्णो ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्ध. एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवशस्त्रपरिज्ञादिषु पचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

सुयखंधापणवीसंअज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकालापचासी समुद्देसणकाला अठारसपदसहस्साइं पदग्गे

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिवोते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवो तेनिर्युक्ति । ते आचाराग अंगार्थपणे अगलक्षण वस्तुपणे । पहिले अगे वेश्रुतस्कधछे पंचवीस अध्ययनछे तेकेहा सत्थपरिण्णा १ लोग विजय २ सिओसणिज्ज ३ संमत्त४ आवति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिण्णो ८ वहाण सुयति ९ इति प्रथम स्कध ॥ पिडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४भावण१५ विमुत्ति १६ इति

षट् २ चतु ३ चतुः ४ षट ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ रेकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ सख्याताउद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययने षु शेषेषुनवसुनवैवेति इह सग्रहगाथा सत्तयछचउचउरो छपचअट्ठेवसत्तवउरोय एक्कारातितिदोदो दोदोसत्तेक्कएक्कोयत्ति एवसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रज्ञप्त. इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो यत्प्रणितं नवबभचेरगुत्तीओ अट्ठारसपदसहस्सिओवेओत्ति तत्कथ नविरुध्यते उच्यते यत्द्वौश्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणित यत्पुनरष्टादश पदसहस्राणि तत्रवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाण विशेषार्थवद्भानिचसूत्राणि गुरूपदेशतस्तेषामर्थोवसेय इति सख्येयानि अक्षराणि वे ष्टकादीनां सख्येयत्वात् अनतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाइत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तद्धर्मविशिष्टानतधर्मात्मकवस्तुप्रतिपत्ते

णासरकेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडानिबद्धाणिकाइया

द्वितीयश्रुतस्कध ॥ ८५ शास्त्र परित्तादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः ३ चतुः ४ षट् ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विछेदथया । एव ६० उद्दे शा पहिले श्रुतस्कधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कह्या । अठारह सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनी समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । सख्याता अक्षर लिपिन्यास अनन्तागमाअर्थपरिछेद । अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवात्रसजीववेरिद्रियादिक कहीये । अनतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोगमाभवन्ति तेचानन्ताः अनन्ताः पर्यायाः स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थः परीतास्त्रसाआख्ययन्त इति योगः त्रसन्तीति त्रसाद्वींद्रियादयस्तेच परीतानानता एव रूपत्वादेव तेषा अनताः स्थावरावनस्पतिकायसहिताः किंभूताएतेसासयाकडानिबद्धा निकाइयत्ति शाश्वताः द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्तेः कृताः पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावाप्ते निबद्धाः सूत्रएवग्रथिता निकाचिताः निर्युक्तिसंग्रहणि हेतूदाहरणादिभिः प्रतिष्ठिताजिनैः प्रज्ञप्ता भावाः पदार्था अन्येप्यजीवादयः आघविज्जतित्ति प्राकृतशैल्याआख्यायते सामान्यविशेषाभ्यां कथ्यतइत्यर्थः प्रज्ञाप्यन्तेनामादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामात्रत. यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिपायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचारांगग्राहको

जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंणाए एवंबिन्नाए ए

बनस्पति सहित एह भाव। केहवाछे द्रव्यार्थनयें करी अविच्छेदपणें शाश्वताछे वली केहवाछे कडाकहता पर्यायार्थपणे प्रतिसमे अन्यथापणिहोय निबद्धासूत्र थकी गूंथ्या। निर्युक्ति सग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणें प्रतिष्ठ्या। जिनवीतरागें प्रज्ञप्ता कह्या। एहवा भाव पदार्थ अनेरा पणि अजीव पदार्थ जिहा सामान्यविशेष पणे कहिये। नामादिक भेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। उपमाने करी देखाडिये। यथा गोस्त वागवय हेतु दृष्टन्तोपन्यासे करी निर्देसियेदेखाडिये। उपनय निगमने करी सकलनयें करी उपदेशिये। ते आचाराग एहवोछे। एम एहभणी ने ज्ञाता

गृह्णात एवंआयत्ति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंद्यांतुदृश्यते
इतीहव्याख्यातमिति एव क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति
यथेवेक्षोक्तमिति एवविज्ञायत्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएव विज्ञाताभवति तत्रांतरीयज्ञाताभवति तत्रांतरीयज्ञाताभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि
निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरण व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधं करणपिण्ड
विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वंदृष्टइति
१ ॥ सेकिंतंसूयगडे सूचायांसूचनात् सूत्र सूत्रेणकृत सूत्रकृतमिति सुष्ठूच्यते सूयगडेणति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमयाः सूच्यते इत्यादिकंठ्य तथा

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नदिसिज्जंति उवदसिज्जंति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥

सेकिंतंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जंति ससमयपरसमयासूइज्जंति जीवासूइ

जाण होय। एवविणतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यथाग्रन आस्तनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा
येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥
प्रथमखूंतेसूत्रकृताग। सूत्रसूत्रवाथकी सूत्रेकोधो तेसूत्रकृत जेणे सुयगडाग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवी
ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव मिहुपदार्थ जिहांकहिये पंचास्तिकायमयलोकसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यंते तथा समणाणमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयः स्थाप्य तइतिवाक्यार्थः तत्र श्रमणाना किंभूताना मचिरकालप्रव्रजितानां विरप्रवजिताहि निर्मलमतयोभवत्यहर्निशशास्त्रपरिचया द्बहुश्रुतसंपर्काच्चेति पुनः किंभूताना कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सितः समयः सिद्धातोयेषाते कुसमयाः कुतीर्थिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथावबोधः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्रोत्र मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतानीता येषातेकुसमयमोहमतिमोहिताः अथवा कुसमयाः कुसिद्धातास्तेषामोघः सघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषाते कुसमयौघमोहमतिमोहिताः अथवा कुसमयाना कुतीर्थिकाना मौघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमति र्मोहिता येषांते कुसमयमौघमोहमतिमोहिताः कुसमयमोहमतिमोहितावा तेषांतथासदेहा वस्तुतत्वप्रतिश्रसयाः कुसमयमोह २ मतिमोहितानामि

ज्जंति अजीवासूइज्जति जीवाजीवासूइज्जति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूअ गडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसावरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्व इयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पचास्तिकायरहितअलोक सूर्चाविये लोकालोक बोहसूत्रवोये सूयगडागसूत्रे चेतनावतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुण्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसंवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेबध ८ सकालकर्मथकी मूंकाविवो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये। श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाछे। अचिरकाल

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्य' सकाशात् येऽन्ते सन्देहजाता: तथासहजा स्वभावसम्भवा अकुसमयश्रवणसम्भवा बुद्धिपरिणामा मतिस्वभावात् संश
योजाती येषाते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता: सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषा श्रमणानामिति प्रक्रम: किमतआह पाप
करी विपर्ययसयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबधनत्वादशुभकर्महेतु रतएव च मलिन: स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना
यनिर्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं अशीयस्सक्रिरियावादयसयस्सि अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूह कृत्वा स्वसमय. स्थापयत
इतियोग' एव शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्तारविना क्रियासम्भवतीति ता आत्मसमवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिन: ते पुन
रामाद्यस्तिचप्रतिपत्तिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवबन्धसम्वरनिर्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यान्नवपदार्थान् विरचय्य
परिपाट्या जीवपदार्थस्याव. स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यव. कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदा: पञ्च न्यसनीया: पुन रित्थ वि
कल्पा: कर्त्तव्या अस्तिजीव: स्वतोनित्य: कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थाय विद्यते खल्वात्मास्वेतरूपेण नित्यश्च कालवादिन: उक्तेनैवाभिलापेन द्वितीं

असीअस्सकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए अण्णाणियवाईण बत्तीसाए वेणइय

नी थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनी एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना
यें विषे अयथार्थत्व बोध तेहथको ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनी एहवोछे । कुत्सितशास्त्र श्रवणथको सदेह ऊपनोछे । तथा सहज
स्वभावनी बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथको सशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षीत श्रमण साधुछे तेहने एहवो कहे । पापनो करणहार मइलो जे म

योविकल्प ईश्वरकारिणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एव स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इ
त्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चैते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्वेवमेव प्रतिप
द विंशतिविकल्पाना मतोविंशति र्नवगुणा शतमशीत्युत्तरक्रियावादिनामिति चउरासीए अकिरियवाईणंति एतेषांच स्वरूप यथा नद्यादिषु तथावाच्यं नवर
मेतद्व्याख्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्था स्थाप्यते तदधः स्वतः परतश्चेत पदद्वय तदधः कालादीनांषष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत
इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशीति र्भवन्ति सत्तद्वोएअन्नाणियवाईणति एतेपि तथैव नवर जीवादी नवपदार्था नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तस
दादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्व मसत्व सदसत्व मवाच्यत्व सदवाच्यत्व मसद्वाच्यत्व सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्व मित्येकोविकल्पः एवमस
त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येव सप्तषष्टिरिति तथावत्तीसाएवेणइयवाईणति एतेचैव सुरनृपतिज्ञातियति
स्थविराधममातृपितृणाम्प्रत्येक कायवाक्मनोदानैश्चतुर्द्धा विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तोद्वात्रिंशदिति एव चैतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणा मौलने त्रीणि त्रिषष्ट्य
धिकानि अन्यदृष्टिशतानि भवत्यत उच्यते तिण्हमित्यादि वूहंकिच्चत्ति प्रतिक्षेप कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएव सूत्रकृतेन विधीयते अत स्त
त्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिःप्रकारै रित्यर्थः दिट्ठतवयणनिस्सारति स्याद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थे पापकरे मलिन मने विशोधनार्थ अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहनो व्यूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया
पद आगलि सगले लेवो कर्ताविना क्रिया पण्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा द्धेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्य परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तो प्रकटयन्तो
तथा विविधयासौ सत्यदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वाना विस्तरप्रतिपादन विविधविस्तारानुगमः तथा परमस
द्भावो त्यतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थ स्तावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टो विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टो मोक्षपहोयारगत्ति मोक्षपथावतारको
सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तका वित्यर्थः उदारत्ति उदारो सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्ति
कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतम तदेवाधकार अज्ञानतमोधकारस्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्वितिगम्यते दीवभूयत्ति प्रकाश

वाईणं तिरहतेसठाणं ञ्णदिठियसयाणं दूढकिच्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिस्सारंसुठुदरिसय
ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिठा मोक्खपहोयारगाउदारा ञ्णाणतमंधकारदुग्गेसुदीवभूञ्ञा

एतले नास्तिकमती ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्मानेअजाणपणो ते श्रेय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपखी सङ्घनोविनय
करिवोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । त्रिषष्टेतेह प्रधिक अन्यदृष्टि मिथ्यादृष्टिना शत सईकडा तेहनोच्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम
तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टातवचन तेणेकरी परमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापें । सुष्ठुभलो आदरिवापणे दरिसयति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प
दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितवनो विस्तार प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यतवस्तु
नोसत्यपणे तेहोजदिगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यकदर्शननेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

कारित्वा दीपोपमौ सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उन्नतारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षण यद्गृहाणामुत्तम गृहोत्तम वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकपत्ति निक्षोभौ वादिना क्षोभयितुमशक्यत्वात् नि.प्रकपौ स्वरूपतोपौषद्व्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूत्रंचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिज्जत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सेणंअंगठयाए दोच्चे अंगे दोसुयक्खधा तेवीसअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइ पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

सूत्रार्थदोषरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहीज तमअधकार तेणेकरीदुर्ग्रह दुरधिगम दुःखसाध्य जेसच्चमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवाभूत प्रकाशकारी छे अज्ञानाधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मदिर उत्तम प्रधानछे तेहने चाढिवाने अर्थे सोपान पाउडीया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निक्षोभ चालिवाअशक्य निष्कप थोडोईकोईएक पाडीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सूयगडाग सूत्रना परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीद्वय मतांतरते प्रतिपत्ति सख्यातावेढा छदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछद सख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अगार्थपणे

सग्रहणिवृत्तिचूर्णिपजिकादिरूपइति सूत्रार्थी शेषकल्प यावत् सेत्तसूयगडेति नवरंत्रयस्त्रिंशदुद्देशनकाला: चउतियचउरोदोदो एक्कारसचेवहुतिएक्कसरा स
त्तेवमहज्झयणा एगसरावीयसुयखधे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकितठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थान तिष्टत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया
जीवादय इतिस्थान तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवा: स्थाप्यते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनाये ति हृदय शेष प्रायोनिगदसिद्धमेव नवर

जिणपस्सत्ताजावा आघविज्जति पस्सविज्जति परूविज्जति निदंसिज्जति उवदसिज्जंति सेणंणाए एवंवि
स्साए एवचरणकरण परूवणया आघविज्जति परूविज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति सेत्तसूअगडे ॥ २
सेकितठाणे ठाणेणससमयाठाविज्जति परसमयाठाविज्जतिससमयपरसमयाठाविज्जतिजीवाठाविज्जति अजी

अगलक्षण वस्तुपणे। बीजे अगे बेश्रुतस्कध तेवीसअध्ययन तेवीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेवीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश। ३६ सहस्र
पद सूत्रार्थ नो समाप्ति जिहांते पद पद परिमाणे कह्यो। सख्याता अक्षर तिमज पूर्वनो परे परित्ता। अनता नही। त्रस बेइन्द्रियादिक अनता स्थाव
र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शाखता छे एह सूयगडागने विषे एहवा भाव कह्या। तेकेहवा पर्यायार्थपणे कृताकीधा निबद्धा सूत्रार्थ परे गूंथ्या। नि
काचिता तेहने उदाहरणे करी प्रतिष्ठा जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। भाव पदार्थ आख्यायते कहियेछे। तेमज पूर्वनी परेजाणीवा। निर्देशिये उपदेशि
ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवो छे। एव एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता घणोजाण होय। एम चरण ते श्रमणव्रत करण ते पिडविशुद्धा
दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्देशिये उपदेशिये ते सूयगडाग बीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्यूं ते ठाणांग। जीवादिकपदार्थ

ठाणेण इत्यस्य पुनरुच्चारण सामान्येनैव पूर्वोक्तस्य स्थापनाय विशेषप्रतिपादनायच वाक्यातरमितिज्ञापनार्थं तत्र द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवत्ति प्रथमावद्वयच नलोपा द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवा. पदार्थाना जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इति क्रम: तत्र द्रव्य द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुण: स्वभावो यथोपयोगस्वभावोजीव. क्षेत्रयथा सख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालोयथा अनाद्यपर्यवसित: पर्यवा. कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाइत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेतियोग: सर्वत्र सलिलाय गङ्गाद्यामहानद्य. समुद्रालवणादय सूरा: आदित्या भवनान्यसुरादीना विमानानि चन्द्रादीनां आकारा: सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्य' सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधय चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्पादयो नव पुरिसजायत्ति पुरुषप्रकारा उन्नतप्रणतादिभेदा. पाठांतरेण पुन्नजोयत्ति उपलक्षणत्वा त्युष्यादिनक्षत्राणा चन्द्रेणसह पश्चिमाग्रिमोभयप्रमर्द्दकादियोगा: स्व

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अलोगा लोगालोगावा ठाविज्जंति ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपयत्थाणं सेलसलिलायसमुद्दसूरभवणविमाणआगराणदीउणिहीउपुरिसजायसरायगोत्तायजोइसंचाले एक्कविहवत्तव्व

जिहातिष्ठे रहे तेठाणाग। स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणो स्थापिये। जीहा जीवाजीव विहूं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक विहस्थापिये। ठाणांगे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवादिक पदार्थना ठाणागे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थ पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य के गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असख्य प्रदेशावगाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक। तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये। शैलहिमवतादिक

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ ३ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसौ समवायः सूत्रेतु प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्त समवायन समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तद्धेतुश्च ग्रन्थोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकेन तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यतानां वाएगत्थाणंति एकेचतेअर्थाश्चेत्येकार्था स्तेषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न्न सर्वेषां

एकराज्ञणंतागमा ज्ञणंतापज्जवा परित्तातसा ज्ञणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ताभा वाज्ञाघविज्जति पन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंविन्नाए एवंचरणकरणपरू वणयाज्ञाघविज्जति सेत्तठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जति परसमयासूइज्जं

वादीद्वयमतातरप्रतिपति । सख्याता वेढा छंदविशेष । संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद । सख्यातो सग्रहणी । ते अगार्थपणे बीजेअंग एक श्रुतस्कधना दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर । बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणें कह्या संख्याता अचर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनतानही त्रस बेइन्द्रियादिक अनतास्थावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी साश्वताछे । पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणें गूंथ्या । उदाहरणें करी प्रतिष्ठा । वीतरागे कह्या भाव पदार्थ कहिये छे । नामादिकभेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये । सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये । तेठाणाग एहवोछे । एहभणीने जाण एम घणोजाण होय । एम चरण साधुव्रतरूप करण पिडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहीजाय तेठाणाग ॥ ३ ॥ अथ स्यूं तेसमवाय । सम्यकप्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे । एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी । एकछे प्रथम जेहने एहवावे

सेन संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थान प्रत्यङ्गञ्च विविधाभिधेयाभिधायकलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइत्ति आख्यायते अथसमाचाराभिधानानन्तर तत्र यदुक्तं त दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा द्वेकेन्द्रियादिभेदेन पचप्रकारा जीवाः पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाअजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेशतआह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदोपचारा न्नारका स्ततश्च नारकतिर्यग्मनुजसुरगणानां स म्बन्धिन आहारादय स्तत्र आहारओज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा आ वाससख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिर्लक्षाणीत्यादिकां आयतप्रमाणमावासानामेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

णं समायारे आहिज्जतितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवण्णियावित्थरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाणउववायचवणउग्गहणोवहिवेय

पदार्थ वर्णव्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणिप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थ वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण सबधीना आहार आभोगिक अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदें करी अनेक प्रकार। तथा उच्छासोच्छास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम बिष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। चवे अवगाहणा शरीरनोप्रमाण अवधि अंगुलने अ

यते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुल्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणतिव्याख्यायाव्याख्यायां वा ससमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्या ख्यातत्वा दिहकथ्यानि वियाहेणति व्याख्यामित्यादि नानाविधै. सुरैः नरेन्द्रैः राजऋषिभिश्च विविहससइयत्ति विविधसंशयवद्भि. पृष्टानि यानितानि तथा तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्टानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् श्रुतार्था व्याख्यायन्तइति पूर्वापरेणवाक्यसम्बन्धः पुनः कि

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयावि आहिज्जति परसमयावि आहिज्जति ससमय परसमयावि आ हिज्जति जीवाविआहिज्जति अजीवाविआहिज्जति जीवाजीवाविआहिज्जंति लोगेविआहिज्जई अलो गेविआहिज्जई लोगालोगेविआहिज्जई वियाहेण नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिविविहसंसइअपुच्छियाणं जिणाणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव पदेसपरिणाम जहत्थिभावअणुगमनिक्खेवणयप्प

स्वमत परमत विहूं कहियेछे । जीव कहियेछे अजीव कहिये छे जीवा जीव विहु कहियेछे । लोक कहियेछे अलोक कहियेछे लोकालोक विहूं कहियेछे ए णी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेंद्र राजऋषि तेणे विविध प्रकारे संशय पूछ्याछे । ३६ सहस्र प्रश्न पूछ्याछे । तेहने विषे जिनवीतरागी म हावीर स्वामीये विस्तारे करी भाखितछे । जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्रआकाशादिक काल समयादिक पर्यव स्वर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणें प्रकारे अस्तिभाव छताभा व अनुगम सहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक मुनिगुण अति सूक्ष्म उपक्र

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण वित्थरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः पुनःकिंभूतानां दव्वेत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावानुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमै र्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितोयै र्व्याकरणै स्तानितथा तेषा तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाश कालः समयादिः पर्यवाः स्वपरभेदभिन्नाधर्माः अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवाः प्रदेशा निरंशावयवाः परिणामा अवस्थातोवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्व सत्ता यथास्तिभाव. अनुगमः संहितादिव्याख्यानप्रकाररूप उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वारकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावै र्वस्तुनोन्यासः नयप्रमाण नया नैगमादय' सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेएव तावेव वा प्रमाण वस्तुतत्वपरिच्छेदन नयप्रमाण तथासुनिपुण' सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुष्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि र्विविधप्रकारता चैषा भेद भणनत एवोपदर्शितेति पुनःकिंभूताना व्याकरणाना लोकालोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा ससारसमुद्ररुदरुत्तरणसमत्थाणति ससारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थ. अतएव सुरपतिसम्पूजिताना प्रच्छकनिर्नायकपूजनात् सूक्तत्वेन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहिययाभिणंदियाणति

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारगगहपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरण सम त्थाण सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठ्ठदीवभूय ईहामति

म आनु पूर्व्यादि अनेकप्रकारे प्रगट पणें प्रकाश्याछे। बली प्रश्न केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने विषे। बली केहवा ससार चतुर्गतिकतक्षण समुद्र रुद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे। बली केहवा सुरपति इद्र तेणे संपूजितछे। भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि

भव्यजनाना भव्यप्राणिना प्रजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदये चित्तैरभिनन्दिताना मनुमोदिताना मितिविग्रहः तथा तमोरज
सो अज्ञानपातके विध्वसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वस तच्च तद्ज्ञानञ्च तमोरजोविध्वसज्ञान तेन सुष्टुदृष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव
तानिच तानि दोपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वसज्ञानसुदृष्टदीपभूते हामतिबुद्धिवर्द्धनाना न्तत्र ईहा वितर्को
मतिरवायो निश्चयइत्यर्थं बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वसनानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुदृष्टदीपभूतानामितिच तथा छत्तीस
सहस्रमणूणयाणति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकरोऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्ना
नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषादर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थ. अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थ' कइत्याह
सुयत्थवहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्था श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थ श्रुतावा कर्षिता जिनसकाशेगरधरेण ये अर्था स्तेश्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति
सूत्र अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रह श्रुतार्थाना वा बहुविधा. प्रकारा इतिविग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायत इत्याह शिष्या

बुद्धिवड्ढमाणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था गुण

नदित अनुमोद्याछे । वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वसक नाशक छे रूडोपरे निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे
ईहा वितर्क मतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहु प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार ऊणानही सपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थ
का सूत्रार्थपणे शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्राप्त्यादिक लक्षण हाथ मरीखो प्रधानहाथ । भगवती सूत्रना गणित वाचना । सख्याता अनुयोग

णां हितमनर्थप्रतिघातार्थप्राप्तिरूप तदेवार्थः प्रार्थमानत्वा तस्य तस्मै इति किमुक्तमेव प्रतपाह गुणवत्ता गुणवत्ता गुणवत्ता प्रधा नावयवी येषाते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनासूत्रसिद्ध नवरं शतमिद्धाध्ययनस्य तथा चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया दिगु

हत्था वियाहस्सणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुयोगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठ्ठयाएपंचमे अंगे एगेसुयखंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउ द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसंवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता संखेज्जाइं अक्खराइं अणंतागमा अणंतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइ या जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जतिपण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति सेणंणाए एवंवि

धार उपक्रमादिक । संख्याती प्रतिपत्ती । समयातावेढाश्दविशेष । संख्याताश्लोक अनुष्टुपादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अंगार्थपणे पांचमेअंगे १ श्रुतस्कंध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ छत्तीस हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें वेणुपाकीजे तो दीसा छ ८८ हजार पदथाय । ते इहा नहीवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसेंद्रियादिक । अनन्तास्थावर वनस्पती द्रव्यार्थ करी आश्रताछे । पर्यायार्थ पणे कोधाछे । सूत्रार्थपणें गुंथ्या निश्चित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठा । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि क भेदें करीप्ररूपियेछे । शब्दभावे उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विषे आश्रता कोधा आश्रतादिक पदनोव्याख्या आचारांगाधिकारे कीधीछे जिहां

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मविनयकरजिननाथमवधिनि शेषप्रव चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणमि पवरे किंभूताना सयमप्रतिज्ञा सयमाभ्युपगमः सेव दुरधिगम्यत्वात् कात रनरक्षोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपाताल तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा देषाते तथा पाठांतरेण सयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु र्बलाये ते तथा तेषा तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिव्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोअवश्यकरण न्तपोनियमित तप' सच तपउपधानचाऽ

हाणाइं परियागा सलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहि लाभो अंतकिरियाउय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयणिस्सहयणिसिठाणं घो

ग। प्रव्रज्यादीक्षा। सूत्रनो मेलवो। तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो। पर्याय दीक्षानो काल। सलेखणानो करिवो। भात पाणीनो पचखवो। पादपोपगमन छेदीयकोद्वचशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कस्यापछे हलोचाले नही। देवलोकनो जाइवो। उत्तम कुलें अवतार। वली बोधिलाभ धर्मनो प्राप्ति। अंतक्रिया ससारना अतनो करिवो। एह सर्व वस्तु ज्ञाताविषे कहियेछे। जिहा लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषें प्रव्रजित यती नो विनयनो करिवो तिहांलगे। जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषें सयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो। धृति चित्तनो स्वस्थपणो मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर हुयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

नियंत्रितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुर्धरभरत्ति श्रमकारणत्वा दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि
भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नकाःपराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाणन्ति निःसहा नितरामशक्तास्तएव निःसहका निसृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ
पधानरणदुर्धरभरभग्नकनिः सहकनिसृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादी दीर्घत्व मवसेय
तथा घोरपरीषहैः पराजिता श्चासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव
सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी
षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहतः प्ररुद्धरुद्धाः अतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषा सहप्ररुद्धसिद्धालय मा
र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतन्त्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू
र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेषा महेच्छाःकस्यांचिदवस्थायां या चावस्थातरे तुच्छाशा तयो र्वशः पारतंत्र्य तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे सयम मार्गें थाकाछे बली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम
र्थछे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो
षे करी वसथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छाशावशदोषमूर्च्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रलजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणै. शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदत्रयस्यचकर्मधारयो ऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह ससारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवय हणानि तेषां ये विविधाः परपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरपरप्रपचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किभूताना जितंपरीषहकषायसैन्य यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिका' स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽतस्तेषा जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः गुरुश्चात्तीचारविमुक्तो यः सिद्धालयय सिद्धिमार्गं स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पधारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्कदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

छे। एहवा भाव ज्ञाताने विषे कह्याछे। ससारनेविषें अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनी जे अनेक प्रकारनी परपरा सतति तेहना विस्तारने वि षे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहियेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा सयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःखस्य सुखतासम्पादनानि अथवा बोधनमामत्रण तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधना नुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि सयमाराधनाया गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वाक्यान्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्य यांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानासम्बन्धिनीति भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः सयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्नाः पुनः परिपालितसयमाश्च सुरलोक इत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वत सदाभाविन शिवमबाधकं सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थ' एतेचोक्तलक्षणा अन्येच एवमादय आदि

णुसधीरकरणकारणाणि बोधणञ्चणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिठते पञ्चयसोऊणलोगमुणिणो जह ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसजमाय सुरलोगपडिनियत्ता हवेत्ति जहसासयं सिवं सव्वदु

करिवाने अर्थे जेंकारण उदाहरण ज्ञातानेविषे कह्याछे। जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गथकी भ्रष्ट तेहने मार्ग थापिवो तथा शिक्षा देवो। गुणवली दोषनो देखाडवो। तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टांत सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रह्या। तेज्ञाताने विषे कह्याछे। आराध्योछे सयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाम्या वली देवलोक थो उपराठा आवे वली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण। इत्यादिक पूर्वे कह्याते अथवा

भव: शेषाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या आख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकायां पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसञ्जात इगवीसकोडिसय लक्खापण्णासमेवबोधव्वा २१५००००० एवठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाणवग्गा तत्थणएगमेगाएधम्मकहाए पचपचंअक्खाइयासयाइ एगमेगाए अक्खाइयाएपचपंचउवक्खाइयासयाइ एगमेगाएउवक्खाइयाएपचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइति एवमेतानि सम्पिण्डितानि किसञ्जात पणवीसकोडिसय २५०००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनाइयसबद्धा अक्खाइयमाइयातेण ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिफुड इमाउरासीउवेगलाणतु पुणरुत्तवज्जियाण पमाणमेण

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थण एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

कहिवा । तिहा एकेक आख्यायिकनेविषें पाच पांच सो उपाख्यायिक छे । तिहा वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपाच आख्यायिक उपाख्यायिकना सेकडाछे । तिहा आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां । इगवीसंकोडिसय लक्खापन्नासमेवबोधव्वा । २१५००००० एव ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा । दश धम्मकहाणवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ एगमेगाएअक्खाइया ए पच पंच उवक्खाइयासयाइ एगमेगाए उवक्खाइआए पच पच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति । एसर्व एकठाकीधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोटि थई ते मांहिथी पाछलो आंक एकवीस किरोड पचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे २ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे । एव मेव सपूर्वा

विणिद्दिट्ठ ॥ २ ॥ सोधितेचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्त भवति अड्ढाओ अक्खाइयाकोडीओभवतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्सख्याभवतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा सख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलक्षाणि षट्सप्ततिसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण सख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्तीत्येव सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तद्व्रतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

असयाइं एवामेवसपुव्वावरेणं अड्ढुठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीस उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण पण्णत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जति सेत्त णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार कीजे। पछे पाछला आके आगलोआंक सोधिये तिवारे साढे ३ कोटिकथानी थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये कही। ज्ञाताने विषे उगुणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगुणत्रीस समुद्देशनकाल। सख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणे कह्या। ते कहेछे। वली सख्याता अक्षर यावत् शब्दे करी सख्याता वेढा सख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छठो अग ॥ ६ ॥ स्यूंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवासः ततोद्वन्द्वेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्म कहाउ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम बनखडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनी विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिबो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बारे भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। सलेखणा तपें करी आत्माने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

व्याख्यायन्ते पूर्वोक्तमेव अतोविशेषत् आह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्त्वस्य विशुद्धता स्थिरत्व सम्यक्त्वशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादित. खण्डनानि स्थितिविशेषा श्चोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिग्रहग्रहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गश्चोपसर्गाभावश्चेत्यर्थः तपा

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाउ आघविज्जति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

अने बलीसुकुले उपजवो। बली बोधनी प्राप्ति। अतक्रिया करिबो। एहसर्व उपासक दशामाहि कहियेछे। उपाशक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि सख्या विशेष। परिषदा परिवारनो विस्तार। भगवत महावीरने पासे धर्मनो साभलिवो। धर्मनी प्राप्ति। धर्मनो आदरिवो। सम्यक्त्वनी विशुद्धता निर्मलता। धर्मने विषे स्थिरपणो। मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार वध बंधादिक। स्थिति विशेष। श्रावकपणांना कालनी मर्यादा। सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो ग्रहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो। तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

सिच चित्राणि शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमाः पश्चात्कालभाविन्यः प्रकारस्वमङ्गलपरिहारार्थः मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्यः आत्मशरीर
स्य जीवस्यच सलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मन. सलेखनाः ततः पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासां ज्ञोसणति जोषणाः सेवनाः करणा
नीत्यर्थः ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणाभि रात्मान यथाच भावयित्वावञ्चनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उ
पपन्ना भवेतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुंडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्या
न्यनुपमानि क्रमेण भुक्तोत्तमानि ततः आयुष्कक्षयेण च्युताः सन्तो यथा जिनमते बोधि लब्धा इतिविशेषः यथाच संयमोत्तम प्रधान संयमं तमोरजओघ

मण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा झोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि
भत्ताणि अणसणाए च्छेइत्ता उववन्ना कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु
सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइ तओ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धूणय सं

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधोपवास छेहले काले मरणातिक सलेखना मरणरूप अ
तकाले होय एहवी सलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवो। तेहनो जोषणी तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भाविये जिमघणे प्रकारे अनसने
करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता सबंधी प्रधान विमान प्रधान पुंडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषे
कथान जाय एहवा अनुपम सुखप्रतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थकी आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिम मतने विषें बोधि श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्म्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षय अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्म्मक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशाख्याख्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये चेत्यादि प्राग्वत्नवर सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणति किलैकादशलक्षाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकितमित्यादि अथ

जमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का वेंति जहअक्खयसव्वदुक्खमोक्खं एते अन्नेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाअणुजोगदारा जाव सखेज्जाउ सगहणीउ सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयक्खंधे दसअ ज्झयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइ पयग्गेणं प० सखेज्जाइं अक्खरा इं जाव एव चरण करणपरूवणा आघविज्जंति सेत्त उवासगदसाउ ॥ ७ ॥ सेकिंतं अंतग

होय बली उत्तम सयम आराधीने अज्ञानरूप अधकार तत्त्वचण राजा तेहथी मूंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुः खक्षय लक्षण मोक्षपावे। इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषें कहियेछे। परित्ता सख्याती वाचना। बली सख्याता अनुयोगद्वार। यावत् सख्याती सग्रहणी लगे जाणिवो। तेह अगार्थपणे सातमो अंग तेहने विषें १ श्रुतस्कध आनन्दादिक १० श्रावकना १० अध्ययन। दश उद्देशनकाल बली १० स मुद्देशन काल। सख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणें कह्या। सख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वो क्त पाठ कहिवो। ते उपासक दशा माहि कहिये ते उपासकदशा सातमो अग ॥ ७ ॥ स्यूते अतगडदशा ससारनो अत कहिये नाश की

का स्ता अन्तकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्म्मण स्तत्फलत्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थंकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्सख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि कण्ठ्य नवर नगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वाद श भिक्षुप्रतिमा मासिक्यादयो बहुविधाः तथा क्षमा मार्दवं आर्जवच शौचञ्च सत्यसहित तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षण सप्तदशविधञ्च संयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूप आकिंचणियत्ति आकिंचन्य तप स्त्यागइति आगमोक्त दान समितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

दसाउ अंतगडदसासुणं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणचेइयवणरायाअम्मापियसमोसरणधम्मायरियधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ वक्खाविहाउ खमाअज्जवं मद्दवंचसोअंच सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचबंभ अाकिंचिणया तवो किरियाउ समि

धो जेणे ते अंतकृत् तेहनी दशा जे सख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अतकृद्दशा अंतकृद्दशाने विषे ससार अंतकारी जीवना नगर उ द्यान चैत्य वनखड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेछे। इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रव्रज्यादी क्षा लीधी। श्रुतनो भणिवो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे। क्षमा क्रोधनोजीतवो। आर्जव मायानो छाडिवो। मार्दव माननो त्याग। शौच कर्ममलनोछाडिवो। सत्यकरी सहित। सतरह भेदे सजम जाणिवो। उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव। आकिचनता निद्रव्यपणो। तप

भयो ईयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्थज्झाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च सयमोत्तम सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे र्लाभः पर्यायः प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावाञ्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पालितो मुनिभिः पादपोपगमनञ्च पादपोपगमाभिधानमनशन प्रतिपन्नो योमुनि र्यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनिनाहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेषः तमोरजओघविप्रमुक्तएवच सर्वेपि क्षेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाण दोण्हपि लक्खणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरीसहाण चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिपावोवगउय जहि जत्तियाणिभत्ताणि छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणतरचपत्ता एए अन्नेय एव

१२ भेदे। क्रिया अनुष्ठान। समितिगुप्ति। तिमज अप्रमादना योग। स्वाध्याय सिद्धात नू भणवो। ध्यान धर्म ध्यानादि सुक्लर्त्त लगे चित्तनूं एकाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान। उत्तम एह बिहुंनालक्षण अतगडदशा माहि कहिये छे। सयमप्रते जेह पाम्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय। पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरें जेतला जेतला वर्ष प्रमाणें सयम पाल्यो होय। पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अतकृत् ससारना अंतकारक मुनिवर तम

प्राग्वत् नवरं दश अज्झयणत्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेहपठ्यते सत्तवग्गत्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वेष्यष्टव र्गानन्द्यामपि तथापठितत्वा त्तद्वृत्तिश्चेय अट्ठवग्गत्ति अत्रवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणित अट्ठ उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो विंशति र्लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्यवित्थरेणं परूवेई अंतगडदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुजोगदारा जावसंखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगठयाएअट्ठमेअंगेएगेसुयखंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे ज्जाइ पयसहस्साइपयग्गेण पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अधकार अज्ञानरूप रजथी मूंकाणी अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाम्यो। एह पूर्वे कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहा अंतगडदशा मांहि कहिये छे। प्ररूपियेछे। सख्याता वाचना। संख्याता अनुयोगद्वार। जिहालगे सख्याती संग्रहणी होय तिहालगे जाणिवो। अगार्थपणे आठमें अंगे एक श्रुतस्क ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह। दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल। सख्याता पदना सत सहस्र एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कह्या। सख्याता अक्षर इहां थीमांडी चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परें पाठ कहि वो। इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अतकृद्दशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ अणुत्तरोववाई नथी उत्तर कहिये आगलि जग्या जेहने तेहना

संसारे भ्रमस्य तथाविधस्या भावादुपपातो येषान्ते तथा तएवानुत्तरोपपातिकाः तद्वक्तव्यतागतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्रा
चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तत्रानुत्तरोपपातिकानामिति साधूना नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णकोक्तानि यथातथा एतेषा
मेवच प्रपञ्च रचयन्नाह अणुत्तरोपपातिकदशासु तीर्थंकरसमवसरणानि किंभूतानि परममङ्गल्यजगद्धितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहविमलसुरभि

ऽदसाउ ॥ ८ ॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइयदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं न
गराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोग
परलोअइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागो पडिमाउ सलेहणाउ भ
त्तपाणपच्चक्खाणाइं पाउवगमणाइ अणुत्तरोववाउ सुकुलपच्चायापुणोबोहिलाहोअंतकिरियाउ आघविज्जं
ति अणुत्तरोववाइयदसासुणं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसायबहुविसेसा जिण

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा। तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहना नगर उद्यान चैत्य यक्षायतन बनखंड राजा
माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो। तप १२ भेद उपधान
बली भिक्षुप्रतिमा सलेखना तेकिसी भातपाणीना पच्चक्खाण पादपोप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो बली सुकुल ने विषें अवतरिवो। बली बोधिलाभ
जिन धर्मनी प्राप्ति। अतक्रिया एतलो वस्तु एहनें विषें कहिये छे। वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण कहेवो छे। परम मंगलीकपणें जगतने हित

त्यादय चतुस्त्रिंशदधिकतरावा तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किंभूताना मतआह श्रमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां श्रमणोत्तमानामित्यर्थः तथास्थिर यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहवृन्दमेव रिपुबल म्यरचक्र तत्प्रमर्दनाना तथा दववह्नावाग्निरिव दीप्तान्युज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा रित्रज्ञानसम्यक्तानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये क्षमादयोगुणा स्तैः सयुतानां क्वचिद्गुणध्वजाना मितिपाठः तथा अनगाराश्च ते महर्षयश्चेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः श्लाघा आख्यायत इतियोगः पुनः किंभूताना जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्या त्यादिभि र्वरतपसश्च तेचते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चे त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचाप्ररे यथा च जगवित भगवत इत्यत्र जिनस्यशा सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणां रत्नोज्वललक्षयोजनमानविमानरचन सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायन मणिखण्डमण्डि

सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेन्नरिउबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म त्तसारविविहप्पगारपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवण्णउ उत्तमवरतववित्थिण्णा

कारी छे। जिनना अतिशय देहविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्रीस छे जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा छे श्रमण समूह मांहि प्रधान वर गन्ध हाथी ने समानछे। ते थिर जस निश्चलयशछे। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्दकछे। तपें करीदीप्त तेजवंत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणे करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत लक्षण छे ध्वजा जेहने तेहनो। अनगार एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे अनगार तेहना गुण तेहनो वर्णक श्लाघा नौमे अंगे कहिये। वली केहवाछे। जात्यादिके करी उत्तम प्रधान तपनाधणी विशिष्ट ज्ञान योगे करी यु

न्ति धर्ममुदार किंस्वरूप मतआह संयम न्तपश्चापि किम्भूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अणुचरियत्ति अनुचर्यआसेव्य संयम न्तपश्चे तिवर्त्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा स्तथा जिणवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचन माचारादिअनुगतं सम्बद्ध नार्हैवितर्दमित्यर्थ' महित म्पूजितमधिक म्वा भाषित वै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुगत्यानुकूल्येन सुष्टुभाषित वै स्ते जिनवचनानुगतिसुभाषिताः तथा जिणवरा णहियएणमणुणेतत्ति इतिषष्ठीद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि च्छेदयित्वा लब्धाच स माधि मुत्तम ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तर तत्थत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय सुख तथाख्यायन्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्युताः क्रमेण करिष्यन्ति सयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशाखितिप्रकृतमे

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय भासित्ता जिणवराण हिययेण मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्त मा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्ख तओयचुआकमेण काहितिसजया जहायअतकिरियं

प्रधान संयम तप घणे प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेवीने आराध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणे जिनवचन आचा रागादिने अनुगतसमिलित महित पूजित भाषित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेकरी अनुनीयध्याईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने समा धि पामीने उत्तम ध्यानयुक्त थको अपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखभोगीने चव्या अनुत्तर विमानथी अनुक्रमे करि

तथाङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मन्त्रविद्याः प्रश्ना याः पुनर्विधिनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभं कथयन्ति एताः अप्रश्नाः तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तद्भावं च प्रतीत्य या विद्याः शुभाशुभं कथयन्ति ताःप्रश्नाप्रश्ना विज्ञाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्तम्भस्तोभवशीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादयः नागसुपर्णैश्च सह भवनपतिविशेषै रुपलक्षणत्वा द्यक्षादिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्तात्विकाः सम्वादा' शुभाशुभगता' सलापाः आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयन्नाह पण्हावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धास्तैः करकण्डुादिसदृशै र्विविधार्थायकाभाषा गम्भीरेत्यर्थं स्तया भाषिता गदिताः स्वसमयपरसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासा किमादर्शाङ्गुष्टादीनां सम्बन्धिनीना अशानाम्विविधगुणमहार्थाः प्रश्नव्याकरणदशास्वाख्यायन्त

पसिणसयं अठुत्तरं अपसिणसयं अठुत्तरंपसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिंदिव्वासवाया आघविज्जति पण्हावागरणदसासुणं ससमय परसमय पन्नवय पत्तेअबुद्ध विविहत्थभासाभासियाणं अइसयगुण उवसमणाणप्पगार आयरियभासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहि विविह वित्थार भासियाणंच जगहि

आदिक मन्त्र विद्यानां पाठातरें अगुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपीथकी अदृष्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहेते अप्रश्नविद्या तेहना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय थभनी वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक। नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक सवाद शुभाशुभ सलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेछे। प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्रत्येक बुद्ध करकडुआदिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कह्या। अदृष्ट अगुष्ठादिक सबधी भाषाना विविध गुण कहिये। ते

पारप्रधानतया गुण म्विविधार्थं सम्वादलक्षण म्प्रकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यामन' प्रश्नविद्यादैवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका स्तासां पुनःकिम्भूतानां प्रश्नाना समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रश्नविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन माहात्म्येग नरगणमतौमनुजसमुदयबुद्धौविस्मयकार्य्यश्चमत्कारहेतवो याः प्रश्ना स्ताः सञ्जातद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्य स्तासां पुनः किम्भूतानां तासा मतिसयमतीतकालसमयेति अतिशयेन योतीतः कालः समयः स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थः दमः शम स्तत्प्रधान तीर्थकराणा दर्शनान्तरशा स्तृणा मुत्तमो यः स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थकरोत्तमस्य स्थितिकरण स्थापन आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शेखर कल्पः पुरुषविशेषः एवविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासां पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगम दुरवबोध गम्भी र सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह च दुःखाध्येय सूत्रबहुत्वाद्यत्तस्य सर्वेषां सर्वज्ञाना सम्मतमिष्टं सर्वसर्वज्ञसम्मत अथवा सर्वश्च तत्सर्वज्ञसम्मतश्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत म्भव

पाहाणगुणप्पगासियाण सम्भूयदुगुणप्पन्नावनरगणमइविम्हयंकराणं अइसयमईयकालदमसमतित्थकरुत्तम स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजणबोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा

सद्गुण तात्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानी अपेक्षायें घणोजे प्रभाव माहात्म्य तेणे करी मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजा वेछे। अतिशये करी अतीतकाल समय अत्यंत व्यवहित काले दम शम तेणे करी सहित तीर्थं करोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापिवो तेहना कारणछे। दुरभिगम दुःखे जाणिये। गभीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दुःखे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यक्ष प

घनतत्वमित्यर्थः तस्य अशुधजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पसक्खयपच्चयकारणंति प्रत्यक्षकेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधा
नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेद जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणैवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येव प्रतीतिः प्रत्यक्ष
कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्याः प्रत्यक्षताप्रत्ययकार्योवा तासा मत्यक्षकप्रत्ययकारीणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न
विद्याना सुपलक्षणत्वा दन्यासाञ्च यासा मष्टोत्तरशताद्यादोप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा
शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किम्भूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जतित्ति आख्यायन्ते शेषम्पूर्ववत् नवर यद्यपीहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवो
देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्ध मिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणति

णं पण्हाण बिविहगुणमहत्थाजिणवरप्पणीया आघविज्जति पण्हावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु
ओगद्दारा जावसंखेज्जाउ संगहणीउ सेणंअंगठयाएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली
संसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा जावचरणकरण

णें प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी
त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहिये छे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह
णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमे अंगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ९२

तानि च किल द्विनवति र्लक्षाणि षोडशच सहस्राणीति ॥ १० ॥ सेकितमित्यादि विपचनं विपाक. शुभाशुभकर्म्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादक श्रुत
म्विपाकश्रुत विवागसुएणमित्यादि कथ्य नवर फलविवागेत्ति फलरूपोविपाकः फलविपाकः तथानगरगमणाइति भगवतो गौतमस्य भिक्षार्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपरहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्क
डदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति सेसमासउ दुविहे पस्सत्ते तजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव
तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकितं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं उ
ज्जाणाइ चेइयाइ वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या। संख्याता अक्षर। अनता गमा। अनता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्धयादिक लगे
जाणिवो। इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमोअग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक श्रुत। विपाकजे शुभाशुभ कर्म
ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत। विपाक श्रुतने विषें शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येछे। ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो। तेकहेछे। दुख विपाक अने सुख विपाक। ते विहुमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा
हु कुमारादिकना दश सुख विपाक। अथ किशाते दुःखविपाक। दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर। उद्यान। चैत्य। बनखंड।
राजा माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। नगर गमन। भगवंत गौतम भिक्षार्थें नगरमांहि प्रवेश करे। ससारनो प्रबंध बिस्तार। दुः

नानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाएत्तियो ससङ्गता सपरिग्रह
ता तया सचितानां कर्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायाना सचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगती तिर्यग्योनीच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभि प्रवद्धाः ते तथा तेषा जी

संसारपबंधे दुहपरंपराउय आघविज्जति सेत्तंदुहविवागाणि सेकिंतसुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा
गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इह
लोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाउ सले
हणाउ भत्तपच्चक्खाणाइ पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाहो अंतकिरियाउ आ
घविज्जति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्कक्करणपरदारमेहुणससगयाए महतिव्वकसायइं

खनी श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ सू ते सुखविपाक। सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना। नगर। उद्यान। चैत्य।
वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। श्रुतनो भ
णवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। सलेखना। भात पाणीनो पच्चक्खाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजियो। तिहां थकी चवी
ने सुकुलेउपजियो। बली जिन धर्मनो प्राप्ति। अतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक वच

बाना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते इतिप्रक्रत तथाहि वधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरण तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्टस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्टानांच करयोश्च चरणयोश्च नखानांच यच्छेदन तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जन तप्तायः शलाकया नेत्रयोः स्रचण वा देहस्य चारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां बिदलवशादि मयाना मग्निः कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहन कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थः तथा गजचलनमलनम्फालन म्विदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादावुद्बध

दियप्पमायपावप्पन्नय असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगतिरिक्खजोणियबिविहविसणपरपरावहाणं मणुयत्तेवि आगयाणंजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवागाणरगतिरिक्खजोणियबिविहवसणविणासकन्नुठगुठ करचरणनहछेयण जिब्भछेअण अंजणकडग्गिदाह

न मुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन सगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इद्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थकी जपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी मेल्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दुःख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यच योनिने विषें अनेक प्रकार कष्टनी श्रेणी तेणे करी बधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि आव्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषें अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान ओठ अंगूठा हात पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषें घालवी। तथा कट बांसनी बेफाड तेह

न तथा मूलेन लतया लकुटेन यष्ट्याच भञ्जन गात्राणा तथा त्रपुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनैव तप्तेन तैलेनच कलकलन्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुम्भ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पन शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्पादजनन तथा स्थिरबन्धन निविडनियन्त्रण वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदन वर्त्तकर्त्तन त्वगुत्तोटनं प्रतिभयकर भयजनन तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्टितस्य तैलाभिषिक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्म्मधारयः ततश्च बधश्चप्रपणविना शश्चेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपन चेति द्वन्द्वः ततस्तानि आदि र्येषां दुःखाना तानिच तानि दारुणानि चेति कर्म्मधारयः कानीमानीत्याह दुःखानि किंभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेश्चाख्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्परानुबद्धा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कयापापकर्मवश्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

गयचलणमलणफालणउल्लंबणसूललयालउडलठिलंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलञ्झहिसिंचण कुंभिपागकपण थिरबंधणवेहवज्झकत्तण पतिभयकरपल्लीवणाइं दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुव

नी अग्नीयें करी बालिवो। तथा हाथीना पगने हेठें मर्दिवो। कोहाडें करी बेफाड करिवो। वृक्षशाखाने विषें ऊंचो बाधिवो। शूलें करी लतायें करी लाकडी लठी लाठीये करी गात्रनो भाजिवो। तथा तातो सीसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो। कुंभी भाजनमाहि पचाविवो। शीतल जलें करी शरीर छांटे तेहथकी जपनो कप। निगड बधन। भालादिके करी वींधवो। चामडानो त्रोडिवो। भयोत्पादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनो लगाडिवो। इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषें कहिये। अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

दुर्यस्मादर्थे नास्ति भवति मोक्षो वियोगः कर्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किंभूतेन धृतिचित्तसमाधानं तद्रूपा धणियत्ति अत्यर्थं बद्धा निःपीडिता कच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तथा तेन धृतिबलयुक्तेनेत्यर्थः शोधनमुपनयन तस्य कर्मविशेषस्य वाविति सम्भावना या होज्जा सम्यद्येत नान्यो मोक्षोपायो स्तीति भावः एत्तोयेत्यादि इत श्चानन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत इतिशेष. शील ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा सयमः प्राणातिपातविरति र्नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषा मुपधानं विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शीलसयमनियमगुणतपउपधानेषु केष्वित्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुष्ठुविहित मनुष्ठित येषाते सुविहिता स्तेषु भक्तादि दत्वा यथा बोधिलाभादि निवर्त्तयति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवक्षणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्प्रधान आश य चित्त तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकपाशयाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतित्ति त्रिषु कालेषु या मति र्बुद्धि र्यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

ठाणमुंचंति पावकम्मवल्लीयवेयइत्ता ऊणत्थिमोक्खो तवेणधिइधणियबद्धकच्छेण सोहणंतस्सवाविऊज्जा एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओग तिकालमइ

थका नमूकाये न छूट्या। पापकर्म बल्ली दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनछूटे। बिना भोगे निश्चयथी मोक्ष नहोय। सर्वथापि छूटिवो नथी। एम नही तो केम। तपेंकरी तथा धृति चित्तनो समाधान तेणे करी अत्यत बद्धकच्छ थईने शोधवो बेगलो थाईवो ते कर्मनो होय। इहा थकी बीजाश्रुत स्कध सुखविपाक ने विषें जे कहिये तेलिखेछे। शील संयम नियम श्रुत तपोपधान छे जेहने। एहवा सुविहित साधूने विषें दयाभावे करी सहित जे चित्त

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाशयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा
नानि प्रदाये तियोग' केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूरचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुखः शुभोवा नीसेसत्ति नि.श्रेयसः कल्याण
करत्वात् तीव्रः प्रकृष्टः परिणामो ऽध्यवसान यस्या सा तथा सा निश्चिता असंशया मति बुद्धि यंपाते हतसुखनि.श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतयः कि पय
च्छिज्जणति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा
दिदोषवर्जितानि ततः कि यथाच येनच प्रकारेण पारपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या जीवा इति गम्यते तृशब्दो भाषामात्रार्थं बोधिलाभं

विसुद्धनत्तपाणाइं पययमणसाहियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयत्थिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते
तिओ बोहिलाभंजहयपरित्तीकरेति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट अरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुकालने विषें विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देईने आदर पूरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु
खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति यशय रहित बुद्धि छे जेहनी तेह देईने तेह
भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषें दायक दान व्यापारनो अपेक्षाये शुद्ध छे सशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपरा ये
मोक्ष साधक लक्षणे निवर्तावे निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परिताकरे ससार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकतिर्यच
देवता एह चिहुंनो गतिने विषे जीवनो एहवो नजाइवो भमिवो विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे सचरण जिहां। अरति भय वि

यथाच परित्तीकुर्वंति क्षत्तानयन्ति संसारसागर मितियोगः जिभूत नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन परिभ्रमण मएव विपुलो विस्तीर्णः प रिवर्त्तो मत्स्यादीनां परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैला पर्वताः तै. सकटः सकीर्णो यः स तथा ततः कर्मधारयो ऽत स्त इहच विषादो दैन्यमात्र शोक स्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोंधकार महान्धकार यत्र स तथा अत स्त चिक्खिल्ल सुदुस्तारति चिक्खिल्ल कर्दम. ससारपक्षेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दुःखोत्तार्यो यः स तथात तथा जरामरणयोनय एव संमूर्छित महा मत्स्यमकराद्यनेकजलजतुजातिसमर्देन प्रविलोडित चक्रवालं जलपारिमाडिन्य यत्र स तथा तं तथा षोडश कषाया एवस्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रका ण्ड चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा त अनादिक मनवदग्र मनन्त संसारसागरमिम प्रलजमित्यर्थ. तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण निव

सेलसंकड्ढ अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तार जरमरणजोणिसंखुब्भियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरम्मिणं जहयणिबंधंति आउगसुरगणेसु जहयअणुब्भवंति सुरगणविमाण

पाद शोक मिथ्यात्वतत्रक्षण शैलपर्वतें करी सकीर्ण साकडोछे। वली केहवोछे। अज्ञान तेहीज तम अंधकार छे जिहा। विषय धन स्वजनादिक प्रति बध लक्षण चिक्खिल्लकर्दमतेणेंकरी सुदुस्तार अत्यर्थे उत्तारछे दोहिलोजेहनो। जरामरण योनि तेहिज सक्षुभित महामत्स्य ने जाइवें आइवें करी वि लोड्यो चक्रवाल जालनो मांडलो जिहां। तथा सोले कषाय अनतानुबध्यादिक भेदे क्रोध मान माया लोभ तत्रक्षण स्वापद मकरादिक प्रकाड अत्यर्थे रौद्रछे जिहा। वली केहवो छे। अनादि छे। तथा अनत छे। अतनथी एहवो ससार सागर इण कहता एहवो संसार समुद्र तरे जेह जिम सागरो

यः समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषा इह स्तः एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी य शुभविपाक उत्तमो येषा न्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्वितिगम्य इहचेय षष्ठ्यर्थे सप्तमो तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येक श्रुतस्कन्धयो रभिधेये सुखपापविपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव यौगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोगः केषा मशुभानांशुभानाचैव कर्मणा मथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयोः क्रमेणैवच भाषिताः उक्ता बहुविधा विपाकाः विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्थाः सम्वेगहेतवो भावाः अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा द्वोत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थ प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्य नवरं सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआवज्जविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेवियएवमाइयावज्जविहाविस्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषें कहिये। निरतर परंपराये घणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणे प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे सवेगकारणनाअर्थ सवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवमा दिक एणें अगे घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। विपाक श्रुतना परित्ता गणतीयें वाचना सूत्रार्थनो देवो संख्याता अनुयोग

कापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ - ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीना म्वादोदृष्टिवा
दः दृष्टीना वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिट्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा
ख्यायते सेसमासओपचविहेत्यादि सर्वमिद प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्ट किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा सखेज्जाअणुओगदारा जावसखेज्जाओ सगहणीओ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे
अगे वीसंअज्झयणा वीसउद्देसणकाला वीससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखे
ज्जाणिअक्खराणि अणतागमा अणतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति. सेत्तविवागसुए
॥ ११ ॥ सेकितंदिठिवाए दिठिवाएण सव्वभावपरूवणया आघविज्जतिसेसमासओ पंचविहे प० तं०

द्वार जाव सख्यात सग्रहणी तेह अगार्थपणे इग्यारमे अगे वीस अध्ययन दली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि
८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणें कह्या। सख्याता अक्षर। अनन्तागमा। अनन्तापर्याय। जाव चरण ते साधुना महाव्रत करण ते पिड विशुद्ध्या
दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये। तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अग ॥ ११ ॥ अथ स्युते दृष्टिवाद दृष्टिते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे जि
हा ते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयाटिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषें कहिये तेह पूर्व सक्षेप थकी पाच प्रकारे कह्या ते कहे छे। परिकर्म १ सूत्र २

गणितपरिकर्म्मवत् तच्च परिकर्म्मश्रुत सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्म्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदत स्तु त्र्यशीतिविध मातृकापदादि एतच्च सर्वं समूलोत्तरभेद सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्म्मणा षट् आदिमानि परिकर्म्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुजोगो चूलिया सेकिंतंपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे उगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहसेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकिंतंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगट्ठियपयाणि पादोठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिवद्ध एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे संसारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावद्धसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकितंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्यूंते परिकर्म। परिकर्म पूर्व साते भेदें कह्यो। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणतौ गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परिकर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनो गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ चुता चुत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थकी जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परि कर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्र्यासी भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिवद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ ससार प्रतिग्रह १२ नदावर्त्त १३ सिद्धावद्ध १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ स्यूंते मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्यो। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्म्मसु नयचिन्ता तत्र नैगमोदिविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः संग्रहंप्र
विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहार तस्मात्तु संग्रहो व्यवहारऋजुसूत्रशब्दाश्च यैकएवेत्येवं चत्वारो नया एते चतुर्भिर्नयैः षट्खसामयिकानि परिकर्म्माणि
चिन्त्यन्ते अतो भणित छचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मक इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी
वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः
उभयार्थिकः अतोभणित सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्म्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयाश्चिन्तयन्तीत्यर्थ सेतपरिकम्मत्ति निगमनं

**परिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते तंजहा ताइंचेव माउआपयाणि जावनंदावत्त मणु
स्सवत्तं सेतंमणुस्ससेणियापरिकम्मे अवसेसपरिकम्माइं पुठाइयाइ एक्कारसविहाइ पन्नत्ता इच्चेयाइ सत्त
परिकम्माइं ससमइयाइं सतआजीवियाइ छचउक्कणइयाइ सततेरासियाइं एवामेव सपुव्वावरेणं सत्तप**

र्थ पद ३ आगायपद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नदावर्त्त १३ मणुस्सबद्ध १
तेह मनुष्यश्रेणी परिकर्म। शेषयाकता परिकर्म पाच पुष्टादिक इग्यारह भेदें कह्या। इत्यादिक सात परिकर्म मांहि पहिला छ परिकर्म स्वसमयप्रतिबद्ध
जिनमतानुयायी सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणी परिकर्म लगे आजीविक गोशालमतानुयायी जाणिवा। धुरना छ परिकर्म चारनयें करी सहितछे संग्रह १
व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबद्धछे सात परिकर्म त्रिराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिराशिकना मतने विषे

सेकितसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नानि तथापि दृष्टानुसारतः किञ्चिल्लिख्यते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथ मुच्यते इच्चेइयाइ बावीससुत्ताइं छिन्नछेयनईयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्र च्छिन्न छेदेनेच्छति सच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकच्छेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं भवतीतिमक्खायाइं । सेत्तंपरिकम्माइं । सेकिंतं सुत्ताइं सुत्ताइं अठासीति भवंतीति मक्खायाइं तंजहा । उज्जगं परिणयापरिणय बहुभंगियं विप्पच्चइयं अणंतरं परपरसमाणं संजूहं भिन्नं अहच्चायं सो वत्थियं घटं णदावत्तं बहुलं पुठापुठं वियावत्तं एवंभूय दुआवत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वतोभद्दं पणु मं दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीससुत्ताइं छिन्नछेयणइयाइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्चेयाइं बावीससुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगली पाछली मिली सात परिकर्म होय भगवते कह्या । ते पहिलो भेद पूर्वनो परिकर्म नाम कह्यो अथस्यूंते सूत्र । पूर्वनो बीजोभेद सूत्र तेहना ८८ भेद होय । भगवंते कह्या तेकहेछे । ऋजुभग १ परिणता परिणत २ बहुभगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परपरसमान ६ सयूथ ७ भिन्न ८ यथात्याग ९ सौवस्तिक १० घट ११ नदावर्त्त १२ बहुल १३ पृष्टापृष्ट १४ वियावर्त्त १५ एवंभूत १६ द्विकावर्त्त १७ वर्त्तमानोत्पतक १८ समभिरूढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रहामत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेद्ये करी नय जिहा तेछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाट्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्किट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक म पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थः एतानि द्वाविंशति राजीविकगोशालकप्रवर्त्तितपाखण्डसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्र तत्र तिकनइयाइ ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चित्यन्तइत्यर्थ त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइ इत्यादि सूत्रं तत. चउक्कनइयाइ ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चित्यत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेण अट्ठासीयं सुत्ताइं भवतीति मक्खायाइ ।

सूत्रार्थ थको प्रत्येक छेदथको छेद्यो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनी परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु अगादिक २२ सूत्र नथी छेद्या छेदेकरी नय जिहा ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल मुक्किट्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनी परिपाटीयें पामीये । इच्चेइयारे एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिराशिक पाखडोना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुअग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह स्वसमय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगलो पाछलो मिलो २२ चोका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

णि भवन्ति सेतंसुत्ताइं ति निगमनवाक्यं सेकिं तंपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यन्मा तीर्थकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधराः पुनःश्रुतरचना विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थं पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वरचित पश्चादाचारादि नत्वेव यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिआयारोपढमो इत्यादि तत्काय मुच्यते तत्रस्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वक्षररचना प्रतीत्य भणित पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तत्र पूर्वगतं चतुर्दशविध प्रज्ञप्तं तद्यथा उत्पादेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्र च सर्वद्रव्याणा मर्यवाणा चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीयं द्वितीय तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणां चाग्र परिमाण वर्णयत इत्यग्रणीय तस्य पदपरिमाण षण्णवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीय तत्राप्यजीवानांजीवानाच सकर्मेतराणा वीर्य प्रोच्यत इति वीर्यप्रवाद तस्यापि सप्ततिः पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवाद चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेत्तंसुत्ताइं । सेकिंतं पुव्वगयं । पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

कह्यो । अथ स्यूते पूर्वनो त्रीजो भेद पूर्वगत। ते चौदह भेदें कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थ कर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाष्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादक भाव अगीकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाणे १ बीजो अग्रणीय तेमाहि सर्वद्रव्यपर्याय जीवनो अग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ९६ लाख पद २ । त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्यकह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३। चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहा स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद सख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद भणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद
म्पञ्चम तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवाद तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवाद षष्ठं सत्यसयमः सत्यवचनम्वा
तद्यत्र सभेद सप्रतिपक्षञ्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवाद तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवाद सप्तम आयत्ति आत्मा सोनेकधा यत्र
नयदर्शनै र्वर्ण्यते तदात्मप्रवाद तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्म्मप्रवादमष्टम ज्ञानावरणादिक मष्टविध कर्म्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि
र्भेदै रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यत्रवर्ण्यते तत्कर्म्मप्रवाद तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवम तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत
इति प्रत्याख्यानप्रवाद तत्परिमाण चतुरशीति. पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवाद दशम तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको
टी दशचपदशतसहस्राणीति अवध्य मेकादश बध्यनाम निष्फल नवध्य मवध्य सफलमित्यर्थः तत्रहि सर्वज्ञानतपः सयमयोगा शुभफलेन सफला व

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवाय सच्चप्पवाय आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवाय विज्जाणुप्पवायं अवझं

तिहामत्यादि ५। ज्ञान सविस्तर पणे कह्या पद सख्या एकूण एक कोडीपद ५। छठ्ठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसयम तथा सत्य बचन सभेदें कह्यो ते सत्य
प्रवाद पद सख्या एककोडी छ पद ६। इति षट् पूर्व। सातमो आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्मप्रवाद पदसख्या २६ कोडी पद ७
आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनोप्ररूपणाकरी पद सख्या १ कोडी ८० हजार पद८। नौमो प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो
पदसख्या ८४ लाखपद९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहा अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णवीछे पद सख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

र्यन्ते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽवध्य तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश न्तत्राप्यायुः प्राणविधान सर्वं स
भेद मन्येच प्राणावर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशालं त्रयोदश तत्र कायिकादय क्रिया विशालत्ति सभेदाः
सयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाणं नवपदकोट्यः लोकबिन्दुसार चतुर्दशम तत्रास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा बिन्दुरि
वाक्षरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाक्षरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेनच लोकबिन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धत्रयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकथ्य नवर वस्तुनिय
तार्थाधिकारप्रतिबद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्म्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ सग्रहपरा ग्रथपद्धतय चूडाइति सेत

पाणाउ किरियाविसालं लोगविदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गणिय
स्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू बारसचूलियावत्थू प० । वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प० ।

मो अबंध्य तिहां तप सयमना फल बध्यनथी अफलनथी एहवो वर्णव्यो पद सख्या २६ कोडी पद ११ । बारमो प्राणायु तिहा आउखानो भेद सर्व जीवनो
कह्यो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२ । तेरमो क्रियाविशाल तिहा कायिकादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद संख्या ९ कोडी पद १३ । चौदमो
लोक विदुसार लोकने विषे बिंदुसरीखो बिंदु सघलामाहो उत्तम तेहनो पद सख्या साढी बारह कोडीपद १४ । एतले पूर्वनो बीजो भेद वर्ण्यो कह्यो ।
प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या । अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बारे चूलिका वस्तु
कह्या । वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या । अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४ । ज्ञान प्रवाद

पुव्वगतेत्ति निगमनं सेकिंतमित्यादि अनुरूपोनुकूलोवायोगो युयोगः सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्धमनुरूपः सम्बन्धइत्यर्थः सच द्विविधः प्रश्नः तद्यथा मूल

अत्थिणत्थिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्माप्पवायस्राणं पुव्वस्स तीसंवत्थू प० । पच्चक्काणस्सणं पुव्वस्स वीसवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सण पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्राणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सतीसवत्थू प० । लोगविंदुसारस्सण पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० । सेत्तपुव्वगयं । सेकितंअणुजोगे । अणुजोगे दु

पाचमा पूर्वना बारह वस्तू कह्या । ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना छि वस्तु कह्या ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कह्या ७ । कर्म प्रवाद आठमा पूर्वना ३० वस्तु कह्या ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कह्या ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अवध्य इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु कह्या ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कह्या १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकह्या १२। लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकह्या १४। दसचउद्दसअट्ठठा रसेवबारसदुवेयवत्थूणि सोलसतीसाबीसा पणरसअणुप्पवायति ॥ १ ॥ बारसएकारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउद्दसमे पणवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अट्ठचेवदसचेवचूलवत्थूणि आइल्लाणचउण्ह सेसाणंचूलिआनत्थि ॥ २ ॥ धुरना चिहूं पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी । शेष थाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत चौजो भेद पूर्वनो कह्यो ॥ अथ स्यूं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनो । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूत्र

प्रथमानुयोग च गण्डिकानुयोगश्च सेकिंतमित्यादि इहधर्मप्रणयनात् मूल तावत्तीर्थकरा स्तेषा प्रथमसम्यक्तावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथ
मानुयोग स्तथाह सेकिंत मूलपढमाणुओगे इत्यादि सूत्रसिद्ध यावत् सेत्तमूलपढमाणुओगे सेकिंतमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

विहे पन्नत्ते । तंजहा । मूलपढमाणुओगे गंडियाणुओगे सेकिंतंमूलपढमाणुओगे एत्थणं अरहंताणंभगवंताणं
पुव्वभवदेवलोगगमणाणि आउवयणाणि जम्मणाणिअभिसेयरायवरसिरीओ सीआओ पव्वज्जाओ तवोयभ
त्ताकेवलणाणुप्पयाओ तित्थपवत्ताणाणिअ संघयणसंठाणउच्चत्तआउवन्नविभागो सीसागणागणहराय अज्जा
पवत्तणीओ संघस्सचउव्विहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जवओहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईअणुत्त

नेविषे अर्थने विषे सरीखो सबध तेकहेछे । मूल प्रथमानुयोग १ गडिकानुयोग । अथ स्थूंते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विषे इहा धर्मनाप्ररूपक
पणा थकी मूल ते तीर्थंकर देव ते अरिहत भगवतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप सयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग
बहु प्रकारे कह्यो अरिहतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो । आउखो च्यवन जन्म राज्याभिषेक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिविका दीक्षा दीक्षानीपाल
खी तपना भक्त चोथभक्त छट्ठभक्त इत्यादि । केवल नाणनो उपजवो । तीर्थ चतुर्विध सघ तेहनो प्रवर्तावणो । सघयण वज्रऋषभादिक । संस्थान समचतुर
स्र । शरीरनो ऊचपणो । आउखो । वर्ण गौरादिक । तेहनी विभा काति । शिष्य गण गच्छ । गणधर ते प्रथम शिष्य । आर्या साधवी प्रवर्तिनी मोटी सा
ध्वी तेहना नाम । सघ चतुर्विध साधु साध्वी श्रावक श्राविका तेहनो जेहवो परिणाम आचार विचार । जिन केवलीनी सख्या । मनपर्यवज्ञानी अवधि

अनेकार्था अन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे गण्डिका एकपताव्यतार्थाधिकारानुगता सतत चित्राय ता अन्तरगण्डिका च चित्रान्तरगण्डिकाः एतद्रूपा
वति ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे तद्वज्जभूपतीनां शेषगतिगमनव्यवहारेण गिरगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका चित्रातरगण्डिका इति ताय
चोद्दशलक्खासिद्धा निवइणेक्कोयहोइसव्वेहे एवेकेकट्ठाणे पुरिसजुगाहुतिसंखेत्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकाया मभिहिता सत एवार्थार्थो इह सूत्रगमनिका

नहवक्कगंडियाउ तवोकम्मगंडियाउ चित्ततरगंडियाउ उस्सप्पिणीगंडियाउ ओसप्पिणीगंडियाउ अमरनर
तिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुओगे एवमाइयाउगंडियाउ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति
सेत्तगंडियाणुओगे सेकिंतंचूलियाउ जंआइल्लाण चउण्हंपुव्वाणचूलियाउ सेसाइपुव्वाइ अचूलियाइ दिट्ठिवा

का पूर्वजन्मादि संबधी जिहां कही ते कुलकरगडिका। एमज सर्वत्र कहिवी। जिहालगे चित्रांतरगंडिकाआवे। तीर्थंकरना सबध गणधर सबध चक्रव
र्त्तिसबध। दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबध। बलदेव बलभद्रादिकनासंबध। हरिवश यदुवशनी उत्पत्ति। भद्रबाहुस्वामी घणाजिम एह पाम्या।
छेहडे जेहवा तपकर्मकीधा। तेचित्रांतरगडिका चित्रअनेकार्थ अतरते आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे चिहाले जिम आदीश्वरना पाट गणव्याता मो
क्षपहुता। तथा। सर्वार्थसिद्ध पहुता। तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रातरगडिका। उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव। अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह
नाभाव। देवतानागणसमूह। तथा नरमनुष्यतिर्यंच नारकी एचिहूंनीगति जिहा त्रिविध प्रकारे परिवर्तन ससारमाहि फिरवो तेहनो अनुयोग व्याख्यान
एवमादिक गडिका अर्थाधिकार। तिहा चौथा पूर्वना भेदने विषे कहिये गडिका चोथो भेद पूर्वनो॥ अथ ते स्यूं चूलिकानुयोग। जे आदिना चारना चार

साम्प्रतं द्वादशाङ्ग विराधनानिष्पन्नं त्रैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येत द्वादशाङ्ग गणिपिटक मतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं ससारकान्तारं अणुपरियट्टिसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्तः इदंहि द्वादशाङ्ग सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं ससारकान्तारं नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवतो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्ठामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी कइव द्रव्यलिङ्ग धार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभयै र्विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञाततया तदकरणेनेत्यर्थः इच्चेयमित्यादि गता

निदसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एवं विन्नाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिठिवाए॥ सेत्तदुवालसंगेगणिपिठगे ॥ १२ ॥ इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिठगं अतीतकाले अणंताजीवाआणाए विरा

अन्यथा पणे कडा कीधा छे निबद्धा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतूदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निर्देशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाण्या। एम विशेष पणे जाण्या। चरण ते पांच महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहा कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अग केहवाछे। गणी कह तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे। इत्यादि द्वादशाग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खडी ने चार अंत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृत्तवत भ्रमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रति व

र्थमेव नवर परित्ताजीवाइति सख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां सख्येयत्वात् अणुपरियट्टंतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चेयमित्या दि इदमपिभावितार्थ मेव नवर मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि वांच्यं नवर विइवयसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्ग तिकससारोल्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेपि नवर मय म्विशेषः वीइवयतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवइस्संति त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यंतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्न फल मातिपादित मेतत्सदावस्थायिन्ये सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इ

हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं पडुप्पन्नेकाले परित्ताजीवा आणाए विराहित्ता चाउरतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतससारकतारं अणुपरियट्टिस्सति इच्चेइयं दुवालसगगणिपिडगं अतीतेकाले अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतार विइवइसु एवंपडुप्पन्नेवि अणागएवि दुवालसगं

र्तमानकाले परित्तासंख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधीने चातुरंत ससार कांतार प्रति अनुपरावर्तें भमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञानें विराधीने चातुरत संसार कांतारप्रतें भमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनताजीव आज्ञाने अराधी ने चातुरत संसार कांतारप्रते पार पामताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशांग गणिपिटक। नही क दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथो एमनही। नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही। तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीछेहडो

त्वादि द्वादशाङ्ग णमित्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् कितर्हि भु विचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत मप्यस्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव शाश्वत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मह्रदवत् अक्षयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्रिः समु द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थित जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मत्रार्थे आह सेजहानामएइत्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्धैवेति एत्थणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिडगं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणभविस्सइ भुवंच भवति भविस्सतिय धुवेणितिए सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नही तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वेहुता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निचलछे वली नियतछे। सदाभावी पचास्तिकायनीपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनीपरे वली अक्षय पद्मद्रहने विषे गगासिधुना प्रवाहनीपरे पचा स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जबूद्वीपनीपरें वली नित्य आकाशनीपरे साप्रत दृष्टांत देखाडीयेछे। तेयथानाम जिम पचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा रे अतीतकाले नही न हुती एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही। तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही। एह पचास्तिकाय हुती अतीत काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे। एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तत्रभवन्तोतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः
सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो
ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्म्मापेक्षया अनताभावाः अनताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तित्वनास्तित्वाभ्या मतिबद्धा इति व्याचक्षन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

णकयाइ ण भविस्संति भुविं भवंतिय भविस्संतिय धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवठि
या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणभविस्सइ भुविं
च भवति भविस्सइय धुवे जावअवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसगे गणिपिडगे अणंताभावा अणंताअभा
वा अणताहेऊ अणताअहेऊ अणताकारणा अणताअकारणा अणंताजीवा अणंताअजीवा अणंताभव

हुतो एम नही। वर्तमानकाले किपारे नथी एमनही। भविष्यकाले किमारे नहोय एमनही। हुतो छे होसे एतले त्रिकालभाव। ध्रुवादिक पद सघला क
हिया जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगे कहिवो। एणे द्वादशाग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता
छे। अनन्ता अभाव पोतानी अपेक्षाये आपणपो परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता। हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु व
स्तु पणे अनतछे। तद्विशिष्ट अर्थपणि अनतछे। हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेही अनत छे। मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनत छे। जिम
मृत्पिडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेही अनंतछे। जीव अनंतछे। अजीव स्थाणुकादिक पुद्गल तेही अनतछे। भव्य जीव अनंतछे। अभव्य

नोति गमयति जिज्ञासितधर्म्मविशिष्टानर्थानितिहेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्म्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्म्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्या यात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपत्तेऽनन्ता अहेतव स्तथाअनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतंत्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा त्रहिर्मृत्पिण्डः पटनिवर्त्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्टिता र्था इतरे ससारिण आघविज्जती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद म्प्रज्ञापनाख्य सर्व न्तदत्र मध्येतव्य किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपण्णत्ता इत्यभिलाप स्तत्र तु दुविहापण्णवणापण्णत्ता जीवपण्णवणा अजीवपण्णवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणंताअन्नवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दसिज्जति निदसिज्जंति उवदंसिज्जति एवदुवालसंगंगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशांग स्वरूप कहीने हिवे तेहीजमा वेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि वेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। स्यूंते अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

खितुमशक्यत्वा दर्थतस्तत्रैव उपदर्श्यते तत्राजीवराशि र्द्विविधो रूप्यरूपिभेदा त्तत्रारूप्यजीवराशि र्दशधा धर्मास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेशश्चे त्येवधर्मास्तिका याकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव त्रव दशमोऽद्धा समय इति रूप्यजीवराशि श्चतुर्द्धा स्कंधा देशाः प्रदेशाः परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदतः पञ्चविधाः सयोगतो नेकविधा इति जीवराशि र्द्विविधः ससारसमापन्नो ससारसमापन्नश्च तत्रा ऽसंसारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदा त् तत्रा नन्तरसिद्धाः पञ्चदशप्रकाराः परम्परसिद्धा स्वनेकप्रकाराइति संसारसमापन्नास्तु पञ्चधे केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रियाः पञ्चविधाः पृथिव्यादिभेदेन पुनः प्रत्येक द्विविधः सूक्ष्मबादरभेदेन पुनः पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाअपि पञ्चेन्द्रिया श्चतुर्द्धा नारकादिभेदा त्तत्रनारकाः सप्तवि धाः रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचराः पञ्चविधा मत्स्यकच्छपग्राहमकरसुसुमारभेदात् पुन र्मत्स्या अनेक धा श्लक्ष्णमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकच्छपमांसकच्छपभेदात् ग्राहाः पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा शु ण्डामकरा करिमकराश्च सुंसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्प्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्द्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व गोहस्तिसिंहादयः परिसर्प्पाद्विधा उरःपरिसर्प्पभुजपरिसर्प्पभेदात् उरःपरिसर्प्पाश्चतुर्द्धा अह्यऽजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकरामुकुलि

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता धम्मत्थिकाए जावअद्धासमए रूवीअजीवरासीअणे

स्तिकायस्कंध ३ देश २ प्रदेश ३ एवं ९ दशमो अद्धा समय काल एवं १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्रस १ थावर २। तेही पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणे विधियें बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रय। पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचेंद्रिय नरकतिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता एम ति

नश्चेति खचराश्चतुर्द्धा चर्म्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्गपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति यश्चो मनुष्याश्च द्विधा सम्मूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र सम्मूर्च्छिमाः नपुंसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म्म भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्म्मभूमिजा द्विविधा आर्या म्लेच्छाश्च आर्याद्वेधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादयः द्वितीया नवविधा क्षेत्रजातिकुलक र्म्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा भवनपतयोदशधा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः ज्योतिष्काः प ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पचधेति एतत्समस्त सूत्रकृतो क्त जावसेकित अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशि दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

गबिहा ॥ जावसेकिंतंअणुत्तरोववाइआ अणुत्तरोववाइआ पचविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज यंत अपराजित सव्वठसिद्धिआ सेत्तंअणुत्तरोववाइआ सेत्तंपचेंदियसंसारसमावन्नजीवरासी ॥ दुविहाणेर इया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय एवंदंडनेणाणियव्वो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पभाए पुढ

हां लगी अनुत्तर विमानआवे । स्यूंते अनुत्तरोपपातिका । तेपांच प्रकारे कह्या तेकहेछे । पूर्व दिशि विजय विमान । दक्षिणे वैजयंत । पश्चिमे जयंत । उ त्तरे अपराजित । चिहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता । तेह अनुत्तरोपपातिक देवता । ते पंचेंद्रिय ससार प्राप्त जीव राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । बे प्रकारे नारकी कही ते कहे छे । पर्याप्ता नारकीमांहि आहार १ शरीर २ इंद्रिय ३

मचूर्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति तेच वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषाच मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासस्थानसस्थिताइति निरयसस्थानव्यवस्था तत्रच बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अतोवट्टेत्यादि उक्तंच सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता बहिरपि चतुरश्रा अधश्च क्षुरप्रसस्थानसंस्थिता एतच्च सस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्त तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टा स्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसस्थानाभवन्तीति तत्रांतर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य बहिश्चतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्कारणादिद दृश्य यदुत अधः क्षुरप्रसस्थानसस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य सचारिसत्वपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहु स्तेषामधस्तनांशः क्षुरप्रइवाग्रेऽग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसस्थानता तथा निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवण्णाभाकक्खडफासादुरभियास इत्ति तत्र नित्य सर्वदा अन्धकारं अन्धताकारक ग्रहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्तमस्तमिस्र येषु ते नित्यान्धकारतमसः

तेणणिरयावासा अंतोवट्टा वाहिंचउरंसा जावअसुन्नाणिरया असुन्नाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविन्नाणिय

चउखूणा नरकावासा वेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकाबाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषेछे ते वृत्त त्र्यस्र चतुरस्र क्रमे जाणिवा। एहमाहि इन्द्रक ते वाटला सौमतादिक अने आवलिकाबाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगे महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे बाहुल्य पणू नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

भायाम्बाहल्यमेवं शेषासुभावनीयं तथा त्रिंशल्लक्षाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येवं शेषास्वपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसट्ठीइत्यादि गाथाः पच एवचेहसूत्राभिलापोद्देश्यः सक्करप्पभाएणवुढवीएकेवइयओगा

यपस्सवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिसेगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीअसुराणं चउ रासीइंचहोइनागाणं बावत्तरिसुवन्नाणं बाउकुमाराणछस्सउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिद थणियमग्गीणं छण्हंपिजुवलयाणं बावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा बारसअठ्ठचउरोसयसं

लाख। पांचमीये ३ लाख। छठ्ठीयें ५ ऊणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाख बिहुंमि ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख बिहुमिली ८४ लाख भवन नागकुमारनां। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारनां। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुमिली ९६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमित वाहनना ३६ बिहुमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजु युगल। हरि कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथो युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठ्ठो युग

क्रम स्तथा वट्टेयतंसायत्ति मध्यमोवृत्तः शेषास्त्र्यस्रा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि र्वृत्तानि

वीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिंनाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अठुत्तरजो
यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरि अठ्ठतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअठ्ठतेवन्नं जोयणसहस्सा
इं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा
निरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठ्ठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी। सातमी नरकपृथिवीनी स्वरूप पूछेछे भगवंतआगलि। भग
वत कहेछे। हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठ्ठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमाहि उपरि अठ्ठत्रेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र
योजन अवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी
तमतमा पृथिवीये नारकीना पाच अनुत्तर कहता ते उत्तरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरका
वासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशे काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला
त्र्यंस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांही अपइठ्ठाण ते वाटलो अने चिह्नदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे अहेत्ति हेठे क्षुरप्र एतले
छरपलाने सस्थाने सस्थितछे। यावत् शब्दे चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत अशुभ घणी भूंडो नरक छे । तथा अशुभ घणी भूंडी छे नरकनें विषें वेदना। वली

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत समचित्रबिन्दुकिनीभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्य पालीरूप कृतमन्तरमंतराल ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुन्नानरगा । असुन्नाउ वेयणाउ केवइयाणंन्नंते असुरकुमारावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पन्नाए पुढवीए चउसठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा प० तेणन्नवणावाहिवट्टा अंतो चउरसा अहो पोक्खरकम्मिआ संठाणसंठिया उक्किन्नंतर विउलगंन्नीरखाय

गौतम पूछे छे । हेभगवत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कह्या । अनेकिहाछे । भगवत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी यें ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनो छेहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने बली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी ने मध्येबिचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवना वास कह्या । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अंतो घरमाहि चोरस । चोखूणिया हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने सस्थाने संस्थितछे। उत्कीर्ण पालीरूप कीधो छे अंतराल जेहनो ते उत्कीर्णांतर एहवी विपुल विस्तीर्ण गभीर जंडी खात परिखा खांईछे जेह भवन ने उपरि विशाल हेठें सकुचित ते विहूंने अतलगे बिचे पाछिले एहभाव । अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

पुलगभीरे खातपरिखे येषा तानि तत्र खातमधउपरिच सम म्परिखाउपरि विशाला अधः संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभावः तथा अट्टालकाः प्रा कारस्थो पर्याश्रयविशेषाः चरिकानगरप्राकारयोरतर मष्टहस्तोमार्गः पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरकाः सभाविशेषाः ग्रामप्रसिद्धाः दारगोउरत्ति गोपुरद्वा राणि प्रतोल्यो नगरस्येव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेषु भागेषु येषांतानि तथा इह देशोभागश्चानेकार्थं स्ततोन्योन्यमनयो र्विशेष्यविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यन्त्राणि पाषाणक्षेपणयन्त्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुंडयः प्रहरणवि शेषाः शतघ्न्यः शतानामुपघातकारिण्यो महाकायाः काष्टशैलस्तम्भयष्टयः ताभिः परियारियत्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थः तथा अयोधानि योध यितुं संग्रामयितुं दुर्गतत्वान्नशक्यंते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधाः परबलसुभटानि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोट्ठगरइय

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसयग्घिपरिवारिया अउ ज्झा अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगु

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतोली नगरी तेंहना कमाड तेह आगली तोरणछे तिमज प्रसिद्ध द्वार माहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य स्थान कहेछे जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनी तथा पा षाणस्तभरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितछे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित छे । तथा अडतालीस कोधाछे वनमाल तथा अडयालकहिये शोभायमानछे वनमाला पल्लवनीमाला जेहनेविषे जेहघरनीभूमि छाणेकरी लीपी ऊपरिली

त्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रछन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्द' किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवणमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि
न्नाः प्रशसार्हाःकृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपन उल्लोइयंति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरण
ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसश्च रसोपेत यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना
भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य 'सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प
ञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक्क चीडा तुरुष्कः
सिल्हक गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झंतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषां योधूमो मघमघेंतत्ति अनुकरणशब्दोय मघमघायमानो बहलगधइत्यर्थः
तेनोड्डराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमोदो
येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगधिकानि तथा गधवर्त्ति गन्धद्रव्याणां गधयुक्तियास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कझज्झंतधूवमघमघेंतगधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया

भाग खडोयें करी धोल्यो तेणेकरी महित पूजितछे जेह। गोशीर्षचदनविशेष रक्तचंदन तेविहु दर्दर निविडपणे दीधाछे पंचागुलितला हाथा भीतिने विषे
हाथा दीधा छे। कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झत दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गध तेणे करी
उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गध तेणेकरी गंधित छे गंधवत छे तथा गधनी वाती तेह समान

रगंधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिआकाशस्फटिकवत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थः घुटितपटव
त् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव
नीरयत्ति नीरजासि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विसुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा न्नचन्द्रव
त् सकलकानीत्यर्थः तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयत्ति समरीचीनि स
किरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्तंतइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मनःप्रसत्तिकराणि दरिसणिज्जत्ति
दर्शनीयानि तानिहि पश्यं चक्षुषा नश्रमङ्गच्छतीतिभाव. अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारप्रति रमणीयानि नैकस्य
कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायङ्भवनादिपरिमाण यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोया पासा

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरे। श्लक्ष्ण सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपनो छे। लण्हत्ति सुकुमाल कोधा छे घूंट्या वस्त्रनी परें। घट्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषा
णप्रतिमानीपरें घस्याछे। मट्ठत्ति घणीसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणें नीरज रजरहित निर्मल मलरहितछे। वितिमिरा
अधकार रहित छे। निष्कलकछे। प्रभाकांति तेणे सहितछे। श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे। उद्योत प्रकाश सहितछे। मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायो
ग्यछे। कमनीयछे देखणहारप्रते रमणीकछे। एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार सूत्रने विषे कह्योछे। जे जे भाव गाथायें भण्यो ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविध तत्परिमाणमतत्राह जंजंगाहाहि भणियं यद्यत्रगाथाभिः चउसट्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तत्रावाच्यंतहेत्याह तहचेववण्णओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापण्णत्ता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगंजोयणसहस्सं ओगाहेत्ताहेट्ठाचेगजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअट्ठहत्तरे जोय

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं ज गाहाहिं भणियं तहचेववण्णओ केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयवज्जेत्ता मज्झे अट्ठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो। वलो गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवत कहेछे हेगौतम। असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुथना ठाम असख्याता कहिया एतले गर्भज मनुथसख्याता कहिवा। अने सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमतरावासा व्यंतरमारहिवानाठाम। भगवंत कहेछे। हेगौतम एणीये रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन काड तेमाहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

णसहस्से एत्थणं रयणप्पभाएपुढवीसोइनागकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता तेणंभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां असख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसख्याता इति भावनीयमिति केवइयाण

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंनोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा एवंजहानवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवरं पडागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । केवइयाणंभंते जोइसियाण विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसय वाहल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेण जोइसियविमाणा

वर्जी ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगह्या इहा वाणव्यतर देवना तिरिछा लोक मांहि असख्यात भूमि सबधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भौमेय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चौखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहां पणि नवरं एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्म रमणीकछे । देखवायोग्यछे । वली गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी सातसेनेजयोजन लगे ऊंचो उत्पतीने जईने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

खर येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्नाः इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवत्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिताइव पञ्जरबहिःकृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वशा दिमयप्रच्छादनविशेषाद्बहिःकृतमत्यंतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभावः तथा मणिकनकाना सम्बन्धिनी स्तूपिकाशिखर येषा तेमणिकनकस्तूपि काका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुन्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्द्धचन्द्राद्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थः तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्तन्मय्या बालुकायाः शिकतायाः प्रस्त टः प्रतरोयेषु तेतपनीयवालुकाप्रस्तटाः पाठान्तरे तु सण्हशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येय तथा सुखस्पर्शाः शुभस्पर्शा

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियब्भमणिकणगत्थूभियागा वियसियसयवत्त पुं
डरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतोबाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुआपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजराथकी उन्मीलित बाहिर कीधा जेहवा तेजपुजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। बली केहवाछें बिकसित जे शतपत्र कमल पुडरीक छे द्वार देशने विषें। तथा भींतिने विषें तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारबिभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अतो घरमाहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। बली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे। रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहा। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिबा योग्यछे।

वा तथा सश्रीक सशोभंरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपा. प्रासादीया दर्शनीयाः अभि
रूपा' प्रतिरूपाइतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्तिबहुसमरमणीयस्यभूमिभागस्य ऊर्द्ध उपरि तथा चन्द्रमः
सूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणि णमित्यलकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः तारारूपाणि चेह तारका एवेति तथा वहुनीत्यादि किमित्याह
ऊर्द्ध मुपरि दूरमत्यर्थंव्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलक्षाणि भवतीति सयव इति मक्खायत्ति इति एवप्रकारा अथवा यतो भवंति तत आख्याताः

दरिसणिज्जा केवइयाणन्नंतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएबहुसमरमणिज्जाउ
भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाण वीइवइत्ता बहूणिजोयणाणि बहूणिजोयणसयाणि
बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोडीउ जोयणकोडाकोडीउ असंखेज्जाउ
जोयणकोडाकोडिउ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थण वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतग

बली गौतम पूछेछे। केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वैमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कह्या। हेगौतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ
थिवीनो वली घणोसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजनसेंकडा घणांयोजन
नाहजार घणांयोजननालाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरें उल्लघीने इहां वैमानिकदेवतासो
धर्म ईशान २ लगडाकार बराबरिछे। तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बराबरिछे। तेउपरि ब्रह्म देवलोक। ते ऊपरि लांतक। तेऊपर शुक्र। ते ऊपर सह

सर्ववेदिनेति तेणंति तानिविमानानि णमिति वाक्यालंकारे अच्चिमालिप्पभत्ति अर्चिमाली आदित्य स्तद्वत्प्रभाति शोभंते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशाना राशि र्भासराशि रादित्य स्तस्य वर्ण स्तद्वदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णाभानि तथा अरयत्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नीरयत्ति नीरजासि आगंतुकरजोविरहात् निम्मलत्ति निर्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अन्धा र्यान्धकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहा त्सकलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदलमयानीत्यर्थः अच्छान्याकाशस्फटिकवत् श्लक्ष्णानि

सुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताण उइचसहस्सा तेवीसंचविमाणाभवंतीतिमक्खाया। तेणविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छा

सार। तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारेछे। तेऊपर आरण अच्युत। एवं १२ देवलोक थया। ते ऊपर ९ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान। ए कें प्रतरें चिहुपासे ४ विजयादिक विमांन विचे सर्वार्थसिद्ध। एवं १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख ९७ हजार २३ विमानछे ते भगवंते कह्याछे। तेविमानकेहवाछे। अर्चिमाली सूर्यनी सरीखी प्रभाछे जेहनी। प्रकाश दीप्तिराशि सरीखो वर्णछे जेहनी। स्वाभाविक र जना अभावथी रज रहितछे। कठिन मलना अभावथी निर्मलछे। अधकार रहितछे। स्वाभाविक अधकार रहितपणांथी विशुद्धछे। वली सर्वरत्न मयी छे। आकाशनी परें अच्छछे। स्फटिकरत्ननी परें श्लक्ष्ण पुद्गलथी नीपनांछे। सुकुमाल कोधाछे। खरशाणें करी पाषाण प्रतिमानी परे घठास्याछे। सकु

सूक्ष्मस्कंधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात् ॥
कर्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति यैषा तानि निष्कंकटछायानि सप्रभाणि प्रभावति
समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्त्वंतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः. पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापण्णत्ता गो
यमा बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्य एतदेवाह एवईसाणाइसुत्ति एव गाहाहि भाणियव्वति वत्तीसअट्ठवीसा इत्यादि
काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्वदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणाविमानावासा भणितव्या स्वदर्णकश्चवाच्यो जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न

या सप्पन्ना सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प० । गोयमा वत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प० । एवईसाणाइसुअट्ठावीस वारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नास चत्तालीसं छसहस्साइं चत्तारिसयाइ तिन्निसयाइ गाहाहिंनाणि

मार शाणेकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे। कलंक रहित छे। वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे। प्रभा सहितछे शोभायमानछे। उ
द्योत सहितछे। वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे। वली गौतमपूछेछे। हेभदंत सौधर्म पहिले देवलोके केतला विमानावास
विमानलक्षण घर कह्या। हेगौतम। बत्तीसलाख विमानावासा कह्या। एम ईशाने अठावीस लाख। सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख। ब्रह्मे ४ ला
ख। लातके ५० हजार। शुक्रे ४० हजार। सहस्रारे ६ हजार। आनत प्रानत मिली ४००। आरण अच्युत मिली ३०० विमान। एह सैकडा जिम प

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाणेणंभते कप्पे केवइयाविमाणावासापण्णत्ता गोयमा अट्ठावीसं विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता तेणविमाणा जावपडिरूवा एव सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह नेरइयाणभतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकालः अपज्जत्तयाणति नारकाः किल लब्धितः पर्याप्तका एव भवंति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति ततः पर्याप्तका स्ततएषा मपर्याप्तकत्वेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना म्पुनरौघिक्येव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अय ञ्चेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभागः नारयदेवातिरिमणुय गब्भयाजेअसखेज्जवासाऊ एतेउअपज्ज त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति र्विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वम्प्रज्ञापनाप्रसिद्ध मित्यतिदिश्यत्राह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणां नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौघिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षण गमत्रय यावदित्यर्थः इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा म्भदन्तकियतीतिस्थिति र्गौतम जघन्येन दश

यह्वं। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं

हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिबो। हिवे २४ दडकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे। हेपूज्य नारकीनी केतला काल लगे स्थिति आउखो कह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडीतो १० हजार वर्षनो स्थिति कही। पहिली नरकनो अपेक्षायें उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणामहन्त कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमो भवत्यापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका
ना सामान्योक्त्यैवातर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकदशानां असुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चां गर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां म
ष्टविधानां ज्योतिष्काणां पञ्चप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमनय स्वाख्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमाण्युक्तानि गन्धह

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को
सेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तगाण जहन्नेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइ । उक्कोसेणं तेत्तीससागरो
वमाइ अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवजावविजयवेजयतजयतअपराजियाण देवाणं

ही । पणि ३३ सातमीनी अपेक्षाथी । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थाये केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टपणे
पणि अतर्मुहूर्त्त । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर
कनी अपेक्षाये अतर्मुहूर्त्त ऊणी । उत्कृष्टी सातमीये अतर्मुहूर्त्तऊणी तेत्रीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानो ऊणो जाणिवो । हे पूज्य एणीयें
रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आऊखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन
पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कृष्टो आऊखो यथातथ्यको कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत ज
यंत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणें ३२ सागरोपमनी कही । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

स्थादिष्वपि तथैवदृश्यते प्रज्ञापनायांत्वे कत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकागमद्वय मिह समूलमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै र्वाच्येति अ
नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानीतच्छरीराणा मवगाहनापतिपादनायाह कइयाणभंतेइत्यादि कथ्य नवर मेकेंद्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव
त्करणा द्विचिचतुःपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेंद्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण ज्ञाप्यानि कियद्दूरमित्यादि गम्भवक्कतिइ

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं सव्वठे अ
जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । कतिण भंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प०
तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेण भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प०
तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कतियमणुस्सपचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते

जघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीरावोनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श
रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री
औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चोरिंद्री औदारिक शरीर ४ पचेंद्री समूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज
पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रात मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनो औदारिक शरीर
जाणिवो । औदारिकशरीरनी केवडी मोटी अवगाहनां कही हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेक्षायें । उत्कृष्टसातिरेक झा

पृथक्त्वं भुजपरिसर्प्पाणा गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां गव्यूतत्रयं समूर्छनजाना मङ्गुलासख्येयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवर विविधा विशिष्टावा क्रियाविक्रियातस्या भव स्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वैकुर्विक मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेंद्रियवैक्रियशरीर नारकादीनामेव जावेत्यादेरतिदेशादिद द्रष्टव्यं यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियशरीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोदृश्यः यदिवायोः किसूक्ष्मस्य वादरस्यवा बादरस्यैव यदि वादरस्य किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किनारकस्य पंचेंद्रियतिरश्चोमनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषा तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तकस्ये तरस्यच यदितिरश्चः कि सम्मूर्च्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिसिगाउयाइं । कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पंचिंदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम बे प्रकारे कह्यो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेक्षाये । बीजो पचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

गर्भजस्योतस्यापि कर्मभूमिजस्योत तस्यापि संख्यातवर्षायुषएव पर्याप्तकस्यैवच तथा देवस्यभवनवास्यादेः तथा सरादेर्द्वयविधस्य पर्याप्तकस्येतरस्यच एव व्यंत
रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्यपञ्चविधस्य तथा यद्वैमानिकस्य किल्बिषोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्यचेति तथा वैक्रियभवधारणीयसंस्थि
त' उच्यते नानासंस्थितं तत्र वायोःपताकासंस्थितं नारकाणा भवधारणीय मुत्तरवैक्रियस्य हुडसंस्थितं पचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणा नानासंस्थित देवाना भवधा
रणीयं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रिय नानासंस्थितं केवल कल्पातीताना भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिम्भवती गौतम जघ
न्यतोंगुलाऽसंख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेक योजनलक्ष भवायोरुभयथा अंगुलासंख्येयभाग एव नारकस्यजघन्येनभवधारणीय उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एवा
च सप्तम्यांपृथ्वीदिषु त्रियमेवा पर्द्धहीनेति उत्तरवैक्रियात्तु जघन्यतः सर्वेषा मप्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षत य नारकस्यभवधारणीयद्विगुणेति पचेंद्रियतिर
सां योजनशतपृथक्त्व मुत्कर्षतः मनुष्याणां तूत्कर्षतः सातिरेक योजनानां लक्षं देवानातुलक्षमेवोत्तरवैक्रिय भवधारणीयंतु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशा
नाना सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेंद्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्रसहस्रारयो चत्वार आनतादिषुत्रयो ग्रैवेयकेषुद्वा वनुत्तरेष्वेक इति अनन्तरोक्तं

ह्यियसरीरेज्ज । एवंजाव सणंकुमारेज्जाढत्तं जावज्जणुत्तरान्नवधारणिज्जा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ ।

न लगे सात हाथनो होय । सनत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । वे वे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार
माहेंद्रे ६ हाथनं । ब्रह्मलांतके ५ हाथनो । शुक्रसहस्रारे ४ हाथनो । आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो । नवग्रैवेयके २ हाथनो । पचानुत्तरे १ हाथ

सूत्रतएवाह एवजावसणकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्त वैक्रियावगाहनामानसूत्रं वाच्य कियद्दूरमित्या दि यावत्सनत्कुमारेआरब्ध भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्य ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभ वन्तितेषांरत्नी रत्निःपरिहीयतइति एतदर्थसूत्रभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेपि दृश्यते तत्राप्यचरघटने तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्या दि सगम न्नवरं एवमिति यथापूर्वं आलापकः परिपूर्णं उच्चारितः एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्तिजइमणुस्साहारगसरीरे किगब्भवक्कतियणुमस्साहार गसरीरे ससुच्छिममणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरे नोससुच्छिममणुस्साहारगसरीरे जइगब्भवक्कतियइत्यादि सर्वमत्र जावजइप मत्तसजयअपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तयसखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरे किइड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयक

आहारयसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किंमणुस्सआहारय सरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे । गोयमा मणुस्सआहारगसरीरेणोअमणुस्सआहारगसरीरे । एवजइमणु

नो शरीर । बेहु गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो । नरदेवलक्खमहिय । तिरियाणजोयणाणिनवसयाइ । दुगुणतुनारयाणं उक्कोसवेउ व्वियाभणिया ॥ १ ॥ अतोमुहुत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसु अद्धमासो उक्कोसवेउव्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर तं पूर्वधर जिन ऋद्धिजोइवाने अथवा सदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थे करे १ हाथनो शरीर अंतर्मुहूर्त्त लगे रहे । ते १ प्रकारे छे । बली गौतम पूछे छे । हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कह्यो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

अभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा हि

स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं
तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे। जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभू
मिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा। जइकम्मभूमिग किसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय। गो
यमा नोअसंखेज्जवासाउय। जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्त
या। जइपज्जत्तया किसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी। गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

अमनुष्यने आहारक नहोय। जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय बा सम्मूर्च्छिमने होय। हेगौतम गर्भजने होय सम्मूर्च्छिम ने नहोय। हेपूज्य गर्भजने
होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतनें होय। हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय। हे पूज्य क
र्मभूमिगत मनुष्यने होय तो सख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असख्यात वर्षायुष्कने होय। हे गौतम सख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने न
थी। हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्त ने होय किंवा अपर्याप्तने होय। हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय। हे भदंत पर्याप्ता
ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने। हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही। सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय। हेभदंत स
म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत श्रावकने होय। हेगौतम सयतीने होय। पणि असंयतीने नहोय। संय

तीयस्यनिषेधः प्रथमस्यचा नुज्ञा वाच्या एतदेवाह वयणाविभाणियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनमर्वाणिभणनीयानि विभागेमपूर्णान्युपारणीयानीत्यर्थ. आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाढणापण्णतागोयमाइत्येतत्सूचितंजहण्णेणदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक द्रव्यविशेषत च प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहीदारिकादेरिवा गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरेणभतेत्यादि एव यावत्कर

म्मामिच्छादिठी । जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया संजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसंजया नोअपमत्तसंजया । जइपमत्तसंजया किंइड्ढिपत्ता अणिड्ढिपत्ता गोयमा इड्ढिपत्ता नोअणिड्ढिपत्ता । वयणाविभाणियव्वा आहारयसरीरे समचउरंससंठाणसंठिए । आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पडिपुण्णारयणी । तेअ

ता सयतने पणि न होय । हेपूज्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसयती ६ ठाणुगठाणवालाने होय किंवा अप्रमत्त सयतीने होय । हे गौतम ६ ठाणुगठाणयासी प्रमत्तसयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय । पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नयी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने होय किम्वा अनृद्धिप्राप्तने होय । हे गौतम शरीर करवानी लब्धिरूपऋद्धि पाइहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय । अनर्द्धिप्राप्तने न होय । उक्तन्याये कह्या वचन सगला भणिवा । आहारकशरीर समचउरंस सस्थान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकऊणा हाथ अने सपूर्ण होयतो १ हाथहोय । हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे । तेजस शरीर हे भदत केतले प्रकारे कह्यो ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो । एकेंद्रियतेज

णा अन्नापनासत्केकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपन्नत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एव जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवप चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणभते किसठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसस्थान तदेव तैजसस्य कार्मणस्यच तथा जीवस्य मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्द्धमधश्च

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज

स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ बेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो सठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्कध बचने पूछेछे । मरणांतिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवगाहनां केतली । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणें । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिबो । उत्पत्तिसमये बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनी अवगाहना उत्कृष्टलांबपणें तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनी अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगाहना कहिवी। हे गौतम शरीरप्रमाणें जाणवी । विष्कंभपणें पिंडुलपणें बाहल्यपणें जाडपणें औदारिकशरीर प्रमाणें तेजस शरीरनीं अवगाहना । आयामे

लोकान्ता ज्ञोकान्तंयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीकृत्येतिभावः एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका ज्ञोकांतंयावत्प्राय स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्यातालकलशस्य सहस्रमानं कुड्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य उत्कर्षेणतु अधः सप्तमींयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान मतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणयावत् ऊर्द्ध्वं मण्डकवनपुस्करिणींयावत् यतस्तयो र्नारक उत्पद्यते नपरतः मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासख्येयभागः स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्त ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते अतो नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथ पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थं भवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्पद्य मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनीम्वा मनुष्योपभुक्तस्त्रिय म्परिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव न्महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र हि जलसद्भावान्मत्स्येषूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्द्धमच्युतयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृत्वेहोत्पद्यमानत्वादिति आनता दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यङ्मनुष्यक्षेत्रे उर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे ।ग्रैवेयक देवताना तैजसनी अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कामर्णशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्धं तद्विमानान्येवेति एवं कार्म्मणस्या प्यवगाहना द्रष्टव्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह । गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि र्भवप्रत्ययः क्षायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणा क्षायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्व मेकाणे

॥

उ उद्दं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावञ्चणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिन्ना णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे अब्भिंतरेबाहिरेयदेसोही । उहिस्सबुद्धिहाणी पडिवाईचेवअपडिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठें जिहालगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुविमान । तिरछो मनुष्य क्षेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनीपरे अनुत्तर विमानवासी देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी सठाण पणि तिमज जाणिवो । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ बीजो क्षायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीने होय । क्षायोपसमिक मनुष्य तिर्यचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकी जघन्यपणें तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनताणुकात रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघन्य अगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

कायनंन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति क्षेत्रं जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल ञ्जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः संख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य ञ्चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा संस्थान मवधेर्वाच्य यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना म्पटहाका रो व्यन्तराणा झल्लर्य्याकृति र्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचंगेर्याकारो ग्रैवेयकाना कन्याचोलकसंस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्यंतरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थकरा यओहिस्सबाहिराहुतीत्यादि तथा बाहिरेयत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

तजाणें। उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणें। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरससंस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनता वर्णादिकना भेदजाणे। बीजोगोले अवधिनो संठाण कहेछे। नारकीनी अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आ कारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यतरनो पडहानें आकारे। ज्योतिषीनो झालरने आकारें। वारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचंगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारें। एतले कन्यानी चोलीने आकारें। तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थं करायओहिस्सबाहिराहुंति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रका शित क्षेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यंतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिवा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

तथा देशोहित्ति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधि र्देशावधिः स केषा भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतस्तु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्येषा देशावधिरेव यत. सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्पद्यत इति तथा वधे र्वृद्धिर्हानिश्च वाच्या योयेषाभवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणा म्वर्द्धमानोहीय मानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानो गुलासख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतस्तु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्र' प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्त भवयाव न्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

विहेणंभंतेओही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । भवपच्चइयखओवसमिएय । एवं सच्चंओहिपदं भाणियव्वं ।

ने होय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुहोय । बीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ढूंकडोहोय तिवारे सर्वा वधि होय । ओहिस्स वुड्ढिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवी । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अव स्थित होय घटे न वधे । वर्द्धमान ते अगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणूं घणूं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उत्कृष्टो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेछे हेभदत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारें कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नार कीने पोताना भवने विषे उपजे जिहांथीमरसे तिहांलगे रहे । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुबंधी कषायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनोपद पन्नवणासूत्रथकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजऔदयिकवेदनालक्षणकहेछे । शीता

दनालक्षणोभिधीयते॥ सीयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसीयायत्ति चशब्दोनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारकाः शेषास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलक्षणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातक्षेत्रसम्बन्धात् क्षेत्रवेदना नारकाद्यायुः कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनीयकर्मोदया द्भाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदनां वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शारीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र सन्निपचेंद्रियाः सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताअसाता सा तासाताचेति तत्र सर्वेजीवाः त्रिविधामपि वेदयन्तीति तहवेयणाभवेदुक्खत्ति त्रिविधावेदना सुखा दुःखा सुखदु.खाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

सीयायदव्वसारीर सायातहवेयणान्नवेदुक्कं । अप्पुवगमुवक्कामिया णीयाएचेवऋणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

दिकवेदना तीन प्रकारें शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे । दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदें चारप्रकारें । तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंध थकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातक्षेत्र संबंधथकी क्षेत्रवेदना २ नारकादिआयुकाल सबधथकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदयथकी भाववेद ना ४ तिहां नारकादि वैमानिकांतलगें चिंहुं प्रकारनी वेदनावेदे । तथासारीरत्ति । तीनप्रकारेवेदना शारीरी मानसी शारीरमानसी । इहांसंज्ञी पंचेंद्रिय त्रिणवेदनावेदे । बीजासगलाशारीरी वेदनावेदे । तथासायत्ति । तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव चीहुं प्रकारे वेदनावेदे । वे यणाभवेदुःखति । त्रिप्रकारनीवेदना । सुखा दुःखा सुखदुःखा । सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे । साता असातामांहि अने सुखदुःखमांहिस्यूंविशेष ।

लेश्याप्ररूपणायाह कइणभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनाया' सप्तदशं षड्डेशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिबहुत्वा दर्थतोपि न लिखितमि ति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तर लेश्या उक्ताः सालेश्याएवचाहारयती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तराश्चाव्यवधानाश्चाहारविषये अनतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थः तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न जा नत्येव एवकारा न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्वञ्च वाच्यमिति तनाद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनतराहारएत्ति उपपातक्षेत्रप्रा प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थः ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिवृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततःपर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्यानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० त० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंभा णियव्वं । अणतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं भंते अणंतराहारा तउनिव्वत्तणया तउपरियाइयणया तउपरिणामणया तउपरियारणया तउपच्छा

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तेकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु क्कलेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आंतरे तथा आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जाणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त्व। ए ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनतर आहार करेछे। उपजियाने क्षेत्रे जई अपनो तेणे समये करे। तिवारे पछे शरीरनीपजावे। तिवारे पछे आ

मयन्ति तत'शब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउव्वणयन्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाइत्यर्थः इन्तागीतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषा मप्येन्द्रिया
णां वक्तव्य नवर देवाना पूर्वम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव मग्रे निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवी
नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपर्यंभाणियव्वति यथा दाहारस्यप्रश उक्ता स्तथा तदुत्तरशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया चतुस्त्रिंशत्तम
म्परिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति पूर्वज्ञानाहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइवत्ति एतस्यवि
वरण नारकाणां क्षिमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचन मेव सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति
तथापोग्गलानेवजाणतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषा नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा
हारत्वात् तेषा मेव असुरादय स्त्रीन्द्रियांताः कथमेकेन्द्रिया अनाभोगाहारत्वा द्विचीन्द्रियाश मत्यज्ञानित्वा अजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति
चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहार नजानन्ति चक्षुषानुपश्यति तथा तृणलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च
क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश केचिज्जानति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहार प्रक्षेपाहारश्च जानत्यवधिना नपश्यति चक्षुषा तथा
अन्ये न जानति तत्र नजानति प्रक्षेपाहार मत्यज्ञानित्वा त्पश्यति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहार निरतिशयत्वादिति व्यतरज्योति
ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानति विशिष्टावधित्वात् पश्यतीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष
ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तथाअक्कमसाणेयत्ति दार नारकादीना मग्रस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा समत्तेत्ति दार तत्र नारका. कि
सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिन. सम्यग्मिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा अप्येव सर्वेपि नवर मेकेन्द्रियामिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारमरु

पणा कृता हारयायुर्बन्धवता मेव भवतीत्यायुर्बन्धप्ररूप णायाह कइविहेत्यादि तत्रायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय म्बहुहीनहीनतरस्य द लिकस्या नुभवनार्थं रचना निधत्तमपीह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थं वह्वल्पाल्पतरक्रमेण व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं ज्ञात्यादिनामकर्म्मणायु र्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा द्व्याख्या प्रज्ञप्त्यामुक्त नेरइएणभतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तभवति नारकायुः प्रथमसमयसवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षण नामकर्म्म तेनसह निषिक्तमायु र्गतिनामनिषिक्तायुः तथा ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भावेनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवञ्चाहारपदंन्नाणियव्वं । कइविहेणं भंते आउगबंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते

हारलीधोहोय तेशरीरने विषे परिणमावे । तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपछे विकुर्वणा करे । एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवत कहेछे । एमहीज हेगौतम जिमतूकहेछे तिमजछे । इहां पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो । केतले प्रकारे हेपूज्य आऊखानोबंध कह्यो । हेगौतम ६ प्र कारे । तेकहेछे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे थाप्यो वाध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम आऊखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायु' स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशाना ममितपरिणामाना
मायुः कर्म दलिकाना नामः परिणामोदयः तथात्मप्रदेशेषु सम्बन्धन स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्म्मणा म्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म्म तत्प्रदेशनाम तेन
सह निधत्तमायु. प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्म्मद्रव्याणा तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो
नुभागनाम अथवा गत्यादीनानामकर्म्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध
त्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्म्माप्यवगाहना तद्रूपनामकर्म्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा
युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्ट अनन्तरमायुर्बन्धउक्तो ऽधुनाबद्धायुषा नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक
भेदे जेरस तेअनुभाग तेहने साथे बाध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहा तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो
कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आऊखानो बध कहिवो । हे गोतम ६ प्रकारे नाकीनो
आऊखानो बध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना
म निहत्तायु ५ । जिहालगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दडके ६ भेदे आऊखानो बध कहियो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कंठ्यं नवर यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततइयपन्नरसा मासोयदोयचउरो छम्मासाविरहकालो उएत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवकरणा च तिर्यङ्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ता. तद्भवच्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तो विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणभंते कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयकाल विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं वारसमुहुत्ते । एवतिरियग इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ सम य एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयने आतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोवीसायमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततइयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोही पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहू र्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

र्त्तनैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा त्तेषामिति इमीसेणरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालविरहियाउववाएणं पण्णत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा
य गोयमा जहण्णेणएक्कसमय उक्कोसेणचउवीसमुहुत्ताइ अनेनाभिलापेन शेषावाच्याः तथाहि सक्करप्पभाए उक्कोसेणसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अद्धमास
पकप्पभाएमास धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि
रहियाउववाएण एवसेसावि बेइंदिया अतोमुहुत्त एवतेइंदियचउरिंदियसमुच्छिमपचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगब्भवक्कतियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता
समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइं मुहुत्ताविरहिआ उववाएण वतरजोइसियाचउवीस मुहुत्ताइ एव सोहम्मीसाणेवि सणकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं
देवारसदिवसाइ दसमुहुत्ता बभलोए अद्धतेवीसराइंदियाइ लतएपणयालीस महासुक्केअसीइं सहस्सारेदिणसय आणएसखेज्जामासा एवंपाणएवि आरणे
सखेज्जावासा एवअच्चुएवि गेवेज्जपत्थडेसुतिसुकमेणसखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जकाल सव्वट्ठसिद्धे पलिओवम
स्सासखेज्जइभागति एवउव्वट्टणाइ ति उपपातउद्वर्त्तनाचायुर्बंधेएव भवती त्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कथ्य नवरं आकर्षोनाम कर्मपुद्गलोपा

क्कं समय उक्कोसेणं छम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उवट्टणा । इमीसेणं भंतेरयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं

बीजोचवे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तना च्यवन नथी सिद्धथकी निकलवो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि
षे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओघवचने पूर्वे कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा अ
थातर थकी जाणिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । च्यवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निहत्तायु

दानं यथा गौ'पानीयम्पिवती भयेन पुनःपुनः आहंहति एवञ्जीवोपि तीव्रेणायुर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनद्वाभ्यामाक
र्षाभ्याम्मन्दतरेणत्रिभिर्मन्दतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेव शेषाण्यपि आउगणित्ति गतिनामनिधत्तायुरादीनिवाच्यानिया
वद्वैमानिकादिति अयञ्चैकाद्याकर्षं नियमोजात्यादिना कर्मणामायुर्बन्धकालएवबध्यमानाना नशेषकालमायुर्बन्धपरिसमाप्तेरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवैषां
ध्रुवबन्धिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीना प्रतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतासुपरावृत्त्याबध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामायुर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव
सहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रय कव्यम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराच ऋषभस्तु

कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववायदण्डओ नाणियव्वो । जंवहणादंडओ । नेरइयाणं भंते जातिनामनि
हत्ताउगं कतिआगरिसेहिं पगरति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियअठेहिं नोचेवणंनव

करेछे । आकर्षे करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिबो जिम गाय पाणी पीतीथकी भयेकरी वलीवली हिसारो करी पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुबंधाध्य
वसायेंकरी १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसायें जातिनाम निहत्तायु करे तो वेआकर्षेकरे । मदतरे करेतो त्रिहुयें करे । एम
चिहुंये।पांचे । छये । साते । आठें करे । णवत्ति शेष थाकता २३ दडकनाजीवना नारकीनी परे आकर्ष कहिबा जिहांलगे वैमानिक देवता आवे । हिवे
पूर्वे आयुबध कह्यो तेसंघयणना धणीने होय तेमाटे सघयण कहेछे । केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो । हेगौतम ६ भेदे सघयणअस्थिवंधविशेष कह्यो ।
तेकहेछे । मर्कटनेठामे बिहुपासे हाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटो वज्रते कीलिका एत्रिणबाना जिहां होय तेवज्र ऋषभनाराचसघयण कहिये १ ।

पट्ट वज्र कीलिका वज्रञ्च ऋषभश्च नाराचञ्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्त' प्रथमो स्थिबन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्विती
यः मर्कटयुक्तास्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध चतुर्थ' अङ्गुलिद्वयसयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासहनन म्यक्षम यत्रा
स्थीनि चर्म्मणा निकाचितानि केवल न्तत्सेवार्त्त स्नेहपानादीना नित्यपरिशीलनासेवा तया ऋत प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ट छण्हंसघयणाणअसघयणेत्ति उक्तरू
पाणा षणा सहननानामन्यतमस्याप्यभावेन सहनिनो ऽस्थिसचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवाहीनि तच्छरीरके नेवच्छिरत्ति नैवशिराधमन्य' नैवण्हाउत्ति
नैवस्नायूनीति कृत्वा सहननाभावः तत्सहितानाहि प्रचुरमपि दुःखन्नबाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीर

ठीहिं एवं सेसाणविञ्जाणंगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं भंते सघयणे पन्नत्ते । गोयमा छ
विहे पन्नत्ते । तंजहा वइरोसभनारायसघयणे रिसभनारायसघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे
कीलियासघयणे छेवठसघयणे । नेरइयाणं भंते किसघयणी । गोयमा छण्हसघयणाणअसघयणी । णेव

वीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । त्रीजो नाराच सघयण मर्कट सहित ३ । चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबध वीजेपासेकीली ४ ।
पाचमो कीलिका अंगुलबेने सयुक्तने माहि कीलिका १ जिहांदोषी ते कोलिका सघयण ५ । सवर्त्त तेजिहा हाडिकाचर्मवींटी छे घृत तैलना सेचेंकरी
पाम्यो ते सेवार्त्त सघयण ६ । हिवें नारकी आश्री सघयण पूछेछे । हे भगवत नारकीमाहि के सघयण पामिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुमाहि १ छनपामिये
हाडनहो नाडीनही मोटीनशानथी जेनारकीना पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकात अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतिथीअसुदर अमनोज्ञ

नोपपद्यते स्कन्धवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवैषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ
प्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषा नारकाणां
असघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच
यस्मिन् शरीरसस्थाने तत्समचतुरस्र सस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपयत्तद्भवति तन्न्यग्रोध सस्थानं तथा
नाभितोऽधः सर्वावयवा श्चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूप नभवति तत्सादिसस्थान तथाग्रीवाहस्तपादा श्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
यत्र सक्षिप्त म्विकृतञ्च मध्ये कोष्ट तत्कुब्जं सस्थान न्तथा यत्रलक्षणयुक्तकोष्टं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपाद श्च तद्वामन न्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गलाअणिट्ठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुन्ना अमणामा
तेतेसि असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता । गोयमा छण्हंसंघयणाणं असं
घयणी णेवट्ठी णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गला इट्ठा कंता प्पिया मणुन्ना मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

अमनोरम । तेह नारकीने असघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसचयरहित शरीर परिणामे परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण सघयणे कह्या ।
हे गौतम ६ सघयण मांहि असघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनशनथी वडीनशनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकम
नीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असघयणपणें परिणमे । एम नागकुमार थकी माडी जिहालगे स्तनितकुमार दशमीनिकाय तिहालगे असघय

त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता । गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ संघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणियाय । कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं० । समचउरसे १ णिग्गोहे २ साइए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६ । णेरइयाणं भंते किंसठाणी प० । गोयमा हुंडसंठाणी प० । असुर

णी कहिवा । हिवे पृथिवी आश्रीपूछेछे । हेपूज्य पृथिवीनो कोण सघयण हेगौतम छेवठ्ठो सघयण । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंच योनिया जीव सर्व छेवठ्ठे सघयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रात तिर्यंचना ६ सघयण । समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठ्ठो सघयण । गर्भजना छहु संघयण जाणिवा जिम असुर कुमार असघयणी कह्या तिमज वाणव्यतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिवे सस्थान आश्री पूछेछे । हेभदत सस्थान केतलाछे । हे गौतम सस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानही अगोपाग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १ तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमाठो होय ते न्यगोध परिमडल २ । तथा नाभिथकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय नाभि ऊपर मांठोहोय ते सादिसस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो सच्छिप्त होय नानूंहोय ते कुब्ज सस्थान ४ । तथा लक्षणोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसस्थान ५ । तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसस्थान ६ । नारकीनो

बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनश्च तदुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेच

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसं ठाणा प० । आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता। तेउसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता । वाऊपडागसंठाणे पन्नत्ते । वण स्सई नाणासंठाणसठिया पन्नत्ता । बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पंचेंदियतिरिक्खाजुंडसठाणा प० गब्भवक्कतियाछव्विहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सजुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता । गब्भवक्कतियाणं मणुस्साणं छ व्विहासठाणा पन्नत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । कइविहेण भंतेवेए प० । गो

हे पूज्य कोण सठाणकह्यो । हेगौतम हुड सस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरंस सस्थान सस्थित कह्या । जिहां लगे दशमी निकायना स्तनि त कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने सस्थाने संस्थित कही । पांणीनो सस्थान पाणीनोपपोटो कह्यो । अग्निनो संस्थान सूचीकलाप-सूईना समूहने सस्थानेकह्यो । वायुनो पताका सस्थान कह्यो । वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकही । बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्री तिर्यंचनो हुड सस्थान क ह्यो । गर्भज तिर्यंच ६ सस्थान संस्थित कह्या । समूर्च्छिम मनुष्यनो हुड सस्थान । गर्भजमनुष्य ६ सस्थान सस्थित कह्या । जिम असुर कुमार समच उरंस सस्थान सस्थित कह्या तिमज वाणव्यतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदत वेद कोतले प्रकारे कह्या । गौतम ३ प्रकारे कह्या । ते कहेछे ।

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णयारी वाक्यालङ्कारार्था वत स्त्रे इति प्राकृतत्वात्
तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस्स समोसरण नेयव्वति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेए प०। इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए। नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसग
वेया प०। गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस न
पुंसगवेया। गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया। जावथणियकुमारा। पुढवीआउतेउवाउवणस्स
ई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा। गब्भवक्कंतियमणुस्सा पचिंदिय
तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया। तेण कालेणं तेणं समएण कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १। पुरुषवेद २। नपुसकवेद ३। नारकीनो हे भदंत स्यूं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किवा नपुसकवेद। हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुस
कवेदहोय। असुर कुमारने हे पूज्य किस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद होय। गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय। एम जिहां लगे स्तनि
तकुमार आवे तिहालगी कहिवो। पृथ्व आऊ तेज वायू वनस्पत वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस
कवेद। गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी। जिम असुर कुमारमांहि पुरुषी वेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक माहि कहिवा। तेणे का
ले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमे अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी। वाचनातरे

भवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणे त्यभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प
ञ्चमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति सिद्धाइति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ
इदभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणा म्वरपुरुषाणाञ्च वक्तव्यतामाह जबुद्दीवेत्यादि
सुगमं नवर म्पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमचउत्थमभिचदे तत्तोयपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चदजसचंदकन्ता सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

णं णेयव्वं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी
ए सत्तकुलगराहोत्था तं० । मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपन्ने विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाए उसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत
सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्पोक्तक्र मे जेकह्योछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवो जिहांलगे पाचमो गणधर सुधर्मास्वामी सतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या
दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्पिणीयें सात कुलकर हुया ।
मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमो । १ । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई
अवसर्पिणीये १० । कुलकर हुया । स्वयंजल १ । शतायु २ । अजितसेन ३ । अनतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दृढरथ ८ । दशर

सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्तीणनामाइंति ॥ २ ॥ तथा नाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरेइय मेहेधरेपइठ्ठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिअ ॥ ४ ॥ सूरेसुदसणेकुभे सुमित्तविजएसमुद्दविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेखियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

से उसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे । तत्तोपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तण्हंकुलगराणं सत्तभारियाहोत्था तंजहा । चंदजस चंदकता सरूवपडिरूवचक्खुकंताय । सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्तीणणामाइं ॥ ४ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे वासे इमीसेणं उसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरे विय मेहेधरेपइठ्ठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

थ ९ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीयें सात कुलकर थया । ते कहेछे । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । यशोमान् ३ ।चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनी ७ स्त्री थई । तेकहेछे । चद्रयसा १ । चद्रकाता २ । सुरूपा प्रतिरूपा ४ । चक्षुष्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरानी स्त्रीनानाम जाणिवा ॥ ४ ॥ जबूद्वीप सबधी भरत क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पणीयें चौवीस तीर्थंकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन क्षत्रिय ८ ३ ॥ ५ ॥ सुग्रीव ९ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्म्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुभ १९ । सु

तथा मरुदेविविजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नंदाविण्हुजयासामा ॥ ६ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरिआदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा

न्नाणूयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजएय । रायायञ्ञाससेणेय सिद्धत्थेखत्तिए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एएपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेओसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविण्हूजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरियादेवी पभावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्दीवेभारहेवासे चउवीसंतित्थग

मित्र २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । सिद्धार्थ क्षत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहवा हुवा उदय प्राप्त घणूं मोटोवंश तेहना विशुद्ध महा निर्दोष वंशछे जेहना । राजानागुणकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक तीर्थंकर जिनवीतरागना पिता कह्या ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे एणी अवसर्पिणी यें २४ तीर्थंकरानी माताथई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्था ४ । सुमंगला ५ । सुसीमा ६ । पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुयसा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । श्री १७ । देवी १८ । प्रभावती १९ । पद्मावती २० । वप्रा २१ । शिवा २२ । वामा २३। त्रिशला । २४ । एह जिनमाता २४ कही ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतक्षेत्रे एणीये अवसर्पिणीये चौबीस तीर्थंकर देवहुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्था तंजहा । उसभअजियसंभव अभिणंदणसुमइ पउमप्पभसुपास चंदप्पभ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जसवासुपुज्ज विमलअणत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय । एएसिंचउवी साएतित्थगराण चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तजहा । पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव । तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरवाहुतहदीह । बाहुजुगबाहुलहुवाहूय । दिव्वेयइददत्ते । सुदरमाहिंदरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे । रुप्पीअसुदसणेयबोधव्वा । तत्तोयनंदणेखलु । सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे । सुदसणेनदणेयबोधव्वे । इमीसेउसप्पिणीए एएतित्थि

विधि वीजोनाम पुष्पदत ९ । शीतल १० । श्रेयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल । अनत १४ । धर्म १५ । शाति १६ । कुथु १७ । अर १८ । मल्लि १९ मुनि सुव्रत २० । नमि २१ । नेमि २२ । पार्श्व २३ । वर्द्धमान २४ । एह २४ तीर्थंकरना पूर्व भवनानामधेय एतले । जेणे भेवें तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो । तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो । तेकहेछे । प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुता तिहाथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे । पहिलो वज्रनाभ १ । विमल २ । तथा विमलवाहन ३ । ततः धर्मसिंह ४ । सुमित्र ५ । धर्ममित्र ६ । सुदरबाहु ७ । तथादीर्घबाहु ८ । युगबाहु ९ लब्धबाहु १० । दिव्य ११ । इन्द्रदत्त १२ । सुदर १३ । माहेंद्र १४ । सिंहरथ १५ मेघरथ १६ । रूपी १७ । सुदसण १८ । ततः नदन १९ । सिंहगिरी २० ।

यवामा तिसलादेवीयजिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदया च्छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति

कराणंतुपुव्वन्नवा । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीससीयाउहोत्था तजहा । सीयायसुदंसणासुप्प न्नाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पन्नचंदप्पन्न । सूरप्पहअग्गि सप्पन्नाचेव । विमलायपंचवन्ना । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोह राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचदप्पभातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिचेवजिणवरिंदाणं । सव्व जगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विउखित्तामणु । स्सेहिसाहठरोमकूवेहि । पच्छावहंतिसीयं । अ

अदीनशत्रू २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एहअनुक्रमे जाणिवा ॥ ९ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकराना पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थंकरानी २४ शिविका दीक्षानी पालखीछे । तेकहेछे । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ८ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयकरा १७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिविकामावेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिविका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी ऐसे जिनेंद्रनी । शिविका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे । तेह शिविका पहिले हर्षे करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते अमरेंद्र चमरा

शेष. तथा साहट्ठरोमकूवेहिति साग्रिविका यस्यां जिनोध्यारूढः हृष्टरोमकूपै रुद्धुषितरोमभि रित्यर्थ' तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति
वाक्य तथा स्वच्छन्देन स्वरुचा विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोगः गरुलत्ति गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा
इत्यर्थः तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउव्वीस नयणामअण्णलिंगे नयगिहलिंगेकुलिंगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सत्थविकुव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदअणं । वहंति
सीअजिणदाणं ॥ १९ ॥ पुरओवहंतिदेवा । नागापुणदाहिणम्मिपासम्मि । पच्छत्थिमेणअसुरा । गरुलापुण
उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । वारवईएअरिठवरणेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्खंताजम्मभू
मीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णणिग्गयाजिणवराचउव्वीस । णयणामअण्णलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

दिक सुरेंद्र सोधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये
करी विकुर्व्या आभरण तेहना धरणहार छे । सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी बीठ्या छे । एहवा थईने जिनेंद्रनी शिविकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगडि
चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडो असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार बली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आ
दिनाथे विनीता नगरीये दीक्षा लीधो । द्वारिकाये अरिष्टनेमीये दीक्षा लीधी अने जाया सोरीपुरे । शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमिये दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥
सवलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधो तेणे सहित नीकल्या अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

ष्क्रान्ता इत्यर्थः नचान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थकरलिङ्गएवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एक्कोभगववीरो पासोमल्लीयतिहितिहिसएहिं भय वपिवासुपुज्जो छहिपुरिससएहिनिक्खतो ॥ १ ॥ उग्गाणभोगाणं राइस्साणचखत्तियाणच चउहिसहस्सेहिउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्थनिच्च भत्तेण निग्गओवासुपुज्जजिणो चोत्थेणपुणपासो मल्लीवियअट्ठमेणसेसाओ ॥ ३ ॥ छट्ठेणति सुमति रत्र नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोभगवंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहि । भगवंपिवासुपुज्जो । छहिँपुरिससएहिँनि क्खतो ॥ २३ ॥ उग्गाणंभोगाणं । राइस्साणचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिँउसभो । सेसाउसहस्सपरिवारा ॥ १४ ॥ सुमइत्थणिच्चभत्ते । णणिग्गओवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयअट्ठ । मेणसेसाउछट्ठेणं ॥ २५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणचउव्वीस पढमभिक्खादायारोहोत्था तंजहा । सिज्जंसबंभदत्ते सुरिंददत्तेयइं

दिक ने लिगे नही ॥ ५ ॥ भगवत महावीर स्वामी एकला दीचा लीधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीचा लीधी । १२ वासुपूज्य ६ से पुरुष साथे दीचा लीधी ॥ २३ ॥ उग्रवशना भोगवशना राजाना तथा मोटा चत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीचा लीधी । शेष १९ । तीथ कर १००० पुरुष साथे दीचा लीधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथं नित्यभक्ते दीचा लीधी । वासुपूज्ये चउत्थ भक्त १ उपवासे दीचा लीधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि हु उपवासे दीचा लीधी । शेष २० तीर्थकरे छट्ठ भक्त २ उपवासे दीचा लीधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिचा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयाश १ । आदिनाथने श्रेयांशे पारणूं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्ददत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

ण भिक्खा लद्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लद्धाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमस्स अमिय

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेय ॥ २७ ॥ अपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसभसेणोय । दिन्नेव रदत्तधणे । बहुलोतहएणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपजलिउहाउ । तंकालंतंसमयं पडिलाभेईजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिक्खा । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिक्खाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिक्खा । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमस्स । अमियरस रसोवमंआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिपिजिणाण । जहियलद्धाउपढमभिक्खाउ । वहियवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

पुष्पदन्त ९ । पुनर्वसु १० । नद ११ । सुनद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमो ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनी भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडी आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिक्षालीधी दीक्षानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने बीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसे करी शेष २३ नेखी रथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानूंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिननेजिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहा देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

रसरसोवमआसि ॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति बद्धपीठवृक्षा येषा मध' केवलान्युत्पन्नानीति बत्तीसाइ धणुयं गाहा निग्गोउगोत्ति नि त्य सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यर्तुकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो य समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणति अवच्छन्नः शालवृक्षे

वड्ढाउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्काहोत्था तजहा । णिग्गोहसत्तिवण्णेसा लेपियएपियंगुछत्ताए । सरिसेयणागरुक्के । मालीयपिलुंकरुक्केय ॥ ३३ ॥ तंदुलपाढलजंबू । आसत्थेखलुत हेवदहिवण्णे । णंदीरुक्केतिलए । अंबगरुक्केअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्केयधायईरुक्के सालेयवड्ढमाणे । चेइयरुक्काजिणवराणं ॥ ३५ ॥ बत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्कोयवड्ढमाणस्स । णिग्गोअगो असोगो । उच्छण्णोसालरुक्केणं ॥ ३६ ॥ तिण्णेवगाउआइं । चेइयरुक्कोजिणस्सउसन्नस्स । सेसाणंपुणरुक्का

शरीर प्रमाणे उंचीकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १। वडना पेडनीचे केवलज्ञान उपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो। सप्तपर्ण २। शालवृक्ष ३। प्रियालु ४। प्रियगु ५। छत्रवृक्ष ६। सरस ७। नाग ८। मालवी ९। पीलुख १०। टीवरू ११। पाडल १२। जबू १३। पीपल १४। दधिपर्ण १५। नदीवृक्ष १६। तिलक १७। आम्बा १८। अशोक १९। चंपा २०। बकुल २१। वेतस २२। धातकीआवला २३। शालिवृक्ष २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांवैसी भगवतवर्द्धमानस्वामी व्याख्यान करे। नित्य बारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्षें करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने ऊपर शालवृक्षछे। आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊंचो एतले

णेत्यत एववचना दशोकस्योपरि शालवृक्षोपि कथ चिदस्तीत्यवसीयत इति तिणेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थ. सवेइयत्ति वेदिकायुक्ता एतेचाशोका. समवसरणसम्बन्धिन. सभाअन्तइति तहा भरहोसगरोमघव सणकुमारोयरायसहूलो सतीकुथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

सरीरउ बारसगुणाउ ॥ ३७ ॥ सच्छत्तासपडागा । सवेइयातोरणेहिं उववेया । सुरअसुरगरुलमहिया । चे इयरुक्काजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एएसिचउवीसाए तित्थगराण चउवीसंपढमसीसाहोत्था तंजहा । पढमेत्थ उसभसेणे वीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जणाभे । चमरेतहसुव्वएविदभेय ॥ ३९ ॥ दिन्नेवाराहेपुणअ णंदेगोथुभेसुहम्मेय । मदरजसेअरिठे । चक्काउहसवकुंभअभिणयेय ॥ ४० ॥ इंदकुंभेयसुभे वरदत्तेदिन्नइं दभूईय ॥ उदितोदितकुलवसा विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाण । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

भगवतथी १२ गुणी ऊचोथयो शेष २३ तीर्थ करनाछत्र पोताना शरीरथी १२ गुणा कहिवा ॥ ३७ ॥ तेछत्र ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवें करी पूजितछे एहवा जिनेद्रना चैत्यछत्र जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य वडागणधरथया तेकहेछे । आदिनाथनो वडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । वीजोनाम प्रद्योतन ६ बि दर्भ ७॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनद वीजोनाम पद्मनदी १० । गोस्तूभ वीजोनाम कृतार्थ ११ सुधर्मा वीजोनामसुभूम १२ । मदर १३ । यशोधर १४ अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुभ वीजोनाम मल्ली २० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिन्न २३ । इन्द्रभूति २४

४१ ॥ एएसिणंचउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोत्था तंजहा । बंभीयफग्गुसामा । अजिया कासवीरईसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया भावयप्पायरक्खीय । बंधुवतीपुप्फवती । अज्जाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जक्खिणीपुप्फचूलाय चदण जायआहिया ॥ उदितोदियकुलवंसागाहा । जंबूद्दीवेणं भारहेवासे इमीसेओसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिपिय रोहोत्था तजहा । उसभेसुमित्तविजए समुद्दविजएयआससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदसणेकत्तवीरिएचेव ॥ ४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंभेबारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूद्दीवे

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवंशछे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडी साध्वीथई तेकहेछे । ब्राह्मी १ । फल्गुनी १ । श्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ । ॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । शुचि १६ । अजुका बीजोनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रचिता १८ । बधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ । ४३ ॥ यक्षिणी २२ । पुष्पचूला २३ । चदनबाला २४ ॥ एह साध्वी केहवी छे उदयप्राप्तवंशमे उपनी छे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जबूद्वीप नेविषे भरत क्षेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्तिना पिताथया । ते कहेछे । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्वसेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्त्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय अग्गिसिहोयदसरहो न

नारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिमायरोहोत्था तजहा । सुमंगलाजसवती भद्दासहदेवी अइरा सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तंजहा । भरहे सगरेमघव । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुभूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ मो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिवारसरहंचक्कवट्टी णं वारसइत्थिरयणाहोत्था तजहा । पढमाहोइसुभद्दा । भद्दसुणदाजयायविजयाय । किण्हसिरीसूरसिरी पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लत्थिमईकुरुमई इच्छीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नववलदेवनववासु

जबूद्दीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति माताथई ते कहेछे । सुमगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहली चुलणी १२ ॥ जबूद्दीप सबधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १ सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा माहि सिह समान शातिनाथ ५ । कुथु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त १२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुधरा ९ देवी १० ४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जबूद्दीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

वमोभणिओयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवाना मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवाना दशारमण्डलानीति पूर्वसुद्दिश्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूताना तेषा विशेषणार्थमाह त द्यथेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणाइति तत्दशाराणा वासुदेवकुलीनप्रजाना मंडना शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषाइति तीर्थकरादीना चतु.पचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थकरचक्रिणा प्रतिवासुदेवाना च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवपितरोहोत्था तंजहा । पयावईयवंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोभणि ज्जयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्था तजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया यअंबिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवबलदेवमायरोहोत्था तजहा । भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ ८ नवमोवसुदेव ९॥ १ ॥ जम्बूद्वीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले ९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल देवनी माता कहेछे॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयती ६ जयती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मडल थया तेकहे छे। उत्तम

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणा शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश स्विनः पराक्रम प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंसित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या शरीराकारत्वात् सुभगा जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुषरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसस्थानत्वात् शुभ सुख म्वा सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्या. सर्वजननयनानाकान्ता अभिलाषा ये ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबला' अ व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शेषपुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबला अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुरोयुद्धेच भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरि सा ओयसी तेयसी वच्चसी जससी छायंसी कता सोमा सुभगा पियदसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता ओहवला अतिवला महावला अणिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनी अपेक्षाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कातिवान् रुद्रा कार नही सहने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र सस्थानी सहने सुखकारी सुखें सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कात देखिवा योग्य बल जेह नो तूटे नही अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीये पराभव्या न जाय शत्रुनामर्द्दक रिपु सहस्रना मानने मथनहार नम्र

स्तैरेवशत्रूणा म्पराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा
त् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रबलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापश्चा
लापो हसितच येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोकादिविकार म्मेघनादव द्वा मधुरं श्रवणसुखकर म्प्रतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनकं
सत्य मवितथ म्वचन म्वाक्य येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्म्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि
मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्क्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो
पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णायां द्रोण्यां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाण स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचंडा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपडिपुण्णसच्चवयणा अप्पुवगय
वच्छला सरणा । लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

विषे दयावत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करी धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो अने हसिवो छे
जेहनो वली गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारी प्रतिपूर्ण अर्थनी प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणाग
तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक
द्रोण परिमाण शरीरनो उच पणो उन्मान ते अर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अगुलनो ऊच्च पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु
च्छ्रय' मानोन्मानप्रमाणै' प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमगशरीर येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका
रमरीद्रमवीभत्सम्वा कातदीप्त प्रियजनाना प्रमोदोत्पादक दर्शन रूप येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमसृणाः प्रयोजनेष्वनलसाअमर्षणावा अपराधिष्वपि
कृतक्षमाः प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदु'साध्यसाधकत्वा दण्डप्रचारः सैन्यविचरण येषान्ते तथा गम्भीराअल
क्ष्यमाणांतर्वृत्तित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तत' पदद्वयस्य कर्म्मधारयः प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोद्वृक्षविशेषो ध्वजा
येषान्ते तालध्वजाः वलदेवा उद्विद्धउच्छ्रितो गरुडलक्षितः केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्धगरुडकेतवो वासुदेवा. तालध्वजाय उद्विद्धगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्ध
गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासत्वसागरा' दुर्धरा रणाङ्गणे तेषा प्रहरतां केना

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालुद्धउविद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया

करी प्रतिपूर्ण अन्यून । गर्भाधानथकी रूडीविधिये करी भली नीपनीछे सर्व शरीरावयवे करी सुदर शरीर जेहनो । चद्रमाने समान सौम्य अरुद्रछे तेजा
कार कात दीप्तिवत । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनछे जेहनो । कार्यने विषे आलसी नही अथवा अमर्ष रहित । प्रचड दुःसाध्यने साधे एहवोछे दडप्रचार
सेनानी विचरवी जेहनो । गभीर कल्योनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो । तालवृक्ष ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनी रूपछे ध्वजाने विषे
ध्वजा ऊची करीछे जेणे । वलदेवने आगेतालध्वज होय वासुदेवने आगे गरुडध्वजहोय । तयामहाधनुपना खाचणहार । महासत्व लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरेष्वेवैते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्ति स्तत्प्रधा
नाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वज्रन्तस्य महाप्राणतया विघटका अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविघटका वज्रहि
अधिकरण्या धृत्वा अयोघनेना स्फोट्यते नच भिद्यते तावेवभिनत्तीति दुर्भेद तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसग्राम
यिषो मैंहासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयति वियोजयति ये ते महारचनाविघटकाः पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत
स्वामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवशतिलकाः अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणकपाणयः तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते
बलदेवा येषान्तु कणकाबाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्खश्च पाञ्चजन्याभिधान चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी सन्ना लकुटविशेषः श

महासत्तसाउरा दुहरा धणुहरा धीरपुरिसा जुहकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अड्ढ
भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाअजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

समुद्र सरीखा समुद्र । रणागणे दुर्द्धर कीईथी वास्यानजाय । धनुपनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कोर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे बडाकु
लना उपना । महारत्न वज्रने अगूठें करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खडना स्वामी । सौम्य अत्यत ठढा । राजकुलने बंशने बिषे तिलकसमान
अजितकेहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते वलदेव । अने कणककहीवाणछे हाथने बिषे जेहने ते वासु
देव । शख पाचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो सु

त्रिय त्रिशूलविशेषो नन्दकश्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्तान्धारयन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्वलः शुक्लत्वात् स्व
च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठातरे सुकृतसुपरिकर्म्मितत्वात् विमलो मलवर्ज्जितत्वात् गोथुभत्ति कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष स्त तिरीडति
किरीटच मुकुट धारयति येते तथा कुडलोद्योतिताननाः पुडरीकवन्नयने येषाते तथा एकावलो आभरणविशेषः सा कठे ग्रीवायां लगिता विलविता
सती वक्षसि उरसिवर्त्तते येषाते एकावलीकठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधान सुष्टुलाञ्छन महापुरुषत्वसूचक वक्षसि येषाते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशस. सर्वत्र
विख्यातत्वात् सर्वर्त्तुकानि सर्वऋतुसभवानि सुरभीणि सुगधीनि यानि कुसुमानि तै.सुरचिता कृता या प्रलवा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना काता
कमनीया विकसती फुल्लतो चित्रा पचवर्णा वरा प्रधाना माला स्रक् रचिता निर्मिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषान्ते सर्वर्त्तुकसुरभिकुसुमसुर
चितप्रलवशोभमानकातविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथाअष्टशतसख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तै' प्रशस्तानि म

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुन्नतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा। एकावलिकंठलइयवच्छा सि
रिवच्छसुलछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंवसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा। ॥१०॥

कात निर्मल कौस्तुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे। कुंडलनी प्रभाये करी उद्योतितछे मुख जेहनो। पुडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र
छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकठे लगाडी विलंबितछे वक्षस्थलने विषे जेहने। श्रीवत्स नामा भलो लक्षणछे जेहने। वर प्रधानछे यश जेहनो।
सघली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरी सुरचित कीधीछे प्रलबायमानछे शोभायमान कात कमनीय विकसती पांचवर्ण नी प्रधान माला तेणेकरी

गल्यानि सुदराणिचमनोहराणि विरचितानि विहितानि अंगमंगत्ति अंगोपांगानि शिरोंगुल्यादीनि येषान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुदरविरचितांगोपांगाः तथा मत्तगजवरेन्द्रस्य योललितोमनोहरो विक्रमः सचरणतद्वद्विलासिताः सजातविलासागतिर्गमन येषान्ते मत्तगजवरेन्द्रललितविक्रमविलासितगतयः तथा शरदिभवः शारदः सचासौ नव स्तनित रसित यस्मि न्निर्घोषे स नवस्तनित. सचेति समास. सचासौ मधुरो गम्भीरश्च यः क्रौंचनिर्घोषः पक्षिविशेषनिनाद स्तद्वद्दुन्दुभिस्वरवच्च स्वरो नादो येषाते शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरक्रौचनिर्घोषदुन्दुभिस्वराः इहच शरत्कालेहि क्रौंचा माद्यन्ति मधुरध्वनयश्च भवन्तीति शारदग्रहण तथा पीनःपुष्टेन शब्दप्रवृत्तौ तद्गादमनोज्ञता तस्यस्यादिति नवस्तनितग्रहणं स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगभीरग्रहणमिति तथा कटीसूत्र माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नीलानि बलदेवाना पीतानि वासुदेवानां कौशेयकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि येषांते कटीसूत्रकनी

सयविन्नत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमुज्जरगंभीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा न

मडितछे वक्षस्थल जेहनो। तथा १०८ प्रगटरूप जे लक्षण चक्रादिके करी प्रशस्त मगलकारी मनोहर कीधाछे सर्व अगोपांग जेहना। मदोन्मत्त गजेद्रनो सुललित मनोहर चालवो तेहनो परे विलास सहितछे गती जेहनी। शरत्काल सम्बन्धी नवीन मेघनो जे गभीर शब्द तेहवो गभीरछे कठनो शब्द दुदुभीना शब्द सरीखो मीठो क्रौंचपक्षी शरत्काले मस्तहोय तेमाटे तेहना शब्द सरीखो गभीर स्वरछे जेहनो। कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला वस्त्र जेहना वलदेवना नीलावस्त्र वासुदेवना पीलावस्त्र। प्रधान दीप्तिवंत। मनुष्यमाहि विक्रम गुणे करी सिह समान छे। नरपती छे। नरिन्द छे। नर

लपोतकोयेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ
त्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पा' देवराजोपमा अभ्यधिक शेषराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्मा दीप्यमाना. नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणन नि
गमनार्थं कथ तेनचेत्याह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नवबलदेवा इति तिविट्ठूय यावत्करणात् दुविट्ठूय सयभुपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुडरीये
दत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आनदेणदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति॥ २॥ कित्तीपुरिसोणति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति मह
रायकणगमत्थू सानयोपोयणवरायगिह कायदोकोसमो महिलपुरोहत्थिणपुरच तथा गाभिजुएसगामे तहइत्थिपराहओरगे भज्जाणरागगोट्ठी परद्दढीमाउ
याइयति तथा अप्पगोवेतारए मेरएमइकोटमेनिसुमेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासधेत्ति॥ ३॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाण सव्वेवि

रवसहा मरुयवसन्नकप्पा अप्पहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय
रोहोत्था तजहा। तिविट्ठूय जावकण्हे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं वलदेववासु

मांहि वृषभ समान छे पाछो भार वाहवा समर्थपणां थी। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे। नीला अने
पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनु भाइ होय राम तेबलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुभाई होय। एणीचोवीसीये ९ बलदेव
९ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपृष्ठ २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८
कृष्ण ९ इहालगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनद ६। नद ७। पद्म ८। राम ९। एहबलभद्र जाणि

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले। पियमित्तललि
यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं। एत्तोबलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ
स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥
एएसिनवराह बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तजहा । संभूएयसुभद्दे सुदंसणेसेयकराह
गगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं ।
पुव्वभवेएआसि जत्थनियाणाइं कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवराहं वासुदेवाण पुव्वभवे नवनियाणभूमीउहो

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ९ नामधेय कहे छे। विश्वभूति १ प्रवतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन
र्वसु ८ गगदत्त ९। एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया। हिवे बलदेवना नाम कहे छे। विश्वनन्दी १। सुबधु २। सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५
वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९। एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे। सभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेया
श ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ९ धर्माचार्य थया कीर्त्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना। जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे
नियाणा भूमि थई ते कहे छे। मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसबी ७ मिथिला ८ हथणापुर ९

चक्कजोही सव्वेविहयासचक्केहिंति अणियाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा उड्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता
कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिष्यता भविष्यता अध्ये सेत्स्यतीति जबूद्वीपैरवते अस्या भवसर्प्पिण्या चतुर्विंशति स्तीर्थंकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

त्या तंजहा । मज्झराजावहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवरह वासुदेवाण नवनियाणकारणाहोत्या तंजहा । गावी
जुवे जाव माउआ । एएसिं नवरहंवासुदेवाणं नवपडिसत्तूहोत्या तंजहा । आसग्गीवेजावजरासंधे । जा
वसचक्केहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए करहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥
अणिदाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा । उड्ढगामीरामा केसवसव्वेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अठतकडा
रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि । एक्कोसेगच्चवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्दीवे० एरवए

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तभ २ सग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७
परऋद्धी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुभ ५ बलि
६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कौर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच
वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण २ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उच्च
गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

रेणाह तद्यथा चदाणणगाहा चदाणणसुचंदं अग्गिसेणंचनंदिषेणच्च क्वचिदात्मसेनोप्यय दृश्यते ऋषिदिन्नं व्रतधारिणच्च वंदामहे श्यामचन्द्रच्च वदामिगाहा वंदेयुक्तिसेनं क्वचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेन क्वचिदयशतायु रुच्यते तथैव शिवसेनं क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिर्येति बुद्धवावगततत्वच्च देवशर्माण देवसेनापरनामक सततसदावंद इति प्रकृत निक्षिप्तशस्त्रच नामांतरतः श्रेयांसं असजलं गाहा असंज्वल जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजल वदेअनंत जिन मभितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थः नामातरेणायं सिहसेनइति उपशांतच उपशान्तसत्र धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनच अइपासगाहा अतिपार्श्वंच सुपार्श्वं

वासे इमीसेणसप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्गीसेणंचनंदिसेणंच । इसिदिन्नंवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । वुड्ढंचदेवसम्मंसिद्धं निखित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ असजलंजिणवसह वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतचधुवरयं वदेखलुगुत्तिसे

१भव वासना अतरथी मोच जाखे जबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नदिसेन ४ ऋषिदिन्न ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुछु । सोमचद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निक्षिप्त शस्त्र बीजो नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥ असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वांदो अनतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिहसेन उपशात १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ ।

देवेश्वरवंदितंच मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं क्षीणदुःखंश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे क्षीणरजस मग्निपु
त्रच व्यवकृष्टप्रेमद्वेष च वारिषेणं गत सिद्धमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता चतुर्विंशतिः एवमिदं सर्वं

णच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥
जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तच वोक्कासियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्ध ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे०
आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्सति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे
दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खति ॥ ६५ ॥ जबूद्दीवेणदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे
दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्वं १७ । सुपार्श्वं १८ देवेश्वरेवदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित
अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन चय गईछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जबूद्वीपना
भरतने विषे आगामी उत्सर्पिणीये ७ कुलकर थासे ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुबधु ७ । आवती चो
वीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पडिसुई सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईअरहा देवस्सुएयहोक्खई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोट्टिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पलाएयनिम्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगमिस्सेणहोक्खई ॥ ३ ॥ सवरेअणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअरहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीस भरहेवासम्मिकेवली आगमिस्सेणहोक्खंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसनामधेज्जा भविस्सति तंजहा । सेणियसुपा

चेमंकर ४ । चेमधर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमुचि १० । जंबूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभाववित् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पलाक १४ । निर्ममम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । सवर १८ । यशोधर १९ । अनर्द्धिक २० । विजय २१ । विमलवीजोनाममल्ली २२ । देवोपपात २३ । अनंतविजय २४ वीजोनाम अनतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकर भरतक्षेत्रनेविषे आवतीउत्सर्पिणीयेहोस्यें धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

सउदए पोट्टिलअणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत हवासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्वेखलुतहाभयाली य । दीवायणेयकण्हे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ अंबडदारुमढेय साईवुद्धेयहोइवोधव्वे । भावीतित्थगराणं णामाइंपुव्वभवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंपियरोमायरोभविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा भविस्सति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीओभविस्सति । चउव्वीसपढमभिक्खादायगाभविस्सति । चउव्वीसचे इयरुक्खाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारसचक्कवट्टिणोभविस्संति

ट्टिल अणगार ४ । दृढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । बलभद्र १४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अबड २२ । दारुमृत वीजोनाम अमरजीव२३ स्वातिबुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्पिणीये भावी तीर्थंकरपूर्वभवनाम जाणिवा ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पिता होसे । २४ माता होसे । २४ प्रथम शिष्य थासे । २४ प्रथम साध्वी थासें । २४ प्रथम भिक्षादायक थासें । २४ चैत्यवृक्षथासें । जंबूद्वीपना भरत ने विषे आगामिउत्सर्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थासें तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदत ३ । शुद्धदत ४ । श्रीपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

तंजहा । भरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुद्धदंतेय । सिरिउन्नेसिरिभूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठेवारसमेतह आगामिभरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एएसिणंबारसण्हंचक्कव ट्टीणं वारसपियरोभविस्संति वारसमायरोभविस्संति । बारसइत्थीरयणाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेव बासुदेवपियरो भविस्सति नवबासुदेवमायरो नवबलदेव मायरो भविस्सति । नवदसारमंडलाभविस्संति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी एवंसोचेववण्णउ भाणियव्वो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाभायरो भविस्संति तंजहा । नदेय

ल वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आवती २४ वीसीये भरतक्षेत्रना अधिपति थाशे । एह १२ चक्रवर्त्तीना १२ पिता अने १२ माता थाशे । १२ स्त्रीरत्न होसे । । आवती उत्सर्पिणीये जबूद्वीपना भरतनेविषे ९ वलदेव ९ वासुदेवनापिताहोसे । ९ वलदेवनी माता होसे । ९ वासुदेवनी माताहोसे ९ । दशारमडल होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याछे तेहिज भणिवो जिहालगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए ह आवे । दोदो रामते वलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेछे । नद १ । नदमित्र २ । दीर्घबाहु ३ । म हाबाहु ४ । अतिबल ५ । महाबल ६ । बलभद्र ७ । द्विपृष्ट ८ । त्रिपृष्ट ९ । आवती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिवा हिवे वलदेवनाम कहेछे । ज

सिरिचदेपुप्फकेऊ महाचदेयकेवली । सुयसागरेयअरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुस्सघोसेय महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयअरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयअरहा महासेणेयकेवली । सव्वा णंदेयअरहा देवउत्तेयहोस्कई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएअरिहा अरहेयसुकोसले । अरहाअणंतविजए आगमि स्सेणहोस्कइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेअरहा अरहायमहाबले । देवाणदेयअरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ६ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ बारसचक्कवट्टिणो भविस्सति बारसचक्कवट्टिपियरोभविस्सति । बारसइत्थीरयणा भविस्सति नवबलदेववासुदेवपियरोभवि स्सति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोभविस्संति । णवदसारमंडलाभविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णघोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४ सिद्धसेन बीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोसल १९ अनतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवा नद २४,होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तना पिताहोस्ये ।९ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमडल होस्ये

सुगम गंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे च्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिद्धिश्च यथारामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमि
थतो वासुदेवादयो भणितव्या. इत्येव मनेकधार्थानुपदर्शी धिकृतग्रयस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा
ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरुपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतित्थगरवंसे इयत्ति यथा देशे
न कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थंकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थंकरवंश इति आख्यायते एतदिति एव चक्रवर्त्तिवंशइति
च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ता. शेषाजिनशिष्या ऋषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनचात्र पर्युषणाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा भायरोभविस्संति णवपडिसत्तूभविस्संति । णवपुव्वभवणा
मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीओ णवणियाणकारणा आयाएएरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ।
एवदोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवतित्थगरवंसेइय ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये। नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानो का
रण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी च्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये शिवथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्व भणिवो । एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आ
गामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवो । अनेकप्रकारे एम भगोक्तशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे । कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतागमितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिकृत्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थाना मिह सक्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कधइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायइति चासमस्ताना जीवादिपदार्थाना मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थः तथा एकादिसख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य सख्येति व्याख्यायते तथा समस्त स्परिपूर्ण न्तदेतदङ्ग माख्यात भगवता नेह श्रुतस्कन्धद्वयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अज्झयणतित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यात नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति शस्त्रप

चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुअंगेइवा

एमदशारवंश तेवासुदेव बलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वनां वंश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहि वा। यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह बेहु ऋषिवाचीछे तथापि आचारने विषे यत्नकरे तेयतीअर्थ जाणे तेमुनीतेहना ज्ञान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये। परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध। श्रुत पुरुष अगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग। समस्त सूत्रमांहि सक्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अगनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह माहि अवतरया तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगी

रिज्ञादिष्विवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ ब्रेमित्ति किलसुधर्मस्वामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहस्मब्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समी
पे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्य मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शि त औद
त्यञ्च परिह्रत अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितोभवति मुमुक्षूणा ञ्चाय मार्ग इत्यावेदितमिति समवायाख्य चतुर्थमङ्ग मृत्तितः समाप्तम् ॥ * ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमरकायंज्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

सख्या एहमा कही तेथी सख्यकथथ कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अंग भगवते कह्यो। एह अध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अर्थे
किल सुधर्मास्वामी जवूस्वामीप्रतें कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपा
रपर्यपणो गुरुने बिषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायांग सूत्रटव्वार्थ सपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥
श्रीपार्श्वचद्रसूरि सतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोय। टव्वार्थ श्लोक सख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं
यद् ज्ञानभावा दशुद्ध लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृत विशोधनीय च धीधनै रिति ॥ सूत्रटव्वार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती